

GOVERNMENT OF INDIA
ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA

CENTRAL
ARCHÆOLOGICAL
LIBRARY

ACCESSION NO 23610

CALL No. 091.4912/G.O.M.L.M.

D.G.A. 79



2770.8°



A DESCRIPTIVE CATALOGUE
OF THE ~~3924~~
SANSKRIT MANUSCRIPTS
IN THE
GOVERNMENT ORIENTAL MANUSCRIPTS
LIBRARY, MADRAS.

BY
M. RANGACHARYA, MA., RAO BAHADUR,
PROFESSOR OF SANSKRIT AND COMPARATIVE PHILOLOGY, PRESIDENCY COLLEGE;
CURATOR, GOVERNMENT ORIENTAL MSS. LIBRARY; AND
REGISTRAR OF BOOKS, MADRAS.

Prepared under the orders of the Government of Madras.

23610

VOL. XIV.—RELIGION—*continued.*

091.4912
G.O.M.L.M.

MADRAS:
PRINTED BY THE SUPERINTENDENT, GOVERNMENT PRESS.

1912.



18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28.

29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39.

40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50.

51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61.

62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72.

73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83.

84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94.

95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105.

106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116.

117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127.

128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138.

139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149.

150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160.

161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171.

172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182.

183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193.

194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204.

205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215.

216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226.

227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237.

238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248.

249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259.

260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270.

271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281.

282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292.

293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303.

304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314.

315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325.

326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336.

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL
LIBRARY, NEW DELHI.

Acc. No. 23610.

Date 23. 4. 56

Call No. 091. 4912/G.O.M.L.M.

CONTENTS.

CLASS VIII.

RELIGION—(continued).

5.—MANTRAS—(continued).

| Name of the work. | Number. |
|--|--------------|
| Rājyaśāntipradagopālamantra | 7007 |
| Rāmikavaca | 7008 to 7023 |
| Rāmekayacavajrapalijara | 7024 |
| Rāmkritika | 7025 |
| Rānakhaigastotramantra | 7026 |
| Rāmagyātrī | 7027 to 7030 |
| Rāmarāndraśākṣiṇimantra | 7031 to 7033 |
| Rāmatārakamantra | 7034 |
| Rāmatārakasūtakṣeṣibrahmavidyāśahāmantra | 7035 |
| Rāmatārakasūtakṣiṇimantra | 7036 |
| Rāmaśākṣiṇimantra | 7037 to 7040 |
| Rāmaśūrgīlavaca | 7041 |
| Rāmadurga | 7042 to 7044 |
| Rāmadvīḍaśākṣiṇimantra | 7045 to 7047 |
| Rāgamantra | 7048 to 7051 |
| Rāgamātrikavaca | 7052 |
| Rāgamīthamantra | 7053 to 7055 |
| Rāmavajrakavaca | 7056 |
| Rāmśādakṣeṣitāvakabrahmamahāmantra | 7057 |
| Rāmaśādakṣiṇimantra | 7058 to 7072 |
| Rāmaśādakṣiṇimantra | 7073 to 7078 |
| Rāmaśādakṣiṇaramantra | 7079 |
| Rātinyāsa | 7080 |
| Rāmikavaca | 7081 |
| Rāmuṇḍa | 7082 |
| Budrakavaca | 7083 to 7087 |
| Budramālāmantra | 7088 |
| Bodralaldaya | 7089 to 7091 |
| Budrabhōma | 7092 |
| Badrādhikāyamantra | 7093 |
| Rājukāparamēśvarīmantra | 7094 |
| Lakṣmikavaca | 7095 to 7097 |

the first time in the history of the world, that the
whole of the human race, from the most ignorant
and savage tribes in Africa and America, up to
the most enlightened in Europe and Asia, have
been united by a common religion, and that
this religion has been diffused over the whole
surface of the globe, and has become the religion
of the greatest part of the human race. This
is a remarkable fact, which cannot be explained
by any other cause than the influence of the
Providence of God. And it is a fact, which
ought to give us great hope and comfort, in
our efforts to propagate the gospel among
the heathen nations.

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL

LIBRARY, NEW DELHI.

Acc. No. 23610.

Date 23 4 56

Call No. 091 4912/G.O.M.L.M.

CONTENTS.

CLASS VIII

RELIGION—(continued).

5.—MANTRAS—(continued).

| Name of the work. | Number. |
|--|--------------|
| Rājyalākṣapradigopālamantra | 7007 |
| Rāmikavaca | 7008 to 7023 |
| Rāmbharadvajrapādījaya | 7024 |
| Rāmatilaka | 7125 |
| Rāmabhadgastārmantra | 7026 |
| Rāmagīyatri | 7027 to 7030 |
| Rāmacandrāśikāparamantra | 7031 to 7033 |
| Rāmatārakamantra | 7034 |
| Rāmatārukaṇḍakparibrhmaividūnahāmantra | 7035 |
| Rāmailleskṣṇḍalayāmantra | 7036 |
| Rāmaśādāśikāparamantra | 7037 to 7040 |
| Rāmaśūryakavaca | 7041 |
| Rāmadurgā | 7042 to 7044 |
| Rāmadvādaśikāparamantra | 7045 to 7047 |
| Rāmanantra | 7048 to 7051 |
| Rāmanātrikavaca | 7052 |
| Rāmenālīmantra | 7053 to 7059 |
| Rāmavajrakavaca | 7064 |
| Rāmaśākuntārakubrahmamahāmantra | 7065 |
| Rāmaśākāśikāparamantra | 7066 to 7072 |
| Rāmaśādāśikāparamantra | 7073 to 7078 |
| Rāmāśūdāśikāparamantra | 7079 |
| Rāmnyās | 7080 |
| Rāshukavaca | 7081 |
| Rāshumāntra | 7082 |
| Rudrakavaca | 7083 to 7087 |
| Rudramālīmantra | 7088 |
| Rudraśādaya | 7089 to 7091 |
| Rudrabhima | 7092 |
| Rudrādhikāyamantra | 7093 |
| Rāṇikāparamēvarīmantra | 7094 |
| Lakṣmikavaca | 7095 to 7097 |

6.—MANTRAS—(continued).

| Name of the work. | Number. |
|--------------------------------|--------------|
| Lakṣmīgaṇapatiṇamtra | 7098, 7099 |
| Lakṣmīgopālīṇamtra | 7100 |
| Lakṣmīnārāyaṇaśākavac | 7101 |
| Lakṣmīnārāyaṇaśorḍaya | 7102, 7103 |
| Lakṣmīnṛsiṇhāṇamtra | 7104 to 7108 |
| Lakṣmīnṛsiṇhāṇamtra | 7109 |
| Lakṣmīyajāra | 7110 |
| Lakṣmīṇamtra | 7111 to 7114 |
| Lakṣmīṇakta | 7115 |
| Lakṣmīstotraṇamtra | 7116 |
| Lakṣmīḥṛdayastotrāṇālīṇamtra | 7117 to 7122 |
| Laghuṇātāṅgīṇamtra | 7123 |
| Laghuvārāṇīṇamtra | 7124 to 7129 |
| Laghuśyāmālīṇamtra | 7130, 7131 |
| Laghuśyāmālīṇamtra | 7132 to 7135 |
| Laghuśyāmālāñgīṇavartīṇamtra | 7136 |
| Laghuśyāmālāñgīṇīṇamtra | 7137 |
| Lalitākavaca | 7138 |
| Lavanapāñcākṣaraṇamtra | 7139 |
| Lalitādādharaṇgopālīṇamtra | 7140 |
| Lokapālīṇamtra | 7141 |
| Lopāmudrāṇamtra | 7142 to 7144 |
| Vatāpatraśaynaṇgopālīṇamtra | 7145 |
| Vatāmūḍaśrōmārtīṇamtra | 7146 |
| Vatayaksinīṇamtra | 7147 |
| Vatākṣṭraṇamtra | 7148 to 7150 |
| Vatākṣṭhaṇavādīgbandhanāṇamtra | 7151 |
| Vatākṣṭhaṇavāyamtra | 7152 to 7154 |
| Vanadurgādīgbandhanāṇamtra | 7155 to 7159 |
| Vanadurgāmāṇīṣī | 7160 to 7167 |
| Vanadurgāmahāvidyāpāñcāyaga | 7168, 7169 |
| Vanadurgāmahāvidyāṇamtra | 7170 to 7173 |
| Vanadurgāmahāvidyāmālīṇamtra | 7174 to 7184 |
| Vanadurgāmālīṇamtra | 7185, 7186 |
| Varāhacaturiñālīkṣaraṇamtra | 7187 |
| Varāhātrayāstrīñādakṣaraṇamtra | 7188 |
| Varīkhamālēṇamtra | 7189 |
| Varūhasapīkṣaraṇamtra | 7190 |
| Varṣamālikā | 7191 |
| Vaṇikarṇavaṇākṣaraṇamtra | 7192 |
| Vaṇyavārāṇīṇamtra | 7193, 7194 |

5.—MANTRAS—(continued).

| Name of the work. | Number. |
|-------------------------------------|--------------|
| Vigñéartmantra | 7195 to 7198 |
| Vigvādinimanttra | 7199 to 7201 |
| Vigvādintorāmīmanttra | 7202 |
| Vāmnasamanttra | 7203, 7204 |
| Vāyavyāstramantra | 7205 |
| Vārāhikavaca | 7206 |
| Vārālmanttra | 7207 to 7209 |
| Viroquṣamanttra | 7210 |
| Vishnulavādvadisikharamantra | 7211 |
| Vikulayakṣinimanttra | 7212 to 7214 |
| Virkotisarvakavaca | 7215 to 7217 |
| Vighnāśvaramūlīmanttra | 7218 |
| Vishkrapanapūrṇīmanttra | 7219 |
| Vidyāgopīlamantra | 7220 |
| Vidyāśampūttitamātpkāryās | 7221 |
| Vidyāśampūttitamātpkārṣasvatimantra | 7222 |
| Vidyajjihvāmanttra | 7223 to 7225 |
| Vināyakāśīkṣaramanttra | 7226 |
| Vibhūtimanttra | 7227 |
| Vimuktibendhanasandarśanamantra | 7228 |
| Vievarapadharagopīlamantra | 7229 |
| Virāhagaurmanttra | 7230 |
| Vishvarārasinīhamūlīmanttra | 7231 |
| Vishvaramantra | 7232 |
| Vishoikāmanttra | 7233 |
| Vippukavaca | 7234, 7235 |
| Vippupāṭījaramanttra | 7236 to 7239 |
| Vippmanttra (nyāsasahita) | 7240 |
| Vippudakṣipuramanttra | 7241 to 7248 |
| Vippusktamanttra | 7244, 7245 |
| Visargamūlīpkāryās | 7246 |
| Visargamūlīkārṣasvatimantra | 7247 |
| Vishyāmālīmanttra | 7248, 7249 |
| Vizadadekamanttra | 7250, 7251 |
| Vivatāraṇasārasinīhamūlīmanttra | 7252 |
| Viranysīthamanttra | 7253, 7254 |
| Virapracodabhanumanūlīmanttra | 7255 |
| Virapraśipahanumanamanttra | 7256 |
| Virabhadrakavaca | 7257, 7258 |
| Virabhadrabudhānalamīmanttra | 7259 to 7262 |
| Vimhadrabudhānalamīmanttra | 7263, 7264 |

5.—MANTRAS—(continued).

| Name of the work. | Number. |
|--|--------------|
| Virañchadremantra | 7265 to 7268 |
| Virañchadramālīmantra | 7269 to 7271 |
| Virulakṣmīmantra | 7272 |
| Vitārañchadremantra | 7273 to 7277 |
| Vitārañchabhañcīlāmantra | 7278, 7279 |
| Vitārañchomomīlāmantra | 7280 to 7283 |
| Virkṛtīmantra | 7284 to 7287 |
| Voornādagopīlamantra | 7288 |
| Vogneyāmalamantra | 7289 |
| Vadavyākṣegyātrīmantra | 7290 |
| Vadavyāsēmantra | 7291 |
| Vadavyākṣatikṣaramantra | 7292 |
| Vadavyāsikṣaramantra | 7293 |
| Vyāñdhimantra | 7294 |
| Vyāhṛīmantra | 7295 |
| Sakañcūrasanāñdhārakagopīlamantra | 7296 |
| Saktigopatīmantra | 7297 to 7300 |
| Saktinyāla | 7301 |
| Saktipatīkarinshāmantra | 7302, 7303 |
| Saktipratyāgirāmālīmantra | 7304, 7305 |
| Saktimantra | 7306 |
| Saktimātākānyāla | 7307 |
| Sankhasuvarpayañjīpmanttra | 7308 to 7310 |
| Satevīdhvansāntāntīlīmantra | 7311 |
| Seimāntīrakagopīlamantra | 7312 |
| Sanikavaca | 7313 |
| Samidhārakavaca | 7314 |
| Samidhādānāmāni | 7315 |
| Samidhārāmantra | 7316 |
| Satiñdarśīgītīmantra | 7317 |
| Sarāñgītīmantra | 7318 to 7320 |
| Sarabhadrakavaca | 7321 to 7324 |
| Sarabhākālīmantra | 7325 |
| Sarathāñkūlīkārguñmālīmantra | 7326, 7327 |
| Sarabhāñthālīmantra | 7328 |
| Sarabhāñgībandhanāmantra | 7329 |
| Sarabhāñmālāmantra | 7330, 7331 |
| Sarabhāñhavāñtrīgīdakārāmantra | 7332, 7333 |
| Sarabhāñvapakṣirūjakavaca | 7334 |
| Sarabhāñluvapakṣirūjakavaca | 7335, 7336 |
| Sarabbāñluvapakṣirūjudīgbandhanāmantra | 7337 |

5.—MANTRAS—(continued).

| Name of the work. | Number. |
|-------------------------------------|--------------|
| Sarabhasūlīvapakṣṭrājñashāmantra | 7388 |
| Sarabhasūlīvapakṣṭrājñashāmantra | 7389 to 7344 |
| Sarabhasūlīvaramantra | 7345 to 7349 |
| Sarabhasūlīvaramantrārājñashāmantra | 7350 to 7358 |
| Sarabhasūlīvamālīmantra | 7354, 7355 |
| Sarabhasūlīvamantra | 7356 to 7362 |
| Sarabhasūlīvamantrārājñashāmantra | 7363 |
| Sarabhasūlīvamālīmantra | 7364, 7365 |
| Sarabhasūlīvivaramantra | 7366 |
| Sarabhasūlīvaramantra | 7367 |
| Sarimudadīshīmantra | 7368, 7369 |
| Sāmiharavidyā | 7370 |
| Sārīkīmantra | 7371 to 7373 |
| Sārikāyāmālīmantra | 7374 |
| Sāsiāmantra | 7375, 7376 |
| Sindumārīmantra | 7377 |
| Sivakarava | 7378 to 7391 |
| Sivakvacaabrahmaridyāmantra | 7392 |
| Sivapāṇḍikīprīmantra | 7393 to 7395 |
| Sitalāmbāmantra | 7396 |
| Sitalāstotramantra | 7397, 7398 |
| Sukasyāmālīmantra | 7399 to 7402 |
| Sukrakavas | 7403 |
| Sukramantra | 7404 |
| Sukrāśpatimōcanamantra | 7405 |
| Suddhamātṛīkhyūs | 7406 |
| Suddhamātṛīkṣasarasvatīmālīmantra | 7407 |
| Suddheśvīyāmantra | 7408 to 7412 |
| Suddhasaktijayamālīmantra | 7413 |
| Suddhasaktitarpaṇamālīmantra | 7414 |
| Suddhasaktināmōmālīmantra | 7415 |
| Suddhasaktimālīmantra | 7416 |
| Suddhasaktisūhāmālīmantra | 7417 |
| Sulimkavas | 7418 |
| Sulimigandhanamālīmantra | 7419 |
| Sulindurgīparameśvarīmantra | 7420 to 7423 |
| Sulimidurghīmālīmantra | 7424 |
| Sulimīmantra | 7425 |
| Sulimālīmantra | 7426 to 7428 |
| Sulishṛdaya | 7429 |
| Sūpādakṣaramantra | 7430 |

5.—MANTRAS—(continued).

| Name of the work | Number. |
|---|--------------|
| Syāmalikavaca | 7451 |
| Syāmalipūrvāṅgavayūsh | 7452 |
| Syāmalamantra | 7453 |
| Sṛikantihūdimātrikānyūsh | 7454 |
| Sṛikacūlāśubhputitamātrikānyūsh | 7455 |
| Sṛikarīśīkṣṇamantra | 7456 |
| Sṛimakrūyākṣayuṣ | 7457 |
| Sṛividūbarapāñcakṣetrītrāmbhāmālikamantra | 7458 |
| Srimantra | 7459 |
| Sṛividyāyūsh | 7460, 7461 |
| Sṛividyāmantra | 7462 |
| Sṛividyāmālikāntra | 7463 |
| Sṛivahalabrahmasuddakṣramantra | 7464, 7465 |
| Sṛidāmnāyamantra | 7466 to 7468 |
| Sṛidāmnāyamantreśākramantra | 7469 |
| Sṛidānyūsh | 7470 |
| Sṛidākṣipraayūsh | 7471 |
| Sṛidākṣaramantra | 7472 to 7474 |
| Sṛidāksaryādīmūlamantra | 7475 |
| Sṛidākhintmantra | 7476 |
| Sṛidhṛgaṁmāhādurgūmantra | 7477 |
| Sṛidmūhenagopālamantra | 7478 |
| Sṛidmūhanasundarimantra | 7479 to 7481 |
| Sṛihvitrisūlinimantra | 7482 |
| Sṛivitiparamēśvartimantra | 7483 |
| Sṛivitsevanāmantra | 7484, 7485 |
| Sṛivinmantra | 7486 |
| Sṛivikrabhīśvaramantra | 7487, 7488 |
| Sṛigilamātadigimantra | 7489 |
| Sṛigītavidyāmantra | 7470 |
| Sṛitūnagopālamantra | 7471 to 7477 |
| Sṛandhyāmantra | 7478 to 7480 |
| Sṛandhyāvandanamantra | 7481, 7482 |
| Sṛasvatidōvimantra | 7483 |
| Sṛasvatimantra | 7484 |
| Sṛavahūmadēvyanāharāmantra | 7485 to 7487 |
| Sṛavujanaraśikarnavamantra | 7488 |
| Sṛāntiputrapradagopālamantra | 7489 |
| Sṛambodhikṣūmūrtimantra | 7490 to 7493 |
| Sṛasvatopradagopālamantra | 7494 |
| Sṛagrámamantra | 7495 |

CONTENTS.

ix

5.—MANTRAS—(continued).

| Name of the work. | Number. |
|---|--------------|
| Sāvitrīstūkṣṇamāntra | 7496 |
| Sāvitrīpājikā | 7497 |
| Sāhityamāṅgimāntra | 7498 |
| Sāhityavidyāmāntra | 7499 |
| Siddhagauṇapatiśāmantra | 7500 |
| Siddhagauṇapatiśāmāntra | 7501 |
| Siddhāṅghānaśāmāntra | 7502, 7503 |
| Siddhamālinīmāntra | 7504 |
| Siddhalakṣmīyakṣinīmāntra | 7505, 7506 |
| Siddhavidyāmāntra | 7507, 7508 |
| Śūdrāmānāmāntra | 7509 |
| Sudarśanākavac | 7510 to 7520 |
| Sudarśanāgyātrī | 7521 |
| Sudarśanāndigandhanāmāntra | 7522 to 7525 |
| Sudarśanāgurūttaramālāmāntra | 7526 |
| Sudarśanāmāntra | 7527 to 7542 |
| Sudarśanāmāntra (with Gāyatrī and Mālāmāntra) | 7543 |
| Sudarśanāmālāmāntra | 7544 to 7556 |
| Sūmarśanācūjakāmāntra | 7557 to 7559 |
| Sudarśanākūrṣṭāmāntra | 7570 |
| Sulōmālāśiddhimāntra | 7571, 7572 |
| Sūvarṇabhaṭṭayāmāntra | 7573 to 7575 |
| Sūryakavac | 7576 to 7584 |
| Sūryagrahlāmāntra | 7585 |
| Sūryanāmākṛtāmāntra | 7586 |
| Sūryanārāyaṇakavac | 7587 to 7589 |
| Sūryanārāyaṇāmāntra | 7590 |
| Sūryāmāntra | 7591 |
| Sūryāśāsramāntra | 7592 |
| Sauhbhāgyakavac | 7593 to 7596 |
| Sauhbhāgyavidyāmāntra | 7597 to 7599 |
| Sauhbhāgyavidyāmāntrājāmāntra | 7600 |
| Sauhbhāgyavidyāśārīmāntra | 7601 to 7604 |
| Saurasvatīkārtīmāntra | 7605 to 7607 |
| Sāvitrīkārtīmāntra | 7608 to 7616 |
| Skandāmāntra | 7616, 7617 |
| Sāvitrīmāyākavac | 7618 |
| Sāvitrīmāyāpaticādāśārīmāntra | 7619 |
| Sāvitrīmāyānāshīmāntra | 7620 |
| Śteuṇāvīgandhanāmāntra | 7621 |
| Āphoṭākāmāntra | 7622 |
| Āmarādimīṭṭākāmāntra | 7623 |

5.—MANTRAS—(continued).

| Name of the work. | Number. |
|----------------------------------|--------------|
| Svapnavārāhimantra | 7624 to 7628 |
| Svapnabhanūmanmantra | 7629 |
| Svarūpabhairavamantra | 7630 |
| Svarūkārṣṇagāgapatiṇīmantra | 7631 |
| Svarōkārṣṇasudarśatātrayamantra | 7632 |
| Svarōkārṣṇasubhairavamantra | 7633 to 7642 |
| Srasthānapradīgopālamantra | 7643 |
| Hāmēdakṣināmṛtimantra | 7644 to 7647 |
| Hāmēan-antra | 7648 |
| Hāmēamātṛkāṇyāsa | 7649 |
| Hāmēasaptākṣaramantra | 7650 |
| Hāmēāstākṣaramantra | 7651 |
| Hāmēmatikavaca | 7652 to 7653 |
| Hāmēapālcadasākṣaramantra | 7653 |
| Hāmēmadīpadindhārapastotrāmantra | 7654 |
| Hāmēmadgārṇījamantra | 7655 |
| Hāmēmaddiglandhāmantra | 7656 |
| Hāmēmaddvādaśākṣaramantra | 7657 to 7659 |
| Hāmēnadbadābānalamantra | 7670 |
| Hāmēmanmantra | 7671 to 7677 |
| Hāmēmāmūlīmantra | 7678 to 7697 |
| Hayagrīvakavaca | 7698 |
| Hayagrīvapāñjara | 7699 |
| Hayagrīvamantra | 7700 to 7703 |
| Hayagrīvānālāmīmantra | 7704 |
| Hayagrīvānūṣṭubhamantra | 7705 to 7708 |
| Hayagrīvāstākṣaramantra | 7709 |
| Hayagrīvālkākṣaramantra | 7710 to 7714 |
| Hayagrīvālkādaśākṣaramantra | 7715 |
| Haridrāgapatiṇīmantra | 7716 to 7718 |
| Havaṇamantra | 7719 |
| Hāsāntīmantra | 7720 |
| Hāsāntīmāla/gīmantra | 7721 |
| Hāsāntīyāmālāmantra | 7722, 7723 |
| Hiranyagarbhasākṣtamantīra | 7724 |
| Hiranyagarbhāśākṣaramantra | 7725 |
| Hiranyakadeviṇīktamantīra | 7726 |
| Hutabhūtagīmantra | 7727, 7728 |
| Hylēkālmākīrṇārasayathīmantra | 7729 |

A DESCRIPTIVE CATALOGUE
OF THE
SANSKRIT MANUSCRIPTS.
VOLUME XIV.

CLASS VIII.—RELIGION—(*continued*).

5. MANTRAS—(*continued*).

No. 7007. राज्यलाभप्रदगोपालमन्त्रः.

RĀJYALĀBHAPRADAGOPĀLA MANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 54a of the MS. described under No. 5885.

Complete.

This Mantra is in praise of Kṛṣṇa, conceived as the teacher of the Gītā and as the bestower of sovereignty.

Beginning :

अस्य श्रीराज्यलाभप्रदगोपालमन्त्रस्य गीताबोधनगोपालमन्त्रस्य च
नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, गीताबोधनगोपालो देवता; ए चीजं,
क्षी शक्तिः, स्वाहा कीलकं, गीताबोधनगोपालप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

End :

ए क्षी कृष्णाय नमः ॥

No. 7008. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 3. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 63a of the MS. described under No. 21.

Complete.

This Kavacamantra is addressed to Rāma. It is believed to have the power to remove one's sins, and to secure protection to one from all kinds of harm and evil.

Beginning :

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमत्सीतालक्षणभरतशत्रुघ्नसहित श्रीरामचन्द्रो देवता, मम समस्तपापक्षयार्थे समस्तभयनिवारणार्थे जपे विनियोगः ।

शिरो मे राघवः पातु फालं दशरथात्मजः ।

कौसलेयो दशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ॥

End :

इत्येतानि जपेचित्यं मद्भक्तिश्रद्धयान्वितः ।

अश्वमेघाविकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥

Colophon :

इति श्रीरामकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7009. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 7. Lines, 6 on page.

Begins on fol. 87a of the MS. described under No. 2549.

Complete.

Same as the above, except in the beginning which is given below :—

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रमन्त्रस्य विश्वामित्रभगवान्पिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता; सीतां शक्तिः, मां कीलकं, मम सर्वचोरव्याप्र भयनिवारणार्थे विनियोगः ।

No. 7010. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 17b of the MS. described under No. 5938.

Complete.

Slightly different from the above in the beginning as given below :—

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरामः परमात्मा देवता; सीता भगवती शक्तिः, श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे जप विनियोगः ।

No. 7011. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 4. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 18a of the MS. described under No. 5781.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रमन्त्रस्य तुष्टकैश्चिकविश्वामित्र ऋषिः, अ-
नुष्टुप् छन्दः, सीताकल्याणसंयुक्तश्रीरामचन्द्रो देवता; रां बीजं,
मन्त्रः कीलकं, श्री शक्तिः, मम समस्तव्याघादिक्रममृगदुःखशोकव्यापि
परिहारार्थे श्रीरामचन्द्रभीत्यर्थे सकलाभीष्टफलसिद्ध्यर्थे जपे विनि-
योगः ।

See under number 7008 for the end and colophon.

No. 7012. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 86a of the MS. described under No. 633.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रमन्त्रस्य विश्वामित्रभगवानृषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, श्रीसीतालक्ष्मणसहितश्रीरामचन्द्रो देवता, श्रीसीतालक्ष्मणसहित-
श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

शिरो मे राघवः पातु फालं दशरथात्मजः ।

कौसलेयो दशौ पातु विश्वामित्रनियः श्रुती ॥

ब्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ।

See under the previous number for the end.

Colophon:

श्रीरामकवचं समाप्तम् ॥

No. 7013. रामकवचम्.
RĀMAKAVACAM.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 757.

Complete, as found in the Hiranyagarbhasainhitā of the Śruti-saṅgraha.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रमन्वस्य विश्वामित्रं ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता; रां चीजं, नमश्शक्तिः, आयेति कीलकं, मम श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

शिरो मे राघवं पातु फालं दशरथास्मजः ।

कौसलेयो हृषी पातु विश्वामित्रप्रियश्चुर्ती ॥

See under the previous number for the end.

Colophon :

इति श्रुतिसारसङ्ग्रहे परमरहस्ये हिरण्यगर्भसंहितायां श्रीरामकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7014. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 7a of the MS. described under No. 6231.

Incomplete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य विश्वामित्रो भगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरामचन्द्रप्रसादस्यां वासुदेवो देवता; रो चीजं, सीता इति ऋकिः, लक्ष्मण इति कीलकं, श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

इन्दीवरश्यामलमायताक्षं धनुर्धरं नीलजटावजूटम् ।

पार्श्वद्वये लक्ष्मणमैथिलीभ्यां निषेव्यमाणं प्रणतोऽस्मि रामम् ॥

No. 7015. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Substance, palm-leaf. Size, $11\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 7. Lines, 5 on a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 26b. The other works herein are Saumyajamātrpravardinacarya 1a, Yatirajavimśati 4a, Saumyajamātrmunyuttaradinacarya 10a, Prarthanāpañcaka 14a, Śrīgūparatnakōśa 15a, Ślōkadvaya 29a, Ślōkatraya 30a, Catuślōki 30b.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।

जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामकुटमण्डितम् ॥

सासिनूणधनुर्बीणपाणिं नक्षवरान्तकम् ।

स्वलीलया जगत्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥

The remaining portion is the same as in the work described under No. 7008.

No. 7016. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Substance, palm-leaf. Size, $14\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 6. Lines, 6 on a page. Character, Grantha. Condition, much injured. Appearance, new.

Begins on fol. 12b. The other works herein are Saumyajamātryōgidiñacarya (Pūrvā) 1a, Yatirajavimśiti 6a, Saumyajamātryōgidiñacarya (Uttarā) 8b, Prarthanāpañcaka 10b, Śristava 11a, Ślōkadvaya 15a, Catuślōki 15b, Śrīgūparatnakōśa 16a, Kṣamāśodasi 27a.

Complete.

Same as the above.

No. 7017. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 46a of the MS. described under No. 5858.

Complete, as found in the Viṣṇupurāṇa.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रमन्त्रस्य बुद्धकौशिक ऋषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, सीतालक्षणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेतश्रीरामचन्द्रो देवता; रां बीजं,
श्री शक्तिः, ह्री कीककं, मम सर्वाभिष्ठिसिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

* * * * *

ओ नमो भगवते रक्षोग्राय रघुनन्दनाय गुरवे सुप्रसन्नाय प्रण-
तार्तिहरायापरिमितवेजसे श्रीरामाय स्वादा ।

End :

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।

नरो न लिप्यते पापैः भुक्ति मुर्कं च विन्दति ॥

Colophon :

इति श्रीविष्णुपुराणे रामचन्द्रकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7018. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 3. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 82 of the MS. described under No. 6090.

Complete.

Same as the above.

No. 7019. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 68a of the MS. described under No. 5953.

Complete, as found in the Pādmapurāṇa.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रमन्त्रस्य वेदव्यासभगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता, श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

सज्जहकवची स्त्री चापवाणधरो युवा ।
गच्छन् ममाग्रतो नित्यं रामः पातु सलदमणः ॥
श्रीरामः पातु सलदमण ओत्रम इति ॥

Colophon :

इति पादपुराणे श्रीरामकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7020. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 13a of the M.S. described under No. 831.

Complete.

Same as the above.

No. 7021. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 15a of the M.S. described under No. 2040.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रमन्त्रस्य विश्वामित्रमगवानुषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता; श्रीराम इति वीजं, लक्ष्मणाग्रज इति शक्तिः, सीतावल्लभ इति कीलकं, मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

See under No. 7019 for the end.

Colophon :

रामकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7022. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 76 of the MS. described under No. 6231.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य विश्वामित्रभगवानृषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, रामचन्द्रपरमात्मा वासुदेवो देवता; सीता इति शक्तिः,
लक्ष्मण इति बीजं, रामचन्द्र इति कीलकं, रामचन्द्रप्रसादसिद्धचर्चे जपे
विनियोगः ।

See under No. 7019 for the end.

No. 7023. रामकवचम्.

RĀMAKAVACAM.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 45α of the MS. described under No. 369.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

शिरो मे राघवः पातु फालं दशरथात्मजः ।

कौसलेयो दशौ पातु विश्वामित्रप्रियश्चुचिः(ती) ॥

ब्राणं पातु मस्त्राणः मुखं सौमित्रिवत्सलः ।

दन्तान् दाशरथिः पातु ताळू सालप्रभेदनः ॥

End :

जगज्जैवैकमन्त्रेण रामनामाभिरक्षितम् ।

यः करे धारयेत् सर्वं करस्यास्सर्वसिद्धयः ॥

वज्रपञ्चरनामैतत् यो रामकवचं पठेत् ।

अव्याहताङ्गस्सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥

No. 7024. रामकवचवज्रपञ्चरम्.

RĀMAKAVACAVAJRAPĀNJARAM.

Pages, 5. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 74^a of the MS. described under No. 757.

Complete.

The repetition of this Mantra is believed to please Rama and to secure safety and protection to one from thieves, cruel animals, evil spirits, etc., as if one were inside an adamantine enclosure.

Beginning :

अगस्त्य उवाच—

शृणु वक्ष्यास्यहं सौम्य सुतीक्ष्णा सुनिसत्तम ।

अद्वैतानन्यचैतन्यशुद्धस त्वैकलक्षणम् ॥

वहिरन्तसुतीक्ष्णास्मिन् रामचन्द्रः प्रकाशते ।

तत्त्वविद्योगिनो नित्यं रमते चित्सुखात्मनि ॥

इति रामपदेनासी परब्रह्माभिधीयते ।

* * * *

अस्य श्रीरामकवचस्तोत्रमन्तर्स्य अगस्त्यभगवानुषिः, श्री वीजं, सीता शक्तिः, मां कीलकं, सर्वेचोरब्याप्रयत्नगन्धर्वमृतप्रेतपिण्याचकुत्रिम्-रोगज्वरप्रलयनिर्हरणार्थं श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्ध्यार्थं जपे विनियोगः ।

श्रीरामः पातु मे मूर्धि पूर्वस्मिन् रघुवंशजः ।

दक्षिणे मे रघुवरः पश्चिमे पातु राघवः ॥

End :

यः करे धारयेत्स्य कवचं वज्रपञ्चरम् ।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं लभेतत्र न संशयः ॥

सत्यवत्तौ रघुवरौ विमलौ बलाक्ष्मौ दैत्यान्तकौ सुरवरौ सुगुणौ महेशौ ।

• • • • • विप्रभियौ नृपवरौ मनसा स्मरामि ॥

No. 7025. रामकीलकम्.

RĀMAKILAKAM.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 18^a of the MS. described under No. 757.

Complete, as found in Agastynasamhita.

This Mantra is in praise of Rama. It is said to be as efficacious as the six-syllabled Rama-Mantra, and is intended to be repeated prior to the commencement of the repetition of the Ramamantra. This is called Rāmakīlaka as it is believed to have the power to enable one to fix Rāma in one's mind as if with the aid of a peg.

Beginning :

अगस्त्य उवाच—

मन्त्ररूपं प्रवक्ष्यामि शृणु नारद तत्परः ।
अनलादिमकारात्मं मन्त्रं पद्मर्णसंयुतम् ॥
षडक्षरात्मकं मन्त्रं तारकं ब्रह्मसंज्ञितम् ।
राजेन्द्रं राघवं रामं राजानं रघुनन्दनम् ॥
राजीवलोचनं वन्दे राक्षसारि रघूतमम् ।
रामभद्रं रघुवरं राजेशं रघुवल्लभम् ॥

End :

महोदवाय महते महेशाय महात्मने ।
मन्त्ररूपाय रामाय महतां पतये नमः ॥
इति श्रीरामचन्द्रस्य मन्त्रराजात्मकं स्तवम् ।
* * *
एवं स्तुत्वा जपेन्मन्त्रं पट्टसहस्रं दिने दिने ।
अष्टोत्तरसहस्रं वा यथाशक्त्यनुसारतः ॥

Colophon :

इत्यगस्त्यसंहितायां रामकीलकं समाप्तम् ॥

No. 7026. रामखड्डस्तोत्रमन्त्रः.

RĀMAKHADGASTÖTRAMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 71b of the MS. described under No. 235.
Complete.

The repetition of this Mântra is intended to please Râma. It is also believed to be efficacious in removing the fear of harm from evil spirits, the fear of an inundation by water, and the fear of being put into enchain'd bondage, etc.

Beginning :

अस्य श्रीरामस्तुतोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,
श्रीरामचन्द्रो देवता; रां बीजं, री शक्तिः, रुं कीलकं, मम श्रीरामचन्द्र-
प्रसादसिद्धार्थं गणपतिभयोदकभयवन्धनादिभय-
निवारणार्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओ ही श्री कौं हुं ओ से से क्षे क्षे फट् स्वाहा । श्रीराम-
चन्द्राय गरुडवाहनाय गजेन्द्रवरदाय श्रीरामचन्द्राय नमोऽस्तु नमोऽस्तु ।
ओ ही श्री कौं ओ यं ओ ही फट् स्वाहा ॥

No. 7027. रामगायत्री.

RÂMAGÂYATRÎ

Page, 1. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 6090.

Complete.

This Mantra is in the form of the Gâyatri-Mantra both in regard to its metre and in regard to the manner of contemplating the presiding deity, which manner consists in praying for inspiration to have thoughts about the deity contemplated. The word, Gâyatrî, implies that it protects the person who repeats that Mantra.

Beginning and End :

रामगायत्री—

दाशरथाय विद्धहे सीतावल्लभाय धीमहि । ततो रामः प्रचोद-
यात् ॥

No. 7028. रामगायत्री.

RĀMAGĀYATRĪ.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 95^a of the MS. described under No. 5566, wherein this has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

Same as the above.

No. 7029. रामगायत्री.

RĀMAGĀYATRĪ.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 45^b of the MS. described under No. 5858.
Complete.

Same as the above.

No. 7030. रामगायत्री.

RĀMAGĀYATRĪ.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 24^b of the MS. described under No. 581, wherein it is found to be in the Mantramalika group given as other work therein.

Complete.

Same as the above.

No. 7031. रामचन्द्राष्टाक्षरीमन्त्रः.

RĀMACANDRĀSTĀKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 6^a of the MS. described under No. 6090.
Complete.

This Mantra which consists of eight syllables is considered to have the power of safe-guarding one through Rāma's favour from the evils that may come from various quarters.

Beginning :

अस्य श्रीरामचन्द्राष्टाक्षरीमहामन्त्रस्य वसिष्ठः प्रसिद्धः, गायत्री छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता; रामो वीजं, जानकी शक्तिः, हनूमान् कीलकं, श्रीहनुभूत्सीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नपरिवारसमेतश्रीरामचन्द्रप्रसादसि-
द्धार्थे जपे चिनियोगः ।

End :

पूर्वपञ्चमदक्षिणोत्तराकाशपातालादिसर्वदिशं बन्धय बन्धय यं रे ले
वं शं पं सं हं लं कं सर्वभूतयक्षराक्षसान् नाशय नाशय वं वटु-
काय मूर्खवस्तुवरोमिति दिव्यन्धः । मनुः—ओं श्री राम रामाय नमः॥

No. 7032. रामचन्द्राष्टाक्षरीमन्त्रः.

RĀMACANDRĀSTĀKSARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 19b of the MS. described under No. 2373.

Complete.

Same as the above.

No. 7033. रामचन्द्राष्टाक्षरमन्त्रः.

RĀMACANDRĀSTĀKSARI MANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 44a of the MS. described under No. 5858.

Complete.

Same as the above.

No. 7034. रामतारकमन्त्रः.

RĀMATĀRAKAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 6090.

Incomplete.

The repetition of this Mantra is intended to enable one to
btain freedom from the binding of Samsara.

Beginning :

अस्य श्रीरामतारकमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः शिरसि, गायत्री छन्दः मुखे,
सीतारामचन्द्रो देवता हृदये, रां वीजं नाभी, री शक्तिः गुणे, स्वाहा।
इति कीलकं पादयोः, सम श्रीसीतारामचन्द्रप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनि-
योगः।

End :

अथ मनुः—

सीता रां रामाय नमः। पुनः न्यासध्यानपवपूजा कुर्यात्॥

हरिमर्कट मर्कट मन्त्रमिदं परिलिख्यति लिख्यति भूषित-
[(र्जद) ले।

यदि मु(नष्ट)ति मु(नष्ट)ति वामकरे यदि (परि)नश्यति नश्यति

[शत्रुकुले(लम्)॥

परिमुचति मुखति शृङ्खलिकाम्।

No. 7035. रामतारकपड़क्षरीब्रह्मविद्यामहामन्त्रः.

RĀMATĀRAKASADAKSARI BRAHMA VIDYĀMĀHA-
MANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5804, wherein it is given as Rāmabrahmavidyāṣaṅjaksarimanttra in the list of other works given therein.

Complete.

Similar to the above.

This Mantra consists of six syllables.

Beginning :

अस्य श्रीरामतारकपड़क्षरीब्रह्मविद्यामहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः,
गायत्री छन्दः, श्रीरामचन्द्रः परमात्मा देवता; रां वीजं दक्षिणस्तने, नम
शक्तिः वामस्तने, रामायेति कीलकं हृदि, श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्ध्यर्थं
जपे विनियोगः।

End:

गुरुदेवताल्मैक्यं विभावयन् दिनेदिने षट्सहस्रं त्रिसहस्रं सहस्रं
त्रिशतं शतमेव वा मूलमन्त्रं मौनेन जपेत् । मनुः रामाय नमः ॥

No. 7036. रामतारकपडक्षरीमन्त्रः.

RĀMATĀRAKASADAKṢARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 9b of the MS. described under No. 2886.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीरामतारकपडक्षरीमन्त्रस्य ब्रह्मा त्रिष्णः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीरामो देवता ; राम बीजं, री शक्तिः, रु कीलकं, सीतारामप्रीत्यर्थं जपे
विनियोगः ।

End:

पूर्ववद्ग्रथितान्यत् तस्याद्यं त्रिः प्रकल्पयेत् ।
विद्भर्गथितं नाम मन्त्रलक्षणसुत्तमम् ॥
सर्वकर्मकरं प्रोक्तं सर्वैश्वर्यफलप्रदम् ।
एवमेते प्रयोगाः स्युः सिद्धमन्त्रस्य सिद्धिदाः ॥

No. 7037. रामदशास्त्रीमन्त्रः.

RĀMADAŚĀKSARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 287b of MS. described under No. 5477, wherein
it is found to be in the Mantramālikā in the list of other works
given therein.

Complete.

This Mantra consists of ten syllables and is believed to be
effacious in the accomplishment of one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीराम(दशाक्षरी)मन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता; रं बीजं, ह्रीं शक्तिः, गम इष्टार्थसिद्धये विनियोगः।

End :

मन्त्रः—

ओं ह्रीं (श्री कीं) रं रामाय नमः ॥

Colophon :

इति रामदशाक्षरी ॥

No. 7038. रामदशाक्षरीमन्त्रः.

RĀMADĀSAKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 244a of the MS. described under No. 581, wherein it is found to be in the Mantramālikā group given as other work therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीराम(दशाक्षरी)मन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीरामो देवता; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ममेष्टकाम्यार्थसिद्धये विनियोगः।

End :

मन्त्रः—

ओं ह्रीं श्रीं (कीं रं) रामाय नमः ॥

No. 7039. रामदशाक्षरीमन्त्रः.

RĀMADĀSAKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 94b of the MS. described under No. 5566.

Complete.

Same as the above.

No. 7040. रामदशाक्षरीमन्त्रः.
RĀMADASĀKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 24a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā group given as other work therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning and End :

ॐ जानकीवल्लभाय स्वाहा — इति दशाक्षरी ॥

No. 7041. रामदुर्गकवचः.
RĀMADURGAKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 99a of the MS. described under No. 2949.

Complete.

The repetition of this Mantra which is addressed to Rāma is to secure protection for one from all dangers, as if one were protected by an impenetrable armour. It is believed to be also efficacious in wiping off one's sins and in securing salvation.

Beginning :

अस्य श्रीरामदुर्गकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सीतारामचन्द्रो देवता; रं बीजं, नं शक्तिः, मः कीलकं, सीता-रामचन्द्रप्रसादासिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

* * * *

श्रीरामो रक्षतु भान्यां रक्षेद्यान्यां च लक्षणः।

प्रतीच्यां भरतो रक्षेदुदीच्यां शत्रुसूदनः॥

ईशान्यां जानकी रक्षेदामयां सूर्यनन्दनः।

End :

रामदुर्गी पठेद्वक्तव्या सर्वोपद्रवनाशनम्।

सर्वपापक्षयं नृणां स गच्छेद्वैष्णवं पदम् ॥
 अक्षयवाणतूणीरसमारोपितकामुकः ।
 करे विराजितशरः श्रीरामदशरणं मम ॥

No. 7042. रामदुर्गम्.
 RĀMADURGAM.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 757.

Complete.

The authorship of this Mantra is attributed to Visvāmitra.
 Similar to the above.

Beginning :

विश्वामित्र उवाच—

श्रीरामो रक्षतु प्राच्यां याम्यां चैव स लक्ष्मणः ।
 प्रतीच्यां भरतो रक्षेदुदीच्यां शत्रुसूदनः ॥
 ईशान्यां जानकी रक्षेदामनेद्या सूर्यनन्दनः ॥
 विर्भाषणश्च नैरुत्यां वायव्यां वायुनन्दनः ॥
 ऊर्ध्वं रक्षेन्महाविष्णुमध्यं रक्षेन्नृकेसरी ।
 श्रीरामाल्ये महादुर्गे विश्वामित्रकृतं शुभम् ॥
 यः पठेद्वयकाले तु भयं तत्य विनश्यति ।
 रामदुर्गे पठेद्वक्त्वा सर्वोपद्रवनाशनम् ॥

End :

श्रीराम शत्रुसङ्खान् वै जहि मर्दय धातय ।
 भूतप्रेतपिशाचादीन् श्रीराम तु विनाशय ॥

Colophon :

इति विश्वामित्रविरचितं रामदुर्गे सपूर्णम् ॥

No. 7043. रामदुर्गम्.

RĀMADURGAM.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 88^b of the MS. described under No. 673.

Complete.

Similar to the above.

See under the previous number for the beginning.

End :

रामदुर्गे पठेन्नित्यं सर्वोपद्रवनाशनम् ।
सर्वशतुहरं नृणां स गच्छेद्वैष्णवं पदम् ॥

No. 7044. रामदुर्गम्.

RĀMADURGAM.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 16^a of the MS. described under No. 5938.

Complete.

Similar to the above.

See under the previous number for the beginning.

End :

यः पठेद्द्वयकाले तु सर्वशत्रुविनाशनम् ।
सर्वसम्पत्तदं नृणां विष्णुलोकं च शाश्वतम् ॥

Colophon :

श्रीरामदुर्गे सम्पूर्णम् ॥

No. 7045. रामद्वादशाक्षरीमन्त्रः.
RĀMADVĀDAŠĀKSARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 287^b of the MS. described under No. 5477.

Complete.

This Mantra consists of 12 syllables, and is addressed to Rāma; its repetition is believed to enable one to accomplish one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीरामद्वादशाक्षरीमन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता; रं बीजं, श्री शक्तिः, ममेष्टकाम्यार्थसिद्धयर्थे विनियोगः ।

End :

मन्त्रः—

ओ ह्री भरताग्रज राम क्ली स्वाहा । पूर्ववज्रपहोमः ॥

Colophon :

इति रामद्वादशाक्षरी ॥

No. 7046. रामद्वादशाक्षरीमन्त्रः.

RĀMADVĀDAŚĀKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 244a of the MS. described under No. 581, wherein it is found to be in the Mantramālikā group given in the list of other works therein.

Incomplete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्री(राम)द्वादशाक्षरमन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीरामो देवता, रं बीजं, श्री शक्तिः, ममेष्टकाम्यार्थसिद्धयर्थे विनियोगः ।

End :

ध्यानार्चनादि पूर्ववत् । मन्त्रः—ओ ह्री (भरताग्रज राम क्ली स्वाहा) ॥

No. 7047. रामद्वादशाक्षरीमन्त्रः.

RĀMADVĀDAŚĀKṢARIMANTRAH.

Page, 2. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 94b of the MS. described under No. 5566.

Complete.

Same as the above.

No. 7048. राममन्त्रः.

RĀMAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 12^b of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The due repetition of this Mantra is believed to secure the grace of Rāma.

Beginning :

रं रामाय नमः इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीराममहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीरामो
देवता; श्रीरामप्रेरणया रामश्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।**End :**

ओं रं रामाय नमः ओ—इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7049. राममन्त्रः.

RĀMAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 28^b of the MS. described under No. 5477.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :अस्य श्रीराममन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीरामचन्द्रो
देवता; रं चीजं, नमशक्तिः, श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्धचर्ये विनियोगः ।**End :**

मन्त्रः—

रं रामाय नमः । पुनश्चरणमक्षरलक्ष्मं दक्षांशं तर्पणहोमः ॥

No. 7050. राममन्त्रः.

RĀMAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 243^b of the MS. described under No. 581,
wherein it is found to be in the Maṇtramalika group.

Complete.

Different from the above only in the end which is given below :—

इति मूलमन्त्रः । पुरश्चरणं ५ लक्षम् । विश्वफलपत्रपुष्प(व्येण)मृत-
मधुशक्कराप्लुतेन दशांशहोमः ॥

No. 7051. राममन्त्रः.

RĀMAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 94b of the MS. described under No. 5566.

Complete.

Same as the above

No. 7052. राममन्त्रकवचः.

RĀMAMANTRAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 6 on page.

Begins on fol. 16a of the M⁴. described under No. 757.

Complete, as found in the Brahwayamala.

The repetition of this Kavasamantra is believed to be a necessary preliminary to the repetition of the Rāmamantra.

Beginning :

पार्वत्युवाच—

भगवन् सर्वदेवेश सर्वदेवनमस्तुतः ।

सर्वे मे कथितं देव राममन्त्रं विशेषतः ॥

त्रैलोक्यमोहनं रामकवचं मम सूचितम् ।

कथयस्व महादेव यथाहं तत्र वल्लभा ॥

* * * *

अस्य श्रीराममन्त्रकवचमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,
श्रीरामचन्द्रो देवता, मम चतुर्वर्गसाधने विनियोगः ।

प्रणवो मे शिरः पातु तारकत्रिलोपधृत् ।

अनन्ताभिसद्वेष्टन्दुर्नीसोमकाक्षरोऽवतु ॥

राम रामाय नम इति पद्मो भुक्तिसुक्तिदः ।
फालं पायान्नेत्रयुग्मं रामो व्यक्तरसंज्ञितः ॥

End :

अष्टौत्तरशतं जप्त्वा दशोऽहोममाचरेत् ।
ततस्तुल्वा तु कवचं सर्वकार्याणि साधयेत् ॥
मन्त्रसिद्धिर्भेत्तस्य पुरथर्यी विना हि सा ।

इदं कवचमज्जात्वा पूजये(प्रजपे)द्रामगन्तकम् ॥
शतलक्ष्म प्रजसोऽपि न मन्त्ररिसद्धिदायकः ।
स शब्दात्मामोति शोचतां मृतिमामुयात् ॥
सम्भवात्वा तु कवचं मन्त्रस्याच्छीव्रसिद्धिदः ।
तस्मात् स्तोत्रं जपेन्नित्यं सर्वसिद्धिफलप्रदम् ॥

Cloophon:

इति श्रीब्रह्मयामले पार्वतीश्वरसंचाद रामस्य नेत्रोक्त्यमोहनं नाम
कवचं संपूर्णम् ॥

No. 7053. राममालामन्त्रः.

RĀMAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 6a of the MS. described under No. 6090.

Complete.

This Mantra is in praise of Rama under various significant names. Its repetition is considered to have the power of destroying evil spirits and also one's enemies.

Beginning :

ओ नमो भगवते श्रीरामचन्द्राय अपरिमिततेजसे वीरबलमहापरा-
क्रमाय रणोद्गमयकूराय हरचापखण्डनाय कोदण्डदीक्षागुरवे परशुराम-
गर्वोपहरणाय विश्वामित्रयागसंरक्षणाय ताटकामाणनाशनाय अहल्याशाप-
विमोचनाय ।

End:

ऐ सर्वविद्याय की जगत्त्वदशीकरणाय सौः सर्वजनमनसंशोभ-
नाशाय श्री महासंप्रदाय नौ भूषण्डलाधिपतये द्वा चिरञ्जीविने श्री-
रामाय सर्वभूतप्रेतप्रियाचराक्षसदानवर्मदनरामाय रां री रुं रै रौं र-
पम सकलशत्रुन्सहर श्रीबडचानलरामाय अघोररूपाय हुं फट् स्वाहा॥
द्वादशकृत्वः जपेत् ॥

No. 7054. राममालामन्त्रः.

RĀMAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 2373,
wherein this has been omitted to be included in the list of the works
contained therein.

Complete.

Same as the above.

No. 7055. राममालामन्त्रः.

RĀMAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 44a of the MS. described under No. 5858.

Complete.

Same as the above.

No. 7056. राममालामन्त्रः.

RĀMAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 1. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 6090,
wherein this has been omitted to be included in the list of other
works contained therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning and End:

ओ नमो मगवते रथुनन्दनाय रक्षोऽविश(शार)दाय मधुरमसङ्ग-
वदनाय अभिततेजसे बलाय रामाय विष्णवे नमः ॥

No. 7057. राममालामन्त्रः.
RĀMAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 45b of the MS. described under No. 5858, wherein this has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

Same as the above.

No. 7058. राममालामन्त्रः.
RĀMAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 287b of the MS. described under No. 5477, wherein this is found in the Mantramalika 273a given in the list of other works contained therein.

Complete.

Same as the above.

No. 7059. राममालामन्त्रः.
RĀMAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 244a of the MS. described under No. 581, wherein this is found in the Mantramalika 229a given in the list of other works contained therein.

Complete.

Same as the above.

No. 7060. राममालामन्त्रः.
RĀMAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 94b of the MS. described under No. 5566.

Complete.

Same as the above.

No. 7061. राममालामन्त्रः.

RĀMAMĀLĀMĀNTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 17b of the MS. described under No. 5864, wherein this has been omitted to be included among the other works contained therein.

Complete.

Same as the above.

Colophon :

अयं मालामन्त्रः ॥

No. 7062. राममालामन्त्रः.

RĀMAMĀLĀMĀNTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 17b of the MS. described under No. 757.

Complete.

Same as the above with the difference that Rāmadasāksari-mantra is added on at the end.

No. 7063. राममालामन्त्रः.

RĀMAMĀLĀMĀNTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 17b of the MS. described under No. 5864.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीराममालामन्त्रस्य वसिष्ठ जापिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री-राममालामन्त्रो देवता; रां चीजं, री शक्तिः, रूं कीलकं, मम श्री-रामचन्द्रमालामन्त्रदेवताप्रसादासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

End :

ओं मां मी मूं मैं मौं मः, ओं रां री रूं रैं रौं रः, हां ही हूं हैं हैं हः, ग्रां श्री शूं ग्रैं ग्रः, ओं लां ली लूं लैं लः, ओं ह्रां ह्री हूं ह्रैं ह्रौं हः हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7064. रामवज्रकवचम्,
RAMAVAJRAKAVACAM.

Pages, 4 Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1b of the MS. described under No. 5864

Complete.

The repetition of this Mantra relating to Rama is believed to ensure one long life, health and prosperity.

Beginning :

अस्य श्रीरामवज्रकवचमन्त्रस्य अगस्त्य जपिः, गायत्री छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता; रां बीजं, नमशक्तिः, आयेति कीलकं, श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

* * * *

श्रीरामः पातु मे मूर्धि ततपूर्वे रघुवशजः।

* * * रघुपतिः कालं दशरथात्मजः॥

भ्रुवौ दूर्वादलश्यामः तद्योर्मध्यं जनार्दनः।

ओत्रे मे पातु रामेन्द्रो हृषी राजीवलोचनः॥

End:

इतीदं रामचन्द्रस्य कवचं वज्रनामकम्।

गुणाद्वृष्टतमं दिव्यं सुतीक्ष्ण मुनिसत्तम॥

यः पठेच्छृण्याद्वापि श्रावयेद्वा समाहितः।

* * * *

यः पठेद्वारयेत्तिख्यं कवचं वज्रसंज्ञिकम्।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं लभते नाम संशयः॥

Colophon :

इति श्रीरामवज्रकवचं संपूर्णम्॥

No. 7065. रामषडक्षरीतारकब्रह्ममहामन्त्रः.
**RĀMASADAKṢABITĀRAKABRAHMAMAHĀ-
MANTRAH.**

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 48o of the MS. described under No. 235.

Complete.

This Mantra consisting of six syllables is addressed to Rama. It is called Tārakabrahmamahāmantra, because its repetition is believed to be capable of enabling one to obtain salvation.

Beginning :

ततः द्विराचन्य मूलमन्त्रेण भाणायामत्रयं कृत्वा पूरकं १२,
कुम्भकं १६, रेचकं १०. सङ्कल्पः—मम उपात्तसमस्तदुरितक्षयहारा
श्रीसीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्ननुमत्समेतश्रीरामचन्द्रमुद्दिश्य श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थं
श्रीरामचन्द्रषडक्षरीतारकब्रह्ममहामन्त्रजपं करिष्ये ।

अस्य श्रीरामषडक्षरीतारकब्रह्ममहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः शिरसि,
गायत्री छन्दः मुखे, जिहाये श्रीरामचन्द्रो देवता ।

End :

मनुः—
कृं रामाय नमः, ओं कृं रामाय नमः मूळं षट्सहस्रम् । (ल) पृथि-
व्यात्मने गन्धसतन्मात्रप्रकृत्यानन्दात्मने श्रीरामचन्द्राय गन्धमुद्रया दिव्य-
श्रीगन्धं कल्पयामि, हं आकाशात्मने शब्दतन्मात्रप्रकृत्यानन्दात्मने श्री-
रामचन्द्राय पुष्पमुद्रया नानाविधिपुष्पाणि कल्पयामि, वौषट् यं वाय-
व्यात्मने स्पर्शतन्मात्रप्रकृत्यानन्दात्मने श्रीशूपमुद्रया दिव्यश्रीशूपं कल्प-
यामि, रं वह्यात्मने रूपतन्मात्रप्रकृत्यानन्दात्मने श्रीरामचन्द्राय दीपमुद्रया
सहस्रनीराजनं सर्पयामि ॥

No. 7066. रामषडक्षरीमन्त्रः.
RĀMASADAKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 6098.

Complete.

This Mantra also consists of six syllables. Its repetition is held to be able to secure the grace of Rama. The Mantra-formula here is the same as in Rāmatrakasādakṣarīrahmavidyāmabhā-mantra : *vide* No. 7035.

Beginning :

अस्य श्रीरामपदक्षरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री उन्दः, श्रीरामो देवता ; रां वीजं, नमशक्तिः, आयेति कीलकं, श्रीरामप्रसाद-सिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

शहुं चक्रं गदापद्मं वेनुकौस्तुभगारुडाः ।

श्रीवत्सवनमाले च नव मुद्राश्च दर्शयेत् ॥

मनुः—रां रामाय नमः ॥

No. 7067. रामपदक्षरीमन्त्रः.

RĀMASADAKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 71a of the MS. described under No. 285.

Complete.

Different from the above only in the end as given below :—

तदनन्तरं पवपूजां कुर्यात् । मनुः—रां रामाय नमः ।

तदशांशगायत्री—

दाशरथाय विद्धाहे सीतावल्लभाय धीमहि । तं नो रामः प्रचोदयात् ॥

No. 7068. रामपदक्षरीमन्त्रः.

RĀMASADAKṢARIMANTRAH

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 45b of the MS. described under No. 5858.

Complete.

Same as the above.

No. 7069. रामषडक्षरीमन्त्रः.

RĀMASADAKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on f. I. 136 of the MS. described under No. 8045.
Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीरामषडक्षरीमहामन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः, गायत्री छन्दः,
श्रीरामचन्द्रो देवता; रां वीजं, रुं शक्तिः, रौं कीलकं, मम श्रीराम-
चन्द्रप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

लं इति पञ्चपूजा । अथ मनुः ।

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः . . . ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा दुष्कालमना वा प्रकृतिस्वभावात् ।

करोमि यथत् सकलं परस्मै श्रीरामचन्द्रेति(नद्राय) सर्मर्पयामि ॥

No. 7070. रामषडक्षरीमन्त्रः.

RĀMASADAKṢARIMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, 10 $\frac{1}{2}$ x 1 inches. Pages, 3. Lines, 3
on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appear-
ance, new.

Incomplete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीरामषडक्षरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,
सीतारामो देवता, रां वीजं, री शक्तिः, रुं कीलकं, रामषडक्षरीप्रसाद-
सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

कालाम्भोधरकान्तिकान्तमनिशं वीरासनेऽध्यासिनं
 मुद्रां ज्ञानमयी दधानमपरं हस्ताम्बुजं जानु(नि) ।
 सीतां पार्थगतां सरोहकरां विचुलिभां राधवं
 पश्यन्ती विविधाङ्गदादिमकुटाकल्पोऽज्वलाङ्गं भजे ॥
 लं पृथिव्यादिपच्चपूजा ॥

No. 7071. रामपदक्षरीमन्त्रः

RĀMASADAKṢARIMANTRAH

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 63a of the MS. described under No. 21.

Complete.

Different from the above only in the end as given below :—

पञ्चपूजा । मनुः—ओं श्री रामाय नमः । यथाशक्ति जपः,
 अपान्ते दिग्बिसर्गः ॥

No. 7072. रामपदक्षरीमन्त्रः

RĀMASADAKṢARIMANTRAH

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 57a of the MS. described under No. 5660.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीरामपदक्षरीमहामन्त्रस्य व्रता ऋषिः, गायत्री छन्दः,
 श्रीज्ञानकीसिद्धितश्रीरामचन्द्रो देवता; ओं रां वीजे, ओं री शक्तिः,
 ओं सु कीलकं, मम श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

पञ्चपूजा । मनुः—ओं रामाय नमः ।
 उत्तरन्यासं कुर्यात् । दिग्बिमोक्षः ॥

No. 7073. रामपोडशास्त्रीमन्त्रः.
RĀMASŪDASĀKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 288a of the MS. described under No. 5477, wherein this is found in the Mantramalikā 273a given therein in the list of other works.

Complete.

This Mantra as given in the extract is found to consist of more than 16 syllables.

Beginning and End :

पुनर्व्योदशास्त्रीमन्त्रभेदः—
ओं द्रां दाशरथाय सीतावल्लभाय तैलोक्यनाथाय नमः । पूर्ववज्र-
फहोमः ॥

Colophon :

इति राम(पोडशास्त्री)मन्त्रभेदः ॥

No. 7074. रामपोडशास्त्रीमन्त्रः.
RĀMASŪDASĀKṢARIMANTRAH.

Page, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 244a of the MS. described under No. 581, wherein this is found in the Mantramalikā 222a given in the list of other works contained therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning and End :

पोडशास्त्रमन्त्रः भक्तारान्तरम्—
ओं ह्वी द्रां दाशरथाय सीतावल्लभाय तैलोक्यनाथाय नमः ॥

No. 7075. रामपोडशास्त्रीमन्त्रः.
RĀMASŪDASĀKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 95a of the MS. described under No. 5566.

Complete.

Same as the above.

No. 7076. रामषोङ्गशाक्षरीमन्त्रः.
RĀMASODAŚĀKSARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 95v of the MS. described under No. 5566.

Complete.

Same as the above

No. 7077. रामषोङ्गशाक्षरीमन्त्रः.
RĀMASODAŚĀKSARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 244a of the MS. described under No. 581, wherein this is found in the Mantramalika given in the list of other works contained therein.

Complete.

This Mantra consists of 16 syllables only, if the last word is not taken into account.

Beginning :

अस्य षोडशाक्षरश्रीरामपन्तस्य अगस्त्य ऋषिः, दृहती छन्दः,
श्रीरामो देवता; हे बीजं, रे शक्तिः, समेषुकाम्यार्थसिद्धार्थे विनि-
योगः ।

End :

नमः सीतापतये रामाय हन हन हुं कट् स्वाहा ॥

No. 7078. रामषोङ्गशाक्षरीमन्त्रः.
RĀMASODAŚĀKSARIMANTRAH.

Page, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 287b of the MS. described under No. 5477, wherein this is found in the Mantramalika 273a given in the list of other works contained therein.

Complete.

Same as the above.

No. 7079. रामाष्ट्रादशाक्षरमन्त्रः,
RĀMĀSTĀDASĀKṢARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 17b of the MS. described under No. 757, wherein this has been omitted to be included in the other works contained therein.

Complete.

This Mantra consists of 18 syllables and is held to be able to secure protection to one at all times.

Beginning:

ओं हीं जानकीवल्लभाय स्वाहेत्यमेत्यां मां सदाचतु । ओं हीं श्री भरताप्रजराम कौं स्वाहेति पातु मां नैरूत्यां सदा प्रसुः । ओं श्री जानकीवल्लभाय स्वाहा इति वायव्यां(व्याव्यां) मां सदाचतु ।

End:

ओं नमो भगवते रामाय महापुरुषाय नमः । इत्यष्ट्रादशाक्षरो मन्त्रो नामेव सर्वदाचतु ॥

No. 7080. राशिन्यासः,

RĀSHINYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 44b of the MS. described under No. 673.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while repeating the Mantra-formula formed by combining the successive letters of the alphabet with each of the names of the twelve constellations which constitute the zodiacal signs.

Beginning:

अथ राशिन्यासः—

रक्तं खेतं हरिद्रूणं पाण्डु चितं सितं स्मरेत् ।

पिण्डपिण्डलौ बमुकर्वुरा नीलधूमकाः ॥

इति ध्यात्वा अं आं इं ईं मेषराशये नमः दक्षगुल्फे, उं ऊं वृषभराशये नमः दक्षजानुनि, ऋं ऋं मिथुनराशये नमः दक्षवृषणे ।

End:

ओं तं ये दं वं मकराशये नमः वामदृष्टेः, पं फं वं मं
कुम्भराशये नमः वामजानुनिः, यं रं लं वं शं वं मणिराशये नमः
वामगुल्फे, इति मातृकावर्णीः न्यस्येत् ॥

Colophon:

इति राजिन्यासस्तमासः ॥

No. 7081. राहुकवचम्.

RĀHUKAVACAM

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 51a of the MS. described under No. 2886, wherein it has been given as Navagrahakavacam in the list of other works given therein.

Complete.

Addressed to Rahu considered to be a planet. This Mantra is intended to propitiate that planet.

Beginning:

अस्य श्रीराहुकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य चन्द्र ऋषिः, अनुष्टुप्, राहुदेवता; सर्वार्थीष्ठ—गः ।

* * * *

नीलाम्बरः शिरः पातु ललाटं लोकवन्दितः।

चक्रुपी पातु मे राहु श्रोते मेऽर्धशरीरवान् ॥

End:

स्वर्भानुर्जानुर्जी पातु जह्ने मे पातु चाप्यहिः।
गुरुकौ श्रहाधिष्ठः पातु नीलचन्दन . . . ॥

No. 7082. राहुमन्त्रः.

RÂHUMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 311b of the MS. described under No. 5477.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीराहुग्रहमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, राहुदेवता, गायत्री छन्दः,
मम राहुप्रसादसिद्धर्थं विनियोगः ।

End :

मन्त्रः—ओ हौ हौ हूं राहुे नमः। लक्षं जपः। दशांशहोमः॥

No. 7083. रुद्रकवचम्.

RUDRAKAVACAM.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 73a of the MS. described under No. 152.

Complete as found in the Vâyupurâna.

This Kavacamantra is addressed to Rudra, i.e., Siva; and its repetition is held to enable one to secure his favour and protection.

Beginning :

अस्य श्रीरुद्रकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदुर्वासा
ऋषिः, श्रीमहारुद्रो देवता; ओ बीजं, हौं शक्तिः, श्रीः कीलकं, मम
कायजीवसंरक्षणार्थं श्रीमहादेवप्रसादसिद्धर्थं जपे विनियोगः ।

* * * *

प्रणम्य शिरसा रुद्रं स्वयम्भूर्भुवनेश्वरः ।

एकं सर्वगतं देवं सर्वदेवमयं प्रभुम् ॥

रुद्रकौचं प्रवक्ष्यामि अङ्गप्राणसुरक्षितम् ।

अहोरात्रं महादेव रक्षाभू(यै)देवनिर्मितम् ॥

ब्रह्मोवाच—

रुद्रो ममग्रतः पातु पृष्ठतः पातु शङ्करः ।

कपर्दी दक्षिणं पातु वामपाद्वं तथा हरः ॥

End :

त्राहि नाहि जगन्नाथ त्राहि त्राहि जगन्मय ।

त्राहि मां पार्वतीकान्त त्राहि मां भक्तवत्सल ॥

आसन्ध्यं कीर्तयेच्छस्तच्चा प्रव्याति परमां गतिम् ।

मुच्यते सर्वपापेम्यो रुदलोकं स गच्छति ॥

Colophon :

इति वायुपुराणे रुद्रकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7084. रुद्रकवचम्.

RUDRAKAVACAM

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 130a of the M.S. described under No. 119.

Complete.

Similar to the above.

The popular belief regarding the religious efficacy of this Mantra is well expressed in the concluding stanzas.

Beginning :

अस्य रुद्रकवचस्य अनुष्टुप् छन्दः, दूर्वासमगवानृषिः, त्रियम्बक-
रुद्रो देवता ; हीं बीजं, हों शक्तिः, हैं कीलकं, श्रीसदाशिवमहादेवप्री-
त्यर्थं जपे विनिगोगः ।

प्रणम्य शिरसा देवं सर्वदेवमयं प्रसुम् ।

महादेवप्रसादेन दूर्वासमुनिकल्पितम् ॥

अथातो रुद्रकवचं प्रवत्याम्यानुपूर्विकम् ।

रहस्यं देवदेवेशं रक्षार्थं निर्मितं (तं)पुरा ॥

रुद्रो मामग्रतः पातु पृष्ठतः पातु शङ्करः ।

कपर्दी दक्षिणे पातु वामपाद्वं हरो हरः ।

End:

पुत्रार्थी लभते पुत्रान् धनार्थी लभते धनम् ।
 विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी मोक्षमामुखात् ॥
 इत्येतदुद्ग्रकवचं पवित्रं पापनाशनम् ।
 मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकं स गच्छति ॥

Colophon:

श्रीरुद्रकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7085. रुद्रकवचम्.

RUDRAKAVACAM.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 148a of the MS. described under No. 781.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

प्रणम्य शिरसा देवं स्वयंभूमूर्वनेश्वरः ।
 एकं सर्वगतन्देवं सर्वलोकमहेश्वरम् ॥
 रुद्रकीचं प्रवक्ष्यामि अङ्गप्राणाभिरक्षितम् ।
 अहोरात्रं प्रसादेन रक्षार्थं देवनिर्भितम् ॥
 अस्य श्रीरुद्रकवचस्तोत्रमन्वस्य अघोर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
 मृत्युज्ञयत्रियम्बकरुद्रो देवता; हाँ बीजं, श्रीः शक्तिः, हूँ कीलकं, मम
 इष्टकान्यार्थनित्या(सिद्ध)ये श्रीरुद्रप्रसादसिद्धये जपे विनियोगः ।

रुद्रो ममाग्रतः पातु पृष्ठतः पातु शङ्करः ।

End:

त्राहि मां पार्वतीनाथ त्राहि मां त्रिपुरान्तक ।
 त्रिसन्ध्यं कीर्तयेद्ग्रकच्चा प्राप्नोति परमां गतिम् ॥

Colophon:

रुद्रकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7086. रुद्रकवचम्.

RUDRAKAVACAM.

Pages, 6. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 5422.

Complete.

Same as the above.

No. 7087. रुद्रकवचम्.

RUDRAKAVACAM.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 53a of the MS. described under No. 6600.

Complete.

Same as the above.

No. 7088. रुद्रमालामन्त्रः.

RUDRAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 84b of the MS. described under No. 21, wherein it is given as Rudramantra.

Complete.

This Mantra, which praises Rudra under different significant names, is held to have the power to secure protection to one, to cause annoyance to one's enemies in various ways, to drive off evil spirits, and to counteract the effects of hostile Mantras, etc.

Beginning :

शरीररक्षणरुद्रमन्त्रः—

ओं नमः पशुपतये नानाभूताधिपतये ओं नमो रुद्राय ल ल ल
ल ल ल ल स्वरावणबर्लि विहर नृत्य नृत्य श्मशानभस्मार्चितशरीराय
उप्रतेजोमयाय.

End :

विद्वांस विद्वांस प्रवेशय प्रवेशय आवेशय आवेशय पूर्वप्रतिष्ठानां
साधु शोषाय परविद्याच्छेदनाय ह्रा ह्री हुं फट् शिवाय इति उच्चाटनम्॥

No. 7089. रुद्रहृदयम्.

RUDRAHRDAYAM.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 67a of the MS. described under No. 132.

Complete as found in the Skanda purāṇa.

This Mantra is also addressed to Rudra. Its repetition is held to be efficacious in removing one's sins, in conferring prosperity and long life on one, and in enabling one to obtain salvation. The word Hṛdaya as applied to Mantras indicates their high religious value and mystic efficacy and importance.

Beginning :

अस्य श्रीरुद्रहृदयस्तोत्रमन्वस्य नन्दिकेश्वर ऋषिः, सदाशिवो देवता,
अनुष्टुप् छन्दः, सदाशिवप्रीत्यर्थे रुद्रहृदयस्तोत्रपठने विनियोगः ।

ओऽग्नराय विरूपाय विशुद्धाय नमो नमः ।

शम्भुस्त्ववियं मुभूर्भूर्गवान् भूर्भूदाय नमो नमः ॥

अग्निमीठे नमस्तुभ्यं मा नस्तोके नमो नमः ।

अग्नये रुद्ररूपाय अग्न आ याहि वीतये ॥

End :

रुद्रस्य हृदयं प्रोक्तं स्तवं नन्दिसुखेहद(रित)म् ।

त्रिसन्ध्यं यः पठेत् स्तोत्रं सोऽपि सायुज्यमाप्नुयात् ॥

ब्रूणहत्यादिकं पापं स्मरणादेव नश्यति ।

किमत्र बहुनोक्तेन पापं यत् पूर्वसवितम् ॥

तत्सर्वं नश्यति क्षिप्रं स्तोत्रपाठात् संशयः ।

आयुरारोग्यमैश्वर्यज्ञानविज्ञपदं भवेत् ॥

Colophon :

इति श्रीमत्स्कान्दे काशिखण्डे नन्दिकेश्वरप्रोक्ते रुद्रहृदयं समाप्तम् ॥

No. 7090 रुद्रहृदयम्.

RUDRAHRDAYAM.

Pages, 9. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 48a of the MS. described under No. 5836.

Complete.

Same as the above.

No. 7091. रुद्रहृदयम्.

RUDRAHRDAYAM.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 96² of the MS. described under No. 119.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीरुद्रहृदयस्तोत्रमन्तस्य वेदव्यास ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
 . . . येति शक्तिः, नम इति कीडकं, श्रीउमामहेश्वरभीत्यर्थे
 विनियोगः।

शुक्र उवाच —

देवेशसर्वदेवेषु कस्मिन् देवाश्च सर्वशः ।

कस्य शुश्रुम . . . मवन्ति च ॥

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा प्रस्तुवाच पिता शुक्रम् ।

श्रीवेदव्यास उवाच —

सर्वदेवात्मको रुद्रस्तर्वे देवाशिश्वात्मकाः ।

* * * *

रुद्रो दे(दि)वा उमा रात्रिस्तर्मै तस्यै नमो नमः ।

रुद्रो याग उमा वेदिन्तर्मै तस्यै नमो नमः ॥

End :

यत्र यत्र भवेत् साध्यामिमं मन्त्रमुदारयेत् ।

रुद्रस्य इदं पुण्येष्वमेतदनामयम् ॥

दिव्यं च दैवतानां च सर्वस्य जगतः प्रियम् ।

* * * * *

देवतायतने पक्षं मासं पक्षार्धमेव वा ।

ब्रह्मविष्णुमहेशानां क्रमालोकानवामुयात् ॥

Colophon :

श्रीउमामहेश्वरे रुद्रहदये संपूर्णम् ॥

No. 7092. रुद्रहोमः.

RUDRAHOMAH.

Pages, 20. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 162a of the MS. described under No. 6414,
Complete.

On a fire-offering to propitiate Rudra by repeating the Vedic
passages forming the 5th Prasna in the 4th Kanda of the
Taittiriya-Samhita. This offering is considered to have the effect
of averting evils of various kinds.

The Vedic sentences are only indicated here by their
beginnings.

Beginning :

| | |
|------------------|-----------------------------|
| नमस्ते रुद्र | नमः स्वाहा—रुद्राय इदं, |
| या त इषुः | मृडय स्वाहा—रुद्राय इदं, |
| या ते रुद्र शिवा | चाकशीहि स्वाहा—मम, |
| यामिषु गिरिशन्त | जगत् स्वाहा—रुद्राय मम, |
| शिवेन बचसा त्वा | सुमना असत् स्वाहा—रुद्राय । |

End :

वातो वर्षभिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्देश दक्षिणा दश प्रतीचीर्द-
शोर्दीचीर्दशोर्च्छास्तेभ्यो नमः . . . दधामि स्वाहा—रु ॥

* * * * *

अक्षा रुद्राक्षमालासुलितवपुषशान्मवा मूर्तिभेदा रुद्राश्चीरुद्र-
सूक्ष्मप्रकटितविभवा नः प्रवच्छन्तु सौख्यम् ।

* * * * *

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः । अयं मे विश्वभेषजोऽय-
शिवाभिमर्शनः ॥

No. 7093. रुद्राध्यायमन्त्रः.

RUDRĀDHYĀYAMANTRAH.

Pages, 2 Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 2279.

Complete.

This Mantra is in praise of Rudra. The Vedic passages to be repeated are the same as those used in connection with the Rudra-hōma noticed under the previous number.

Beginning :

अस्य श्रीरुद्राध्यायमन्त्रस्य अग्निकाण्ड ऋषिः, महाविराट् उन्दः,
शम्भुर्देवता; नमस्ते रुद्र मन्यव इति बीजं, सहस्राणि सहस्रशो य
इति शक्तिः, नमस्तारायेति कीलकं, मम शम्भुप्रीत्यर्थं जपे विनि-
योगः ।

End :

शुद्धस्फटिकसङ्काशं शुद्धविद्याप्रदं मुडम् ।

शुद्धं सचित्सुखानन्दं शुद्धं पूर्णमहं मजे ॥

ओं नमो भगवते रुद्राय । इमं मन्त्रं दशकृत्वः शतकृत्वः सहस-
रकृत्वो वा जपित्वा रुद्रोक्तप्रकारेण जपेत् ॥

No. 7094. रेणुकापरमेश्वरीमन्त्रः.

RĒNUKĀPARAMEŚVARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 117a of the MS. described under No. 5417.

Complete.

Renuka referred to herein is probably the wife of Jamadagni and the mother of Parasurama. She is considered to be the presiding deity of small-pox and such other epidemics. The repetition of this Mantra is held to enable one to bring people under one's control and to annoy one's enemies in various ways.

Beginning :

अस्य श्रीरेणुकापरमेश्वरीमन्त्रस्य जमदग्निः प्रसिद्धिः, पक्षिश्छन्दः, श्रीरेणुकापरमेश्वरी देवता; ही चीजं, स्वाहा शक्तिः, रेणुकापरमेश्वरी-प्रसादसिद्धचर्यं जपे विनियोगः ।

End :

ओ ही नपो भगवति रक्तपञ्चमि रेणुकादेवि दह दह पच पच
अस्तिलजगन्मे वशं कुरु कुरु स्वाहा ।

ही इत्याचष्टविंशत्सूर्योर्मूलमन्त्र इष्टाच
भवति प्रसिद्धम् ॥

No. 7095. लक्ष्मीकवचः.

LAKSHMÍKAVACAH.

Pages, 5. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 138b of the MS. described under No. 2373.
Complete.

This Mantra is addressed to Lakshmi, and its repetition is held to have the power to remove one's sins, to secure protection to one from bad people and evil spirits, to remove diseases, and to confer prosperity on one, etc.

Beginning :

लक्ष्मीकवचम् ।

श्रीदेव्युवाच —

महालक्ष्मि(कृप्या) प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वकामदम् ।

सर्वपापप्रशमनं दुष्टव्याधिविनाशनम् ॥

ग्रहपीढापशमनपरिष्ठव(वा)तमज्जनम् ।

पुत्रपौत्रप्रजननं विवाहप्रदमिष्टदम् ॥

• * •
महालदमीश्वरः पातु ललाटं पक्षुजालया ।

कणै मम रमा पातु नयने नलिनालया ॥

End :

यासापदासनस्या विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोतरीया ।
ऋक्षमीदिव्यैर्गजेन्द्रैर्भूषिणगणखचितैस्त्वापिता हेमकुम्भैः
नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥

Colophon :

इति श्रीलक्ष्मीकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7096. लक्ष्मीकवचः.

LAKSHMIKAVACAH.

Substance, palm-leaf. Size, $7\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 6. Lines, 4
on a page. Character, Grantha. Condition, much injured.
Appearance, new.

Begins on fol. 21a. The other works herein are Bhagavadārdhanā 1a, Jitantestotra 12a, Pascoimaraṅgamaṅgalasainasa 24a.

Complete as found in the Varāhapurāṇa.

Similar to the above.

Beginning :

इन्द्र उवाच—

समस्तकवचानां च तेजश्च्रीकरमुत्तमम् ।

आयूरक्षणमारोग्यं सर्वं वै ब्रह्म गीष्यते ॥

शुरुकवच—

कवचस्तरणं नित्यं कुरु त्वमगरेश्वर ।

चतुर्दशसु लोकेषु रहस्यं ब्रह्मनिर्मितम् ॥

शिरो मे विष्णुपत्री च ललाटममृतोद्धवा ।
चक्षुः पातु विशालाक्षी श्रवणं सामग्रात्मजा ॥

End :

ब्रह्मणा लोकरक्षार्थं निर्मितं कवचं शुभम् ।
ये पठन्ति महात्मानस्ते वै रम्या जगत्पतेः ॥
आयुर्वृद्धिस्तथैवात्र पूर्वोक्ता ब्रह्मणा पुरा ।
मघवन् तन्मयास्त्वातं सर्वाभीष्टफलप्रदम् ॥

Colophon :—

इति श्रीवराहपुराणे लक्ष्मीकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7097. लक्ष्मीकवचः.

LAKSMIKAVUAH.

Substance, palm-leaf. Size, 16½ × 11 inches. Pages, 7. Lines, 6 on a page. Character, Grantha. Condition, much injured. Appearance, old.

Begins on fol. 24x. The other works herein are Apāmārjana-nyāsa 1a, Apāmārjanakavach 5a, Apāmārjanastotrā 8b, Sudarśana-yantrōddhāra 28a, Lakṣmisotrā 36a, Bhāgavataslōka 32a, Nālavēṣṭanasanti 38a, Pakṣinyyāsaucaṇirṇaya 40a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

शीराभिषमध्ये कल्पद्रुक्कानने दिव्यमण्टपे ।
सिहासनस्थितां देवीममरीजनसेविताम् ॥
सुखातां पुण्यसुभगां कटकावलिभृषिताम् ।

* * *

महालक्ष्मीः शिरः पातु ललाटं मम पद्मजा ।
कर्णौ रक्षेद्रमा पातु नयने नलिनालया ॥

End :

य इदं कवचं दिव्यं रमायाः प्रथतः पठेत् ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वरक्षां तु शाश्वतीम् ॥

एवं देवीप्रसादेन शुकः कवचमासवान् ।
कवचानुभेदेण च सर्वान् कामानवामुयात् ॥

Cloophon :

इति शुकवचसंवादे महालक्ष्मीकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7098. लक्ष्मीगणपतिमन्त्रः.

LAKSMIGANAPATIMANTRAH.

Page, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 125a of the MS. described under No. 29.

Complete.

This Mantra is addressed to Laksmiganapati, one of the manifestations of Vinayaka. Its repetition is held to enable one to accomplish one's desires and to bring all people under one's influence and control.

Beginning :

अस्य श्रीलक्ष्मीगणपतिमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,
म्ली बीजं, म्ली शक्तिः, म्लं कीलकं, मम इष्टकाम्यार्थसिद्धयर्थे जेपे
विनियोगः ।

End :

ओं ब्लं ही श्री छी म्लं गं गणपतये वरवरदं सर्वजनं मे वश-
मानय स्वाहा ॥

No. 7099. लक्ष्मीगणपतिमन्त्रः.

LAKSMIGANAPATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 205 of the MS. described under No. 5928, wherein this Mantra has been omitted to be included among the other works given therein.

Complete.

Similar to the above. Held also to propitiate Dakṣināmūrti or Siva.

Beginning :

अस्य श्रीलक्ष्मीगणपतिमहामन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचूद्रायत्री छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीगणपतिर्देवता; गं बीजं, श्री शक्तिः, म्लौं कीलकं, श्रीदत्तिणामूर्तिप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

ओं श्री ह्रीं कीं म्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

श्रीलक्ष्मीगणपतिपादुकां पूजयामि ॥

No. 7100. लक्ष्मीगणेशमन्त्रः.

LAKSHMIGANEESHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 65a of the MS. described under No. 426.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीलक्ष्मीगणपतिस्तोत्रमहामन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचूद्रायत्री छन्दः, श्रीमहागणपतिर्देवता; गं बीजं, स्वाहा शक्तिः, म्लौं कीलकं, मम सर्वभीष्टफलसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

ओं श्री ह्रीं कीं म्लौं गं गणपतये नमो वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥

Colophon :

इति लक्ष्मीगणेशस्तोत्रं समाप्तम् ॥

No. 7101. लक्ष्मीनारायणकवचः
LAKSHMINĀRAYANAKAVACAH.

Pages, 6. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 120b of the MS. described under No. 5673.

Complete.

This forms the 38th Paṭala of Rudrayāmala.

This Mantra is addressed to Nārāyaṇa as associated with Lakṣmi. Its repetition is held to have the power to confer on one prosperity and happiness during life, and salvation after death.

Beginning :

मैरव उवाच —

अधुना देवि वक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते ।

कवचं मन्त्रगर्भं च वज्रपञ्चकाल्यया ॥

श्रीवज्रपञ्चरं नाम कवचं परमाङ्गुतम् ।

रहस्यं सर्वदेवानां साधकानां विशेषतः ॥

कवचस्यास्य सुभगे कथितोऽयं शिवो मुनिः ।

त्रिष्टुप् छन्दो देवता च लक्ष्मीनारायणो मतः ॥

रमा बीजं परा शक्तिस्तारं कीलकमीश्वरि ।

मोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोग इतीरितः ॥

ओ वासुदेवोऽवतु मे मस्तकं सशिरोरुहम् ।

द्वी ललाटं सदा पातु लक्ष्मीविष्णुस्सनातनः ॥

End :

त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं कवचं मन्त्रसुखोदितम् ।

स याति परमं धाम वैष्णवं वैष्णवेश्वरः ॥

महाजनपदस्थोऽपि यः पठेदात्मचिन्तकः ।

आनन्दघूर्णितरतूर्णं लभेन्मोक्षं स साधकः ।

गन्धाष्टकेन विलिसेद्रवौ भूर्जे जपेन्मनुम् ।
 पीतसूत्रेण संवेष्ट सौबोधेनाथ वेष्टयेत् ॥
 शारथेद(दु)टिकां मृद्धिं लक्ष्मीनारायणं सरन् ।
 रणे रिपून् विजित्याशु कल्याणी गृहमादिश(विशेष)त् ॥

No. 7102. लक्ष्मीनारायणहृदयम्.
 LAKSHMINĀRĀYANAHRDAYAM.

Pages, 5. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 118a of the MS. described under No. 5673.

Complete as found in the Atharvavasahasya.

This Mantra is believed to have the power to secure the favour
of Lakshminarayana.

Beginning :

अस्य श्रीलक्ष्मीनारायणहृदयस्तोत्रमहामन्त्रस्य मार्गव अविः, अनु-
 हृष्ट छन्दः, श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता; ओं बीजं, ही शक्तिः, रं की-
 रकं, मम श्रीमत्तारायणप्रसादसिद्धचर्थं जपे विनियोगः ।

* * * *

नारायणः परं ज्योतिरात्मा नारायणः परः ।

नारायणः परं ब्रह्म नारायण नमोऽस्तु ते ॥

नारायणः परो देवो दाता नारायणः परः ।

नारायणः परं धाम नारायण नमोऽस्तु ते ॥

End :

नारायणस्य हृदयमादौ जप्त्वा ततः परम् ।

लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं जपेनारायणं पुनः ॥

पुनर्नारायणं जप्त्वा पुनर्लक्ष्मीहृदं जपेत् ।

* * * *

गोपनात् साधनाल्लोके धन्यो भवति तत्त्वतः ॥

Colophon:

इति श्रीब्रह्मवर्णरहस्ये उत्तरमागे श्रीनारायणहृदयं स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

No. 7103. लक्ष्मीनारायणहृदयम्.
LAKSMINĀRĀYANAHRDAYAM.

Substance, palm-leaf. Size, 15 $\frac{1}{2}$ x 1 $\frac{1}{2}$ inches. Pages, 6. Lines, 6 on a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other works herein are Lakṣmīhrdayastotramantra 4a, Lakṣmīstotramantra 4b, Lakṣmīhrdayadhyāna 5b, Avadhūtagītā 12a.

Complete as found in the Atharvāṇiparāhasya.

Similar to the above.

The word आशादि appended to Lakṣmī is probably intended to convey the idea that she is the primal cause of all things in the universe.

Beginning:

अस्य श्रीमद्ब्रह्मवर्ण श्रीमदाचादिविजयमहालक्ष्मीनारायणहृदयस्तोत्र-
महामन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमद्ब्रह्मवर्ण . . .
लक्ष्मीनारायणो देवता; ओं श्री बीजं, ओं ह्री शक्तिः, ओं ऐं कीलकं,
श्रीमदाचादिश्रीविजयमहालक्ष्मीनारायणप्रसादसिद्धयर्थे श्रीमद्ब्रह्मवर्णश्री-
मदाचादिश्रीविजयमहालक्ष्मीनारायणहृदयजपे विनियोगः ।

End:

ओं ऐं ह्रीं श्रीं कमलधारिणि महालक्ष्मीनारायणाय सिद्धि-
वाहिनि वषट् स्वाहा ॥

Colophon:

इत्यार्थवर्णरहस्ये उत्तरस्तु श्रीमदाचादिश्रीविजयलक्ष्मीनारायण-
हृदयम् ॥

No. 7104. लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रः.
LAKSMINRSIMHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 239 α of the MS. described under No. 5477, wherein this Mantra is found in the Mantramālikā 273 α , given therein in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is held to have the power to secure the favour of Lakṣminṛsiṁha, i.e., Nṛsiṁha as associated with Lakṣmi.

Beginning :

अस्य श्रीलक्ष्मीनृसिंहमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, निष्ठुप् छन्दः, श्री-
लक्ष्मीनृसिंहो देवता; इं चीजं, क्षौ शक्तिः, (वि)विध वि कालपूरुष-
देवः अधिदेवता, प्रहादप्रहादः प्रत्यधिदेवता, सम लक्ष्मीनृसिंहप्रसाद-
सिद्धयर्थे विनियोगः।

End :

है है क्षौ श्री लक्ष्मीनृसिंहाय नमः ॥

No. 7105. लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रः.
LAKSMINRSIMHAMANTRAH.

Page, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 252 α of the MS. described under No. 581, wherein this Mantra is found in the Mantramālikā 22 α , given therein in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7106. लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रः.
LAKSMINRSIMHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 100 α of the MS. described under No. 5566, whereas apparently it has been omitted to be given in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7107. लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रः.

LAKSHMINRSIMHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 3862.

Complete.

Similar to the above.

Beginning and End :

अव्याक्षिर्व्यजरोद्राकृतिकृतविलसास्योलुसतीक्षणदेष्ट् (हृः)
 चक्रं शङ्खं च पाशाङ्कुशकुलिशगदादारुणासीन्दधानः ।
 रक्ताकारं च नाभरधउपरिलसद्व्यभूषाविशेषे
 देवोऽर्काशीन्दुनेत्रो निखिलसुखकरो नारसिंहश्चिरं नः ॥
 हाँ ह्रीं धौं कों हुम्फद् ॥

No. 7108. लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रः.

LAKSHMINRSIMHAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 62a of the MS. described under No. 5819.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

आसनं परिकल्प्य, भद्रं कर्णेभिरिति शार्निं पठित्वा, अस्य श्री-
 लक्ष्मीनृसिंहैकाक्षरमन्त्रस्य अत्रिः ऋषिः, जगती छन्दः, एकाक्षरीनृसिंहो
 महाविष्णुदेवता, ह्रीं बीजं, धौं शक्तिः, लक्ष्मीनृसिंहमसादासिङ्गचर्ये
 लपे विनियोगः ।

End :

जान्वोरासक्ततीत्णस्वनखरुचिलसद्वाहुसंक्षिष्ठकेशं
 शङ्खं चक्रं च दोभ्यां ज्वलदनलनिभज्योतिषासुग्रदैत्यम् ।
 ज्वलामालापरीतं रविशशिदहनञ्चक्षदीसोग्रदेष्ट्
 व्याप्ता(ता)स्य धूमकेशं वदनमपि महत् पातु मां नारसिंहम् ॥

यथाशक्ति जपित्वा हृदयादिन्यासं कृत्वा ध्यानशोक पठेत् ।
भद्रं कर्णेऽमरिते शान्तिं पठेत् । उपसंहारमुद्रां प्रदर्शयेत् । ओं
क्ष्मोम् ॥

Colophon:

इति मूलमन्त्रः ॥

No. 7109. लक्ष्मीनृसिंहमन्त्रराजमन्त्रः.

LAKSHMINRSIMHAMANTRARAJAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 21b of the MS. described under No. 6090, wherein it has been given as Nrsimhamantröddhara in the list of other works containd therein.

Complete.

This is the most important of the Mantras addressed to Lakshmi-Nrsimha.

Beginning:

अस्य श्रीलक्ष्मीनृसिंहानुष्ठुभमन्त्रराजमहामन्त्रस्य विधिब्राह्मप्रजापति.
ऋषयः मूर्खः, अनुष्ठुप् उग्नः: मुखे, श्रीभगवान् श्रीमङ्गलेश्वरः श्री-
लक्ष्मीनृसिंहप्रसात्मा देवता हृदये; हं चीजं नाभौ, ई शक्तिः गुणे,
ओं कीलकं पादयोः, मम श्रीलक्ष्मीनृसिंहप्रसादसिद्धचर्ते जपे विनि-
योगः ।

End:

हं ई ओं ओं हं ।

उम्रं वीरं महाविष्णुं उवलन्तं सर्वतोमुखम् ।

नृसिंहं भीषणं भद्रं शृत्यशृत्युं नमाम्यहम् ॥

पुनः न्यासध्यानपञ्चपूजां कुर्यात् । तर्पणहोमवार्षणभोजनगोदा-
नादिसमस्तदानानि कुर्यात् ॥

No. 7110. लक्ष्मीपञ्जरम्.
LAKSHMIPANJARAM.

Page, 3. Lines, 18 on a page.

begins on fol. 140b of the MS. described under No. 2373, wherein this Mantra has been omitted to be given in the list of other works.

Incomplete.

This Mantra is addressed to the goddess Lakṣmi. Its repetition's believed to have the power to remove one's poverty and to make one wealthy.

Beginning

कीर्गवसमुद्भूते श्वेतद्वीपनिवासिनि ।
नारायणस्य हृत्पञ्चवासिनि ते नमोऽस्तु ते ॥
कैलासस्त्वरे रम्ये देवदेवं जगद्गुरुम् ।
अषयस्त्रै सङ्घम्य प्रणिपत्य यथाकमम् ॥

अषय ऊचुः—

येन केन प्रकरेण दारिद्रं नाशयत्यसौ ।
दारिद्रेण तपोनशः देशनाशं दरिद्रता ॥

ईश्वर उचाच—

शृणु ब्रह्मज्ञ देवर्पे पहालक्ष्मीमनुस्मरन् ।
तस्याराधनमात्रेण चैला सुस्थिरा भवेत् ॥

End :

मन्त्रपञ्चरकं ब्रह्म सर्वसप्तकरं शुभम् ।
नरो नारी पठेन्मन्त्रं सर्वदरिद्र्यनाशनम् ॥
यस्य गृहे पुस्तकमिदं लिखितं पुस्तकं तथा ।

* * *
अचला भव सुप्रीता निर्मलैर्मङ्गलैश्चुमैः ॥
करुणारससन्दोहे कृपां कुरु मया(मा)नवे ।
फलद्वापयोदया देवी धनं देदि हर्षस्मिन्ने ॥

No. 7111 लक्ष्मीमन्त्रः.

LAKSHMIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 51b of the MS. described under No. 2965
Complete.The repetition of this Mantra is believed to have the power to
secure the favour of Lakshmi and Narayana.

Beginning :

अस्य श्रीमहालक्ष्मीमन्त्रस्य ईश्वर प्राप्तिः, गायत्री छन्दः, श्री
देवता, श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थे जपे विनियोग ।

End :

मां भार्गव्यै नमः ।

अप्रमेयमभावस्य विष्णोः पत्नीं जगन्मयीम्
मातरं सर्वलोकानां प्रपदे शरणं श्रियम् ।

No. 7112. लक्ष्मीमन्त्रः.

LAKSHMIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 45a of the MS. described under No. 2886,
wherein it is found in the Akashabhairavakalpa 38a given therein
in the list of other works.

Complete

Similar to the above.

Beginning :

लक्ष्म्याः वामेशः, बाहृती, सर्वसूख्ये, सर्वलोकवशीकारे । लक्ष्मी-
बीजस्य भेदेन न्यासः ।

End :

प्रणवं च रमां मारं महालक्ष्मीपदद्वयम् ।

एषोहि सर्वसौभाग्यं देहि मे तु ततः परम् ॥

* * * *

चतुर्विंशत्सहस्रं जपः पूर्ववत्तर्षणादि ।

त्रिकोणे तु त्रिबीजे स्याद्गुणोणं परं लिखेत् ।
त्रयोदशदले शेषं बाह्ये पञ्चाशवर्णकम् ॥
लक्ष्मीबीजावृतं यन्ते सर्वसौभाग्यदायकम् ।

No. 7113. लक्ष्मीमन्त्रः..

LAKSMMIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 19b of the MS. described under No. 5786,
Complete.

Similar to the above. The Mantra consists of only one syllable,
viz., श्री, which is here the typical mystic word signifying the
goddess Lakṣmī.

Beginning :

ओं श्री ओं इति प्राणायामः १६.

* * * *

अस्य श्रीश्रीबीजलक्ष्मीमन्त्रस्य भृगुः ऋषिः, [यनामिका] गायत्री
छन्दः, श्रीनामिका लक्ष्मीदेवता; लक्ष्मीप्रेरणया लक्ष्मीप्रीत्यर्थं श्रीभित्ये-
काक्षरमन्त्रजपे विनियोगः ।

End :

लक्ष्मीप्रेरणया लक्ष्मीप्रीत्यर्थमेकाक्षरश्रीबीजलक्ष्मीमन्त्रजपङ्करिष्ये—
ओं श्री ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7114. लक्ष्मीमन्त्रः..

LAKSMMIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 19b of the MS. described under No. 5786.
Complete.

Here ही is made to denote mystically the goddess Lakṣmī;
and the Mantra consists of that syllable.

Beginning :

गुरुनमस्तकारः । ओं ह्रीं ओं इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीह्रीबीजलक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, शक्तिरेवाक्षर ऋषिः,
गायत्री छन्दः, हीनामिका लक्ष्मीदेवता ; लक्ष्मीप्रेरणया लक्ष्मीप्रीत्यर्थे
ह्रीमीत्येकाक्षरमन्त्रजपे विनियोगः ।

End :

लक्ष्मीप्रेरणया लक्ष्मीप्रीत्यर्थे ह्रीमीत्यकाक्षरलक्ष्मीमन्त्रजपं करिष्ये—
ओं ह्रीं ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7115. लक्ष्मीसूक्तम्.

LAKSHMISUKTAM.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 19a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

This Mantra is a Vedic hymn in praise of the goddess Lakshmi.

Beginning :

गुरुनमस्तकारः । ओं श्री ओं इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीलक्ष्मीसूक्तमन्त्रस्य श्रीः ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, अंभृणी-
(छिन्नी)नामिका श्रीदेवता ; द्वितीयायाः अहं सोममोहनसमिति ऋचः
जगती छन्दः, लक्ष्मीप्रेरणया लक्ष्मीप्रीत्यर्थे लक्ष्मीसूक्तमहामन्त्रजपे वियोगः ।

End :

परो दिवा पर एना पृथिव्यै तावती महिमा संबभूव । उपसंहारः
पूर्ववत् ॥

No. 7116. लक्ष्मीस्तोत्रमन्त्रः.
LAKSMISTOTRAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 4b of the MS. described under No. 7103.

Complete.

In praise of the goddess Mahalakshmi, conceived as the primal cause of all things.

Beginning :

अस्य श्रीमहालक्ष्मीस्तोत्रमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, आद्यादि श्रीमहालक्ष्मीर्देवता ; श्री बीजं, ह्री शक्तिः, की कीलकं, आद्यादि श्रीमहालक्ष्मीप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

ओं श्री ह्री की सौं सौं ऐं की वन्दे लक्ष्मीम् ॥

No. 7117. लक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रः.
LAKSHMIHRDAYASTOTRAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 7103.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीमद्धर्वणश्रीमदाचादि श्रीमहालक्ष्मीहृदयस्तोत्रमहामन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, नाना छन्दांसि, श्रीमद्धर्वणश्रीमदाचादि श्रीविजयमहालक्ष्मीर्देवता ; श्री बीजं, ह्री शक्तिः, ऐं कीलकं, श्रीमदाचादि श्रीविजयमहालक्ष्मीप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

ओं इं है उं कं श्री स्वाहा । ओं श्री ह्री ऐं महालक्ष्मि क-मलधारिणि श्री वषट् स्वाहा ॥

Colophon :

इति महालक्ष्मीसप्तदशाक्षरी विद्या ॥

No. 7118. लक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रः.

LAKSHMIHRDAYASTOTRAMANTRAH.

Pages, 23. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 6487

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीआदादि श्रीमहालक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः शिरसि, अनुष्ठूप उन्दः नानाछन्दांसि मुखे, आदादि श्रीमहालक्ष्मीदेवता हृदये; जों श्री बीजं गुदे, ओं ह्रीं शक्तिः आधारे, ओं ऐं कालिक पादयोः, यजमानस्य अलक्ष्मीपरिहारार्थमादादि श्रीमहालक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रजपे करिष्ये।

End:

(श्री) ध्याये त्वां प्रहसितमुखीं कोटिबा(ला)र्कभासां
विशुद्धणीन्वर(वर)धरां भूषणाङ्गां सुशोभाम् ।
बीजापूरं सरसिजयुगं विभ्रती स्वर्णपात्रं
भर्त्रो तुकं सुहुरभय[प्र]दां महामप्य(स्त्र)च्युतश्रीः ॥

Colophon:

इति श्रीलक्ष्मीहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7119. लक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रः.

LAKSHMIHRDAYASTOTRAMANTRAH.

Pages, 1. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 104a of the MS. described under No. 5673, wherein it is wrongly stated as beginning on fol. 104b

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीआदादि श्रीमहालक्ष्मीहृदयस्तोत्रमहामन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्ठूपादिनानाछन्दांसि, आदादि श्रीमहालक्ष्मीर्नारायणो देवता; ऐं श्री

बीजं, ओ ही शक्तिः, ओ ऐ कीलकं, मम अलद्धमीपरिहारार्थं आ-
चादि श्रीमहालक्ष्मीप्रसादसिद्धचर्थे श्रीमहालक्ष्मीप्रत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

अथ मनुः—

ओ श्री ही ऐ सौः की महालक्ष्मि कमलधारिणि सिंहवाहिनि हं
स स्वाहा ॥

एतलक्ष्मीसप्तदशार्णविद्या अनेन व्यापकन्यासं कुर्यात् ॥

No. 7120. लक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रः.

LAKSHMIIHRDAYASTOTRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 42a of the MS. described under No. 5686
Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीमहालक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् मार्गव ऋषिः,
अनुष्टुप् छन्दः, श्रीआचादि श्रीमहालक्ष्मीजगन्माता श्रीमहापरमेश्वरी
देवता; श्री बीजं, ही शक्तिः, ऐ कीलकं, श्रीमहालक्ष्मीजगन्मातृ-
श्रीमहापरमेश्वरीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओ श्री ही ऐ महालक्ष्मि कमलधारिणि स्वाहा ॥

Colophon:

इनि महालक्ष्मीसप्तदशाक्षरी विद्या ॥

No. 7121. लक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रः.

LAKSHMIIHRDAYASTOTRAMANTRAH.

Page, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 408.
Complete.

Similar to the above

Beginning:

अस्य ला(श्री)लक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, लक्ष्मीमसादसिद्धचर्चे जपे विनियोगः ।

End:

श्रीः पदा कमला मुकुन्दमहिषी लद्मीः विलोक्षिप्ती
मा क्षीराभिषुता विरिविजननी विद्या सरोजात्मिका ।
सर्वभीष्टफलमदेति सततं नामानि ये द्वादश
प्रातशुद्गुद्धतराः पठन्ति सततं सर्वे लभन्ते शुभम् ॥

Colophon:

इति श्रीलक्ष्मीहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7122. लक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रः.**LAKSHMIHRDAYASTOTRAMANTRAH.**

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 92a of the MS. described under No. 204.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीआदिश्रीमहालक्ष्मीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य मार्गेव ऋषिः,
अनुष्टुप् छन्दः, आदिश्रीमहालक्ष्मीदेवता ; श्री वीजं, ही शक्तिः, ऐ
कीलकं, ममादिमहालक्ष्मीप्रसादमिद्धचर्चे जपे विनियोगः।

End:

मन्त्रः—

ओ श्री ही की ऐ ऐ की ही श्री ओ ॥

No. 7123. लक्ष्मीहृदयस्तोत्रमालामन्त्रः.**LAKSHMIHRDAYASTOTRAMALAMANTRAH**

Pages, 3. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 104a of the MS. described under No. 5673, wherein this Mantra has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

आधादिश्रीमहालक्ष्मीहृदयस्तोत्रमालामन्त्रस्य शिरसि, भार्गव ऋषिः
इति ललाटे, अनुष्ठादिनानाथन्दौसि इति मुखे, "आधादिश्रीमहालक्ष्मीः
नारायणो देवता इति नेत्रयोः, श्री बीजाय नमः हृदये, ह्री शक्तये
नमः गुरुे, एं कीलकाय नमः पादयोः,

* * *

ओं एं अस्त्राय फट, भूमुखस्तुवरोम्—इति दिव्यन्तः ।

End :

मालामन्त्रः—

ओं श्री ह्री एं महालक्ष्मि कमलवारिणि ह स्वाहा ॥

No. 7124. लघुमातङ्गीमन्त्रः.

LAGHUMĀTĀNGIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 87a of the MS. described under No. 5586.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Laghu-Matangi; and its repetition is believed to have the power to enable one to accomplish one's desires as quickly as possible.

Beginning :

अस्य श्रीलघुमातङ्गीमन्त्रस्य मतङ्ग ऋषि, अत्यनुष्टुप् छन्दः,
लघुश्यामा देवता, एं बीजं, नमशशक्तिः, सर्वबशङ्करीति कीलकं, मम
इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थे विनियोगः । षष्ठ्यासः ।

End :

एं नमः उच्चिष्ठचण्डालि मातङ्गि सर्वबशङ्करि स्वाहा ॥

कलौ कलिजिते काळे साधकस्य प्रसीदति ।

लघुशश्चित्त तेनेयं लघुश्यामेति गीयते ॥

मन्त्रराजमिदं साक्षात्कृत्वा कुलगुरोर्मुखात् ।

उच्चिष्ठः प्रजपेन्मन्त्रं लक्ष्मीकमनाकुलः ॥
 शून्यागरे श्मशाने वा तदेकतरुमुख्ये ।
 निशादौ स्वगृहे वापि मदिरामोदमानसः ॥

No. 7125. लघुमातङ्गीमन्त्रः.

LAGHUMĀTĀNGIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 275a of the MS. described under No. 5477, wherein this Mantra is found in the Mantramālikā 278a given therein in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

Colophon :

इति लघुमातङ्गी ॥

No. 7126. लघुमातङ्गीमन्त्रः.

LAGHUMĀTĀNGIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 231a of the MS. described under No. 581, wherein this Mantra is found in the Mantrasmalika 229a given therein in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7127. लघुमातङ्गीमन्त्रः.

LAGHUMĀTĀNGIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 5686.

Complete

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीलघुमातङ्गेश्वरीमहामन्त्रस्य मतङ्गभगवानुषिः, अनुष्टुप्
 छन्दः, श्रीलघुमातङ्गेश्वरी देवता; ऐं बीजं, छोड़की, शक्ति, सौ कीरकं,
 मम श्रीलघुमातङ्गेश्वरीमहामन्त्रदेवताप्रसादसिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओ हौं श्री ऐ की सीः ऐ नमः ।
उच्छिष्टचण्डालि माताङ्गि सर्वजनवशङ्करि स्वाहा ॥

No. 7128. लघुमातङ्गीमन्त्रः.

LAGHUMATAṄGIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 229^b of the MS. described under No. 124, wherein this Mantra is found in the Sadāmnāyamantra 228^b given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीलघुमातङ्गीश्वरीमहामन्त्रस्य पतञ्जले भूमिः, पद्मिश्चन्दः;
लघुमातङ्गीश्वरी देवता; ऐ बीजं, नमश्शक्तिः, स्वाहेति कीलकं, लघु
मातङ्गीश्वरीप्र—गः ।

End :

ऐ नम उच्छिष्टचण्डालि माताङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । लघुमातङ्गीश्वरीदिव्यश्रीपादुकां—मि ॥

No. 7129. लघुमातङ्गीमन्त्रः.

LAGHUMATAṄGIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 37^a of the MS. described under No. 6414.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीलघुमातङ्गीमन्त्रस्य मतञ्जले भूमिः, दैवी गायत्री चन्दः, ऐ
बीजं, की शक्तिः, नम भोगमोक्षार्थं जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

की ऐ उच्छिष्टचण्डालि लघुमाताङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा ॥

No. 7130. लघुवाराहीमन्त्रः.

LAGHUVĀRĀHĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 88b of the MS. described under No. 5566, wherein it has been wrongly given as beginning on fol. 88a.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to the goddess Vārāhi (one of the seven goddesses recognised by the name Saptamātri), is considered to be efficacious in causing the destruction of one's enemies.

Beginning:

अस्य श्रीलघुवाराहीमन्त्रसः त्रिलोचन ऋषिः, विष्णुप छन्दः, लघुवा-
राही देवता; लं बीजं, नमश्शक्तिः, लं कीलकं, मम शत्रुशयार्थं जपे
विनियोगः।

End:

मन्त्रः—

लं वाराहि लं उन्मत्तभैरव पादुकाम्बरां नमः।
पुरश्चरणं लघोः लतं, वृहतः लतं, दीपस्य लक्षं, जिह्वालक्षं, अ-
क्षस्य दश, होमतर्पणानि तिलः दशांशः॥

No. 7131. लघुवाराहीमन्त्रः.

LAGHUVĀRĀHĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 233a of the MS. described under No. 581, wherein this Mantra is found in the Mantramālikā 233a given therein in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7132. लघुश्यामलामन्त्रः.
LAGHUSYĀMALĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 104a of the MS. described under No. 424, wherein it is apparently wrongly printed as beginning on fol. 114a. Complete.

This Mantra is addressed to Syāmala who appears to be the same as the goddess Matangi. She is called Syāmala because she is conceived as possessing a dark complexion.

Beginning :

अस्य श्रीलघुश्यामलामहामन्त्रस्य मतद्वैरव ऋषिः, पद्मिन्द्रियः,
लघुश्यामला देवता; एं वीजं, नमः सक्तिः, स्वाहा कीलकं, लघुश्यामला-
प्रसादसिद्धचर्चे जपे विनियोगः।

End :

मनुः—

ऐ हि ओ शुद्धविद्यास्त्राश्रीयादुको गानसोपचारसमूणिमुद्रां प्रदर्शय ॥

No. 7133. लघुश्यामलामन्त्रः.
LAGHUSYĀMALĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 673, wherein it is found in the Sadamayamsutra fol. 1a given therein in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीलघुश्यामलामहामन्त्रस्य मतद्वैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
लघुश्यामला देवता; एं वीजं, नमश्शाक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम लघुश्या-
मलाप्रसादसिद्धचर्चे जपे विनियोगः।

End :

उच्छिष्ठुचण्डालि मातृग्नि सर्वजनवशद्वृति स्वाहा । लघुश्यामला-
श्रीया . . . नमः ॥

No. 7134. लघुश्यामलामन्त्रः.
LAGHUSHYAMALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 29a of the MS. described under No. 2848, wherein it is found in the Pūrvāmnāyamantramalika 16a given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीलघुश्यामलामन्त्रस्य मतद्वं जपिः, पक्षिश्छन्दः, लघु-
श्यामलाम्बा देवता; ऐं वीजं, नमश्शक्तिः, क्वीं कलिकं, विनियोगः।

End :

उच्चिद्धृत्पट्टालि मात्रां भवते सर्वेजनवशङ्करि ठठठ स्वाहा।

* * * *

सद्योजाते भवोद्भवाय नमः—आकाशरूपाय सृष्टिकर्ते नमाणे
नमः॥

Colophon :

इति पूर्वान्नायः॥

No. 7135. लघुश्यामलामन्त्रः.

LAGHUSHYAMALAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 4b of the MS. described under No. 6514.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीलघुश्यामलामहामन्त्रस्य मतद्वं जपिः, गायत्री छन्दः,
लघुश्यामला देवता; ऐं वीजं, नमश्शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम लघुश्याम-
लामप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

No. 7136. लघुश्यामलामातङ्गेश्वरीमन्त्रः.

LAGHUSHYĀMALĀMĀTĀNGĒŚVARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 2037.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीलघुश्यामलामातङ्गेश्वरीमहामन्त्रस्य मदन ऋषिः, निचू-
द्गायत्री छन्दः, लघुश्यामला देवता, ऐं बीजं, कौं शक्तिः, सौः कीलकं,
मम लघुश्यामलाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओऽन्नम उच्छिष्ठुचण्डालि मातङ्गि सर्वजनवशङ्करि स्वाहा ॥

No. 7137. लघुश्यामलाभिकामन्त्रः.

LAGHUSHYĀMALĀBHIKĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Āmnāyamantramālikā 1a given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीलघुश्यामलाभिकामहामन्त्रस्य मतङ्गानन्दभगवानृषिः, अनु-
ष्टुप् छन्दः, श्रीलघुमातङ्गीश्वरी देवता; ऐं नमः बीजं, उच्छिष्ठेति
शक्तिः, स्वहोति कीलकं, मम श्रीलघुश्यामलाभिकामप्रसादसिद्धयर्थे जपे
विनियोगः ।

End :

मनुः—

ओ नम उच्छिष्ठुचण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्रीलघु-
मातङ्गीश्वरीश्री ॥

No. 7138. ललिताकवचः.

LALITĀKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 50a of the MS. described under No. 5858,
Complete.Addressed to the goddess Lalitā, who is the same as Śakti, for
securing her favour and protection.**Beginning :**

अस्य श्रीललिताकवचस्तवरत्नमन्तस्थं आनन्दभैरवं ऋषिं, अमृत-
विराट् छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी ललिता पराम्बा देवता; एं वीजं,
ही शक्तिः, श्री कीलकं, मम श्रीललिताम्बाप्रसादसिद्धयर्थं कवचस्तव-
रत्नमन्त्रजपे विनियोगः !

ककारः पातु शीर्षे मे एकारः पातु फालकम् ।
ईकारश्वक्षुषी पातु श्रोते रक्षेष्ठकारकः ॥

* * * *

ललिता पातु शिरो मे ललाटमम्बा च मधुमतीरूपा ।
श्र्युम्भं च भवानी पुष्पशरा पातु लोचनद्वन्द्वम् ॥

End :

मधुरसितां मदारणनदनां मातङ्गकुम्भवक्षोजाम् ।
चन्द्रावतंसिनी त्वा सततं पश्यन्ति सुलितिनः केचित् ॥
ललितायास्तवरत्नं ललितपदाभिः प्रणीतमार्याभिः ।
अनुदिनमनुचिन्तयतां फलानि वकुं प्रगल्भते स शिवः ॥
पूजाहोमस्तर्पणं स्यान्मन्त्रशक्त्या प्रभावतः ।
पुष्पाज्यतोयामावे तु जपमात्रेण सिद्ध्यति ॥

Colophon :

इति श्रीललितार्याकवचस्तोत्ररत्नं संपूर्णम् ॥

No. 7139. लवनपञ्चाक्षरमन्त्रः.

LAVANAPAṄCAKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 3a of the MS. described under No. 2886.

Complete.

The proper repetition of this Mantra is believed to have the power, as implied in its name, to free one from the bondage of Samsara and to secure salvation. The five-syllabled Mantra is not given in the manuscript.

Beginning :

लवनपञ्चाक्षरमहामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वरसदाशिव(१) ऋषिः(पदः),
गायत्र्युपिण्गनुष्टुप् [छन्दः] वृहनी पक्षिश्छन्दांसि, विराहूषो देवता ; लं
बीजं, रं शक्तिः, हं कीलकं, लवनपञ्चाक्षरसिद्धयर्थे जपे विनि-
योगः ।

End:

आकाशाच्च विशुद्धवृत्तसदृशं यद्वासरन्प्राप्तिं
तत्रादेन सदाशिवेन सहितं शान्तं हकारान्वितम् ।
प्राणं तत्र विलीनपञ्चाटिकाचि(श्री)त्तान्वितं धारयेत्
एषा मोक्षकवाटमेदनकरी मोक्षा नभोधारिणी ॥

No. 7140. लीलादण्डधरगोपालमन्त्रः.

LILĀDANDADHARAGOPĀLAMANTRAH.

Page, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 56b of the MS. described under No. 5885.

Complete.

This Mantra is addressed to Kṛṣṇa conceived as a cow-herd having in his hand a playing stick. The word Līlādandadhara may also convey the idea that Kṛṣṇa inflicts punishment on the wicked by way of sport.

Beginning :

अस्य श्रीलीलादण्डधरगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, लीलादण्डधरगोपालो देवता; ओं बीजं, ही शक्तिः, कों कीलकं, श्रीलीलादण्डधरगोपालप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

End :

मनुः—

ओं ही कों ओं लीलादण्डधरगोपीजनवलभाय स्वाहा ॥

No. 7141. लोकपालमन्त्रः.

LOKAPĀLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 44b of the MS. described under No. 2886, wherein it is found in the Akasabhairavakalpa 38a given therein in the list of other works.

Complete, as found in the 36th Adhyāya of Akasabhairava-kalpa.

This Mantra is addressed to the eight guardians of the quarters, viz., Indra, Agni, Yama, Nirṛti, Varupa, Vāyu, Kubera, and Isa.

Beginning :

मन्त्रस्य लोकपालानां घोररुद्र ऋषिस्तथा ।
अनुष्टुपुण्ड्रिकृ लिष्टुप् च कृतिर्गायत्रमेव च ॥
अगती वृहती पञ्चः क्रमाच्छन्दोऽभिधीयते ।
देवतास्त्वयि दिक्पालास्तथा बीजानि शाभ्यवि ॥

End :

ओं नमो भगवते शां ईशानाय विशूलहस्ताय विद्याधिपतये
वृषभवाहनाय सशक्तिकाय सपरिवाराय हुं फट् स्वाहा—इतीशानः ॥

* * *

मूलं विनानेन दिशां पतीनां मन्त्रश्रवोगेण सप्त्वेन ।
कुर्यान्मनीषी सततं वरेण्यकर्मस्वशेषेषु यथाक्रमेण ॥

Colophon :

इत्याकाशमैरवक्ल्ये दिक्पतिमन्त्रं नाम पद्मिंशोऽध्यायः ॥

No. 7142. लोपामुद्रामन्त्रः.
LÖPÄMUDRÄMANTRAH.

Page, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 18^b of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Āmnayamantramālikā 1a given therein in the list of other works.

Complete.

Löpamudra is the wife of the sage Agastya. She has been deified as a manifestation of Amba; and the repetition of this Mantra is intended to propitiate her.

Beginning :

अस्य श्रीलोपामुद्राम्बामन्त्रस्य नित्यानन्दमैरव भूषि:, गायत्री
छन्दः, श्रीलोपामुद्राम्बा देवता; हीं वीजे, ऐं शक्तिः, कीं कीलकं,
मम श्रीलोपामुद्राम्बाप्रसादं सद्वर्चयेऽजपे विनियोगः ।

End:

मनुः—

ह स क ल हीं ह स क ल हीं स क ल हीं श्रीलोपा-
मुद्राम्बाश्री ॥

No. 7143. लोपामुद्रामन्त्रः.
LÖPÄMUDRÄMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 231a of the MS. described under No. 124, wherein it is found in the Saḍāmnāyamantra 228^b given in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7144. लोपामुद्रामन्त्रः.
LÖPÄMUDRÄMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 5b of the MS. described under No. 673, wherein it is found in the Saḍāmnāya 1a given therein in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7145. वटपत्रशयनगोपालमन्त्रः.

VATAPATRASHAYANAGOPALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 57b of the MS. described under No. 5885.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to secure the grace of Kṛṣṇa conceived as a little baby lying down on a banyan leaf.

Beginning :

अस्य श्रीवटपत्रशयनगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, बगती छन्दः,
श्रीवटपत्रशयनगोपालो देवता; ओं बीजं, नमशक्तिः, श्रीवटपत्रशय-
नगोपालप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा ॥

No. 7146. वटमूलदक्षिणामूर्तिमन्त्रः.

VATAMŪLADAKSINĀMŪRTIMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 24a of the MS. described under No. 5928.

Complete.

This Mantra is addressed to Dakṣināmūrti (Śiva) conceived as resting at the foot of a banyan tree; and its repetition is intended to secure the favour of Śiva.

Beginning :

अस्य श्रीवटमूलदक्षिणामूर्तिमहामन्त्रस्य शुक ऋषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, वटमूलदक्षिणामूर्तिः परमात्मा देवता; ह्री बीजं, नमशक्तिः,
ओं कीलकं, मम श्रीदक्षिणामूर्तिप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं ह्री दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वटमूलनिवासिने । ध्यानैकनिरताङ्गाय
महारुद्राय शम्भवे । ह्री ओं । पञ्चपूजां च कुर्वात् । वटमूलदक्षिणा-
मूर्तिपादुकां पूजयामि स्वाहा ॥

No. 7147. वटयक्षिणीमन्त्रः.
VATAYAKSINIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 297a of the MS. described under No. 5477, wherein this Mantra is found in the Māntramālīka 273a given therein in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Yaksinī, who is popularly supposed to be residing on a banyan tree.

Beginning :

ऋष्यादेके पूर्ववत् । मन्त्रः—

बली कालकण्ठिके ठ ठ ठ स्वाहा । लक्ष्मजपं कुर्यात् ।

End :

तत्तत्कार्यं विचिन्तयेत् । पूर्वस्थाने जपहोमं कुर्यात्—इति ॥

No. 7148. वटुकत्रयमन्त्रः.
VATUKATRAYAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 5573, wherein this Mantra is found in the Amnāyamantramālīka 1a given therein in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is believed to have the power to please the three attendants of the goddess Śakti known as Vaṭukas. The names of these Vaṭukas are (1) Skandavaṭuka, (2) Citravaṭuka and (3) Viriñcīvaṭuka.

Beginning :

अस्य श्रीवटुकत्रयमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा वरुपयः, गायत्री छन्दः, वटुकत्रया(य)विदेवता, श ष स ह अभिभसः इति बीजं, सरस्वती महालक्ष्मीः गौरीति शक्तयः, ए ही श्री इति कीलकं, मम वटुकत्रयप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

श्री ह्री सौ हु फट स्कन्दवटुकश्री ६, चित्रवटुकश्री ६,
विरचित्रवटुकश्री ६ ॥

No. 7149. वटुकत्रयमन्त्रः.

VATUKATRAYAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 20b of the MS. described under No. 2848

Complete.

Same as the above.

No. 7150. वटुकत्रयमन्तः.

VATUKATRAYAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 231a of the MS. described under No. 124, wherein this Mantra is included in the Sadamnāyamantra 228b given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवटुकत्रयमन्तस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋपयः, ऋग्यजुस्सा-
माथर्वाणश्छन्दांसि, वटुकत्रयो देवता; सरस्वतीलक्ष्मीगौर्यशशक्तयः, ऐ-
श्री ह्री कीलकं, वटुकत्रयम्—गः ।

End :

ह्री श्री हु फट । स्कन्दवटुकदिव्य, चित्रवटुकदिव्य, विरचि-
वटुकदि—मः ॥

No. 7151. वटुकभैरवदिव्यमन्त्रः.

VATUKABHAIRAVADIGBANDHANAMANTRAH

Pages, 11. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 291b of the MS. described under No. 424, wherein this Mantra has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

The repetition of this Mantra which is addressed to Vātukabhairava who is a manifestation of Bhairava is believed to have the power to protect one from the dangers that may come from various quarters.

Beginning :

ओं नृमिणी स्तम्भिनी मोहिनी पूर्वद्वारं बन्धावन्धि, हर्षी अग्निद्वारं बन्धावन्धि, हूँ हैं यमद्वारं बन्धावन्धि ।

End :

ओं ही वदुकाय आपदुदारणाय कुरु कुरु वदुकाय ही ।

दिगम्बराय विश्वे शूलहस्ताय धीमहि । तज्जः कालभैरवः प्रचोदयात् । उ त्वा मदन्तु स्तोमाः । कृषुप्व राघोऽद्रिवः । अव ब्रह्म द्विषो जहि । ओं नमो भगवते रुद्राय ॥

No. 7152. वदुकभैरवमन्त्रः.

VATUKABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 11a of the M.S. described under No. 5828.

Complete.

This Mantra is also addressed to Vātukabhairava. Its repetition is intended to enable one to accomplish one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीवदुकभैरवमहामन्त्रस्य भैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, वदुकभैरवो देवता; ओं वीजं, ही शक्तिः, स्वाहा कीलकं, गम इष्टकान्यार्थसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End :

कों द्यो महाभैरव बन्धय बन्धय पोदु पोदु हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7153. वटुकभैरवमन्त्रः.
VATUKABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 280^b of the MS. described under No. 424.

Incomplete.

The repetition of this Mantra which is addressed to Vatukabhairava is believed to have the power to enable one to overcome all dangers.

Beginning :

अस्य श्रीआपदुद्धारकवटुकभैरवमन्त्रस्य पुलस्त्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीआपदुद्धारकवटुकभैरवो देवता; वं बीजं, नमश्यक्तिः, वटुकायति कीलकं, मम आपदुद्धारकवटुकभैरवप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End :

शङ्खचक्कराभीतिहस्तपद्मा[॥]युतोऽन्यवः ।

नीलाञ्जनसमाभासः पातालं पात्वनारथ(तम्) ॥

अनुकापि दिशिहेति सालुवा(?)

No. 7154. वटुकभैरवमन्त्रः.
VATUKABHAIRAVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 239^b of the MS. described under No. 124, wherein this Mantra is found in the Sadamnayamantra 228^b given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवटुकभैरवमहामन्त्रस्य स्कन्द ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, आपदुद्धारणवटुकभैरवो देवता; वं बीजं, ही शक्तिः, क्रो कीलकं, आपदुद्धारणवटुकभैरवप्र—गः ।

End :

ओ ही वं बदुकाय आपदुद्वारणाय कुरु कुरु बदुकाय ही ओ
फद् स्वाहा । आपदुद्वारणबदुकमैरवदिव्य—मः ॥

No. 7155. वनदुर्गादिग्बन्धनमन्त्रः.

VANADURGĀDIBANDHANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 102b of the MS. described under No. 124,
wherein it is given as Mahāvidyāvanadurgā.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to Vanadurgā i.e., Durgā conceived as residing in the forest, is believed to have the power to protect one from all the dangers that may come from the various quarters.

Beginning :

ओ नमश्चण्डकायै नमः । ओ पं ही श्री जम्भिनि मोहिनि
स्तम्भिनि पूर्वद्वारं बन्ध बन्ध, ओ अं द्युम्भ्यूं रं अग्निद्वारं बन्ध बन्ध
ओ यं यमद्वारं बन्ध बन्ध ।

End :

ओ ही दुं क्षं शिवं कुरु कुरु हां ही हूं हुं फद् स्वाहा ।
ओ आं ई हौं स्वाहा ॥

No. 7156. वनदुर्गादिग्बन्धनमन्त्रः.

VANADURGĀDIBANDHANAMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, 15½ × 1½ inches. Pages, 2. Lines, 7
on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance,
old.

Begins on fol. 12b. The other works herein are Suryopā-
sanavidhi 1a, Śanaiścarastōtra 7a, Asvatthasnārāyanastōtra 8a,
Ādityapūjāyantra 9b, Vanadurgāpārāyanā 11a, Vanadurgāmantra
11b, Vanadurgamahāvidyāmālāmantra 13a, Suryanāmaskāra 42a.

Complete.

Same as the above.

No. 7157. वनदुर्गादिम्बन्धनमन्त्रः.
VANADURGÄDIGBANDHANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 57a of the MS. described under No. 5639, wherein it is given as Caṇḍikāmantra.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं नमश्चण्डिकायै नमः, ओं नमश्चण्डिकायै नमः, ओं नमश्चण्डिकायै नमः । जम्भिनी स्तम्भिनी मोहिनी पूर्वद्वारं वन्धावन्धि, हस्ती अग्निद्वारं वन्धावन्धि यमद्वारं वन्धावन्धि, न्यानिरुतिद्वारं वन्धावन्धि ।

End :

दुर्गाहनुमन्तगणेश्वरादिसर्वाङ्गसर्वभ्रहं वन्धावन्धि सर्वकिलिवषष्ठुद्रोपद्रवं छिन्धि छिन्धि भिन्धि से से हुं फट् फट् स्वाहा ॥

No. 7158. वनदुर्गादिम्बन्धनमन्त्रः.
VANADURGÄDIGBANDHANAMANTRAH.

Pages, 1. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 25a of the MS. described under No. 5574, wherein it is found in the Vanadurgamahāvidya given therein in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7159. वनदुर्गादिम्बन्धनमन्त्रः.
VANADURGÄDIGBANDHANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 175b of the MS. described under No. 29, wherein it has been omitted to be given in the list of other works therein contained.

Complete.

Same as the above.

No. 7160. वनदुर्गामन्त्रः.
VANADURGAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 235b of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramalika 229 given therein in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra which is also addressed to Vanadurga is intended to enable one to accomplish one's desires. The Mantra is coupled with a prayer in the end addressed to the goddess to remove all fears.

Beginning :

अस्य श्रीवनदुर्गामन्त्रस्य आरप्यक ऋषिः, अत्यनुष्टुप् उन्दः,
श्रीवनदुर्गा देवता; दु बीजं, स्वाहा शक्तिः, हुं कीलक, ममैषकाम्या-
र्थसिद्ध्यर्थे विनियोगः ।

End :

मन्त्रः—

ओं दुं उचिष्ठ(पुरुषि)कि त्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्य-
मशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा ॥

No. 7161. वनदुर्गामन्त्रः.
VANADURGAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 90a of the MS. described under No. 5530.

Complete.

Same as the above.

No. 7162. वनदुर्गामन्त्रः.
VANADURGAMANTRAH.

Page, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 277b of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramalika 273a given therein in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7163. वनदुर्गामन्त्रः.
VANADURGAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 235, wherein it is given as Mahavitiya in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवनदुर्गामहामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, अन्तर्यामिनारायणाकिरातस्त्रपथर ईश्वरो देवता; दुं बीजं, हीं शक्तिः, श्री कीलकं, मम वनदुर्गाप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

End :

ओं हीं श्री दुं उत्तिष्ठ पुरुषि कि स्वपिष्ठि भयं मे समुपस्थितम्।
यदि शक्त्यभशक्त्य वा तन्मे भगवति शमय शमय स्वाहा ॥

ओं नमश्चण्डिकायै नमः ॥

No. 7164. वनदुर्गामन्त्रः.
VANADURGAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 5928.

Complete.

Similar to the above. Considered also to have the power to propitiate Daksinamurti or Siva.

Beginning :

अस्य श्रीअरण्येश्वरवश्यश्रीवनदुर्गातिपुरसुन्दरपिरमेश्वरीस्तोत्रमहा-
मन्त्रस्य अरण्येश्वर ऋषिः, अत्यनुष्टुप् छन्दः, अन्तर्यामिनारायणी किरा-
तवरवनदुर्गा ईश्वरी देवता; दुं बीजं, हीं शक्तिः, कौं, कीलकं, श्री-
दाक्षिणामूर्त्तिप्रसादासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

End :

तन्मे भगवति दुर्गे शमय स्वाहा । श्रीवनदुर्गादेवीश्रीपादुकां
पूजयामि ॥

No. 7165. वनदुर्गामन्त्रः.
VĀNADURGĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 6a of the MS. described under No. 6548, wherein it is given as Vānadurgāmāhāmantra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य वनदुर्गामहामन्त्रस्य आरण्यकभगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
वनदुर्गा परमेश्वरी देवता, दुं बीजं, स्वाहा शक्तिः, मम सर्वाभीष्टसि-
द्धचर्ये वनदुर्गाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

End :

मौलीं चन्द्रकलावती मनसि मे(च)श्रीकण्ठचिन्तावती
गाने दिव्यसुधावती करतले कल्याणवीणावती ।
कण्ठे हारलतावती कचभरे कादम्बमालावती
दृष्टीं पूर्णकृपावती दिशतु नश्श्रेयांसि सा पार्वती ॥
ओं वाराण्यै नमः, श्रीसरस्वत्यै नमः, अभिकायै नमः ॥

No. 7166. वनदुर्गामन्त्रः.
VĀNADURGĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 28a of the MS. described under No. 2421.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

हेमप्रस्त्रामिन्दुखण्डार्धमैलि शङ्खारिष्टाभीतिहस्ता त्रिनेत्राम् ।
हेमाङ्गस्थां पीतबस्त्रां प्रसन्ना देवी दुर्गा दिव्यरूपां नमामि ॥
अस्य श्रीवनदुर्गापरमेश्वरीमहामन्त्रस्य आरण्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
वनदुर्गा परमेश्वरी देवता; दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलिकं, वन-
दुर्गाप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः।

End :

उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिष्ठि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्चम्
शक्चयं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा ॥

No. 7167. वनदुर्गामन्त्रः.
VANADURGAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol 56a of the MS. described under No. 5639.

Complete.

Similar to the above. The repetition of this Mantra is considered to have the power to promote one's health, wealth and prosperity.

Beginning :

शरदिन्दुविकासमन्ददासां स्फुरदिन्दीवरलोचनाभिरामाम् ।

अरविन्दसमानसुन्दरास्यामरविन्दासनसुन्दरीमुपासे ॥

एवंगुणविशेषणविदिष्टायामस्यां तिथौ अस्माकं सहकुदुम्बानां
क्षेमस्वैर्ग्ययुरारोगैश्चर्याभिनृद्धर्चर्ये सम . . . वनदुर्गामहाविद्या-
पूजापारायणं करिष्ये —

अस्य श्रीवनदुर्गामहामन्त्रस्य अरण्येश्वर ऋणिः शिरसि, अनुष्टुप्
छन्दः मुखे, अन्तर्यामिनारामणकिरातरूपधरेश्वरी श्रीवनदुर्गा महात्रिपुर-
सुन्दरी देवता हृदि, दुः वीजं, ह्री शक्तिः, को कीलकं, वनदुर्गाप्रसा-
दासिद्वयर्थं जपे विनियोगः ।

End :

श्री ह्री ह्री उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिष्ठि भयं मे समुपस्थितं ..
अष्टाविंशतिवारं जपित्वा ।

सह नाववतु । सह नौ भुनकु । सह वीर्यं करवावहै । तेजस्विना-
वधीतमस्तु मा विद्विषावहै । ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः इति विः ॥

No. 7168. वनदुर्गामहाविद्यापारायणम्.

VANADURGĀMAHĀVIDYĀPĀRĀYANAM.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 102a of the MS. described under No. 124, wherein it is given as Mahāvidyā.

Complete.

This Maṭra is addressed chiefly to Vanadurga, although it contains also the Pāsupatāśramantra and Sarabhassluva-gāyatri-mantra. It is called Mahāvidyā and is intended to enable one to secure the favour of Vanadurga.

Beginning :

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाहनसगोचरम् ॥
रक्तशुक्रप्रभामिश्रमतकर्च त्रैपुरं महः ॥

* * * * *
पूर्वोक्तैवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां शुभातिथौ वनदुर्गामुद्दिश्य वनदुर्गा-
प्रीत्यर्थं महाविद्यापारायणं करिष्ये—

ओ दु ए ह्री श्री द्रां सहोमणमुद्रायै नमः, ओ श्री ह्री द्री
सम्मोहनमुद्रायै नमः।

End :

ओ दु ए ह्री श्री द्री दु ओ उलिष्ठ पुरुषि कि स्वपिषि भयं
मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा ॥

No. 7169. वनदुर्गापहाविद्यापारायणम्.

VANADURGĀMAHĀVIDYĀPĀRĀYANAM.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 7168.

Complete.

Same as the above.

No. 7170. वनदुर्गामहाविद्यामन्त्रः.
VANADURGĀMAHĀVIDYĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 45b of the MS. described under No. 2886.

Complete.

Similar to the above.

Held also to be efficacious in causing harm to one's enemies in various ways.

Beginning :

अस्य वनदुर्गामहाविद्यामन्त्रराजस्तोत्रमहामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः,
अनुष्टुप् छन्दः, अन्तर्यामी नारायणः किरातरूपधर ईश्वरो देवता; दु
वीजं, स्वाहा शक्तिः, ह्रीं कीलकं, मम प्रतिकूलकारिणो ये ये स्वा-
नेषु स्थिताः, तेषां पशुपुत्रमिवकलत्रसंहारणार्थं
वनदुर्गामहाविद्याप्रीत्यर्थं वनदुर्गामहाविद्यामन्त्रजपे करिष्ये.

End :

ओं ह्रीं दुं उचिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि
शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥ पञ्चपूजा ॥

No. 7171. वनदुर्गामहाविद्यामन्त्रः.
VANADURGĀMAHĀVIDYĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 174a of the MS. described under No. 29,
wherein it is given under the name Vanadurgastotra.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीमहाविद्यावनदुर्गास्तोत्रमन्त्रराजस्य अरण्येश्वर ऋषिः, अ-
त्यनुष्टुप् छन्दः, ह्रीं अन्तर्यामीनारायणः किरातरूपधरेश्वरी वन-
दुर्गा देवता, ओं दुं वीजं, स्वाहा शक्तिः, ह्रीं कीलकं, श्रीमहाविद्या-
वनदुर्गादेवताप्रसादसिद्धार्थं जपे विनियोगः।

See under the previous number for the end

No. 7172. वनदुर्गामहाविद्यामन्त्रः.

VANADURGĀMAHĀVIDYĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 41a of the MS. described under No. 5574.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं दुर्गा वटकां शिवमच्युतम् ।

ब्रह्माणी गि(रि)जां लक्ष्मीं वाणी वन्दे विभूतये ॥

* * * * *

अस्य श्रीमहाविद्यावनदुर्गात्रिपुरसुन्दरीपरमेश्वरीमहामन्त्रस्य अरण्येश्वरं ऋषिः, अत्यनुष्टुप् छन्दः, अन्तर्यामिनारायणः किरातरूपधरवनदुर्गा ईश्वरी देवता; दुं बीजं, ही शक्तिः, को कीलकं, मम श्रीवनदुर्गामहाविद्याप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

तन्मे भगवति दुर्गे शमय शमय स्वाहा ॥

No. 7173. वनदुर्गामहाविद्यामन्त्रः.

VANADURGĀMAHĀVIDYĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 25a of the M², described under No. 5574.

Complete.

Similar to the above

Beginning:

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठलयं भैरवं

सिद्धौषं वटकंत्रयं पदयुगं दूतिकमं मण्डलम् ।

वीराधष्टुप्कथाष्टुप्नवकं वीरावलीपवकं

श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

अस्य श्रीवनदुर्गामहाविद्यामहामन्त्रस्य अरण्येश्वरं ऋषिः, अत्यनुष्टुप् छन्दः, अन्तर्यामिनारायणः किरातरूपधारिणी ईश्वरी वनदुर्गा

देवता; दुः वीजं, ही शक्तिः, क्रो कीलकं, मम वनदुर्गामहाविद्यामन्त्रे
जपे विनियोगः ।

See under the previous number for the end.

No. 7174. वनदुर्गामहाविद्यामन्त्रः.
VANADURGĀMAHĀVIDYAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 37a of the MS. described under No. 21, wherein it is given as Vansadurgāmahālakṣmimāntra.

Complete.

Similar to the above.

Held to be helpful in the accomplishment of the four Purāśār-thas or principal aims of life, viz., Dharma, Artha, Kāma and Mōkṣa.

Beginning :

अस्य श्रीवनदुर्गामहाविद्यास्तोत्रराजमहामन्त्रन्य ईश्वर ऋषिः, अनु-
ष्टुप् छन्दः, अन्तर्यामिकिरातरूपवरईश्वरी महाविद्या वनदुर्गा देवता; दुः
वीजं, ही शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थ-
सिद्धचर्ये जपे विनियोगः । मूलमन्त्रेण प्राणायामनयं कृत्वा, मूलेन
करशुद्दि कृत्वा

End :

सह नाववतु — ओं शान्तिः शान्तिः ओं । उत्तिष्ठ पुरुषि कि स्वपिष्ठे
भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा ॥

No. 7175. वनदुर्गामहाविद्यामन्त्रः.
VANADURGĀMAHĀVIDYĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 71b of the MS. described under No. 5639, wherein it is found included in the Mahāvidyā 58a, given in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

The transcription of this manuscript is said to have been completed by Cennubhistla Bhavānīśāṅkara on Wednesday, the 2nd of the bright fortnight of the month of Caitra, in the year Bhava, and the transcript handed over to the brother of Appayya of the Kolena family.

Beginning :

पूर्णमदः पूर्णमिदं . . . पूर्णमेवावशिष्यते ॥

पुनः पठद्वन्न्यासः ।

अस्य श्रीवनदुर्गामहामन्त्रस्य अरण्येश्वर ऋषिः, अत्यनुष्टुप् छन्दः, अन्तर्यामिनारायणकिरातरूपधरेश्वरी श्रीवनदुर्गा महात्रिपुरसुन्दरी देवता; दुं बीजं, ही शक्तिः, कों कीलकं, मम श्रीवनदुर्गामम(हा)त्रिपुरसुन्दरी प्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End:

मनुः । इति वामहस्तेन जलं दद्यात् । अनेन श्रीवनदुर्गामहाविद्यापारायणेन भगवती सर्वात्मिका श्रीवनदुर्गा देवता सुपीतसु(ता सु)-प्रसन्नो(ता) वरदो(दा) भवतु ॥

No. 7176. वनदुर्गामहाविद्यामालामन्त्रः.

VANADURGĀMĀHĀVIDYĀMĀLĀMANTRAH

Pages, 19. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 235, wherein it is given as *Mahāvidyā* in the list of other works.

Complete.

This Mantra is also addressed to Vanadurgā. It contains also other connected Mantras which are considered to be accessories to the Vanadurgāmastra. Its repetition is believed to be efficacious in enabling one to destroy one's enemies.

Beginning :

हेरुकं पूर्वपीठे तु आगेत्यां त्रिपुरान्तकम् ।

दक्षिणे चामितेतालं नैरूत्यां यमजिह्विकम् ॥

* * *

ओं ही श्री सकलनरमुखब्रमरी, ओं क्रौं ही सकलराजमुखभ-
मरी, ओं को सौः सकलदेवतमुखब्रमरी, ओं क्रौं ही सकलकामिनी-
मुखब्रमरी, ओं एं सौः सकलदेवतमुखब्रमरी, ओं ह स ख फ्रैलो-
क्यचित्तब्रमरी, . . . मम बान्धितार्थोकर्षिणी परमकल्याणी
महायेगिनी महाविद्याम् ।

End:

ओं ब्लं ही श्रीवक्षकोशाधि(दि)मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ।
उ त्वा मदन्तु स्तोमाः क्षणुष्व राधोऽद्रिवः । अव ब्रह्म द्विषो जहि ।
श्रीवनदुर्गार्पणमस्तु ॥

No. 7177. वनदुर्गामहाविद्यामालामन्त्रः.

VANADURGAMAHĀVIDYAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 13. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 37b of the MS. described under No. 21, wherein it has been omitted to be included in the list of other works given therein. Rakṣasadigbandhana stated therein as beginning on 40a is found merged in this Mantra.

Complete.

Similar to the above.

See under the previous number for the beginning.

End:

अव ब्रह्म द्विषो जहि । सह नाववतु—द्वियावहै । ओं शाभित
शान्तिशान्तिः

निर्याणमुद्रादेवतार्पणं वथासुखं विहरेत् ॥

दध्यन्तं क्षीरमिश्रं च सघृतं गुडपूपकम् ।

कदलीपनसाम्रं च मधु मध्वज्ञकं तथा ॥

Colophon :

महाविद्या सम्पूर्णी ॥

No. 7178. वनदुर्गामहाविद्यामालामन्त्रः.
VANADURGĀMAHĀVIDYĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 29. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 57b of the MS. described under No. 5639, wherein it is given as Mahavidya 58a.

Complete.

Similar to the above.

See under No. 7176 for the beginning.

End:

दुं दुर्गायै नमः—दुर्गा देवी शरणमहं प्रपदे सुतरसि तरसे नमः ।
 अव ब्रह्म द्विषो जहि । सह नाववतु . . . मा विद्विषावहै ।
 ओ शान्तिशशान्तिशशान्तिः—इति ति ॥

No. 7179. वनदुर्गामहाविद्यामालामन्त्रः.
VANADURGĀMAHĀVIDYĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 31. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 176a of the MS. described under No. 29, wherein it has been included in Vanadurgastotra 174a.

Complete.

Similar to the above.

See under No. 7176 for the beginning.

End:

वृणिस्त्वय आदित्यो श्री सहस्रार हुं फट् स्वाहा । अव ब्रह्म
 द्विषो जहि । उत्तरन्यासः । लं पूर्थिव्यादिपञ्चपूजां कृत्वा निर्याणमुद्रां
 प्रदर्शयेत् ॥

Colophon :

श्रीमहाविद्या सम्पूर्णी ॥

No. 7180. वनदुर्गामहाविद्यामालामन्त्रः.

VANADURGĀMAHĀVIDYĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 42. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 42^a of the MS. described under No. 5574, wherein it is included in Vanadurgāmahāvidya 41^a.

Complete.

Similar to the above.

For the beginning, see under No. 7176.

End :

सद्यो जातं प्रपद्यामि सदाशिवौ । नमो हिरण्यवाहवे सेनान्ये
दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशभ्यः पश्चान् पतये नमो नमः ।
मानमें मधुकैटभज्जि महिषप्राणापहारोद्यमे
हेलानिर्मितधूमलोचनवधे हे चण्डभुण्डादिने(नि) ।
निशेषीकृतरक्तबीजदनुवे नित्ये निशुभापहे
शुभमध्वंसिनि संहरायु दूरित इमें नमस्तेऽम्बिके ॥
सह नाववतु . . . मा विद्धिपात्रहे । ओं शान्तिश्शान्तिश्शा-
न्तिः ॥

No. 7181. वनदुर्गामहाविद्यामालामन्त्रः.

VANADURGĀMAHĀVIDYĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 23. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 26^b of the MS. described under No. 5574, wherein it is included in Vanadurgāmahāvidya 25^a given therein in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7182. वनदुर्गामहाविद्यामालामन्त्रः.

VANADURGĀMAHĀVIDYĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 32. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 103^a of the MS. described under No. 124, wherein it is found in Mahāvidyāvanadurgā 102^a given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं ह्रीं दुं ओं नमो भगवति चिन्तामणि हुर्गे उत्तिष्ठ पुरुषि
महाविद्यावनदुर्गारूपिणि शूलिणि दुर्गे किं स्वपिणि चण्डिके मधुकेटम्
संहारिणि ।

End :

र्पन्त—हिषो जहि ओं उत्तिष्ठ पुरुषि ह, किं स्वपिणि शिरसे,
भयं मे समुपस्थितं शिखायाः
वनदुर्गाध्यानम्—

सौवर्णीन्द्रुजमस्यगां त्रिणयनां सौदामिनीसञ्जिभां

शङ्खं चक्रगदाभयानि दघतीमिन्दोः कला विभ्रतीम् ।

त्रैवेद्याङ्गदहारकुण्डलवरामास्वण्डलार्थस्तुतां

ध्यायेऽहं ध्वनि(चिति)वासिनीं शशिमुखीं पार्श्वस्ववश्येऽन(न्व)हम् ॥

No. 7183. वनदुर्गामहाविद्यामालामन्त्रः.

VANADURGĀMAHĀVIDYĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 58. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 7156.

Complete.

Same as the above.

No. 7184. वनदुर्गामहाविद्यामालामन्त्रः.

VANADURGĀMAHĀVIDYĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 7. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 45b of the MS. described under No. 2886.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

मालामन्त्रः—

हीं दुं ओं नमो भगवति चिन्तामणि महादुर्गे उचिष्ट पुरुषि
महाविद्यावनदुर्गारूपिणि शूलिनि दुर्गे कि स्वपिषि चण्डके मधुकैटभ-
संहारिणि ।

End :

प्रतिकूलं मे नश्यतु, अनुकूलं मे १स्तु । महादेव्यै च विघ्ने
विष्णुपल्यै च धीमहि । तच्चो लक्ष्मीः प्रचोदयात् । ओं अं हीं श्री
ब्रह्मकोशेन मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ।

अब ब्रह्म द्विषो जहि हेमप्रस्यामित्यादि-
स्थानं, मूलमन्त्रजप्तं कृत्वा मालामन्त्रं दशवारं जपेत् ॥

No. 7185. वनदुर्गामालामन्त्रः.

VANADURGĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 41b of the MS. described under No. 5574.

Complete.

This Mantra is in praise of Vanadurgā; and its repetition is considered to have the power to counteract the evils caused by minor spirits. It differs from Vanadurgāmāhāvidyāmālāmūrti in that it does not contain the accessory Mantras.

Beginning :

ओं हीं दुर्गामालामन्त्रः—

ओं नमो भगवति चिन्तामणि महादुर्गि उचिष्ट पुरुषि महावि-
द्यावनदुर्गारूपिणि शूलिनि दुर्गि कि स्वपिषि चण्डके मधुकैटभसं-
हारिणि ।

End :

कुद्रोपद्रवं छिन्नि छिन्नि भिन्नि भिन्नि से से से से हुं हुं
हुं फट् फट् फट् स्वाहा ॥

No. 7186. वनदुर्गामालामन्त्रः.

VANADURGAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 2'a of the MS. described under No. 2424, wherein it is found in the Vanadurgāmantra 28a which is given in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

मालामन्त्रः—

ओ नमः कृष्णवाससि सहस्रकोटिसिंहासने सहस्रपादसहस्रमुजसहस्र-
वदने सहस्रत्रिणेत्रोज्ज्वले ।

End :

कालरात्रि प्रत्यक्षिरे दुर्गे मा रक्ष रक्ष सर्वशत्रून् मक्ष मक्ष हुं फट्
स्वाहा । यन्त्रम्—

त्रिरेखा च त्रिशूलं च मध्ये शूलचतुष्टयम् ।

प्रणवेन वेष्टते युक्तं मूलमन्त्रं समालिखेत् ॥

दुरितं(?) दुष्टसंहारं दुर्गामन्त्रं समालिखेत् ।

No. 7187. वराहचतुर्दशाक्षरमन्त्रः.

VARĀHACATURDASĀKṢARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 9a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The repetition of this Mantra, consisting of 14 syllables, is intended to secure the favour of Vishnu in his incarnation as Varāha.

Beginning :

पूर्णज्ञानेत्यादिष्ठड़ुन्यासः ।

ओ नमो मगवते महावराहाय स्वाहा इति प्राणायामः १२.

*

*

*

*

अस्य श्रीचतुर्दशाक्षरवराहमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, शक्री छन्दः,
श्रीवराहो देवता; श्रीवराहप्रेरणया वराहप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

End:

चतुर्दशाक्षरवराहमन्त्रजपल्लिप्ये ।

ओं नमो भगवते महावराहाय स्वाहा—इति जपः। उपसंहारः
पूर्ववत्॥

No. 7188. वराहत्रयस्तिविशदक्षरमन्त्रः.

VARĀHATRAYASTRIMŚADAKṢAKRAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

Similar to the above.

This Mantra consists of 33 syllables. Its repetition is believed to be efficacious in bestowing sovereignty on one.

Beginning:

ओं हुं नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवस्स्वः पतये भूपतित्वं मे
देहि दापय स्वाहा। इति प्राणायामः १२.

* * * *

अस्य श्रीत्रयस्तिविशदक्षरवराहमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीवराहो देवता; श्रीवराहप्रेरणया श्रीवराहप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

End :

ओं हुं नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवस्स्वः पतये भूपतित्वं मे
देहि दापय स्वाहा—इति जपः। उपसंहारः पूर्ववत्॥

No. 7189. वराहमालामन्त्रः.

VARĀHAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 170a of the MS. described under No. 2848, wherein this Mantra has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

The repetition of this Mantra is believed to have the power to enable one to acquire wealth.

Beginning :

(अथ श्रीवरा)हमन्त्रविधानमुच्यते—भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीवराहो देवता; हुं वीजं, स्वाहा शक्तिः, श्री कीलकं, वराहप्रसाद-सिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं नमो भगवते वराहरूपाय द्रव्यं मे देहि

दापय स्वाहा—इति मन्त्रः। लक्षं जपः।

त्रिमधुरसि(ते)क्षुपदैर्दशांशहोमः ॥

No. 7190. वराहसप्ताक्षरमन्त्रः.

VARĀHASAPTAKṢARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 8b of the MS. described under No. 5786.

Complete.

This Mantra consists of seven syllables. It is also addressed to Viṣṇu in his incarnation as Varāha.

Beginning :

ओं हुं वराहाय नमः ओं (इति प्रणायामः) १२.

* * * *

अस्य सप्ताक्षरवराहमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, उष्णिक छन्दः, श्री-वराहो देवता; श्रीवराहप्रेरणया श्रीवराहमन्त्रजपे विनियोगः।

End :

सप्ताक्षरवराहमन्त्रजपङ्करित्ये—

ओं हुं वराहाय नमः ओं—इति जपः। उपसंहारः पूर्ववत् ॥

वराहमन्त्रस्य पठङ्गन्यासः॥

No. 7191. वर्णमालिका.

VARNAMĀLIKA

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 217.

Complete.

Herein the series of letters making up the alphabet is looked upon as a Mantra. These letters are taken singly or collectively and repeated along with other Mantras.

Beginning :

अस्य श्रीवर्णमालिकामहामन्त्रस्य शब्दवल्लभं ऋषिः, नाना छन्दांसि, अकारादि त्रिरेखान्तरी सुषुभा कुण्डलिनी सरस्वती देवता ; चतुर्स्त्रिं शद्धर्णी बीजं, पञ्च स्वराश्शक्तयः, स्वरवर्णमयं कीलकं, मम श्रीवर्णमालिकाप्रसादाद्विद्वच्छर्थं जपे विनियोगः ।

End :

सः हः सः पः शः वः लः रः यः मः भः वः फः पः नः षः दः
 थः तः णः ढः ठः टः बः झः जः छः चः ङः घः गः खः कः अः अं
 ओः ओः ऐः एः ऊः उः ईः इः आः अः इति एकैकवर्णानुच्चार्यं मन्त्रं
 जप्त्वा वर्गक्रमेण जप्त्वा प्रवमष्टोत्रशतं जप्त्वा तत उद्धसेत ॥

No. 7192. वशीकरणवाराहीमन्त्रः.

VĀSIKARANAVĀRĀHĪMANTRAH

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 35a of the MS. described under No. 3862.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to Varahi i.e., Visnu's Sakti conceived as a goddess, is believed to have the power to enable one to bring people under one's control and influence.

Beginning :

अस्य श्रीवशीकरणवाराहीमहामन्त्रस्य अज ऋषिः, गायत्री छन्दः, वशीकरणवाराही देवता ; कौं बीजं, ऐं शक्तिः, कूँ कीलकं, मम वशीकरणवाराहीप्रसादाद्विद्वच्छर्थं जपे विनियोगः ।

ओं बुँ एं म्लौं नमो भगवति वाराहि सर्वजनं मे वशमानय
वैष्ट ठ ठ ठ हुं फट् स्वाहा ॥

End :

वशीकरणबाणस्त्वं भक्तानामनिवारितः ।
तस्मादवश्यं वाराहि जगत्सर्वे वशं कुरु ॥
वश्यस्तोत्रमिदं देव्यास्त्रिसन्ध्यं यः पठेत्वरः ।
सोऽपि वशं नयेत्सर्वे कामं राजानमेव च ॥

No. 7193. वश्यवाराहीमन्त्रः.

VASYAVĀRĀHĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 198b of the MS. described under No. 119,
wherein it is given as Vārahīstotra.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

मुखरञ्जनि क्ली हीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्व-
लोकवशङ्करि अमुकं वशमानय स्वाहा ।

End :

तद्वाषेऽष्टदलं प्रो . . . पत्रे मनःप्रिये ।
चतुरश्रन्तु तद्वाषे देवि देव्यासनं भवेत् ॥

No. 7194. वश्यवाराहीमन्त्रः.

VASYAVĀRĀHĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 2a of the MS. described under No. 5586
wherein it is given as Vasyavārāhistotra.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवशीकरणी(ण) वाराहीस्तोत्रमन्त्रस्य अज ऋषिः, गायत्री छन्दः, वशीकरणी वाराही देवता; ब्रां बीजं, श्री शक्तिः, गूँ कीलकं, मम श्रीवशीकरणवाराहीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोग ।

End :

मूलम्—

वाराहि सर्वजनं मे वशमानाय वौषट् ठं ठं ठं ठं ओं फट् स्वाहा ॥

No. 7195. वागीश्वरीमन्त्रः.

VĀGĪŚVARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol 229a of the MS. described under No. 581, wherein it is included in the Mantramālikā 229a.

Complete.

The Mantra is addressed to Vāgīśvari, who is the same as Sarasvatī; and its repetition is considered to have the power to enable one to become a learned poet.

Beginning :

अस्य श्रीवागीश्वरीमन्त्रस्य कण्व ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीवागी-श्वरी देवता; वं बीजं, स्वाहा शक्तिः, मम वाक्सिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End :

मन्त्रः—

ओं एं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा ॥ एवं ध्यात्वा षोडशोपचारं कुर्यात् ।

* * * * *

वत्सरात्कवित्वं वाक्सिद्धिश्च भवति ॥

No. 7196. वागीश्वरीमन्त्रः.
VĀGĪŚVARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 80a of the MS. described under No. 5566.

Complete.

Same as the above.

No. 7197. वागीश्वरीमन्त्रः.
VĀGĪŚVARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 273a of the MS. described under No. 5477, wherein it is included in the Mantramalikā 273a given therein in the list of other works.

Complete.

Same as the above ; but no mention is made of the Rsi (sage), Chandas (metre), and Dēvatā (the presiding deity).

No. 7198. वागीश्वरीमन्त्रः.
VĀGĪŚVARIMANTRAH.

Page, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 22a of the MS. described under No. 5673, wherein it is included in the Āmnāyamantramalikā 1a given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवागीश्वरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीवागीश्वरी देवता ; ऐं बीजं, ही शक्तिः, सौः कीलकं, मम श्रीवागीश्वरीप्रसादसिद्धचर्ये विनियोगः।

End :

मनुः—

ऐं ही सौः वद चद वाग्वादिनि स्वाहा ।

वागीश्वरीश्री ।

आरोधनकरी माया त्रिगुणा जगदात्मिके (का)।
तमस्त्वरूपिणी धेययानो(चो) चराज्ञायदेवता ॥

* * * * *

इत्युत्तरात्रायदेवताश्चानाहते मनश्वके च पूजयेत् ॥

No. 7199. वाग्वादिनीमन्त्रः

VĀGVĀDINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 232b of the MS. described under No. 124, wherein it is found in the Śadjāmnāyamantra 228b.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवाग्वादिनीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः,
वाग्वादिनी देवता; ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, सौः कीलकं, वाग्वादिनी-
म—गः ।

End :

ऐं ह्रीं सौः वद् वद् वाग्वादिनि स्वाहा । वाग्वादिनीदिव्यश्री-
मः, ऐं ह्रीं श्रीं स्फूर्तं महाचण्डयोगीश्वरी—उत्तराज्ञायसमयविद्येश्वरी—का-
लसङ्करण्यम्बादिव्य—मः ॥

No. 7200. वाग्वादिनीमन्त्रः

VĀGVĀDINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 8b of the MS. described under No. 673, wherein it is found in the Śadjāmnaya 1a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवाम्बादिनीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, वाम्बादिनी देवता; ऐं बीजं, ह्री शक्तिः, सौः कीलकं, मम वाम्बादिनीप्रसादसिद्धार्थं जपे विनियोगः ।

End :

ऐं ह्री श्री सौः वद वद वाम्बादिनि स्वाहा । वाम्बादिन्यम्बा-
श्रीपा—नमः ।

हिंसहस्रदेवतापरिवारिताय ओम्भाणपीठाय नमः । ओम्भाणपीठ-
श्री—नमः ॥

Cloophon :

इत्युत्तराभ्यायः ॥

No. 7201. वाम्बादिनीमन्त्रः.

VĀGVĀDINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5683.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अथ वागीश्वरीमन्त्रविद्यानमुच्यते—

(अस्य श्रीवाम्बादिनीमन्त्रस्य) कण्व ऋषिः, विराट् छन्दः, वागी-
श्वरी देवता; ऐं बीजं, स्वाहा शक्तिः, मातृकावदङ्गानि ।

End :

विद्याप्रधानोऽयं मन्त्रः, अक्षरलक्ष्मं जपेत् पुरश्चरणार्थम्; सितैः
कमलैः पवस्तिस्तैः पुरश्चरणहोमः ॥

No. 7202. वाम्बादिनीमालामन्त्रः.

VĀGVĀDINIMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 62a of the MS. described under No. 5885.

Complete.

This Mantra is in praise of the goddess Vāgvadī under various significant names.

Beginning :

हे साध्यवन्धनाय, द्वी सर्वभूतिप्रदाय, ऐं वाक्मदाय, छी सर्व-
जगद्गृशीकरणाय, सौः सर्वसंक्षेमणाय, श्री महासंपलदाय, स्तौ भूम-
ण्डलाधिपत्यप्रदाय, द्रां चोरजीविने, ब्लुं संमोहनाय, ओं मोक्षप्र-
दाय ।

End :

ऐं छी सौः वद वद वाम्वादिने स्वाहा । सौः छी ऐं ओं से
से मारय मारय ही ही मम सकलाभिवृद्धये मनस्संपत्तय स्वाहा ॥

No. 7203. वामनमन्त्रः.

VĀMANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 116 of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The repetition of this Mantra is believed to have the power to secure the favour of Vāmana, an incarnation of Viṣṇu.

Beginning :

ओं वां वामनाय नमः इति माणायामः १२. . . .
अस्य श्रीवामनमन्त्रस्य ब्रह्मा जपिः, गायत्री छन्दः, वामनो
द्ववता; वामनप्रेरण्या वामनप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

वामनमहामन्त्रजपकुरिष्ये ।

ओं वां वामनाय नमः ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7204. वामनमन्त्रः.

VAMANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 325 α of the MS. described under No. 5477, wherein it is included in the Mantramalika, (Akashabhairavakalpa) 273 α given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Vamana is herein looked upon as the giver of food.

Beginning :

अस्य श्रीवामनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, (श्रीवामनो
देवता,) श्रीवामनप्रसादसिद्धार्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओन्नमो भगवते विष्णवे अन्नाधिष्ठये स्वाहा—इति मन्त्रः
दशसहस्रं जपः । इति ।

No. 7205. वायव्याख्यमन्त्रः.

VĀYAVYĀSTRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 27 α of the MS. described under No. 2886.

Complete.

It is stated herein that the repetition of this Mantra is a necessary preliminary to the use of the Brahmastra.

Beginning :

आ वायव्या वायव्या और्वीय या वा—इति वायव्याख्ये-
ण नववारं प्राणानायस्य ब्रह्माख्ययोगार्थं वायव्याख्यमन्त्रजपं करिष्ये—
अस्य श्रीवायव्याख्ययोगमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः।
महामूतवायुदेवता; यां बीजं, स्वाहा शक्तिः, जगत्सृष्टिरिति कीलकं,
ब्रह्माख्ययोगार्थं वायव्याख्यप्रयोगे विनियोगः ।

End :

पञ्चोपचारैरभ्यर्च्यं वायव्याख्यं त्रिवारं जपेत् ॥

No. 7206. वाराहीकवचः.

VĀRĀHĪKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 5681, wherein it has been omitted to be included in the list of the other works contained therin.

Complete.

The repetition of this Kavacamantra, which is addressed to the goddess Varahi, is believed to have the power to secure protection to one from all dangers and to enable one to destroy one's enemies.

Beginning :

अस्य श्रीवाराहीकवचस्य त्रिलोचनं ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री-
वाराही देवता; ओं चीजं, मैले शक्तिः, स्वाहा इति कीलकं, मम
सर्वशत्रुनाशनार्थं जपे विनियोगः ।

वार्तीली मे शिरः पातु वाराही फालमुत्तमम् ।

नेत्रे वराहवदना पातु कणों तथान्धिनी ॥

End :

वाराहीकवचं नित्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ॥

तथाविषं भूतगणा न रप्तशन्ति कदा चन ।

आपदशत्रुनोरादिग्रहदोषाश्च(शु) सम्मवाः ॥

माता पुत्रं यथा वत्सं षेनुः पक्षभेव लोचनम् ।

तथाङ्गभेव वाराही रक्ष रक्षेति सर्वदा ॥

Colophon :

इति वाराहीकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7207. वाराहीमन्त्र .

VĀRĀHIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 5672, wherein it is included in the Āmnāyamantramālikā 1a.

Complete.

The proper repetition of this Mantra, which is addressed to the goddess Varahi, is believed to be efficacious in bringing people under one's influence and control.

Beginning :

अस्य श्रीवाराहीमहामन्त्रस्य घरणीवराह ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीवाराही देवता; मूँ बीजं, ऐं शक्तिः, सौः कीलकं, मम श्रीवाराही-प्रसादसिद्धये जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

ऐं मूँ ओं नमो भगवति वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं मूँ ठ ठ ठ हुं फट् स्वाहा । श्रीवाराहाम्बाश्रीपादुकाम् ॥

No. 7208. वाराहीमन्त्रः.

VĀRĀHĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 244a of the MS. described under No. 537.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवाराहीमहामन्त्रस्य घरावराह ऋषिः, गायत्री छन्दः वाराही देवता; मूँ बीजं, ऐं शक्तिः, सौः कीलकं, मम वाराहीसि-दद्यार्थे विनियोगः ।

End :

शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं मूँ ठ ठ ठ हुं फट् स्वाहा ।

दिग्बन्धः । मूलम्—

दंष्ट्रोऽसत्पोत्रिमुखारविन्दकोटीरसंभिज्ञहिमांशुरेखाम् ।

हलं कपालं मुसलं दधानामात्रासिनी दुर्घटकाननस्याम् ॥

ऐं मूँ सौः ॥

No. 7209. वाराहीमन्त्रः.
VĀRĀHIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 185a of the MS. described under No. 537.
Complete.

This Mantra is addressed to the holy sandals of the goddess Varahi.

Beginning:

अस्य श्रीवाराहीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, वाराहीगुरु-
पादुका देवता; ऐं गामिति वीजं, ह स शक्तिः, स हू कीलकम् ।

End :

श्रीगुर्वद्विलसहृष्टां कपालसिध्वरां शिवाम् ।
नीलमध्यप्रभा चन्दे वाराहीगुरुपादुकाम् ॥

ऐं ग्लौ ह्रस्सकं । शेषं पूर्ववत् ॥

No. 7210. वारुणमन्त्रः.
VĀRUNAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 5987.
Complete.

The repetition of this Mantra addressed to Varuna is believed to bring about a downpour of rain.

Beginning:

अस्य श्रीवारुणमहामन्त्रस्य विभाण्डकपुत्र ऋश्यशृङ्ग ऋषिः, देवी
गायत्री छन्दः, पर्जन्यो देवता; वं वीजं, वारुणी शक्तिः, अस्मिन्
देशे सवस्तुवृष्टिं कुरु कुरु स्वाहेति कीलकं, अस्मिन् देशे अवग्रह-
दोषनिवृत्त्यर्थे अतिवृष्टिसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End :

समुद्रमध्यनिलयं वारुणीपतिमव्ययम् ।
प्रसुं सुवृष्टिदातारं चन्देऽहं वरुणं सदा ॥

मनुः—

ओं(वं) अस्मिन् देशे सद्यसुवृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥

No. 7211. वासुदेवद्वादशाक्षरमन्त्रः.

VĀSUDĒVADVĀDASĀKṢARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 6a of the MS. described under No. 5786.

This Mantra consists of 12 syllables. Its repetition is believed to please Visnu as Vāsudēva.

Beginning :

अथ वासुदेवद्वादशाक्षरमन्त्रः—ओं नमो भगवते वासुदेवायेति प्राणायामः १२.

ओं केशवाय नमः शिरसि, ओं नारायणाय नमः नेत्रयोः,

* * * *

अस्य श्रीवासुदेवद्वादशाक्षरमन्त्रस्य अन्तर्यामी कङ्गिः, जगती छन्दः, श्रीवासुदेवो देवता ; श्रीवासुदेवप्रेरणा श्रीवासुदेवप्रीत्यर्थे श्रीवासुदेव-द्वादशाक्षरमन्त्रजपे विनियोगः ।

End :

वासुदेवद्वादशाक्षरमन्त्रजपं करिष्ये—

ओं नमो भगवते वासुदेवाय ओ—इति जपः । उपसंहारः पूर्व-वत् ॥

No. 7212. विकलयक्षिणीमन्त्रः.

VIKALAYAKṢINĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 251a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā 229a.

Complete.

This Mantra is addressed to an aged Yakṣinī ; and its repetition is believed to be conducive to one's prosperity and well-being.

Beginning and End:

मन्त्रः—विकले ऐं ह्रीं श्रीं छ्रीं स्वाहा ।

प्रह्लेण मासत्रयं जप्य कुर्यात् । पूर्वोक्तदशांशहोमः । अष्टैश्वर्यप्रदो
भवति ॥

No. 7213. विकलयक्षिणीमन्त्रः.

VIKALAYAKSINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 297a of the MS. described under No. 5477
wherein it is found in the Maantramalika 273a.

Complete.

Same as the above.

No. 7214. विकलयक्षिणीमन्त्रः.

VIKALAYAKSINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 99a of the MS. described under No. 5588,
wherein it has been omitted to be included in the list of other
works.

Complete.

Same as the above.

No. 7215. विश्वेश्वरकवचः.

VIGHNEŚVARAKAVACAH.

Pages, 6. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 68a of the MS. described under No. 426,
wherein it is given as Ganēśakavaca.

Complete as found in the Bhavisyottara Purāna.

This Kavaca-mantra is addressed to the god Vinayaka; and
its repetition is believed to have the power to secure protection to
one from dangers and to remove one's diseases.

Beginning:

नन्दिकेश्वरं सर्वज्ञं भक्तानुभ्रहकारकं ।

भक्तिसुनिप्रदं नृणां सर्वरक्षाकरं परम् ॥

कवचं श्रोतुमिच्छामि सर्वकामार्थसाधनम् ।

श्रीनन्दिकेश्वर उवाच—

शृणु ब्रह्मन् प्रवक्ष्यामि गुणाद्वयतम् महत् ।
विभेशकवचं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ॥

अस्य श्रीमहागणेशकवचमहामन्त्रस्य आदिपुरुषोत्तमज्ञवये नमः,
अनुष्टुप्छन्दसे नमः, श्रीगणेश्वरदेवतायै नमः, गं वीजाय नमः, ह्री
शक्तये नमः, श्री कीलकाय नमः, श्रीमहागणपतिप्रसादासिद्धयर्थे जपे
विनियोगः ।

विभेशः पार्श्वतः पातु गणाध्यक्षस्तु दक्षिणे ।
पश्चिमे गजवक्षस्तु उत्तरे त्वधनाशनः ॥

End :

जलस्थलगतो बापि पातु मावापहारकः ।
सर्वत्र पातु सर्वेशः सर्वलोकेषु संब्रयः ॥
अभेदकवचं गुणं पवित्रं पापनाशनम् ।
प्रातः काले जपेन्नित्यं सदा व्याधिनिवारणम् ॥

यं ब्रह्मचारिणमचिन्त्यमनेकरूपं व्याहोज्जगद्वितमशेषदमापदभ्यम् ।
यस्सर्वसिद्धिभ(म)जतां ददतां वरिष्ठं विभेश्वर सकलसिद्धिकरणं नृणाम्॥

Colophon :

इति भाविष्योत्तरपुराणे चतुर्थखण्डे विभेश्वर-
कवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7216. विभेश्वरकवचः,

VIGHNEŚVARAKAVACAH

Pages, 11. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 18a of the MS. described under No. 1872,
wherein it is given as Ganapatikavaca.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ब्रह्मोमाच—

नन्दिकैश्वर सर्वज्ञ भक्तानुभवकारकं ।
भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणां सर्वेरक्षाकरं परम् ॥

* * * * *

अस्य श्रीविज्ञेशकवचभागमन्त्रस्य आदिपुरुषोत्तम ऋषि:, त्रिष्टु-
बनुष्टुप् छन्दांसि, श्रीविनायको देवता, गं बीजं, गी शक्तिः, इदं
कीलकं, रक्तवर्णश्रीमहागणपतिप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

* * * * *

विज्ञेशः पूर्वतः पालु गणाध्यक्षस्तु दक्षिणे ।
पश्चिमे गजवक्तस्तु उत्तरे विज्ञनाशनः ॥

End :

स्वस्तये सकलकार्यीसद्देय वस्तु हस्तिमुखमस्तु मे सदा ॥

Colophon :

इति गणपतिकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7217. विज्ञेश्वरकवचः.
VIGHNÉŚVARAKAVACAH.

Pages, 22. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5953.

Complete, as found in the Brahmanūḍapurāṇa.

Similar to the above. Held to be efficacious in removing all kinds of sins.

Beginning :

गजामने भूतगणाधिसेवितं कृपित्थजन्मूफलसारभक्षकम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारणं नमामि विज्ञेश्वरपादपङ्कजम् ॥

ओं ब्रह्मोवाच—

नन्दिकेश्वर सर्वज्ञ भक्तानुग्रहकारकम् ।
कवचं श्रेत्रुमिच्छामि सर्वकाम्यार्थसाधनम् ॥

* * * * *

अस्य श्रीविज्ञेश्वरकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य आदिपुरुषोत्तम ऋषि,
अनुष्टुप् छन्दः, श्रीविज्ञेश्वरो देवता, विं वीजं, त्रिं शक्तिः, शं कीलकै,
मम समस्तपापशयार्थे जपे विनियोगः ।

End :

सर्वा च सिद्धिं लभते मनुष्यो विज्ञेशसायुज्यमुपैति संशयः ॥
विज्ञेशसायुज्यमुपैति संशयो नमः ॥

Colophon :

इति ब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्मनन्दिकेश्वरसंवादे विज्ञेश्वरकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7218. विज्ञेश्वरमालामन्त्रः.

VIGHNESVARARAMALAMANTRAH

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 84a of the MS. described under No. 21

Complete.

This Mantra is in praise of Vinayaka under different significant names; and its repetition is held to be efficacious in enabling one to accomplish one's desires.

Beginning and End :

ओं यं ब्रह्मेशसुमुखाय लम्बोदराय अभीष्टमहात्मने सर्वकार्यसिद्धिक-
राय ओं क्रौं भ्वा घां आं ह्रीं क्रौं अभीष्टाय स्वाहा । ओं एकदन्ताय
लम्बोदराय अभीष्टमहात्मने सर्वकार्यसिद्धिकराय ह्रीं ह्रीं गजाननाय
गणपतये स्वाहा ॥

No. 7219. विदारणनृसिंहमन्त्रः.

VIDĀRANANRSIMHAMANTRAH

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 24a of the MS. described under No. 2886,

Complete.

This Mantra is addressed to Nrsimha conceived as tearing the demon Hiranyakasipu; and its repetition is believed to have the power to enable one to accomplish one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीविदारणनृसिंहस्य नारदो भगवान् विष्णुः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीविदारणनृसिंहो देवता; ओं बीजं, लं शक्तिः, गं कीलकं, मम सर्वाभीष्टार्थं विनियोगः।

End :

श्री ह्री ओं ओं श्री ह्री उग्रं वीरमीथते शुचिः। नृसिंहं भीषणं
मदं मृत्युमृत्युं नमाम्यहं श्री ह्री ओं श्रीनृसिंहाय विघ्नहे वज्रनखाय
धीनहि। तत्रः(न)सिंहः प्रचादेयात्॥

No. 7220. विद्यागोपालमन्त्रः.

VI. YĀGOPĀLAMANTRAH

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 57a of the MS. described under No. 5885.

Complete.

This Mantra consists in the repetition of a combination of the Kṛṣṇa-mantras with the Śrīvidyā-mantra. Both these Mantras are divided into 3 parts, and the first part of the Śrīvidyā-mantra is repeated after the first part of the Kṛṣṇa-mantra, the second after the second, and so on the combination is made as shown below:—

कृं कृष्णाय कं ए ई ल ह्री, गोविन्दाय ह स क ह ल ह्री,
गोपीजनवल्लभाय स्वाहा स क ल ह्री।

Beginning :

अस्य श्रीविद्यागोपालमन्त्रस्य आनन्दमैरव नारदा जपयः, अनुष्टुप्
छन्दः, गायत्री छन्दः, श्रीविद्यागोपालो देवता; कृं बीजं, स्वाहा शक्तिः,
कृष्णाय कीलकं, श्रीविद्यागोपालप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

End :

आद्यपादमध्यम मध्यमे हे चान्ते चान्तं योजयित्वा क्रमेण विद्या-
मन्त्रं कृष्णमन्त्रेण मन्त्रयेत् ॥

No. 7221. विद्यासम्पुटितमातृकान्यासः

VIDYĀSAMPUTTAMĀTRKĀNYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 193b of the MS. described under No. 124, wherein it is found in Daśavidhamātrkānyāsa 192a in the list of other works.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, while repeating at the same time the series of the Mantra-formulas containing the successive letters of the alphabet introduced into the Śrividya-mantra-formula in the natural as well as the reverse order.

Beginning :

अथ विद्यान्यासः —

अस्य श्रीविद्यासम्पुटितमातृकान्यासस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः पाञ्च-
श्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता; ऐं क ४ व्यञ्जनानि वीजानि,
सौः स ३ स्वराशक्तयः, क्ली ह ५ व्यक्तयः कीलकं, ममष्टदेवता-
प्रीतये विद्यासम्पुटितमातृकान्यासे विनियोगः ।

End :

ऐं ही श्री क १४ अं नमः स ३ ह ५ क ४ श्री ही ऐं
इत्यादिकान्तं न्यसेत् ॥

Colophon :

इति विद्यासम्पुटितमातृकान्यासः ॥

No. 7222. विद्यासंपुटितमातृकासरस्वतीमन्त्रः.

VIDYĀSAMPUTITAMĀTRKĀSARASVATIMANTRAH

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 140b of the MS. described under No. 537.

Complete.

Similar to the above. This Nrāsa is intended to serve as preliminary in relation to the repetition of the Śrividya-mantra.

Beginning:

अस्य श्रीविद्यासंपुटितमातृकासरस्वतीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पञ्चश्छन्दः, श्रीविद्यासंपुटितमातृका सरस्वती देवता, ऐं क ए बीज, हीं ह स शक्तिः, सौः स क कीलिकं, ममोपास्यमानश्रीविद्याङ्गत्वेन श्रीविद्यासंपुटितमातृकासरस्वती(न्यासे) विनियोगः ।

End:

ऐ हीं श्री क ए ह स स क अं क ए ह स स क नमः इति क्षमः-
पर्यन्तम् ॥

No. 7223. विद्युजिह्वामन्त्रः.

VIDYUJJIHVĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 252a of the MS. described under No. 531, wherein it is found in the Mantrāmalikā 229a in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra which is addressed to a certain Yakṣini designated Vidyujjhīhvā (having a tongue resembling the lightning) is considered to have the power of revealing to one all the past and future events.

Beginning:

ओं करङ्गमुखे विद्युजिह्वे ओं मूँ चटके जः जः ओं स्त्राहा ।

नित्यमष्टोत्तरशतं जप्ता यत्किञ्चित्सात्मभोजनम् ।
तद्विं दीयते तस्यै वदानो मासमेकतः ॥

End:

अतीत्यानागतं कर्म स्वस्या स्वस्यं त्रुवेतु सा ।
प्रतिमान् पर्वतान् सर्वान् चालयत्येव रक्षणात् ॥

No. 7224. विद्युजिह्वामन्त्रः.

VIDYUJJIHVĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 298b of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā 273x contained in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7225. विद्युजिह्वामन्त्रः.

VIDYUJJIHVĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 99b of the MS. described under No. 556, wherein this Mantra has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7226. विनायकाष्टाक्षरमन्त्रः.

VINĀYAKĀSTĀKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 29b of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The repetition of this Mantra consisting of eight syllables is intended to propitiate Vinayaks. The syllable Om, occurring both in the beginning and in the end, is not to be taken as forming part of the Mantra.

Beginning :

गुरुनमस्कारः । ओं क्षिप्रप्रसादाय नमः इति प्राणायामः (१२).

* * * *

अस्य श्रीविनायकाष्टकरमन्त्रस्य कौशिको अस्ता वा ऋषिः, गायत्री छन्दः, विनायको देवता; विनायकप्रेरणया विनायकप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओं क्षिप्रप्रसादाय नमः ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7227. विभूतिमन्त्रः.

VIBHŪTIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 6600, wherein this Mantra has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

This Mantra is repeated by Śaivas while putting on the holy ashes.

Beginning :

अग्निरिति भस्म, वायुरिति भस्म, जलमिति भस्म, स्वलमिति भस्म, व्योमेति भस्म.

श्रीकरं च पवित्रं च रोगशोकनिवारणम् ।

लोकवस्त्यकरं पुण्यं भस्म त्रैलोक्यपावनम् ॥

End :

कर्णै द्वौ शिवरुदं च कव्यां चेव महेश्वरम् ।
वहि: कण्ठे पशुपतिं शिवश्रीरुद्रमेव च ॥

No. 7228. विमुक्तबन्धनसुदर्शनमन्त्रः.

VIMUKTABANDHANASUDARŚANAMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 5822, wherein it is given as Vimuktabandhanamastra.

Complete.

This Mantra is addressed to Vision's "Discus," conceived as capable of going to any place whatsoever without any restraint for the accomplishment of desired objects.

Beginning :

अथ विमुक्तबन्धनमन्त्रः—

ओ नमो भगवते गहोमदिग्बिमुक्तबन्धनसुदर्शनाय अष्टादशवाहु-
यु(ति)दिग्बिमुक्तबन्धनाय महाज्वालामालाय ।

End :

ही ज्वालाचक्राय अधःपाताला(दि)दिग्बिमुक्तबन्धनाय स्वाहा । श्री
दीप्तचक्राय ऊर्ध्वप्रदेशदिग्बिमुक्तबन्धनाय स्वाहा । भूर्भुवस्सुवरो ॥

Colophon :

इति दिग्बिमुक्तबन्धः ॥

No. 7229. विश्वरूपधरगोपालमन्त्रः.

VIŚVARŪPADHARAGOPĀLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 56a of the MS. described under No. 5885.

Complete.

The repetition of this Mantra is held to please Kṛṣṇa onceived as having assumed an all-comprehensive universal form.

Beginning :

अस्य श्रीविश्वरूपधरगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषि, गायत्री छन्दः, विश्वरूपधरगोपालो देवता; ये कं सं गं षं डं ओं बीजे, हं चं छं जं शं जं हैं शक्ति, उं टं ठं डं दं णं ऊं कीलकं, विश्वरूपधरगोपालमन्त्रं जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

विन्दुयुत्पवाशहर्णात्मकमन्ते रुण्णाव गोविन्दाव गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥

No. 7230. विवाहगौरीमन्त्रः.

VIVĀHAGAURĪMANTRAH

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS, described under No. 5639.

Complete.

This Mantra is addressed to Pārvati conceived as going through the ceremony of marriage with Paramāśiva.

Beginning :

अस्य श्रीविवाहगौरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्दः, श्रीविवाहगौरी देवता, मम विवाहगौरीप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं कालि कालि वनं देहि कुरु कुरु स्वाहा ॥
उमासलिधौ लक्षजपसिद्धिः ॥

No. 7231. विष्वहरनारसिंहमालामन्त्रः.

VISAHARANĀRASIMHAMĀLĀMANTRAH

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 57a of the MS, described under No. 5819, wherein it is given as Narasimhamālamantra

Complete.

The due repetition of this Mantra, which is in praise of Nṛsiṁha, is believed to be efficacious in removing the evil effect of poisons of various kinds and in counteracting the effects of hostile Mantras.

Beginning :

ओं नमो भगवते नारसिंहाय तीर्णदेष्ट्राय ब्रुकेसराय सर्वरोग-
विनाशाय सर्वभयनिवारणाय ।

End :

सर्वविषहृष्टिविनाशाय परविद्याच्छेदनाय दह दह पञ्च पञ्च भक्षय
भक्षय हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon :

इति विषहरनारसिंहमन्त्रस्समाप्तः ॥

No. 7232. विषहरमन्त्रः.

VISAHARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 302b of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā 270a in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning and End :

ओं ह्रीं ह्रीं ह्रं वहिवासिन्यै नमः ॥

Colophon :

इति सकलविषहरमन्त्रः ॥

ध्यानम्—पिङ्गाक्षि पीताम्बरधारिणि ऊर्ध्वकेशिनि उन्मत्तस्यानि
त्रिशूलधारिणीति ॥

No. 7233. विशुचिकामन्त्रः.

VIŞUCIKĀMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3. Lines, 4 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 45a. The other works herein are Karmaprakāśika 1a, Vatuniyamavidhi 44a, Aśvatthastotra 47a, Sōmayārāśvattapujavidhi 50a.

Complete.

This Mantra is addressed to Visnu's Sakti conceived as the presiding deity of cholera; and its repetition is believed to be efficacious in driving away cholera.

Beginning :

मविश्य हृदयं प्राणे: पद्मर्प्तिहादिवाधनैः ।
वातलेखात्मको व्याधिर्भविष्यसि (ति) विशुचिका ॥

गुणिनि त्वचिकित्सार्थं मन्त्रोऽयं तु मयोच्यते ॥
ओ हो ही विष्णुशक्तये नमः । ओ नमो भगवति विष्णुशक्ति
एषेहि हर हर हन हन धन धन ।

End :

विषुचिके हिमवन्तं गच्छ यावच्चन्द्रमण्डले गतोऽसि स्वाहा ॥
इति मन्त्री महामन्त्रं न्यस्य बामकरोदरे ।
मार्जयेदातुराकारं तेन हस्तेन संयतः ॥

अब्र भ्रादेशमात्राङ्गी ततोऽव्यङ्गुलिंगपिणी ।
ततो मायश(षांश्चतु)लच्य(सा)ततस्त्वूची चमूव सा ॥

No. 7234. विष्णुकवचः.

VISNUKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 49b of the MS. described under No. 5786.

Complete; as found in the sixth Adhyāya of the Tulakāvēri-mahātmya which is dealt with in the Agnēyapurāṇa.

The repetition of this Kavacamantra addressed to Visnū is believed to be efficacious in securing protection and victory, in the curing of diseases and in the destruction of one's enemies, etc.

Beginning:

हरिश्वन्दः—

ब्रह्मन् श्रीविष्णुकवचं कीदृशं किंप्रभावकम् ।

केनोक्तं को मुनिश्वन्दो दैवतं कीदृशं मुने ॥

* * * * *
पूर्वतो मां हरिः पातु पश्चात्तकी च दक्षिणे ।

कृष्ण उत्तरतः पातु श्रीशो विष्णुश्र सर्वशः ॥

End:

इदं श्रीविष्णुकवचं सर्वमङ्गलदायकम् ।

सर्वरोगप्रशमनं सर्वशतुप्रणाशनम् ॥

एवं जप्तु तु तत्काले ग्रात्मरक्षाकरं परम् ।

त्रिसन्ध्यं यः पठेच्छुद्धः सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

Colophon:

इति श्रीमद्भगवत्पुराणे तुलाकावर्णमाहात्म्यं प्रष्टात्यये अगस्त्य
हरिश्वन्दसंबादे श्रीविष्णुकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7235. विष्णुकवचः.

VISNUKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 5938.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीविष्णुकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहाविष्णु परमात्मा देवता; वों वीजं, लक्ष्मीशक्तिः, नमः की-ल(के), मम सर्वाभीष्टसिद्धचर्ये विनियोगः ।

* * * * *
पादौ रक्षतु गोविन्दो गुलफे रक्षेज्जनार्दनः ।

जडे रक्षेद्वारिः पातु जान्वो रक्षेऽन्त्रविकमः ॥

End :

मुखनं चतुर्दशं दिव्यं वैनतेयेन रक्षन्म् ।

पूर्वायां पुण्डरीकाक्षं ओमेत्यां माधवस्तथा ॥

दक्षिणे नारसिंहश्च ।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ।

विष्णुलोकं स गच्छत्यो नम इति ॥

Colophon :

इति श्रीविष्णुकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7236. विष्णुपञ्चरमन्त्रः.

VISNU PANJARAHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 99b of the MS. described under No. 368ⁱⁱ, wherein it is wrongly stated as beginning on fol. 99a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

विष्णुपञ्चरामाहात्म्यं सर्वदुःखनिवारणम् ।

उं तेजो महाबीर्यं सर्वशत्रुनिकृन्तनम् ॥

त्रिपुरे दद्यामाने तु हरेण ब्रह्मणात्मनः ।

तदर्थे सम्प्रबद्ध्यामि आत्मरक्षासुखावहम् ॥

पादौ रक्षतु गोविन्दो जह्ने पातु त्रिविकमः ।
ऊरु मे केशवः पातु कटि दामोदरोऽथतु ॥

End :

जले रक्षतु बाराहस्तले रक्षतु वामनः ।
अटव्यां नारसिंहोऽपि सर्वतः पातु केशवः ॥

Colophon :

विष्णुपञ्चर सम्पूर्णम् ॥

No. 7237. विष्णुपञ्चरमन्त्रः.

VISNUPAÑJARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 191a of the MS. described under No. 5661.

Complete; as found in the Brahmandapurana.

The repetition of this Mantra, which is also addressed to Vishnu, is believed to have the power to secure protection to one from all kinds of dangers. Some of the good results believed to be due to the repetition of this Mantra are given in the last stanza.

Beginning :

अस्य श्रीविष्णुपञ्चरस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, ईश्वरो देवता, मम
शरीरसंरक्षणार्थे जपे विनियोगः ।

* * * *

पादौ रक्षतु गोविन्दो जह्ने पातु त्रिविकमः ।
ऊरु(ममा)च्युतो रक्षकेतु गुणं रक्षतु माधवः ॥

End :

विष्णुपञ्चरसंयुक्तो विचरेच महीपतिः ।
राजद्वारे विलद्वारे प्रदेशे मूतसङ्कुले ॥

* * * *

अपुत्रो लभते पुत्रं धनहीनो लभेद्दनम् ।
मुच्यते सर्वपोपभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥

Colophon :

इति ब्रह्माण्डपुराणे त्रिपुरदहनकाले पार्वतीपरमेश्वरसंवादे श्रीविष्णु-
पञ्चरसोन्नतं सम्पूर्णम् ॥

No. 7238. विष्णुपञ्चरमन्त्रः.**VISNUPAÑJARAMANTRAH.**

Pages, 2 Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 10^a of the MS. described under No. 2373, wherein it has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

पादी मे पातु गोविन्दः जह्ने चापि त्रिविक्रमः ।
ऊरु च केशवो रक्षेत् कटि चैव जनार्दनः ॥
नाभि तु भार्गवो रक्षेत् गुणं रक्षतु वामनः ।

End :

सञ्जुतं सर्वगात्रेषु प्रविष्टो विष्णुपञ्चरम् ॥
पञ्चरश्च प्रविष्टोऽभूत् विचरामि महीतले ।
नदीतटे महारथ्ये चोरव्याघ्रमयेषु च ॥
दाकिनीमूत्रेताले भव्य नास्ति कदाचन ।
रोगातो मुच्यते रोगात् स नरदिश्रयमामुच्यात् ॥

No. 7239. विष्णुपञ्चरमन्त्रः.**VISNUPAÑJARAMANTRAH.**

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1^a of the MS. described under No. 2190, wherein it is given as Visnupañjarakavaca.

Complete.

Same as the work described under number 6473,

No. 7240. विष्णुमन्त्रः—न्याससहितः।
VISNUMANTRAH WITH NYĀSA.

Pages, 5. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 2373, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Viṣṇu. Preliminary to the repetition of this Mantra, the touching of the various parts of one's body, repeating the several names of Viṣṇu, is enjoined.

Beginning :

अन्यग्रचितः कुर्वति न्यासकर्म बधाविधि ।
करन्यासं पुरा कृत्वा ततोऽङ्गन्यासमाचरेत् ॥
अङ्गुष्ठामे तु गोविन्दं तर्जन्यां तु महीधरम् ।
मध्यमायां हृषीकेशमनामिकायां त्रिविक्रमम् ॥

End :

मनुः—
ओ नमो विष्णवे केशबाय सर्वक्लेशापहरें नमः ॥
अष्टोत्तरं वा सहस्रं वा जप कुर्यात् ।
पशोपचारान् कृत्वा एव न्यासविधि कृत्वा साक्षात्कारावणो भवेत् ॥

No. 7241. विष्णुषदक्षरमन्त्रः।
VISNUSADAKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 5780.

Complete.

The repetition of this Mantra consisting of six syllables is intended to secure the favour of Viṣṇu.

Beginning :

अथ विष्णुषडक्षरमन्त्रः—

ओं विष्णवे नमः इति प्राणायामः १२.

* * * *

अस्य श्रीविष्णुषडक्षरमन्त्रस्य अन्तर्यामी ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीविष्णुप्रेरणया श्रीविष्णुप्रीत्यर्थे श्रीविष्णुषडक्षरमन्त्रजपे विनियोगः ।

End :

ओं विष्णवे नमः—इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

Colophon :

इत्यष्टमहामन्त्रजपः सम्पूर्णः ॥

No. 7242. विष्णुषडक्षरमन्त्रः.

VISNUṢADAKṢABAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 37a of the MS. described under No. 3050.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीविष्णुषडक्षरमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीमहाविष्णुर्देवता; ओं बीजं, नमशक्तिः, श्री कीलकं, श्रीविष्णुप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवलं सरसीरुहेक्षणम् ।

सहारवक्षस्सलकौस्तुभिर्यं नमामि विष्णु शिरसा चतुर्मुर्जम् ॥

मन्त्रः—

ओ नमो विष्णवे ॥

No. 7243. विष्णुपदक्षरमन्त्रः.

VISNU SADAKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 12a of the M.S. described under No. 3546, wherein it is given as Visnusadaksaramantrayam.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीविष्णुपदक्षरमहामन्त्रस्य ब्रह्माचास्तनकादा अप्यः, देवी
गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता; ओ वीज, उ शक्ति, अं कीलक,
श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

विष्णुं श्यामलचन्द्रकोटिसहशं सङ्घं रथाङ्गं गदा-
मम्भोजं दधतं सिताकूजनिलये कान्त्या जगन्मोहनम् ।
आबद्धाङ्गदहरभीक्तिकरमाशोभास्फुरद्वक्षसं
श्रीवत्साङ्गमुदारकास्तुभवरं वन्दे मुनीन्द्रावृतप् ॥
ओ ॥

No. 7244. विष्णुसूक्तमन्त्रः.

VISNU SŪKTAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 15b of the M.S. described under No. 5786.

Complete.

This Mantra is in praise of Visnu. It consists of 6 Rks in the 154th Sūkta of the 1st Mandala of the Rigvēda.

Beginning :

ओ विष्णवे नमः ओ इति प्राणायामः (१२).
पूर्णज्ञानत्यादिन्यासः ।

अस्य श्रीविष्णुसूक्तमहामन्त्रस्य दीर्घतमा ऋषिः, विष्णुप् छन्दः, श्रीविष्णुदेवता; श्रीविष्णुप्रेरणया विष्णुप्रीत्यर्थे विष्णुपद्चसूक्तमहामन्त्रजपे विनियोगः ।

End :

यत्र गावो भूरिशूङ्गा अयासः । अत्राह तदुलगायस्य वृष्णः ।

परमं पदमवताति भूरि—इत्यन्तं जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7245. विष्णुसूक्तमन्त्रः.

VISNU-SŪKTAMANTRAH.

Page, i. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 5786, wherein it has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

The Mantra here consists of 6 Rks in the 154th, 6 Rks in the 155th, and 5 Rks in the 156th Sūkta of the 1st Mandala of the R̄gveda.

Beginning :

अथवा विष्णोर्नुकमित्यारभ्य ऋतस्य भागे यजमानमाभजत् इत्यन्तं वर्गोत्तमकम् ।

End :

द्वितीयस्य जगती छन्दः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7246. विसर्गमातृकान्यासः.

VISARGAMĀTRAKĀNYĀSAH.

Page, i. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 193a of the MS. described under No. 124, wherein it is found in Dasavidhamātyakanyāsa 192a in the list of other works.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while uttering the series of Mantra-formulas obtained by introducing the

successive letters of the alphabet followed by Visarga between the words ओऽन् and नमः.

Beginning :

अथ विसर्ग[बिन्दु]मातृकान्यासः—

अस्य श्रीविसर्गमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीविसर्गमातृका सरखती देवता; अज्ञनानि बीजानि, स्वराश्वसन्नयः, व्यक्तयः कीलकं, विसर्गमातृकान्यासे विनियोगः।

End :

ओऽन्म इति शान्तं न्यसेत् ॥

Cloophon :

इति विसर्गमातृकान्यासः ॥

No. 7247. विसर्गमातृकासरखतीमन्त्रः.

VISARGAMĀTRIKĀSARASVATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 139a of the MS. described under No. 537. The other works therein referred to are Dāvinashatmya 1a, Kātyayana-mantra 57a, Lalitastottara-saṭanāman 64a, Tripurasundarītattvādyāmantra-saṭanāman 66a, Śaliūlamantra 75a, Pratikriyāstotrā 75a, Dāviṇīktamālāmantra 78a, Mahalakṣmīpiṭṭja 80a, Pañcasimhāsanāśvāri (with Sūkta) 84a, Mahātripurasundari, mantrasāsa 87a, Śrividya-ratnāsūtra 90a, Śaktipratyangirāmala-mantra 93a, Balasahasramānan 97a, Bagalamukhi-stotrā 103a, Bhuvanēśvaristotrā 106a, Āśrīmantra 107a, Lalitatriśati 109a, Rājyalakṣmīstotrā 112a, Gurupādukāmantra 113a, 135a and 144a, Prasādaparaparāprāṣṭadamantra 115a, Dvīpiṇjavīḍhāna 118a, Balatripurasundarīmantra 130a, 145a and 222a, Bagalamukhi-pūjāvīḍhāna 131a, Vīrāhīmantra 135a and 244a, Mahapādūkāmantra 135a, Pārvatīmantra 135a, Kālikāmantra 136a, Sambandakṣināmūrtīmantra 136a, Rājarājēśvarī-mahātri-purasundarīmantra 137a, Āpaduddhāraṇavatākuṭha-hairavamāntra 137a, Sudhāmatrī-sarasvatī 138a, Bindumātīkūsaravatī 138a, Hṛīlakha-sarasvatī

139a, Yukiamitrkāśasavati 139b, Balasamputitamatrīkāśasavati
 139b, Parśasamputitamatrīkāśasavati 140a, Vidyasamputitamatrīkā-
 sasavati 140b, Ajapāmītrkāśasavati 140b, Paraprādamantra
 141b, Ajapāgayatri 142a and 250a, Pañcamayāgavilhi 145b,
 Dipūlumitra 150a, Dvimalamana 156b, Uochisṭagāṇapati-
 mantra 158a, Mādhavikṣināmṛtimantra 158a and 167a, Śrividya-
 mantra 159a, Prānapratīṣṭhā 159 and 244a, Antarmatrīkāśasavati
 160b, Bahirnitrīkāśasavati 161a, Kukumāmatrīkāśasavati 162b,
 Maṭṭagāṇapati-mantra 163b and 168a, Bagalāmukhīmālāmantra
 163b, Tiraskariūlāmantra 164b, Tārakābrahmāmantra 165a,
 Cintāmaṇisarasavati 165a, Mahālakṣmīmantra 165b, Bhava-nīśvari
 mantra 165b, Tvaritipārvatimantra 165b, Śābarāmantra
 (Hindustani) 169a, Līlitasahasraulmānahimān 170a, Dakṣinā-
 mūrtikāvaca 173a, Dakṣināmūrtiyājaka 175a, Dakṣināmūrtiyāntra
 176a, Dakṣināmūrtiyopanisad 176b, Nilakanṭhabadabānsa 179a,
 Bhairavāmālāmantra 179b, Indrāksitōtramantra 181 and 183a,
 Indrāksiyāntra 182a and 183b, Dakṣināmūrtiyastottaraśatānamān
 185a, Coranavyūha 187a, Śarabhasūluvadvātrīmādakṣarīmantra
 191a, Śarabhasūluvamantrarājāmāhāmantra 191a and 191b,
 Śarabhasūluvamālāmūtra 192a, Śarabhaotkalākārānamālāmantra
 192b, Śarabhasūluvapālikṣirājāmālāmantra 194a, Śarabhamālā-
 mantra 195a, Dakṣināmūrtiyākhyā 196a, Viśāśarabhasūlu-
 mantra 211a, Sudarśanāmālāmantra 212a, Narasiṁhamālāmantra
 212b, Pañcavaktrahanumatstōtramantra 213b, Hanumadbaja-
 bīnalāmantra 215a, Virathadrakāvaca 216a, Hanumanmantra
 219a, Aghōrāsteamantra 220b, Svarṇākārṣṇabhairavamantra 221a,
 Sahvisechūlinīmantra 224b, Garudapañcasat 224b, Brahma-
 sudarśanāmantra 226a, Sudarśanākāvaca 227a, Baḍabānala-
 sułarsana 231b, Aghōrasudarsana 232b, Neiñhusaḥasrāksari 234a,
 Sudarśanāmālāmantra 234a and 237a, Hanumanmālāmantra 239b,
 240b and 243a, Śrimāstōtra 241a, Pindapiśīś 245a, Balākāvacea
 246a, Balāhrdaya 247a, Balāmālāmantra 248a, Balāstavarāja 248b,
 Gayatricāmītyāna 254a, Sōḍaśānāmadhyāna 256a, Śivavēda-
 padustava 259a, Dakṣināmūrtiyājaka 268a and b, Viśāśarabha-
 mālāmantra 271a, Bhasmanyāsa 272a, Āndhrapadyamulu 274a,
 Navaratnāmālīka 276a, Dēviśāva 277a, Mallikārjunastava 279a,

Ekāṁśevarāstaka 79b, Bilvāstaka 280b, Pīrvatiparamāśevarāstaka 281a, Mahadēviṣtōtra 281b, Dēvikavaca 283a.

Complete.

Similar to the above.

This Nyāsa is intended to be a preliminary performance in relation to the repetition of the Śrividya-mantra.

Beginning :

अस्य श्रीविसर्गमातृकासरत्वतीमन्त्रस्य ब्रह्मा जपि, गायत्री छन्दः, विसर्गमातृका सरत्वती देवता; हलो वीजानि, स्वराशशक्तयः, चिन्दवः कीलकं, सगोपाश्यमानश्रीविद्याकुर्स्वेन विसर्गमातृकान्यासे विनियोगः।

End :

ओ ही श्री अः नमः—इति ध नमः पर्वतम् ॥

No. 7248. वीणाश्यामलामन्त्रः.

VINĀŚYĀMĀLĀMANTRAH

Page, 1. Lines, 6 on page.

Begins on fol. 3b of the MS. described under No. 673, wherein it is included in the Saḍamnaya 1a in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate the goddess Śyāmala, who is the same as Dēvi, and is believed to have the power to enable one to become proficient in the art of music.

Beginning :

अस्य श्रीवीणाश्यामलामन्त्रस्य मत्तुः जपि, अनुष्टुप् छन्दः, वीणाश्यामला देवता; ह्रीं वीजं, ह्रीं शक्तिः, श्रीं कीलकं, वीणाश्यामलाप्रसादसिद्धयर्थं जपे विनियोगः।

End :

मनुः—ऐ ही श्री ओ नमो भगवति वीणार्हे मम सङ्गीतविद्या प्रथम्भ स्त्राहा ॥

No. 7249. वीणाश्यामलामन्त्रः.
VINAŚYAMALĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 229a of the MS. described under No. 124, wherein it is found in the Sañjamayamantra 228b in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवीणाश्यामलामन्त्रस्य मतज्ञं जपिः, अनुष्टुप् छन्दः, वीणा
देवता, वीणाश्यामलाप्र—गः ।

End :

ओं नमो भगवति वि वीणायै मम सङ्गीतविद्यां सवच्छु खाहा ।
सङ्गीतश्यामलाम्बादिव्यश्रीपादुकां पूजयामि ॥

No. 7250. वीरदशकमन्त्रः.
VIRADĀŠAKAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 5b of the MS. described under No. 5673, wherein this Mantra is found in the Amnāyamantramālikā 1+ in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to propitiate the following ten Vira-bhairavas who are looked upon as Śakta-gurus :—

(1) Srstivirabhairava, (2) Sthitivirabhairava, (3) Sambhāravirabhairava, (4) Raktavirabhairava, (5) Yamavirabhairava, (6) Mṛtyuvirabhairava, (7) Bhadravirabhairava, (8) Paramārkavirabhairava, (9) Martandavirabhairava, (10) Kalagnirudrabhairava.

Beginnnig :

अस्य श्रीवीरदशकमन्त्रस्य परमानन्दभैरव जपिः, गायत्री छन्दः,
श्रीदशबीरभैरवो देवता; ओं वीजं, ह्ली शक्तिः, हं (फं) कीलकं, मम
श्रीवीरदशकप्रसादसिद्धयर्थे विनियोगः ।

End:

मनुः—

ही श्री कं फां फीं सुष्टिवीरभैरवश्री ५, स्थितिवीरभैरवश्री ५, सं
द्वारवीरभैरवश्री ५, कालाभिरुद्रवीरभैरवश्री ५, १४ ॥

No. 7251. वीरदशकमन्त्रः.
VIRADASAKAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 2848,
wherein it is found in the Pūrvāmnayamantramālīka 16a.

Complete.

Same as the above.

No. 7252. वीरदारणनारसिंहमालामन्त्रः.
VIRADĀRAṄĀNĀRASIṂHAMALAMANTRAH.

Pages, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1b of the MS. described under No. 5828, wherein
this Mantra has been omitted to be included in the list of other
works given therein.

Incomplete.

This Mantra praises, under various significant names, Nr̄asimha
who tore to pieces the valiant Hiranyakashipu.

Beginning :

ओं नमो भगवते अबोरवीरदारणनारसिंह(य)रौद्राभिरुद्रलितनेत्र-
त्रयाय प्रलयकालाभिरुद्रावतारा(य)ज्वालानारसिंहा(य).

End:

ज्वालय ज्वालय महानारसिंह स्त्र स्त्र रजित रजित स्तम्भोत्सू-
र्जित धगधगित.

No. 7253. वीरनृसिंहमन्त्रः.
VIRANRSIṂHAMANTRAH.

Pages, 12. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 9b of the MS. described under No. 6387, wherein
it is apparently wrongly stated as beginning on fol. 9a in the list
of other works.

Complete as found in the Markandeya-purāna.

This Mantra also praises Nṛsiṁha under various significant names.

Beginning :

अस्य श्रीवैरनृसिंहकेसरिप्रभापटलबलमग्रस्य अधोरनृसिंहकोटिसूर्य-
प्रकाशस्य श्रीज्वालानृसिंहदिव्यमन्त्रो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, जो नमो
भगवते दिव्यनृसिंहसुदर्शनाय कालभिरुद्राय हुङ्कृतविजयशौर्यमहाबल-
पराक्रमाय सहस्रमुजशङ्क्रकगदाधरवज्रदण्डकरालाय.

End :

हौं हीं हूं हें हैं हौं हीं हः क्षां क्षीं क्षं क्षें क्षों क्षों क्षः
द्रीं द्रीं हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon :

इति मार्कण्डेयपुराणे वीरनृसिंहमालामन्त्रः संपूर्णः ॥

No. 7254. वीरनृसिंहमन्त्रः.

VIRANRSIMHAMANTRAH.

Pages, 18. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5836.

Complete.

Same as the above.

No. 7255. वीरप्रचण्डहनुमन्मालामन्त्रः.

VIRAPRAUANDAHANUMANMĀLAMANTRAH.

Pages, 15. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 44b of the MS. described under No. 5822.

Complete.

This Mantra is addressed to Hanumat who is conceived as a very valiant and awe-inspiring deity.

Beginning :

वीरप्रतापहनुमन्मालामन्त्रस्य शौनक ऋषिः, अतिजगती छन्दः,
हनुमान् रुद्रो देवता; रां बीजं, फट् शक्तिः, हुं कीलकं, श्रीहनुमव-
सादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

ओं पे झी हुं ह ह ओं नमो भगवते वीरहनुमते

* * * * *

ओं तपस्सत्यं ओं नमो भगवते रामदूतहनुमते वीर्यायामाय फट् ।
भूर्भुवस्सुवरोमिति विमु(दि)क्वन्धः ॥

Colophon :

हनुमन्मालामन्त्रः समाप्तः ॥

No. 7256. वीरप्रतापहनुमन्मन्त्रः

VIRAPRATĀPAHANŪMANMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 67a of the MS. described under No. 31.

Complete.

Similar to the above. The repetition of this Mantra is considered to have the power to enable one to accomplish one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीवीरप्रतापहनुमन्महामन्त्रस्य ईश्वरः ऋषिः, जगती छन्दः,
श्रीवीरप्रतापहनुमान् देवता, हीं बीजं, फट् शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम
वीरप्रतापहनुम — विनियोगः ।

End :

मनुः—श्री वीरहनुमन्ताय प्रतिभटशिरश्छेदनाय शशणागतवज्रपङ्कर
मम सर्वकार्याणि साधय साधय हुं फट् स्वाहा । गायत्री—तत्पुरुषाय
विश्वहे रामभक्ताय धीमहि । तत्रः पूर्वमः प्रचोदयात् ॥

No. 7257. वीरभद्रकवचः.
VIRABHADRAKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 153a of the MS. described under No. 5661.

Complete.

This Kavaca-mantra is addressed to Virabhadra; and its repetition is considered to have the power to secure protection to one from all possible dangers and to be helpful in the accomplishment of one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीवीरभद्रकवचसोत्रमन्त्रस्य अतिभगवान् ऋषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, प्रसन्नवीरभद्रो देवता, मम इष्टकाम्यार्थसिद्धयर्थे जपे विनि-
योगः ।

* * * *

वीरभद्रोऽग्रतः पातु पृष्ठं पातु पिनाकभूत् ।
वक्षो(दक्षे)दक्षक्रतुध्वंसी वामदेवस्तु वामतः ॥

End :

श्रीवीरभद्रकवचं भक्तानां वज्रपञ्चरम् ।
यः पठेच्छृण्याजित्यं वीरभद्रप्रसादतः ॥
अन्तश्च वीरो वहिरेव वीरः पार्थश्च वीरः परितश्च वीरः ।
पृष्ठे च वीरः पुरतश्च वीरः सर्वत्र वीरस्सगणस्सहायः ॥

Colophon :

वीरभद्रकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7258. वीरभद्रकवचः.
VIRABHADRAKAVACAH.

Pages, 6. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 216a of the MS. described under No. 537.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवीरभद्रकवचस्तोत्रमन्त्रस्य पशुपतिः ऋषिः, विष्णुर्चडन्दः, श्रीवीरभद्रो देवता; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, श्री कीलकं,

* * *

श्री वीरभद्रकवचं पूर्वदिशं बन्धयामि—रुद्रविशेश्वराय नमः, आग्नेयदिशं बन्धयामि—विष्णुलिङ्गवीरभद्राय नमः ।

End :

क्षा क्षी क्षूं क्षे क्षों क्षी क्षः त्रिशान्तवीरभद्राय त्रिशूलमरुग-
पाशाङ्कशधनुशशरशस्त्रमुसलतोमरवाणाङ्कुशसकलशस्त्रास्त्रमूषणाय ओं ठं ठं
ठं ठं हं हं हें हें हुं हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7259. वीरभद्रबडवानलमन्त्रः.

VIRABHADRABADABANALAMANTRAH.

Pages, 7. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 43a of the MS. described under No. 5836.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate Virabhadra conceived to be as terrible as the sub-marine fire known as Bajabanaiks.

Beginning :

अस्य श्रीवीरभद्रबडवानलमन्त्रस्य ईशानं ऋषिः, ककुत् छन्दः, श्रीवीरभद्रबडवानलरुद्रो देवता; ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, वषट् की-
लकं, मम श्रीवीरभद्रप्रतियर्थे विनियोगः ।

End :

ओं नमो मगवते प्रळयकालवीरभद्राय कुरु कुरु फट् स्वाहा ॥

No. 7260. वीरभद्रबडवानलमन्त्रः.

VIRABHADRABADABANALAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 5422, wherein it has been wrongly given as Virabhadra-kavaca in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

The deity addressed here is Prajayakalavirabhadra, and the repetition of this Mantra is held to be efficacious in safeguarding one's Mautras and in counteracting the effects of hostile Mantras, etc.

Beginning :

अस्य श्रीवीरभद्रबहवानलमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पश्चिमछन्दः,
श्रीप्रलयकालवीरभद्रो देवता; ओं बीजं, हां कीलकं, मम श्रीप्रलयकाल-
वीरभद्रप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

End :

ओं नमो भगवते प्रलयकालवीरभद्रावताराय अनेककालनिर्णशनाय
दक्षयज्ञविनाशनाय आत्ममन्त्रयन्त्रन्त्ररक्षणाय परमन्त्रपरव्यन्त्रपरतन्त्र-
पञ्चदनाय आमुखु आमुखु कह कह अनेकमुद्राय ह्रां ह्रौ ह्रै ह्रै
ह्रै ह्रै ह्रै फट् स्वाहा ॥

No. 7261. वीरभद्रबहवानलमन्त्रः.

VIRABHADRABADABĀNALAMANTRAH.

Substance, palm-leaf. Size, 5½ × 1½ inches. Pages, 7. Lines, 5
on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance,
old.

Begins on fol. 5a. The other works herein are Indrākṣistōtra
1a, Sarabhasālvamantra 4a.

Complete.

Same as the above.

No. 7262. वीरभद्रबहवानलमन्त्रः.

VIRABHADRABADABĀNALAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 2b of the MS. described under No. 5828.

Complete.

This Mantra is addressed to Virabhadra conceived to be as
terrible as the sub-marine fire known as Baṭṭabāgni; and its
repetition is considered to be efficacious in bringing about the
accomplishment of one's desires.

Beginning :

अस्म श्रीवीरभद्रबडवानलमन्त्रस्य विष्णुः ऋषि, अमृतगायत्री छन्दः, वीरभद्रेश्वरो देवता; हुं वीजं, ह्रीं शक्तिः, मम इष्टकास्यार्थसिद्ध्यर्थे वीरेश्वरप्रत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

कम्पय कम्पय स हो ह वीरभद्र रुद्रे रौद्रावतार भक्तजनगरस्तणाय श्री हूं फट् खाहा ॥

No. 7263. वीरभद्रबडवानलमालामन्त्रः.

VIRABHADRABĀNĀLAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 6393.

Incomplete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं हां अधोरवीरसाराय, ह्रीं अरुणप्रभाकरप्रज्वलितकुण्डलघराय, हुं अष्टादशभुजकलकिञ्चिणीकरवराय, हौं शङ्कुचक्रगदाधरनिशूलहमरुक्षनुर्बाणहलमुसलपाशाकुशकरवालकालसर्पाधोरखट्टाङ्गकुलिशमुद्गरभिष्ठिष्या-लाधविलायुधधराय, प्रलयकालाभिरुद्ररौद्रवर्मज्योतिःप्रचण्डवीरभद्रबडवानलमैरवाय ।

End :

यं रं सं नं चतुर्वेदपरिपूर्णम् अनुच(म)मन्त्रमायावाद अमङ्ग-वेगगहुडवेगाय सर्वमन्त्रसर्वेयन्ततन्तवरक्षणाय सर्वपरमन्त्रयन्ततन्तवच्छेदनाय.

No. 7264. वीरभद्रबडवानलमालामन्त्रः.

VIRABHADRABĀNĀLAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 77a of the MS. described under No. 5673.

Complete.

Similar to the above.

Held to be efficacious in removing all kinds of evils and in securing the grace of Pralayakalavirabhadra.

Beginning :

अस्य श्रीवीरभद्रबडबानलस्तोत्रमन्त्रस्य वापदेव ऋषिः, पञ्चश्छन्दः, श्रीप्रलयकालवीरभद्रो देवता ; ओं बीजं, ही शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम सर्वोपदेवप्रहरणार्थसिद्धचर्थे श्रीप्रलयकालवीरभद्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

क्ष म र व र र यी ओं नमो भगवते प्रलयकालवीरभद्रावताराय ही ही हूं हैं हौं हः फट् स्वाहा ॥

No. 7265. वीरभद्रमन्त्रः.

VIRABHADRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 239a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramalaika 229a in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Virabhadra created by Siva for destroying the sacrifice performed by Daksa.

Beginning :

अस्य श्रीवीरभद्रमन्त्रस्य उक्ता(नि) छन्दः (न्दासि), . . .
कृत्वा जपं करिये । तत् मन्त्रं . . . मूलमन्त्रः—ओं नमो
वीरभद्राय दक्षयज्ञविनाशनाय ।

End :

अज्ञनातनयमनोराज्ञिताय हीं हुं फट् स्वाहा । अज्ञ(र)लक्षपुरश्चरणं,
मूलमन्त्रमेकाक्षरं जपेत् । दशांशहोमः ॥

No. 7266. वीरभद्रमन्त्रः.
VIRABHADRAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 91b of the MS. described under No. 5566, wherein it is wrongly stated as beginning on fol. 93 in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7267. वीरभद्रमन्त्रः.
VIRABHADRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 282a of the MS. described under No. 5477, wherein it is included in the Mantramalika 273a given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above. Held to be efficacious in removing various kinds of evils.

Beginning and End:

अस्य श्रीवीरभद्रमन्त्रस्य उकानि छन्दांसि, वामदेव ऋषिः, श्री-
सदाशिवरुद्गो देवता; भद्रकाली बीजं, श्री शक्तिः, ममारिष्टनिहरणार्थे
विनियोगः । सर्वत्र रुद्रगायत्रीजपः ॥

No. 7268. वीरभद्रमन्त्रः.
VIRABHADRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 45b of the MS. described under No. 2886.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

वीरभद्रस्य कालरुद्रः, जगती, वीरभद्रः, विं ची, हुं श, नि-
श्च्रहे ।

End:

त्रौं खं फट् च रिपूर् फट् च स्वाहान्तं मन्त्रमुच्यते ॥
 अक्षरसहस्रं जपः ।
 ठकारमध्ये परिलिख्य मन्त्रं बाष्णोऽष्टपत्रेषु च हुं फडर्णम् ।
 संवेष्य पाशाङ्कशमानृकाण्माराधयेच्छचामलवीरभद्रम् ॥
 आराधनानन्तरं मातृकावर्णपूर्वकं जपेत् ॥

No. 7269. वीरभद्रमालामन्त्रः.

VIRABHADRAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 53b of the MS. described under No. 5686.
 Complete.

The repetition of this Mantra, which is also addressed to Virabhadra, is held to be efficacious in driving away and destroying evil spirits, etc.

Beginning and End:

रौद्रं रुद्रावतारं हुतवहनयनं व्योमकेशं सुदंड
 इयामाङ्गं भीमरूपं भिणि भिणि रमसं ज्वालमालाहुताङ्गम् ।
 भूतप्रेताधिनाथं कदनकल्पिते खड्डचर्मे वहन्ते
 वन्दे लोकैकवीरं त्रिमुखनमहितं वीरभद्रं नमामि ॥
 ओं प्रलयकालभूतवेतालभैरवाय भूतप्रेतपिशाचोचाटनाय स्वमन्त्र-
 यन्त्ररक्षणाय अष्टम(हा)भैरवाय शाकिनीः डाकिनीः छिन्धि छिन्धि सर्व-
 शक्तीः छिन्धि छिन्धि द्वीं ह्रीं ठं फट् स्वाहा ॥

No. 7270. वीरभद्रमालामन्त्रः.

VIRABHADRAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 6005.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ॐ वीरभद्राय द्र(द)क्षसंहरणाय आपदुडारणाय ईश्वरपुत्राय प्रल-
यामिरु(द्रावताराय) नरसिंहसंहरणाय ॐ फट् स्वाहा ।

End :

ल ल ल ल लि लि ॐ अघोरभद्राय नमः ॐ फट् स्वाहा ॥

No. 7271. वीरभद्रमालामन्त्रः.

VIRABHADRAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 6005.

Complete.

Same as the above.

No. 7272. वीरलक्ष्मीमन्त्रः.

VIRALAKSMĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 6157.

Incomplete.

This Mantra is in praise of Viralakṣmi, described with various significant attributes.

Beginning :

ओं ॐ ॐ ऊवल ऊवल अघोरवीरमन्त्रज्ञे वीजसङ्कलितमहामि-
वीजाक्षरि सङ्कलितसकलग्रहबन्धनि अष्टदिग्बन्धनि नानादिग्बन्धनि आ-
काशबन्धनि अन्तरिक्षबन्धनि अवनिवन्धनि.

End :

हा हूं ॐ वीजाक्षरि रक्ताक्षि उग्ररूपि ॐ ऊवालालक्ष्मि अघो-
रवीरलक्ष्मि ॥

No. 7273. वीरशरभमन्त्रः.

VIRASARABHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 281a of the MS. described under No. 5477, wherein it is included in the Mantramanjika 373 given therein in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Rudra or Śiva, who, according to the Purāṇas, once assumed a peculiar beast-and-hird form to subdue the Nṛsiṁha (man-lion) incarnation of Viṣṇu: and its repetition is believed to enable one to accomplish the four Pūrṇārthaś or aims of life, viz., Dharmā, Artha, Kāma and Mokṣa.

Beginning :

अस्म श्रीवीरशरभमहामन्त्रस्य त्रिपुरान्तक ऋषि:, अनुष्टुप् चन्द, त्रिपुरसंहारमहारुद्रो देवता; मय चतुर्विषप्रूलार्थसिद्ध्यर्थे विनिवोगः ।

End :

ओ नमो भगवते महावीरशरभाय द्विशिरसे द्विनेत्राय द्विपक्षाय सपुच्छायाभिवर्णाय मृगविहङ्गरूपाय श्रीवीरशरभाय नमः ॥
पूर्ववज्जपहोमः ॥

No. 7274. वीरशरभमन्त्रः.

VIRASARABHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 112b of the MS. described under No. 139.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओ हौ शं शां नमो भगवते वीरशरभाय उचालामालिने दीपदं-
ष्टाय अग्निनेत्राय सर्वरक्षोग्राय तत्पुरुषोरवामदेवसद्योजातेशानाय.

End :

मृगविहङ्गरूपाय श्रीवीरशरभेश्वराय नमः ॥

Colophon:

श्रीवीरशरभेश्वरस्तोत्रे सम्पूर्णम् ॥

No. 7275. वीरशरभमन्त्रः.

VIRASARABHAMANTRAH.

Page, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 238a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the group of Mantras denoted by the

general name of Mantramālikā given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवीरशरभमहामन्त्रस्य अधोरूपो भगवानुषिः, असृतगा-
यत्री छन्दः, श्रीमहावीरशरभो देवता; श्रेतवणि, (उदात्तस्वरः,) (पर)-
मात्मदोत्र, हुं वीजं, हुं शक्तिः, मे कीलकं, ममेष्टकान्याधसिद्धार्थे श्री-
महाशरभेश्वरप्रीत्यर्थे विनियोगः।

End :

ओ भूर्भुवस्सुवः पतये मृत्युपतये असृतं मे प्रवच्छ स्वाहा ।
शां शं । ओं लक्षजपत्पुरश्चरणं कुर्यात् । दशांशहोमः ॥

No. 7276. वीरशरभमन्त्रः.

VIRĀSHARABHAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 91b of the MS. described under No. 5566, wherein it is given as Mahavirasharabhamantra and is wrongly stated as beginning on fol. No. 92.

Complete.

Same as the above.

No. 7277. वीरशरभमन्त्रः.

VIRĀSHARABHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 280b of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā 278a in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीवीरशरभमन्त्रस्य अधोरूपो भगवानुषिः, असृतगायत्री
छन्दः, श्रीमहावीरशरभो देवता; श्रेतवणि, उदात्तस्वरः, परमात्मदोत्र,

हृ बीजं, हुं शक्तिः, मम कीलकं, ममेष्टुकाम्यार्थसिद्धयर्थे श्रीमहावीर-
शरभेश्वरप्रीत्यर्थे विनियोगः ।

End :

कालाभिरुद्राय कालकण्ठाय गरलसंहरणाय मृत्युपतये अमृतं मे
भयच्छ स्वाहा । शां शं ॥

ओं लक्ष्मयं दशांशहोमः ॥

No. 7278. वीरशरभमालामन्त्रः.

VIRASARABHAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 211a of the MS. described under No. 537.

Complete.

This Mantra is in praise of Śiva under various significant
names.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसाल्वमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पश्चिमछन्दः, श्रीवीर-
शरभसाल्ववीरभद्रो देवता, ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, जे कीलकं, श्री-
शरभसाल्वप्रीत्यर्थे नपे विनियोगः ।

End :

नृसिंहशिरश्छेदनाय अरिष्टशत्रुसंहरणाय मृगपश्चिरूपाय जय जय
श्रीमहाघोरवीरशरभसाल्वपतिराजाय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7279. वीरशरभमालामन्त्रः.

VIRASARABHAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 271a of the MS. described under No. 537.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

भस्मोदूलितदेहानामापादतलमस्तकम् ।

रोमरोम भवेलिङ्गं तदेहं शिवमुच्यते ॥

ओज्जमो भगवते वीरशरभाय तीर्णदेष्टकरालाय विनेत्राय उच्चल
उच्चल प्रज्वलय.

End :

शतुर्संहाराय प्रलयकालवीरशरभाय असाध्यसाध्याय ह्रां ह्री ह्रे
हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7280. वीरहनुमन्मालामन्त्रः.

VIRAHANUMANMALAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 2886.

Complete.

This Mantra is in praise of Hanumat under various significant names. Its repetition is held to have the power to safeguard one from the evils that may come from the various quarters as also from the evils caused by evil spirits.

Beginning :

ओज्जमो भगवते महावीरप्रतापमहाबलपराक्रमाकान्ताय वज्रदेहस्व-
रूपाय वैदेहीहृदयशोकविनाशनाय अञ्जनागर्भसंभूताय ।

End :

सर्वअहबन्धनाय सर्वदिवन्धनाय ओज्जमो भगवते हुं फट् स्वाहा ।
वीरहनुमते हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7281. वीरहनुमन्मालामन्त्रः.

VIRAHANUMANMALAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 5828.

Incomplete.

Similar to the above.

Held to be efficacious in the accomplishment of one's desires, in driving off all kinds of evil spirits, and in removing various kinds of fever.

Beginning :

अस्य श्री(वीर)हनुमन्ताधोरप्रलयज्वालारौद्रविजयविद्वंशवीरहनुमन्ता-
साध्यसाधनाधोराल्पप्रयोगमूलमन्त्रस्य वामदेव चक्षिः, गायत्रीच्छन्दः, औं
बीजं, स्वाहा शक्तिः, हं कीलकं, श्रीवीरहनुमान्देवता, इष्टकाभ्यार्थफल-
सिद्धार्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं नमो भगवते प्रतापहनुमते भूतप्रेतपिशाचमण्डलदानवदैत्यवत्ता-
राक्षसवेतालमण्डल . . . उच्चाटनाय तद्वत् ग्रहज्वरमाहश्वरज्वरविरात्र-
ज्वरचातुर् ग्रथिकज्वर.

No. 7282. वीरहनुमन्मालामन्त्रः.

VIRAHANUMANMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1b of the M.S. described under No. 5828, wherein this Mantra has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

Similar to the above.

Held to be efficacious in enabling a person to free himself from bondage of all kinds.

Beginning and End :

ओं नमो भगवते वीरहनुमन्ताय हं हां हि ही हुं . . .
तापिप्राकमाय एहि एहि मम बन्धमोचनाय . . .
हुं फट स्वाहा ॥

Colophon :

वीरहनुमन्त(न्मालामन्त्रः) ॥ पुराणम् १० ॥

No. 7283. वीरहनुमन्मालामन्त्रः.

VIRAHANUMANMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 67a of the MS. described under No. 21, wherein it is given as Virapratipahanumanmālāmantra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Held to be efficacious in the accomplishment of one's desires.

Beginning :

ओ नमो (वीर)हनुमन्त प्रकटपराकराकान्तदशादिष्ठण्डल यशो-
वितानधवलीकृतजगत्रिता वज्रदेह रुद्रांशसंभव ।

End :

* लक्ष्मणप्राणसंरक्षण कुमारवत्त्वारिन् रामप्रियतम् दशास्यदपेदलन
मद्यं सर्वकार्याणि साधय साधय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7284. वीरावलीमन्त्रः.

VIRĀVALIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 233a of the MS. described under No. 124, wherein it is found in the Śadāmnayamantra 228^b given therein in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to the five following groups of attendants of the goddess Sakti. They are considered also as Sakti-gurus:—

(1) Brahmavirāvali, (2) Viśvavirāvali, (3) Rudravirāvali, (4) Iavaravirāvali, (5) Sadāśivavirāvali.

Beginning :

अस्य श्रीवीरावलीमन्तस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वरसदाशिव(1) अथयः, गायत्री
छन्दः, वीरावली देवता ; लं वे रं यं हं बीजानि, सरस्वती महालक्ष्मी

पार्वती उन्मनी मनोन्मनी शक्तयः, सो हं कीलक, मम श्रीवीरावलीम—गः ।

End :

ऐं हीं श्रीं ऐं कीं सौः ब्रह्मवीरावलीदिव्यश्री—मः, विष्णुवीरावलीदि, रुद्रवीरावलीदि, ईश्वरवीरावलीदि, सदाशिववीरावलीदिव्यश्री—मः, नवमुद्रावीरावलीयुज्ञाय द्विसहस्रदेवतासहिताय ओऽव्याणपीठदिव्यश्री—मः ॥

No. 7285. वीरावलीमन्त्रः.

VIRĀVALIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 7a of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Āmnāyamantramālikā 1a in the list of other works.

Complete

Similar to the above.

See under the previous number for the beginning.

End :

सदाशिववीरावलीश्रीपादुकां पूजयामि नमः । इत्युचराज्ञायगुरुन्
हृदये मत(न)श्रके च पूजयेत् ॥

No. 7286. वीरावलीमन्त्रः.

VIRĀVALIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 26¹ of the MS. described under No. 2848, wherein it is found in the Purvāmnāyamantramālikā 16a given therein in the list of other works.

Complete

Similar to the above.

Beginning :

पञ्चवीरावलीमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वरसदाशिवा ऋषयः, वीरावली
देवता; ले वं रं यं हं बीजं, वाणी महालक्ष्मीः उमा पार्वती मनो-
न्मनी शक्तिः, सो हं कीलकं, विनियोगः ।

End:

ऐ ही श्री ऐ क्षी सौः ब्रह्मवीरावली श्रीविष्णुरुद्रेश्वरसदा-
शिवाः ॥

No. 7287. वीरावलीमन्त्रः.

VIRĀVALĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 7a of the MS. described under No. 673.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीप्रब्रह्मवीरावलीमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वरसदाशिव(1) ऋषि(धय):,
गायत्र्यादीनि छन्दांसि, पञ्चवीरावली देवता; लं वं यं रं हं वीजानि,
वाणी लक्ष्मीः उमा भवानी मनोन्मनी देवता शक्तयः, सो हं कीलकं,
मम वीरावलीप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End:

रुद्रवीरावलीश्री, ईश्वरवीरावलीश्रीपा, सदाशिववीरावलीश्री, पञ्च-
वीरावलीश्रीपा—नमः ।

No. 7288. वेणुनादगोपालमन्त्रः.

VENUNĀDAGOPĀLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 46b of the MS. described under No. 5885.

Complete.

This Mantra is addressed to Kṛṣṇa, conceived as a cowherd
playing on a flute; and its repetition is intended to please him.

Beginning:

अस्य श्रीवेणुनादगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री-
वेणुनादगोपालो देवता, क्लां वीजं, क्ली शक्ति, क्लृ कीलकं, श्रीवेणुना-
दगोपालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

क्रां क्रीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥

No. 7289. वेणुश्यामलामन्त्रः.

VENUSYAMALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 229a of the MS. described under No. 124, wherein it is found in the Sađamnayamantra 2286 given therein in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra addressed to Venusyāmala, who is conceived as the presiding deity of the flute, is held to have the power to enable one to compose literary works of value.

Beginning :

अस्य श्रीवेणुश्यामलामन्त्रस्य मतङ्गमगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
वेणुदेवता, वेणुश्यामलाप्र—गः ।

End :

ओं नमो भगवते वै वेणवे मम साहित्यविद्यां प्रयच्छ स्वाहा । साहि
त्यविद्याम्बादिव्य श्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

No. 7290. वेदव्यासगायत्रीमन्त्रः.

VEDAVYASAGAYATRIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 5786, wherein it is wrongly stated as beginning on fol. 146 in the list of other works.

Complete.

This is a Gayatrimantra as appertaining to Vedavyasa; and its repetition is held to secure his favour. For what is meant by Gayatri, see under No. 7027.

Beginning :

गुरुनमस्कारः—

ओं पूर्णज्ञानाय विद्वहे पूर्णनन्दाय धीमहि ।

तत्रो व्यासः प्रचोदयात् । इति प्राणायामः (१२). पूर्णज्ञानेत्वा
दिष्ठदङ्गन्यासः ।

अस्य श्रीवेदव्यासगायत्रीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा जपिः, गायत्री छन्दः,
श्रीवेदव्यासो देवता; श्रीवेदव्यासप्रेरणया श्रीवेदव्यासप्रीत्यर्थं जपे वि-
नियोगः ।

End :

ओं पूर्णज्ञानाय विद्वहे पूर्णनन्दाय धीमहि । तत्रो व्यासः प्रचो-
दयात् । इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

Colophon :

व्यासगायत्री ॥

No. 7291. वेदव्यासमन्त्रः.

VEDAVYĀSAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 325b of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramalika 273a in the list of other works given therein.

Complete.

This Mantra is also addressed to Vēdavyāsa.

Beginning :

अस्य श्रीवेदव्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा जपिः, गायत्री छन्दः, श्रीवेद-
व्यासो देवता, व्यासायेति पठङ्गन्यासः ।

End :

ओं वेदव्यासाय पूर्णज्ञानाय पूर्णनन्दाय स्वाहा । इति ॥

No. 7292. वेदव्यासाष्टाक्षरमन्त्रः.

VĒDAVYĀSĀSTĀKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

Similar to the above. This Mantra consists of eight syllables when the syllable Ôm is left out of account.

Beginning:

गुरुनमस्कारः—

ओं वा वेदव्यासाय नमः इति प्राणायामः १२. पूर्णज्ञानेत्यादिन्यासः ।

अस्य श्रीवेदव्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीवेदव्यासो देवता; श्रीवेदव्यासप्रेरणया वेदव्यासप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

वेदव्यासाष्टाक्षरमहामन्त्रजपं करिष्ये ।

ओं वा वेदव्यासाय नमः — इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7293. वेदव्यासैकाक्षरमन्त्रः.

VĒDAVYĀSAIKĀKSARAMANTRAH

Page, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 14b of the MS. described under No. 5786, wherein it is wrongly stated as Vēdavyāsanavāksari in the list of other works.

Complete.

This Mantra consists of the single syllable अ॒, which is held to denote Vēdavyāsa.

Beginning :

गुरुनमस्कारः—

त्वां इति प्राणायामः (१२). पूर्णज्ञानेत्यादित्यासः ।

अस्य श्रीएकाक्षरवेदव्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, वेदव्यासो देवता; वेदव्यासप्रेरणया वेदव्यासप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

एकाक्षरवेदव्यासमहामन्त्रजपं करिष्ये—ओं त्वां ओं—इति जपः, उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7294. व्याधिमन्त्रः.

VYĀDHIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 44b of the MS. described under No. 2886, wherein it is found in the Akasabhairavakalpa 38a given therein in the list of other works.

Complete.

The name of the work, of which this apparently forms the 37th chapter, seems to be Akasabhairavakalpa.

The repetition of this Mantra addressed to Śiva is held to have the power to enable one to make one's enemies suffer from various kinds of diseases.

Beginning :

व्याधिमन्त्रस्य वीरभद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, महाव्याधिकरशिवः, त्वां बीजं, हुं शक्तिः,
विनियोगोऽनिशं भज्ञाः शत्रुनाशाय पीडने ।

End :

यत्साध्यं लिखितं व्याधेः तत्त्वाधिर्भविष्यति ।

तद्वागं रिपुराश्रित्य सुमगेऽनुभवेऽनुवत् ॥

Colophon :

इति सप्तविंशोऽध्यायः ॥

No. 7295. व्याहृतिमन्त्रः.

VYAHRTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 56 of the MS. described under No. 5786.

Complete.

This Mantra consists of the Mahavyahritis मूः, मुवः, सुवः, and their combination, these being generally repeated with the Prauava. Its repetition is intended to propitiate Visnu.

Beginning :

अथ व्याहृतिमन्त्रः—

ओं मूः ओं मुवः ओं सुवः ओं भूमुवस्सुवः इति प्राणा-
शामः १२.

अस्य श्रीव्याहृतिमन्त्रस्य प्रजापतिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, परमा-
त्मा श्रीहरिर्देवता; श्रीहरेरप्रेरणया श्रीहरिप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

End :

यथाशक्ति नियमन व्याहृतिमन्त्रजपहरिष्ये—ओं मूः ओं मुवः
ओं सुवः ओं भूमुवस्सुवः—इति जपः। उपसंहारः पूर्ववत्॥

No. 7296. शकटासुरसंहारकगोपालमन्त्रः.

SAKATĀSURASAMHĀRAKAGOPĀLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 446 of the MS. described under No. 5885.

Complete.

This Mantra is addressed to Krshna conceived as the cowherd, who, while lying in the cradle playfully, killed with a kick a certain Asura or demon, who, under the orders of Kamsa, assumed the form of a cart with a view to crush to death under its wheels the child Krshna.

Beginning :

अस्य श्रीशकटासुरसंहारकगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, शकटासुरसंहारकगोपालो देवता; श्री बीजं, हु शक्तिः, फट
कीलकं, शकटासुरसंहारकगोपालप्रीत्यर्थे जपे विषयोगः।

End :

ओं श्री कृष्णाय हु फट स्वाहा ॥

No. 7297. शक्तिगणपतिमन्त्रः.

SAKTIGANAPATIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 19a. The other works contained herein and referred to under No. 547 are Parabrahmavidyamantra 1a, Kama-kalanyasa 1a and 28a, Tripurasundarimālāmantra 1b, Tripurasundarikavaca 4a, Tripurasundaryastottarnātā 8a, Dēvyanpanisad Pañkimantra 13a, Gurumantra 13b, Mēdhādakṣināmūrtimantra 14a, Mēdhādakṣināmūrtikavaca 14b, Pañcadaśāksarimantra 15b, Sōdaśāksarimahātripurasuodarimantra 16a, Rājarājēśvarikavaca 16b, Bhūtasuddhi 17a, Garudapāñcāksarimantra 19b, Balāparamesvarimantra 19b, Pañcāksarimālāmantra 20a, Tripurasundarimālāmantra 21a, Srividcavyakuyana 24a, Sādhakānūdyāvandana 31a, Śricakrāksaravinyasa 32a.

Complete.

This Mantra is addressed to Śaktigana-pati, i.e., to Vinayaka as associated with his wife Vallabhā; and its repetition is held to have the power to enable one to accomplish one's desires. The syllable Hrim—ह्री— in the Mantra is the mystic symbol denoting Śakti.

Beginning :

अस्य श्रीशक्तिगणपतिमहामन्त्रस्य गणक ऋषिः, नृचिद्रायत्री छन्दः,
श्रीशक्तिगणपतिदेवता, गं बीजं, गी शक्तिः, गृ कीलकं, सर्वाभीष्ट-
सिद्धचर्ये शक्तिगणपतिप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः।

End:

ओं श्री ही की मूँ गं गणपते वरवरद् सर्वजनं मे बशमानय
स्वाहा ॥

No. 7298. शक्तिगणपतिमन्त्रः.

SAKTIGANAPATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 291a of the MS. described under No. 5477, wherein it is included in the Mantramālikā 273a in the list of other works given therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीशक्तिगणपतिमन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचृद्गायत्री छन्दः,
शक्तिगणपतिर्देवता, गं बीजं, ही शक्तिः, ममेष्टकाम्यार्थसिद्धयर्थं जपे
विनियोगः ।

End:

ही मूँ महागणपतये नमः, पञ्चलक्ष्मि पुनश्चरणम् ॥

No. 7299. शक्तिगणपतिमन्त्रः.

SAKTIGANAPATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page

Begins on fol. 246b of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā 229a given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above

Beginning:

(अस्य श्रीशक्तिगणपतिमन्त्रस्य) गणक ऋषिः, निचृद्गायत्री छन्दः,
श्रीशक्तिगणपतिर्देवता, गं बीजं, ही शक्तिः, ममेष्टकाम्यार्थसिद्धयर्थं
विनियोगः ।

End:

ही गौ महागणपतये नमः ।
पवलक्षं जपेनमन्त्रे पुरश्चरणसिद्धये ॥

No. 7300. शक्तिगणपतिमन्त्रः.
ŚAKTIGANAPATIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 96a of the MS. described under No. 5566, wherein it has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

Same as the above.

No. 7301. शक्तिन्यासः.
ŚAKTINYĀSAH.

Pages, 4. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 191a of the MS. described under No. 124.

Complete.

On details connected with the ceremonial touching of certain parts of the body, while repeating at the same time the appropriate Śaktimantras; this kind of Nyasa is held to be a necessary preliminary to the repetition of the Śrividvāmantra.

Beginning:

अथ शक्तिन्यासः—तत्र प्रथमं जगच्छून्याकारं निरालम्बं ध्यात्वा,
हुं पृथिव्यै नम इति स्वासनावः पृथिवी संपूज्य, स्वासनं वामहस्तेन
स्पृशन् सुवेनेश्वरीबीजं सप्तवारं जपित्वा, एं हीं श्री जयायै विजयायै
४ जैव्रयै ४ अजितायै ४ अपराजितायै सङ्गमायै रम्भायै इति
स्वासने सप्तशक्ति संपूज्य, मूलविद्यया प्राणायामत्रयं कृत्वा, अस्य श्री-
महाशक्तिन्यासस्य परमशिव ऋषिः, अतिजगती छन्दः, श्रीपराशक्ति-
देवता, ऐं बीजं, श्री शक्तिः, सौः कीलकं, श्रीविद्याङ्गत्वेन महाशक्ति-
न्यासे विनियोगः ।

End :

इति सप्तधा संपूज्य, धूपदीपौ नै(नि)वेद तस्मिन् लैपुरे देहे ए ;
सौः इति वनिताक्षोभकरी महाकामकला ध्यायेत् ॥

Colophon :

इति शक्तिपञ्चाक्षरीमहामन्त्रः ॥

No. 7302. शक्तिपञ्चाक्षरीमहामन्त्रः.

SAKTIPĀÑCĀKSARIMAHĀMANTRAH.

Page, 1 Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 51a of the MS. described under No. 235.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate Siva as associated with Śakti.

Beginning :

अस्य श्रीशक्तिपञ्चाक्षरीमहामन्त्रस्य सद्योजात ऋषिः, जगती छन्दः,
श्रीशक्तिपञ्चाक्षरी देवता; ह्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, हं कीलकं, श्रीशक्ति-
पञ्चाक्षरीप्रसादसिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं ह्रीं नमश्शब्दाय ॥

No. 7303. शक्तिपञ्चाक्षरीमहामन्त्रः.

SAKTIPĀÑCĀKSARIMAHĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 9a of the MS. described under No. 6548.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशक्तिपञ्चाक्षरीमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषि, पञ्चिश्छन्दः,
उमामहेश्वरो देवता; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, नम इति कीलकं, श्री-
उमामहेश्वरप्रसादसिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

End:

ओं ही हौं नमदिशवाय, हौं ही ओं उमामहेश्वराय नमः, श्री-
महामायायै नमः, ओं अन्विकायै नमः, शिवकाम्यै नमः, परमगुरुभ्यो
नमः ॥

No. 7304. शक्तिपत्यङ्गिरामालामन्त्रः.

SAKTI PRATYANGIRĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 11. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 81a of the MS. described under No. 29, wherein
it is given as Pratyangiramantra in the list of other works.

Complete as found in the Rudrayamala.

This Mantra is addressed to the goddess Saktipratyangira,
and is considered to be of use in causing the destruction of one's
enemies. The authorship of this Mantra is attributed to Siva.

Beginning :

अस्य श्रीशक्तिपत्यङ्गिरात्मकृत्यादेवीमहामन्त्रस्य प्रत्यङ्गिरा ऋषयः,
तिष्ठुप् छन्दः, श्रीशक्तिपत्यङ्गिरा उत्रकृत्या देवता, हीं बीजं, कों
शक्तिः, श्री कीलकं, मम सर्वशत्रुसंहरणार्थं
श्रीप्रत्यङ्गिरामहादेवीप्रसादसिद्धचर्चं प्रत्यङ्गिरामन्वजपं करिष्ये ।

End :

ओं हीं है र्लौं श्री सौं ऐं हुं नमः कृष्णवाससे शतसहस्रसिंह-
वदने अष्टादशभुजे

ओं सर्वसंहारकारिणि महाप्रत्यङ्गिरे सर्वशत्रवोन्मूलिनि स्वाहा ॥

Colophon :

इति श्रीरुद्रयामले शूलपाणिविरचितायां(तः) शक्तिपत्यङ्गिरास्तवराजं-
(जः)सम्पूर्णम्(ः) ॥

No. 7305. शक्तिपत्यङ्गिरामालामन्त्रः.

SAKTI PRATYANGIRĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 7. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 93a of the MS. described under No. 587.

Complete as found in Rudrayamala.

Similar to the above.

This manuscript is stated to have been transcribed by Mājēti
Sarvēśalīṅga.

Beginning :

अस्य श्रीशक्तिप्रत्यक्षिरात्मकृत्यादेवीमहामन्त्रस्य प्रत्यक्षिरा ऋषयः,
विष्टुप् छन्दः, श्रीशक्तिप्रत्यक्षिरा उप्रकृत्या देवी देवता; हीं बीजं, कों
शक्तिः, श्री कीलकं, मम सर्वशसंहारणार्थं परमन्त्रपरयन्त्रपरकर्मपर-
विद्याधामिचारिकविच्छेदनार्थं प्रत्यक्षिरामन्त्रजपं
करिष्ये ।

End :

शत्रन् सन्तापय सन्तापय हुं फट् स्वाहा । ओं सर्वसंहारका-
रिणि महाप्रत्यक्षिरे सर्वशास्त्र(व)बोन्मूलिनि स्वाहा ॥

Colophon :

इति श्रीरुद्रयामले शूलपाणिविरचितायां(तः) शक्तिप्रत्यक्षिरास्तवराजं
(जः)सम्पूर्णम्(ः) ॥

भद्रं नो अभिपातु ते नमः । शां ॥

Colophon :

प्रत्यक्षिरास्तवराजं सम्पूर्णम् ॥

No. 7306. शक्तिमन्त्रः.

SAKTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 82b of the MS. described under No. 21.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Sakti.

Beginning :

ओन्मो भगवति सिद्धपरज्ञोति: रुद्राणि सर्वाणि सर्वमङ्गला
सर्वग्रहभयकुरी महावीरशक्तिशङ्करवल्लभि ।

End :

रौद्ररणवीरभद्रेश्वरि ओं हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7307. शक्तिमातृकान्यासः..

SAKTIMĀTRKĀNYĀSAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 193a of the MS. described under No. 124, wherein it is found in Dasaividhamātrkānyāsa 192a in the list of other works.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, while repeating the series of Mantra-formulas formed by introducing ही before and after each of the six sivo letters of the alphabet.

Beginning:

अथ शक्तिमातृकान्यासः—

अस्य श्रीशक्तिमातृकान्यासस्य वसिष्ठ ऋषिः, सूतश्छन्दः, शक्तिर्देवता, हं बीजं, है शक्तिः, ब्रह्मा बीजं, माया शक्तिः, शिवो बीजं, तुद्धि-शक्तिः, उदानो बीजं, सुपुञ्जा शक्तिः, रेफः कीलकं, श्रीशक्तिमातृकान्यासे विनियोगः ।

End:

ही अं नमः ही इत्यादि शान्ते न्यसेत् ॥

Colophon :

इति शक्तिमातृकान्यासः ॥

No. 7308. शङ्खसुवर्णयक्षिणीमन्त्रः..

SĀNKHASUVARNA YAKSINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 297b of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālīka 273c in the list of other works given therein.

Complete.

This Mantra is addressed to a certain Yaksini, who is conceived as wearing a garland of conch shells. It seems that a fire-offering followed by the repetition of this Mantra is understood to have the power to enable a man to become wealthy.

Beginning :

ऋष्यादिकं पूर्ववत् । ओं शङ्खधारिणि शङ्खभरणि द्रां द्री क्षी ब्ली
श्री स्वाहा ।

End :

त्रिकोणं होमकुण्डं दशांशं होमं कल्पप्रकारेण जुहुयात् । इति ॥

No. 7309. शङ्खसुवर्णयक्षिणीमन्त्रः.

SAṄKHASUVARNAYAKSINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 251^a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramalika 220^a in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं शङ्खधारिणि शङ्खभरणे द्रां द्री क्षी ब्ले श्री स्वाहा ।

End :

षट्कं मायावीजं होमप्रकारेण ध्यानम् । त्रिकोणकुण्डे दशांशद्वोमं
कल्पप्रकारेण जुहुयात् ॥

No. 7310. शङ्खसुवर्णयक्षिणीमन्त्रः.

SAṄKHASUVARNAYAKSINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 99^a of the MS. described under No. 5568, wherein it has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

Same as the above.

No. 7311. शत्रुविघ्वसिनीशूलिनीमन्त्रः.

SATRUVIDHVAMSINISULENTMANTRAH.

Pages, 2 Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 47a of the MS. described under No. 21
Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Shakti, so called because she is conceived as having a Sula in her hand; and its repetition is held to be efficacious in the destruction of one's enemies and in the accomplishment of one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीशत्रुविघ्वसिनीमन्त्रस्य ज्वलत्यावक ऋषिः, शत्रुविघ्वसिनी
विशूलिनी देवता, मम शत्रुविनाशनार्थं जपे विनियोगः ।

मूलम्— शत्रुविघ्वसिनी रौद्री विशिरा रक्तलोचना ।

अग्निज्वाला रक्तमुखी धोरदेही विशूलिनी ॥

End :

इदं(मं)स्तवं जपेत्तित्य विजयं शत्रुनाशनम् ।

सहस्रं विदिनं लत्वा कार्यासदिनं संशयः ॥

No. 7312. शत्रुसंहारकगोपालमन्त्रः.

SATRUSAMHABAKAGOPALAMANTRAH.

Pages, 2 Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 50a of the MS. described under No. 5885.

Complete.

The repetition of this Mantra addressed to Krsna is considered to have the power to enable one to destroy one's enemies.

Beginning :

अस्य श्रीशत्रुसंहारकगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, ब्रह्मी छन्दः,
शत्रुसंहारकगोपालो(देवता), मलौ वीजं, स्मृति शक्तिः, क्षीणी कीलकं, शत्रुसं-
हारकगोपालप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओ मलौ स्मृति क्षीणी कृष्णाय ज्वल हूँ फट् स्वाहा ॥

No. 7313. शनिकवचम्.

SANIKAVACAM.

Pages, 2. Lines, 9 on a page

Begins on fol. 14b of the MS. described under No. 5945.

Complete; as found in the Skandapurāṇa.

This Mantra is in praise of the planet Saturn; and its repetition is considered to have the power to remove all kinds of evils and to confer on one prosperity and protection.

Beginning:

शृणु द्वं मुनयस्सर्वे शनिपीडाहरं शुभम् ।
 कवचं ग्रहराजस्य शनेरिदमनुत्तमम् ॥
 कवचं देवतावासः कवचं बज्रपञ्चरम् ।
 सर्वपीडाहरश्श्रीमान् सर्वसीभाग्यदायकः ॥
 शिरश्शनैश्श्ररः पातु फालं वै सूर्यसम्भवः ।
 नेत्रे संज्ञासुतः पातु ओत्रे पातु यमस्तथा ॥

End:

मृत्युस्थानगतो वापि शुभस्थानगतोऽपि वा ।
 एतत्ते कवचं सौरे: कवचं ब्रह्मनिर्मितम् ॥

Colophon:

इति स्कान्दपुराणे प्रभासस्त्वं वशिष्ठापदेशो नाम चत्वारिंशा-
 द्वयायः ॥

No. 7314. शनैश्चरकवचम्.

SANAIŚCARAMAKAVACAM.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 51a of the MS. described under No. 2886, wherein it is found in the Navagrahakavaca 51a.

Complete as found in the Pādmapurāṇa.

Similar to the above. Held also to be efficacious in effecting the accomplishment of one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीशैनेश्वरकवचस्तोत्रमहामन्त्ररथ कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, शैनेश्वरो देवता, शैनेश्वरप्र—गः ।

* * *

शैनेश्वरः शिरो रक्षेत् मुखे भक्तार्तिनाशनः ।
कृणीं कृष्णाम्बरः पातु नेत्रे सर्वभयद्धरः ॥

End :

य इदं कवचं दिव्यं सर्वपापहरं नृणाम् ।
पठति श्रद्धया युक्तः सर्वान् कामानवामुयात् ॥

Colophon :

इति पादपुराणे शैनेश्वरकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7315. शनिद्वादशनामानि.

SANIDVĀDAŚANĀMĀNL

Page. 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 190b of the MS. described under No. 5673,
wherein it is given as *Sanaiscaramantra* in the list of other works.

Complete.

It is stated that if a person repeats, near an *Aśvattha* tree, the twelve names of *Śani* herein given, he will not be troubled by the evil influence of that planet. It is difficult to make out how the first stanza in the extract below contains all the twelve names of *Śani*.

Beginning and End :

कोणस्थः पिङ्गलो ब्रह्मः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।
सौरिशैनेश्वरो मन्दः पिप्पलादिषु संस्थितः ॥
एतद् द्वादश नामानि जपेदध्यत्थसत्त्विष्ठौ ।
शैनेश्वररूता पीडा न कदाचिद्भविष्यति ॥

Colophon :

इति शैनेश्वरमन्त्रपारायणविधिः ॥

No. 7316. शनैश्चरमन्त्रः

SANAIŚCARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 311 α of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramalika 273 α given in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to propitiate the planet Saturn.

Beginning:

अस्य श्रीशनैश्चरमन्त्रस्य इरीमम ऋषिः, शनैश्चरो देवता,
उपिक्त छन्दः, मम शनैश्चरमसादसिद्धयर्थे विनियोगः । आमित्यादिष्ठ-
दङ्गन्यासः ।

End:

ॐ आं श्री श्वराय नमः । लक्षं जपः । दशांश-
होमः ॥

No. 7317. शब्दाकर्षिणीमन्त्रः

SABDAKARSINI MANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 45 α of the MS. described under No. 2886, wherein it is found in the Akashabhaijavakalpa 38 α .

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to enable one to hear sounds which otherwise cannot possibly reach one's ears.

Beginning:

शब्दाकर्षिणिकाया बलप्रमथनः, जगती, शब्दाकर्षिणिका, वं वी,
स्वाहा श, शब्दाकर्षणसिद्धयर्थे, आमित्यादिन्यासः ।

End :

ततः पश्चात्सर्वमये शब्दानकर्षयाथ तस् ।
स्वाहेति मन्त्ररूपं तु चत्वारिंशमहार्णकम् ॥
चत्वारिंशत्सहस्रं जपः ॥

No. 7318. शरणागतिमन्त्रः.
SARANAGATIMANTRAH.

Page, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5854, wherein it is given as Dvayamantra in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Narayana. It is generally known as the Dvayamantra of the Srivaiishnavas, and inculcates the doctrine that complete self-surrender to God is the easiest means of attaining soul-salvation.

Beginning :

अस्य श्रीशरणागतिद्वयमन्त्रस्य अन्तर्यामी भगवान् श्रीमलारायण
ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीविष्णुः परमात्मा नारायणो देवता;
ओं बीजं, नमःशक्तिः, प्राणात्मकाय कीलकं, श्रीमलारायणमीत्यर्थं जपे
विनियोगः ।

End :

श्रीमलारायणचरणौ शरणं प्रपद्ये श्रीमते नारायणाय नमः ॥

Colophon :

इति द्वयमन्त्रः ॥

No. 7319. शरणागतिमन्त्रः.
SARANAGATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 11b of the MS. described under No. 3546.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशरणागतिमहामन्त्रस्य प्रपञ्चसीरीं जीवरूपी विराट् मुख्य
ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता, परब्रह्मणः क्षेत्रं, परब्रह्मणः
स्वरूपं, श्रीमन्नारायणप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

क्षीराम्भोनिधिरलमण्टपमहासौवर्णसिहासने
वामाङ्गुस्तिया भसच्चवदनं श्रीकान्तयालिङ्गितम् ।
दोदण्डाङ्गितशङ्कुपङ्गजगदाचक्रेलदारश्चियं
त्वामित्यं कलयामि जन्मविमुखो लक्ष्मीशनारायणम् ॥

No. 7320. शरणागतिमन्त्रः.

SABANAGATIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 5915.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशरणागतिमन्त्रस्य अन्तर्यामी भगवान् लक्ष्मीनारायण ऋषिः,
श्री बीजं, नमश्शक्तिः, श्रीमते (इ) ति कीलकं, श्रीमन्नारायणप्रीत्यर्थं जपे
विनियोगः ।

See under the previous number for the end.

No. 7321. शरमकवचः.

SARABHAKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 38a of the MS. described under No. 2886,
wherein it is found in the Akashabhairavakalpa 38a.

Complete.

This Mantra is in praise of Śiva who is stated in the Lingapurāna to have once assumed a peculiar beast-and-bird form and overpowered Nṛsimha; and its repetition is considered to have the power to secure protection to one from all dangers.

Beginning :

शिवः—

कश्यामि शृणु ते देवि सर्वरक्षणमच्युतम् ।
शारभे कवचं नाम चतुर्वर्णफलप्रदम् ॥
शरभसालुबपक्षिराजाल्यकवचस्य तु ।
सदाशिव ज्ञापिश्छन्दो बृहती परमेश्वरः ॥
देवता प्रणवं वीजं मङ्गुतिः शक्तिरुच्यते ।
कीलकं पक्षिराजः स्थात् सर्वरक्षाकरो विभुः ॥

* * * * *
श्रीशिवः पुरतः पातु मायाधीशस्तु पृष्ठतः ।
पिनाकी दक्षिणं पातु वामपार्श्वं महेश्वरः ॥

End :

यत्कृत्यं तज ऋतं यदकृत्यं छत्यवत्तदाचरितम् ।
उभयोः प्रायश्चित्तं शिव तव नामाक्षरद्वयोच्चरितम् ॥

Colophon:

इत्याकाशमैरवकल्पे शरभकवचस्तोत्रं नाम चत्वारिंशोऽच्यायः ॥

No. 7322. शरभकवचः.

ŚARABHAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 12b of the MS. described under No. 2886.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

श्रीशिवः पुरतः पातु मायाधीशस्तु पृष्ठतः ।
पिनाकी दक्षिणं पातु वामपार्श्वं महेश्वरः ॥

जिहाग्रं पातु शम्भुव्यं निटिलं शङ्करस्तथा ।
ईश्वरो वदनं पातु भुवोर्मध्यं पुरान्तकः ॥

End:

इति गुह्यं महामन्त्रं परमं सर्वसिद्धिदम् ।
शरभेशास्त्र्यकवचं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥

No. 7323. शरभकवचः.
SARABHAKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 157a of the M.S. described under No. 5661.

Incomplete.

Similar to the above. Also held to be efficacious in the accomplishment of the four Purusarthas or principal aims of life.

Beginning :

देवादिदेवसर्वज्ञः सर्वभूतहिते रत ।
केन रक्षा भवेन्नन्दणां भीतिनां विविश्वापरे ॥
राजचोरादिपीडासु शस्त्राग्नीनां भयेषु च ।
मारीदुस्स्वप्नपीडासु ग्रहपीडानिवारणे ॥

* * * * *
सातुवः पक्षिराजस्य कवचस्य सदाशिवः ।
ऋषिश्छन्दोऽस्य बृहती देवता शरभेश्वरः ॥

* * * * *
अस्य श्रीशरभकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, बृहती छन्दः,
श्रीशरभेश्वरो देवता; औं बीजं, भक्तिशशक्तिः, पक्षिराजेति कीलकं, मम
चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

End:

श्रीशिवः पुरतः पातु मायाधीशस्तु पृष्ठतः ।

No. 7324. शरभकवचः.

ŚARABHAKAVACAH.

Pages, 23. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 29a of the MS. described under No. 5860.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीशरभकवचलोत्रमन्वस्य सदाशिव ऋषिः, दृहती छन्दः,
 शरभेश्वरो देवता, ओं चीजं, ही शक्तिः, पक्षिनामः, कीलकं, मम शरभे-
 शरभसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

* * * *

ओं शिवः पुरतः पातु मायाधीशस्तु पृष्ठतः ।

पिनाकी दक्षिणं पातु (वामपार्श्वं तु) शङ्करः ॥

End:

देवदेव महादेव शिवनाम दद्यानि च ।
 पाहि मां प्रणतस्वाभिन् प्रसीद सनतं मम ॥

Colophon:

इति शरभसाल्व(कवच)स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7325. शरभकालीमन्त्रः.

ŚARABHAKĀLĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 5864.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Śarabha Kali; and its repetition is considered to have the power to enable one to counteract the hostile movements of one's enemies.

Beginning:

अस्य श्रीशरभकालीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा अष्टिः, गायत्री छन्दः, शरभ-
काली देवता, स्तूपी वीजं, ह्रीं शक्तिः, हुं कीलकं, मम श्रीशरभकालीप्रसाद-
सिद्धचर्ये जपे विनियोगः।

End:

से खड़ेन आयु छेदय से से रक्तं पिव शीत्रं कृत्रिमान् खादय हुं
फट् खाहा ॥

Colophon:

शरभकाली (मन्त्रः) समाप्तः ॥

No. 7326. शरभचित्कलाकर्षणमालामन्त्रः.

SARABHACUTKALĀKARSANĀMALĀMANTRAH.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 110a of the MS. described under No. 29, wherein
it is given as Sarabhakalikarsanamalika in the 1st of other works.

Complete.

This Mantra which is addressed to Siva is considered to have
the power to enable one to deprive a person of his intelligence
with a view to gain complete mastery over him and thus accomplish
one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीचित्कलाकर्षणमालामन्त्रस्य वामदेवगवानुष्ठिः, जगती
छन्दः, श्रीवीरशरभेश्वरो देवता, से वीजं, ह्रीं शक्ति, फट् कीलकं, मम
विनियोगः।

End:

शार्दूलचर्मवसनाय शरभसाल्वाय सूर्यसोमाग्निलोचनाय दुर्जिवारणाय
दूर्वादलश्यामलाय दुरितहरणाय ओं श्रीं कं आकर्षय ॥

No. 7327. शरभचित्कलाकृष्णमालामन्त्रः।

SARABHACITKALAKARSHAÑAMĀLĀMANTRAH

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 192b of the MS. described under No. 537.

Complete.

Similar to the above. Seems to have also the power of preventing evils that may be caused by evil spirits and hostile Mantras.

Beginning :

अस्य श्री(शरभ)चित्कलाकृष्णमालामन्त्रस्य वामदेवमगवानृषिः, जगती छन्दः, श्रीवीरशरभेश्वरो देवता; सें बीजं, ही शक्तिः, फट् कीलकं, मम विनियोगः ।

End :

मम किङ्गरीभूतं कुरु कुरु सं सं सं सं सं ही श्री वीरशरभाय फट् फट् स्वाहा ॥

सिद्धमन्त्रमिदं स्यातं न जपैन च होरुभिः ।

एकोऽवारणमक्तेन सर्वे सिद्ध्यति तत्क्षणात् ॥

* * * * *

देवदत्तस्य मन्त्रदेवतावन्धनं स्यात् । ब्रह्मराक्षसानां वन्धनं स्यात् ।
सर्वेषां विधिरेषा ॥

No. 7328. शरभचित्कलामन्त्रः।

SARABHACITKALĀMANTRAH

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 28a of the MS. described under No. 5737, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate Śiva.

Beginning :

अस्य श्रीशरभचित्कलामन्त्रस्य वामदेव जपिः, जगती छन्दः, शरभेश्वरो देवता, सं बीजं, स्वाहा शक्तिः, फट् कीलकं, मम शरभ-श्वरप्रसादासिचर्थे जपे विनियोगः ।

End :

हीं श्री वीरशरभ हुं फट् स्वाहा ॥
 अष्टाद्विंश्च सहस्रचाहुरनलच्छायाशिरोयुग्ममृद्-
 द्वित्यक्षिद्वित्यपुच्छमुदितस्साक्षान्त्रसिंहाजि(र्दे)नः ।
 अर्घेनापि मृगाकृतिः पुनरथो द्वर्घेन पक्ष्याकृतिः
 श्रीवीरशरभस्त पातु रु(सु)चिराद्विचात्सदा मां हृदि ॥

No. 7329. शरभदिग्बन्धनमन्त्रः.

ŚARABHADIGBANDHANAMANTRAH

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 39b of the MS. described under No. 2886, wherein it is found in the Ākāśabhairavakalpa 38a.

The repetition of this Mantra which is addressed to Śiva is considered to have the power to safeguard one from the dangers coming from the various quarters and also to drive off evil spirits.

Beginning :

शरभदिग्बन्धनमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, अनिजगती उन्दः, शरभः,
 स्वां वीजं, स्वाहा शक्तिः, कों कीलकं, शरभदिग्बन्धने विनियोगः ।

End :

ओ दक्षघंसशरभाय सर्वद्वारं बन्ध २ मां रक्ष २ महायोगेश्वर
 भूतप्रेतपिण्डाचानुचाट्योचाट्य महाशरभसालुवपक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon :

इति दिग्बन्धः ॥

No. 7330. शरभमालामन्त्रः.

ŚARABHAMĀLĀMANTRAH

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 195a of the MS. described under No. 537.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate Sarabheśvara who is the same as Śiva.

Beginning :

अस्य श्रीअधोरशरभमालामन्त्रराजमहामन्त्रस्य अधोरेश्वर ऋषिः,
गायत्री छन्दः, श्रीशरभेश्वरो देवता; सं बीजं, फं शक्तिः, ओं कालं,
श्रीशरभेश्वरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

End :

रुद्रय रुद्रय त्रोट्य त्रोट्य कोशय कोशय कुद्रय कुद्रय रोधय
रोधय धातय धातय श्री ह्री अन्वय अन्वय ओं ॥

No. 7331. शरभमालामन्त्रः.

SARABHAMĀLĀMANTRAH.

Page, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 466 of the MS. described under No. 5660,
wherein it is wrongly mentioned to begin on fol. 462.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

मालामन्त्रः—

ओं नमोऽष्टपादाय सहस्रवाहवे द्विशिरखिनेत्राय द्विपक्षायामि-
वर्णाय ।

End :

आपदुदारणशरभसाल्वपक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7332. शरभसालुवद्वाविशदक्षरमन्त्रः.

SARABHASĀLUVADVĀTRIMSADAKṢARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 191a of the MS. described under No. 537.

Complete.

This Mantra, consisting of 32 syllables, is addressed to Śiva.
Its repetition is considered to have the power to enable one to
destroy one's enemies.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसालुवमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, जगती छन्दः, शरभ-
सालुवपक्षिराजपरमात्मा देवता; से बीजं, स्वाहा शक्तिः, व्रं कीलकं,
मम शरभसालुवप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं से से व्रं सि हुं फट् । सर्वशत्रुसंहरणाय शरभसालुव-
पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7333. शरभसालुवद्वार्तिशदक्षरमन्त्रः.

SABABHASĀLUVADVĀTRIMŚADAKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 105a of the MS. described under No. 29, wherein
it is given as *Sarabhasaluvamantra* in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसालुवमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीशर-
भसालुवपक्षिराजपरमात्मा देवता; से बीजं, स्वाहा शक्तिः, व्रं कीलकं,
मम शरभसालुवप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

सर्वशत्रुसंहरणाय शरभसालुवपक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7334. शरभसालुवपक्षिराजकवचः.

SARABHASĀLVAPAKSHIRĀJAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 36 on a page.

Begins on fol. 78a of the MS. described under No. 1493,
wherein it has been omitted to be included in the list of other
works contained therein.

Complete as found in the *Akāshabhairavakalpa*.

Similar to the work described under No. 7321.

Held to be efficacious in counteracting the hostile movements
of unfriendly people and in effecting the accomplishment of one's
desires.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसालुवपक्षिराजकवचराजमहामन्त्रस्य सदाशिव न्तर्पि:, बृहती छन्दः, श्रीशरभेश्वरो देवता; लं बीजं, स्वाहा शक्तिः, हु कीलकं, परप्रयोगशान्तिद्वारा मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थं शरभसालुवपक्षिराजजपे विनियोगः ।

श्रीशिवः पुरतः पातु मायाभीशस्तु पृष्ठतः ।

पिनाकी दक्षिणं पातु वामपात्रं महेश्वरः ॥

End :

देवदेव महादेव शिव कारुण्यवारिधे ।

देहि मे शब्दां मक्ति प्रसीद मम सत्तमा ॥

Colophon :

इति श्रीमदाकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे श्रीशङ्करेण विरचिते शरभसालुवपक्षिराजास्यकवचं नाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥

No. 7335. शरभसालुवपक्षिराजकवचः.

SARABHASALUVAPAKSHIRAJAKAVACAH.

Pages, 22. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 36 of the MS. described under No. 5122.

Complete.

Same as the above.

No. 7336. शरभसालुवपक्षिराजकवचः.

SARABHASALUVAPAKSHIRAJAKAVACAH.

Pages, 15. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 158a of the MS. described under No. 5661.

Complete as found in the 36th Adhyaya of the Åkasabhairava-kaipa.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसालुवपक्षिराजकवचस्तोत्रमन्त्रस्य सदाशेववामदेवा अप्यः, चृहती अनुष्टुप् छन्दांसि, श्रीशरभसालुवेश्वरो देवता, ओं बीजं,

ही शक्ति:, श्रीशरभेदवर कीलकं, मम सकलाभीष्टसिद्धचर्ये ज्ञपे विनि
योगः ।

* * *

श्रीशिवः पुरतः पातु मायाधीशस्तु पृष्ठतः ।

पिनाकी दक्षिणं पातुः वामपाश्वं महेश्वरः ॥

End:

देवदेव महादेव शिव कारुण्यवारिवे ।

पाहि मां श्रणतस्वामिन् प्रसीद सततं मम ॥

Colophon:

इति श्रीआकाशमैरवकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे
शरभसाल्वपशिराजकवचं नाम षट्क्रिंशोऽध्यायः ॥

No. 7337. शरभसाल्वपशिराजदिग्बन्धनमन्त्रः.

SARABHASALUVAPAKSHIRAJADIGBANDHANA
MANTRAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 47a of the MS. described under No. 5660,
wherein it has been omitted to be included in the list of other
works given therein.

Complete.

Similar to the Mantra described under No. 7329.

Beginning:

ओं नमः पशिराजाय निशितकुल(लिश)परा(नस्व)य देहकोटिब्रह्म-
कृपाल . . . शरभसाल्वाय पशिराजाय ह्रौ ह्रौ प्रवेशाय
प्रवेशाय बन्धाय बन्धाय ।

End:

नाशय नाशय नाशय सर्वदुष्टान् नाशय हु फट स्वाहा ॥

Colophon:

इति दिग्बन्धनम् ॥

No. 7338. शरभसाल्वपक्षिराजमहामन्त्रः.

SARABHASALVAPAKSHIRAJAMAHAMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 49a of the MS. described under No. 5660, wherein it is given as Sarabhasalvamantra.

Complete.

This Mantra is addressed to Siva, who is said in the Lingapurâna to have assumed a peculiar beast-and-bird form and vanquished Nrsimha; its repetition is considered to be efficacious in causing the destruction of one's enemies.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसाल्वपक्षिराजमहामन्त्रस्य वामदंव जप्ति, अतिज-
गती छन्दः, शरभसाल्वपक्षिराजा॑॥ कालास्त्रिरुद्रो देवता, स्वं बीजं,
स्वाहा शक्तिः, कूँ कीलकं मम सर्वशत्रुसहारणार्थं जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

स्वे स्वे स्वं स्वं फट् प्राणभ्रहाशि प्राणभ्रहाशि हुं फट् सर्वशत्रु-
सहारणाय शरभसाल्वपक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा॒ ॥

No. 7339. शरभसाल्वपक्षिराजमालामन्त्रः.

SARABHASALUVAPAKSHIRAJAMALA MANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 194a of the MS. described under No. 7247.

Complete.

This Mantra is in praise of Siva under various significant names. It is held to be efficacious in causing the destruction of one's enemies.

Beginning :

ओं नमः पक्षिराजाय निशितकुलशवरनखायानेककोटिब्रह्मकपाल-
मालालङ्कृताय सकलकुलमहानामभूषणाय सर्वेभूतनिवारणाय नरसिंहगर्व-
निवर्पणाय सकलरिपुरम्भाटवीमोटननिलयाय शरभसालुवाय ।

End :

वद वदाज्ञापयाज्ञापय हुं हुं हुं म्लौं म्लौं ढं ढं ढं फट् फट् ॥

No. 7340. शरभसालुवपक्षिराजमालामन्त्रः.

SARABHASĀLUVAPAKSIRĀJAMĀLĀMANTRAH

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 107b of the MS. described under No. 29, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

For the beginning, see under the previous number.

End:

रुत्य रुत्य त्रोटव त्रोटव कोशय कोशय कुद्य कुद्य रे-
ष्य रोष्य घातय घातय श्री ही , अन्धय अन्धय ओं प्रीयतां

No. 7341. शरभसालुवपक्षिराजमालामन्त्रः.

SARABHASĀLUVAPAKSIRĀJAMĀLĀMANTRAH

Pages, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 40a of the MS. described under No. 2886.

Complete.

Similar to the above.

The object aimed at by the repetition of this Mantra is the destruction of bad people.

Beginning:

श्रीशिवः—

ओ नमः पक्षिराजाय निदित्कुलिशवरनस्याय अनेकब्रह्मकपालमा-
लालहृताय सकलकुलमहानागभूषणाय सर्वभूतनिवारणाय नरसिंहगर्वनि-
र्बापणकारणाय ।

End:

मुच मुच दह दह पच पच नाशय नाशय सर्वदुष्टान् नाशय
हु फट स्वाहा ॥

No. 7342. शरभसालुवपक्षिराजमालामन्त्रः.

SARABHASĀLUVAPAKSIRĀJAMĀLĀMANTRAH

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 42a of the MS. described under No. 2424.

Complete.

Same as the above.

No. 7343. शरभसालुवपशिराजमालामन्त्रः.

SARABHASĀLUVAPAKṢIRĀJAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 107a of the MS. described under No. 235, wherein it is found in the Mahāvidyā 90a in the list of other works.

Complete.

Similar to the above. Held also to be efficacious in removing all kinds of evils.

Beginning :

ओं नमो मगवते पशिराजाय निशितकुलिशवरनसाय अनेकको-
टिवद्वाण्डमालालङ्कृतशरीराग सकलनागकुलमहाविभूषणाय सकलशत्रुनि-
वारणाय सर्वभूतनिवारणाय नृसिंहर्गर्वनिर्वापाय सकलरियुहाटक[टि]-
मोटनाय शरभसाल्वान् ।

End :

प्रलयकालवीरभद्राय से से हुं महाकारवीरभद्राय दुरितवि(निवा-
रणाय) ओं फट् स्वाहा ॥

No. 7344. शरभसालुवपशिराजमालामन्त्रः.

SARABHASĀLUVAPAKṢIRĀJAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 85b of the MS. described under No. 5386, wherein it is found in the Mahāvidyā 65b.

Complete.

Same as the above.

No. 7345. शरभसालुवमन्त्रः.

SARABHASĀLUVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 151a of the MS. described under No. 5661, wherein it is wrongly given as Sarabhasālvakavnea in the list of other works.

Complete.

Similar to the work described under No. 7338.

Held also to have the power to enable one to obstruct the bodily and intellectual powers of bad people and to accomplish one's objects.

Beginning:

अस्य श्रीशरभसालुवमहामन्त्रस्य कालामिरुद्र ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीशरभसालुवेश्वरो देवता, स्वे बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीशरभसालुवप्रसादसिद्धयर्थं मम दूरस्थानां समीपस्थानां सर्वदुष्टानां वाक्पदगतिमति जिह्वामुखस्तम्भनार्थं मम इष्टकाम्यार्थसिद्धयर्थं श्रीशरभसालुवमहामन्त्रजपे विनियोगः।

End:

शरभेश्वर विश्वेश पशिराज दद्यानिष्ठे ।

देहि मैचबलां भक्ति भ्रणतोऽस्मि पुनः पुनः ॥

मानसपञ्चपूजः । लं पृथिव्यात्मने शरभसालुवाय गन्धं समर्पयामि । वं अमृतात्मने शरभसालुवाय अमृतोपहारनैवेद्यं समर्पयामि ॥

No. 7346. शरभसालुवमन्त्रः.

SARABHASALUVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 23c6 of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantralalika 229a given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above. Held to be efficacious in causing the destruction of one's enemies and the accomplishment of one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीशरभसालुवमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पक्षिरुद्धन्दः, महाप्रलयकालरुद्रो देवता, स्वे बीजं, स्वाहा शक्तिः, सर्वशत्रुसंहारिणीति कीलकं, ममेष्टार्थं सर्वशत्रुक्षयार्थं विनियोगः।

End:

सर्वशत्रुसंहारिणे शरभसालुवाय पशिराजाय हुं फट ॥

No. 7347. शरभसालुवमन्त्रः.
ŚARABHASĀLUVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 91^b of the MS. described under No. 5566, wherein it is wrongly stated to begin on fol. 90.

Complete.

Same as the above.

No. 7348. शरभसालुवमन्त्रः.
ŚARABHASĀLUVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 281^b of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramalika 273^a given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above

The aim of this Mantra is to enable one to drive away one's enemies.

Beginning:

अस्य श्रीशरभसालुवमन्त्रस्य वामदेव जपिः, अनुष्टुप् छन्दः,
 श्रीशरभसालुवरुद्रो देवता, स्वेच्छां शक्तिः, सर्वशत्रुसंहारणेति
 कीलकं, मम शत्रुपलायनार्थे विनियोगः ।

End:

ओं स्वे स्वे कं प्रसो प्रसि हुं फट् श्रीशरभसालुवाय पक्षिराजाय

No. 7349. शरभसालुवमन्त्रः.
ŚARABHASĀLUVAMANTRAH.

Pages, 2 Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 27^a of the MS. described under No. 5737.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीशरभसालुवमहामन्त्रस्य कालाभिरुद्र जपिः, अतिजगती
 छन्दः, शरभसालुवपतिराजकालाभिरुद्रो देवता; स्वेच्छां शक्तिः,
 फट् कीलकं, मम शरभसालुवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

सकलरिपुदम्भाटवीमोटनमहानलाय शरभसाल्वाय पतिराजाय
हां ही हूं प्रवेशय प्रवेशय भाषय भाषय मोहय मोहय स्वाहा ॥

No. 7350. शरभसाल्वमन्त्रराजमहामन्त्रः.

SARABHASĀLUVAMANTRARĀJAMAHĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 191a of the MS. described under No. 7247.

Complete.

This Mantra is considered to be the most important of the Mantras addressed to Śiva conceived as Sarabhaśalva. It is considered to be of help in the accomplishment of the four Purusarthas, viz., Dharma, Artha, Kama and Mokṣa.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसाल्वमन्त्रराजमहामन्त्रस्य कालाभिरुद्र ऋषिः,
जगती उन्दः, श्रीशरभश्चरो देवता; सं चीजं, स्वाहा शक्तिः, फट्
कीलकं, मम धर्मार्थकाममोहार्थे जपे विनियोगः ।

End :

अथ मनुः—

ओं सें सां सं फट् प्राणग्रहाशि प्राणग्रहाशि हुं फट् । सर्वं
शत्रुसंहारणाय शरभसाल्वपतिराजाय हुं फट् स्वाहा । पुनः प्राणा-
नापम्य न्यासव्यानादिकं कृत्वा अनेन मया कृतेन प्रीयतो न
मम ॥

No. 7351. शरभसाल्वमन्त्रराजमहामन्त्रः.

SARABHASĀLUVAMANTRARĀJAMAHĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 105a of the MS. described under No. 29,
wherein it is found in Sarabhaśalvamantra 105a

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसालुवमन्त्रराजमहामन्त्रस्य कालाभिरुद्र ऋषिः, नगरी
छन्दः, श्रीशरभेश्वरो देवता; खं बीजं, स्वाहा शक्तिः, फट् कीलकं
मम घर्मीर्थकाममोक्षार्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं खं खं खं फट् प्राणग्रहाशि प्राणग्रहाशि हुं फट् । सर्वशत्रुसं-
हरणाय शरभसालुवाय पद्मिराजाय हुं फट् स्वाहा । पुनः प्राणानायन्य,
न्यासध्यानादिके कृत्वानेन मया कृतेन प्रीयतां न मम ॥

No. 7352. शरभसालुवमन्त्रराजमहामन्त्रः.**SARABHASĀLUVAMANTRARĀJAMAHĀMANTRAH.**

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 191b of the M.S. described under No. 7247.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसालुवमन्त्रराजमहामन्त्रस्य द्रुचासभगवानृषि:, अनु-
ष्टुप् छन्दः, श्रीशरभेश्वरो देवता; हीं बीजं, कीं शक्तिः, सौः कीलकं,
मम विनियोगः ।

End :

ओं श्री हीं अग्निनेत्रज्वालामालाय श्रीनृसिंहविद्यारणशरभेश्वराय कीं
सौं हो हीं स्वाहा । पुनः प्राणायामः । न्यासध्यानादिकं विधाय अनेन
मया प्रीयतां ममः ॥

No. 7353. शरभसालुवमन्त्रराजमहामन्त्रः.**SARABHASĀLUVAMANTRARĀJAMAHĀMANTRAH.**

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 105a of the M.S. described under No. 29,
wherein it is found in Sarabhasaluvamantra 105a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसालुवमन्त्रराजमहामन्त्रस्य दूर्वासभगवानृषिः, अनु-
द्धुप् छन्दः, श्रीशरभेश्वरो देवता; ही वीजं, क्रौं शक्तिः, सौः कीलकं,
मम जपे विनियोगः ।

End :

ओं श्री ही अग्निनेत्रज्यालामालाय श्रीतृतीसहविदारणशरभेश्वराय कीं
सौः हां हीं स्वाहा । पुनः माणाच्यामन्यासच्यानादिकं विषाय अनेन
मया (कृतेन प्रीयतां न मम) ।

No. 7354. शरभसालुवमालामन्त्रः.**SARABHASĀLUVAMĀLĀMANTRAH.**

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 109^b of the MS. described under No. 29, wherein
it is given as Sarbhastottara-satanyasa in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

The applicant prays to Śiva in the end to bestow immortality
on him.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसालुवमालामन्त्रस्य [राज]भगवान् सदाशिव ऋषिः,
मगती छन्दः, श्रीशरभेश्वरो देवता; शं वीजं, ही शक्तिः, स्वाहा
कीलक, मम विनियोगः ।

End :

कालकण्ठाय गरलसंहारणाय भूमुखस्मुखपतये मृत्युपतये अमृतं भे
प्रयच्छ स्वाहा । पुनर्धर्षत्वानेन प्रीयतां न मम ॥

No. 7355. शरभसालुवमालामन्त्रः.**SARABHASĀLUVAMĀLĀMANTRAH.**

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 102^a of the MS. described under No. 637

Complete.

Same as the above.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसालुवमालामन्त्रस्य भगवान् सदाशिव ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीशरभेश्वरो देवता; शं बीजं, ही शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम विनियोगः ।

End :

मृत्युपतये अमृते मे प्रयच्छ स्वाहा । शां शं ही ओ । पुनर्धौत्वा अनेन श्रीयता न मम ॥

No. 7356. शरभसाल्वमन्त्रः.

SARABHASALVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 255 of the MS. described under No. 5600, wherein it has been apparently omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Similar to the work described under No. 7345.

Beginning :

अस्य श्रीसालुवशरभमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, अतिजगती छन्दः, साल्वपश्चिराजकालमिरुद्रो देवता; शं बीजं, स्वाहा शक्तिः, सर्वशत्रुसंहरेति कीलकं, मम साल्व—गः ।

End :

ओ स्मे खां सं फट् प्राणम्रहासि प्राणम्रहासि हुं फट् । सर्वशत्रुसंहारिण शरभसाल्वाय पश्चिराजाय हुं फट् स्वाहा ।

ओ सालुवाय विद्वहे पश्चिराजाय धीमहि । तत्रो रुद्रः पत्नो दधात् ॥

No. 7357. शरभसाल्वमन्त्रः.

SARABHASALVAMANTRAH.

Page, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 5422.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसाल्वमन्त्रराजमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, श्रीशरभसाल्वेश्वरो देवता, ओं बीजं, त्रि शक्तिः, फट् कीलकं,
श्रीशरभसाल्वप्रसादसिद्धचर्चे जपे विनियोगः ।

End :

त्वे स्ते स्ते फं त्रि शु हुं फट् फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभसाल्वाय
पाक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon :

सम्पूर्णशरभसाल्वमन्त्रः ॥

No. 7358. शरभसाल्वमन्त्रः.**SARABHASALVAMANTRAH.**

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 7261.

Complete.

Same as the above.

No. 7359. शरभसाल्वमन्त्रः.**SARABHASALVAMANTRAH.**

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 33v of the MS. described under No. 3862.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसाल्वमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, अतिजगती छन्दः,
श्रीशरभेश्वरो देवता, ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, हीं कीलकं, मम शरभ-
साल्वेश्वरप्रसादसिद्धचर्चे जपे विनियोगः ।

End:

चन्द्राकौ यस्य दृष्टिः कुलिशवरनखश्रवलात्युप्रजिहः
काली दुर्गा च पक्षी हृदयजठरगौ मैरवो वाहवामिः ।
ऊरुस्थौ व्याधिमृत्यू चलदनलशिखश्वातादिवेसः(ण्डवातातिवेगः)
संहती सर्वशत्रुन् स जयतु शरभस्सालुवः पक्षिराजः ॥
मनुः ॥

No. 7360. शरभसाल्वमन्त्रः.

SARABHASALVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5686.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीशरभसाल्वमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पक्षिशत्रुन्दः, श्री-
शरभसाल्ववीरभद्रो देवता; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, से कीलकं, श्री-
शरभसाल्वप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं से थे फे भी शि शु हुं फट् फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ-
साल्वपक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7361. शरभसाल्वमन्त्रः.

SARABHASALVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 149b of the MS. described under No. 781.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीशरभसाल्वमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शर-
भेश्वरो देवता; श्रीं बीजं, त्रे शक्तिः, फट् कीलकं, श्रीशरभसाल्व-
प्रसादासिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओं से खे फे त्रे शु हुं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभसाल्वाय
पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7362. शरभसाल्वमन्त्रः.
SARABHASĀLVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 113a of the MS. described under No. 119.
Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसाल्वमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, जगती छन्दः, शरभ-
साल्वकालाभिरुद्रो देवता; सं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीशरभसाल्व-
प्रीत्यर्थे विनियोगः।

End :

हुं फट् सर्वशत्रुसंहाराव शरभसाल्वाय पश्चिराजाय हुं फट् स्वाहा ।
पुरश्चरणमयुतम् ॥

No. 7363. शरभसाल्वमन्त्रराजमहामन्त्रः.

SARABHASĀLVAMANTRARĀJAMAHĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 5828,
wherein it is given as Sarabhasālvamantra in the list of other
works.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 7353.

Intended to propitiate Siva as associated with Parvati.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसाल्वमन्त्रराजमहामन्त्रस्य कालाभिरुद्र ऋषिः, अति-
जगती छन्दः, श्रीशरभसाल्वकालाभिरुद्रो देवता, सं बीजं, स्वाहा
शक्तिः, फ कीलकं, पार्वीतमेतश्रीशरभसाल्वप्रसादसिद्धर्थे जपे वि-
नियोगः।

End :

शत्रुसंहारिणे अखाव फट्, मूर्खवस्तुवरोमिति दिव.

No. 7364. शरभसाल्वमालामन्त्रः.

SARABHASĀLVAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 106a of the MS. described under No. 5681, wherein it is given as Śarabbhamālāmantra in the list of other works.

Complete.

This Mantra is in praise of Śiva and is considered to have the power to bring people under one's control and influence and to destroy one's enemies, etc.

Beginning:

दृश्वर उवाच—

ओक्षमः पक्षिराजाय निशितकुलिशवरनखाय अनेककोटिब्रह्मक्षाल-
मालालङ्कृताय सक्षलकुलमहानागभूषणाय.

End:

सर्वलोकवशङ्कारं सर्वजने मे वशमानव स्वाहा । ओ खें सें फट्
प्राणप्रहासि प्राणप्रहासि हुं फट् सर्वशत्रुसंहरणाय शरभसाल्वाय पक्षि-
राजाय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7365. शरभसाल्वमालामन्त्रः.

SARABHASĀLVAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 53b of the MS. described under No. 5680, wherein it is found in the Sarabhasāluvamantra 49a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

ओ नमो महावीरघोरशरभाय सं सं सं सं फं फं फं ठ ठ
ठ ठ शं सौं श्रं सि हुं हुं वीरभचण्डपक्षिराजशरभसाल्वाय ।

End :

खें सें वं ब्रा सौं सि हुं हुं वीरभचण्डपक्षिराजशरभसाल्वाय हुं
फट् स्वाहा ॥

No. 7366. शरभसाल्वेश्वरमन्त्रः.

ŚARABHASĀLVĒŚVARAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 50b of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Āmnāya-mantramālikā 1a.

Complete.

Similar to the Mantra described under No. 7356.

Beginning :

अस्य श्रीशरभसाल्वेश्वरमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, अतिजगती
छन्दः, श्रीशरभसाल्वेश्वरो देवता; सें बीजं, स्वाहा शक्तिः, फे की-
लंकं, मम श्रीशरभसाल्वेश्वरप्रसादसिद्धयर्थं जपे विनियोगः।

End :

चन्द्राकौं वहि(वस्य)दृष्टि कुलिशवरनखाश्चलात्युग्मजिह्वा:
काली दुर्गा च पक्षी हृदयजठरगौ भैरवो वाढवामिः।
ऊरस्यौ व्याधिमृत्यू शरभवरखगच्छण्डवातातिवेगः
संहर्ता सर्वशत्रूं जयतु स शरभसालुवः पाक्षिराजः॥

No. 7367. शरभेश्वरमन्त्रः.

ŚARABHĒŚVARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 40a of the MS. described under No. 2856, wherein it is found in the Ākashabhairavakalpa 38a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

श्रीशरभेश्वरमहामन्त्रस्य कालामिरुद्र ऋषिः, जगती छन्दः, श्री-
शरभेश्वरो देवता; सें बीजं, स्वाहा शक्तिः, ओं सें स्वां अं। सें
फट् त।

End :

ओं सें स्वां फट् सें प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट्। सर्वशत्रु-
संहारणाय शरभसालुवाय पाक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा—इति मनुः॥

च्यानान्तरम्—

अष्टाङ्गिश्च सहस्राहुर(ग) लङ्घायाशिरोयुग्मभृत्
 द्विष्वक्षोऽतिजबो द्विपक्ष उदितसंक्षेभिसिंहासहः ।
 अर्धनापि सूग्राकृतिः पुनरव्याख्यर्थेन पक्ष्याकृतिः
 श्रीवीरः शरभस्स पातु सुचिरं नीत्वा सदा मां हृदि ॥
 क्षीरोदनेन होमः ॥

No. 7368. शरीरशुद्धिमन्त्रः.

ŚARĪRAŚUDDHIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to enable one to purify one's self from sin.

Beginning :

जपकर्ता विविक्तदेशमागत्य प्रणवेन जलमभिमन्त्रय तज्जलेन
 जपस्थानं संप्रोक्ष्य ऐन्द्रादिदिल्लु बधामि * * * मम शरीरशुद्धि-
 मन्त्रस्य अन्तर्यामी ऋषिः, प्रकृतिपुरुषश्छन्दः, सत्यो देवता, समस्त-
 भूतोक्षाटने विनियोगः ।

End :

श्रीवासुदेवो भगवान्मच्छरीरमाज्ञादृष्टा वस्त्रेनाप्नावयतु, मां
 पवित्रीकरोतु ॥

No. 7369. शरीरशुद्धिमन्त्रः.

ŚARĪRAŚUDDHIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 124a of the MS. described under No. 119.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य शरीरशुद्धिमन्त्रस्य आन्तर(र)क्षमिः, प्रकृतिशङ्कन्दः, सद्यो
देवता, मम शरीरपानमौतिकशुच्छये विनियोगः ।

End :

सुरापानहृदा युक्तं गुरुतल्पकाटिद्वयम् ।
तत्संयोगपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गकारकम् ॥

Colophon :

उपपातकरोगपूर्णशरीरशुद्धिमन्त्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7370. शास्त्रविद्या.

ŚAMBHAVAVIDYĀ.

Pages, 5. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 64^a of the MS. described under No. 446.

Complete.

This Mantra is addressed to Śambhavi who is Śiva's Śakti conceived as a goddess.

Beginning :

तत्रादौ ब्रह्मरन्त्रे त्रिकोणं सविन्त्य तन्मध्ये विन्दी श्रीनिर्वाणं
शास्त्रं ध्यायेत् । अथ मन्त्रः—

ऐ ही श्री हसके हसौं हसक्षमलवरयूं श्रीनवात्मानन्दनाथ ऐं श्रीं
श्रीं किणि किणि विच्चे हसके श्रीनिष्कलामहासमयान्वापरापरान्वाश्री-
पादुकां पूजयामि नमः ।

End :

त्रिशूलवज्रचक्राणि अङ्गुष्ठं शरकर्तरी ।
दक्षिणेनाखुना देवि नीलोत्पलसतारकौ ॥
अन्यत्र मुण्डखटाङ्गं घण्टामुखं घनुस्तथा ।
काषालं वासके प्रोक्तं सिंहासनशबासने ॥
इति ध्यात्वा निवेदयेत् ॥

Colophon :

इति शास्त्रवप्रकरणम् ॥

No. 7371. शारिकामन्त्रः.

ŚĀRIKĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Maṇtramālīka 1a in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Śāriki, who is a manifestation of Syamala or Mātaṅgi; and its repetition is held to be efficacious in bringing to one wisdom and enlightenment.

Beginning :

अस्य श्रीशारिकामन्त्रस्य शौनक जपिः, अतिजगती छन्दः, श्री-
शारिका देवता; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, नमो भगवतीति कीलकं,
मम श्रीशारिकाम्बापसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End :

मनुः—

ओं नमो भगवति शारिके सकलकलाकोविदे एं मम बोधय बोध-
य स्वाहा । श्रीशारिकाम्बाश्री ॥

No. 7372. शारिकामन्त्रः.

ŚĀRIKĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 28b of the MS. described under No. 2848, wherein it is found in the Āmnāyamantramālīka 16a.

For Pūrvāmnāyamantramālīka 16a given therein in the list of other works read Āmnāyamantramālīka 16a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशारिकामन्त्रस्य शौनक जपिः, पद्मिश्चन्दः, शारिका
देवता, एं बीजं, क्षी शक्तिः, सौः कीलकं, विनियोगः, श्रीमित्यादि-
न्यासः।

End :

ओं एं नमो भगवति शारिके सकलकलाकोविदे देवी बोधय बो-
धय स्वाहा ॥

No. 7373. शारिकामन्त्रः.

SĀRIKĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 3b of the MS. described under No. 673, wherein it is found in the Sadāmūya 1a given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशारिकामन्त्रस्य मतङ्गं जपिः, जगती छन्दः, शारिका
देवता ; क्लीं बीजं, हीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम(देवी) शारिकाप्रसाद-
सिद्धचर्चे जपे विनियोगः ।

End :

ओं नमो भगवति शारिके सकलकलाकोविदे देवीं बोधय बोधय
स्वहा । शारिकाम्बाश्रीपा—नमः ॥

No. 7374. शारिकाश्यामलामन्त्रः.

SĀRIKĀSHYĀMALĀMANTRAH.

Pages, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 229a of the MS. described under No. 124, wherein it is found in the Sadāmūyamantra 228b given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशारिकाश्यामलामन्त्रस्य गौणकं जपिः, अतिजगती छन्दः,
शारिका देवता, श्रीशारिकाप्रसाद—गः ।

श्रीमिति करहृदयादिन्यासः ।

End :

देवीं बोधय बोधय स्वहा । शारिकाम्बादिव्यश्रीपादुकां पूज-
यामि ।

No. 7375. शास्तामन्त्रः-

ŚĀSTĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 486 of the MS. described under No. 2886.

Complete.

This Mantra is addressed to Śasta who is a village deity generally known as Ayyanār in Tamil ; and its repetition is considered to have the power to bring even celestial beings under one's control and influence.

Beginning :

ही हरिहरपुत्राय शत्रुनाशनाय मतञ्जजवाहनाय ही

End :

सुरासुरवशीकरणं कुरु कुरु स्वाहा ॥

No. 7376. शास्तामन्त्रः-

ŚĀSTĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 45a of the MS. described under No. 2886, wherein it is found in the Akāśabhairavakalpa 38a given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

महाशास्तुः अर्धनारीश्वरः, अनुष्टुप् उन्दः, महाशास्ता हरिहरात्म-
कः, मायावर्णं बीजं, रमा शक्तिः, सर्वार्थसिद्धयर्थं, मूलेन न्यासः ।

End :

मदगजाय च तत्पश्चाद्वाहनायपदं ततः ।

महाशास्ताय तत्पश्चात् नमोऽन्तं मन्त्रमुत्तमम् ॥

त्रयखिंशद्वर्णः, वर्णसहस्रं जपः । सर्वे पूर्ववत् ॥

बीजं विना विशदर्णात्परं साध्यं नियोज्य तत् ।

सप्तलुब्दसहस्रं तु जपेत्तता(त्का)न्यसिद्धये ॥

No. 7377. शिशुमारमन्त्रः.
ŚIMŚUMĀRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 30b of the MS. described under No. 5786.
Complete.

This Mantra is addressed to a constellation of very brilliant stars resembling a porpoise situated in the heavens just above the Dhruva or polar star. This celestial porpoise-shaped constellation is conceived to be the same as Narayana, the God who is the life and support of all beings.

Beginning :

ओज्जमो भगवते ज्योतिर्लोकाय कालायनाय निमेषपतये महापुरु-
षाय धीमहीति प्राणायामः ।

अस्य श्रीशिशुमारमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, विष्णुपूर्णदन्तः; शिशु-
मारो देवता, शिशुमारमेरण्या शिशुमारप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओज्जमो भगवते ज्योतिर्लोकाय कालायनाय निमेषपतये महापुरु-
षाय धीमहि—इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7378. शिवकवचः.

SIVAKAVACAH.

Pages, 17. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 27a of the MS. described under No. 408.
Complete.

This Mantra is addressed to Siva; and its repetition is considered to have the power to secure for one his favour and protection.

Beginning :

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य ऋषभयोगीश्वर ऋषिः, पाञ्च-
इडन्दः, श्रीसाम्बसदाशिवो देवता; ओं नम इति चीजं, उमेति शक्तिः,

त्रयोर्ति कीलकं, मम साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवचमन्त्रपारायणे जपे
विनियोगः ।

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिज्योतिर्मयानन्दधनश्रिदात्मा ।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेकस्स ईश्वरः पातु भवादशेषात् ॥

End :

इति भद्रायुषं सम्यगनुशास्य समातृकम् ।
ताभ्यां संपूजितस्सोऽथ योगी स्वैरगतिर्यवौ ॥

No. 7379. शिवकवचः.

SIVAKAVACAH.

Pages, 13. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 76a of the MS. described under No. 133.

Complete as found in the 34th Adhyaya of the Brahmottara-khanda forming part of the Skandapurana.

Similar to the above. Held also to have the power to remove sins and to secure the grace of Siva.

Beginning :

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य ऋषभयोगीश्वर ऋषिः, अनु-
षुप्त छन्दः, सदाशिवो देवता; ओं चीजं, नं शक्तिः, मं कीलकं, मम
समस्तपापक्षयद्वारा सदाशिवप्रीत्यर्थे विनियोगः ।

End :

इति भद्रायुषं सम्यगनुशास्य समातृकम् ।
ताभ्यां संपूजितस्सोऽथ योगी स्वैरगतिर्यवौ ॥

Coleophon :

इति स्कान्दपुराणे ब्रह्मोत्तरखण्डे ऋषभभद्रायुसंवादे शिवकवच-
कथनं नाम चतुर्लिङ्गतमोऽध्यायः ॥

No. 7380. शिवकवचः.
SIVAKAVACAH.

Pages, 20. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 6192.

Complete as found in the 12th Adhyāya of the Brahmottara-khaṇḍa.

Same as the above with the difference in the colophon which is given below :—

Colophon :

इति श्रीब्रह्मोत्तरस्तुण्डे श्रीब्रह्मनारदसंवादे शिवकवचकथनं नाम
द्वादशोऽध्यायः ॥

No. 7381. शिवकवचः.
SIVAKAVACAH.

Substance, palm-leaf. Size, $10\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 14. Lines, 10 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Complete.

Same as the above with the difference in the colophon as given below :—

Colophon :

इति श्रीब्रह्मोत्तरस्तुण्डे ब्रह्मनारदसंवादे शिवकवचवर्णने द्वादशोऽ-
ध्यायः ॥

No. 7382. शिवकवचः.
SIVAKAVACAH.

Pages, 8. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 13b of the MS. described under No. 2902.

Complete.

Same as the above, but without the portion relating to the R̄ṣi, Chandas and Dēvata and with the difference in the colophon as given below :—

Colophon :

इति श्रीस्कन्दपुराणे ब्रह्मोत्तरस्तुण्डे शिवकवचं समाप्तम् ॥

No. 7383. शिवकवचः.

SIVAKAVACAH.

Pages, 8. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 120.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य नारायण ऋषिः, जनुष्टुप्
छन्दः, श्रीसदाशिवो देवता, ओं बीजं, नमं (न) शक्तिः, मं कीलकं,
श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

See under the next number for the end.

Colophon :

इति स्कान्दे ब्रह्मोत्तरखण्डे त्रिपमभद्रायुसंवादे शिवकवचानुवर्णनं
नाम द्वादशोऽध्यायः ॥

No. 7384. शिवकवचः.

SIVAKAVACAH.

Pages, 8. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 130b of the MS. described under No. 119.

Complete as found in the Kālikākhaṇḍa of the Skānda Purāṇa.

Similar to the above.

Beginning :

देवानां देवमीशानमादिमध्यान्तवर्जितम् ।

भावगम्यं नमस्कृत्य पप्रच्छ वृषवाहनम् ।

ईशो मे पुरतः पातु ईश्वरः पातु पृष्ठतः ।

ईशानः शिरसः पातु मुखे तत्युरुपत्तश्च ॥

End :

इन्द्राग्नियमयक्षेशजलेशवसतीः क्रमात् ।

धनदेशादिपर्यन्तं लोकपालैश्च पालितः ॥

Colophon :

इत्यादिपुराणे स्कान्दे कालिकाखण्डे शिवकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7385. शिवकवचः.

SIVAKAVACAH.

Pages, 14. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 47a of the MS. described under No. 408.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य कृपमयोगीश्वर ऋषिः, महा-
विराट् छन्दः, श्रीसाम्बसदाशिवो देवता; हाँ वीजं, (ही) शक्तिः, हं
कीलकं, श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवचपारायणे विनियोगः।

* * * * *

पूर्वतः पातु मामीशः आम्नेष्यां निपुरान्तकः।

दक्षिणे कालविघ्वंसी नैरृत्ये सर्पभूषणः॥

End :

कूरान्नाशय नाशय मां रक्ष रक्ष अमयं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा॥
नववारमष्टोत्तरशतं वापि यो जपति मन्त्रं (स) निर्भयो भवती-
त्याह भगवान् सदाशिवः॥

No. 7386. शिवकवचः.

SIVAKAVACAH.

Pages, 7. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 131b of the MS. described under No. 119.

Complete as found in the Brahmoottarakbhaṇḍa.

Similar to the above.

Beginning :

अथापरं सर्वपुराणगुणमशेषपापौघहरं पवित्रम्।

जपमदं सर्वविपलमोचनं वद्यामे शैवं कवचं हिताय वै॥

अस्य श्रीरुद्रब्रह्माविद्यामन्त्रस्य वद्या ऋषिः, गायत्री छन्दः, रुद्रो
देवता; हाँ वीजं, हीं शक्तिः, हं कीलकं, मम समस्तदुरितक्षयद्वारा
श्रीसाम्बशिवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

For the end, see under No. 7379.

Colophon :

इति श्रीब्रह्मोत्तरखण्डे शिवकवचं नाम त्रयस्त्रिशत्तमोऽध्यायः ॥

No. 7387. शिवकवचः.

SIVAKAVACAH.

Pages, 6. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 25a of the MS. described under No. 5422.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अथापरं सर्वपुराणगुरुं हिताय वै ॥

नमस्कृत्वा महादेवं विश्वव्यापिनपीथरम् ।

वक्ष्ये शिवम् । वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥

End :

शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय अभ्यक्त नमस्ते नमस्ते ॥

No. 7388. शिवकवचः.

SIVAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 43a of the MS. described under No. 5422.

Complete.

Same as the above.

No. 7389. शिवकवचः.

SIVAKAVACAH.

Pages, 11. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 764.

Complete.

Similar to the above.

Considered to be efficacious in bringing about the accomplishment of one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, हीं ओं चीजं नं शक्तिः, मैं कीलकं, मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे शिवकवचपारायणे विनियोगः ।

End :

भुत्तृष्णातुरं मामाप्याययाप्यायय रुजातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय त्रिवर्षक नमस्ते नमस्ते नमः ॥

No. 7390. शिवकवचः.

SIVAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 247b of the MS. described under No. 124, wherein it is given as Śivakavacastotra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ऋष्यभयोगीश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसाम्बसदाशिवो देवता, हाँ चीजं; हीं शक्तिः, हूँ कीलकं, मम साम्बसदाशिवप्रसादसिद्ध्यर्थे शिवकवचपारायणे विनियोगः ।

See under the next number for the end.

No. 7391. शिवकवचः.

SIVAKAVACAH.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 75a of the MS. described under No. 5454.

Complete

Similar to the above. This is considered to be the most important of the Mantras in praise of Siva and Parvati.

Beginning :

भवती शरणं गत्वा रुतार्थः स्युः पुरातनाः ।

इति सञ्जिन्त्य सञ्जिन्त्य देवि त्वा शरणं ब्रजे ॥

शिवशीतकरार्धाङ्गमणिमौलिविराजितम् ।

शिवारुद्यं कवचं तस्मान्मम वक्तव्यमज्जसा ॥

अस्य कवचस्य परब्रह्म ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसदाशिवो देवता, श्रीसाम्बसदाशिवप्रसादसिद्धचर्चे जपे विनियोगः ।

ईशो मे पुरतः पातु ईश्वरः पातु पूष्टतः ।

ईशानः शिरसि पातु मुखे तत्पुरुषस्तथा ॥

End:

य इदं पठते भवत्या न साध्यं तस्य विद्यते ।

स्तवानां राजराजोऽवं तस्मात्त्वं जप सर्वदा ॥

Colophon:

इति माधवीये शिवस्तोत्रे रक्षाकरे दिव्यागमे शिवस्त्रणे शिवेन
प्रोक्तं शिवकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7392. शिवकवचब्रह्मविद्यामन्त्रः.

SIVAKAVACABRAHMAVIDYĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 2886, wherein it has been apparently wrongly given as beginning on fol. 14b.

Complete.

Similar to the above. Also considered to have the power to enable one to obtain a vision of Siva.

Beginning:

अस्य श्रीशिवकवचब्रह्मविद्यामहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीहंद्रो देवता; रां बीजं, री शक्तिः, रुं कीलकं, रुद्रसाक्षात्कारसिद्धचर्चे जपे विनियोगः ।

मां पातु देवोऽस्मिलदेवतात्मा संसारकूपे पतितं गभीरे ।
 तत्राम दिव्यं परमन्त्रमूलं बुनोतु मे सर्वमधं हृदिस्थम् ॥
 सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिः ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा ।
 अणोरणीयानुरुशक्तिरेकस्स ईश्वरः पातु भवादशेषात् ॥

End :

त्वमपि अद्वया वत्स शैवं कवचमुत्तमम् ।
 धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो द्वाप्त्यसि ॥

No. 7393. शिवपञ्चाक्षरीमन्त्रः.

SIVAPĀNCĀKSARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 49b of the MS. described under No. 235.

Complete.

This is the well-known five-syllabled prayer-formula of the Saivas. Its repetition is considered to have the power to propitiate Śiva and to enable one to accomplish one's desires.

Beginning :

मूलेनाचम्य मूलेन प्राणायामं कुर्यात् । अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरी-
 महामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसाम्बसदाशिवो देवता;
 औं वीजं, नमः शक्तिः, शिवायेति कीलकं, मम साम्बसदाशिवप्रसाद-
 सिद्धचर्थे मम सकलमनोरथसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओऽन्नमः शिवाय । जपान्ते पुनराचमनप्राणायामषड्ङ्गध्यानपश्चपूजां
 कुर्यात् ।
 गृह्णातिगृह्णगोपा त्वं गृहणास्मत्कृतं जपम् ।
 सिद्धिर्भवतु मे देव त्वयसादान्महेश्वर ॥
 अनेन मया रूतं साम्बसदाशिवार्पणमस्तु ॥

No. 7394. शिवपञ्चाक्षरीमन्त्रः.
SIVAPĀNĀKṢARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 38a of the MS. described under No. 6414.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, सदाशिवो देवता, ओं रे ब्रह्मात्मक इति बीजं, सर्वशक्तिधाने कामिति शक्तिः, त्रिपुरहरण इति कीलकं, मम सर्वाभीष्टफलसिद्धयर्थे विनियोगः ।

End :

नमः शिवाय नमः ॥

No. 7395. शिवपञ्चाक्षरीमन्त्रः.
SIVAPĀNĀKṢARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 26a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

Similar to the above.

The order of the words forming the Mantra-formula is given in this manuscript in a somewhat altered form.

Beginning :

ओं शिवाय नमः ओं इति प्राणायामः । १२.

अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पद्मिश्चन्दः, श्रीशिवो देवता, श्रीशिवप्रेरणया शिवप्रतीत्यर्थे शिवपञ्चाक्षरमन्त्रजपे विनियोगः ।

End :

ओं शिवाय नमः ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7396. शीतलाम्बामन्त्रः.
SITALAMBAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5832

Complete.

Similar to the above.

Held to be also helpful in counteracting the evils likely to be caused by evil spirits owing to the sin committed by one in a former birth.

Beginning :

अस्य श्रीशीतलाम्बामहामन्त्रस्य आनन्दमैरव ऋषिः, अनुष्टुप्-
छन्दः, शीतलाम्बा देवता, जों बीजं, ही शक्तिः, श्री कीलकं, मम
जन्मान्तरप्रतिबन्धकवशात् संप्राप्तनानाभ्रोपधातादिसकलदेवताभ्रहनिभ्रहादि-
सकलपीडानिवृत्त्यर्थं शीतलाप्रसादसिद्धयर्थं जपे विनियोगः।

End :

ही शानादेवी च धीमहि । श्री शीतलादेवि प्रचोदयात् ॥ गुडो
दक्तर्पणं होमः श्रीगन्धवारिणा तर्पणं दशांशं,
सहस्रं जपः ॥

No. 7397. शीतलास्तोत्रमन्त्रः.
SITALASTOTRAMANTRAH.

Pages, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 3a of the MS. described under No. 2886.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Sitala, and is considered to be of use in the curing of small pox and other like epidemics.

Beginning :

स्कन्द उवाच—

भगवन् देवदेवेश शीतलायाः स्तवं शुभम् ।

वकुर्मर्दस्यशेषेण विस्फोटकभव्यापहय् ॥

ईश्वर उवाच—

अस्य श्रीशीतलास्तोत्रमहामन्त्रस्य ईश्वर प्राप्तिः, अनुष्टुप् छन्दः,
शीतला देवी देवता, हाँ बीजं, हीं शक्तिः, हूं कीलकं, स्फोटकादि
समस्तरोगशान्त्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओ ही ओ नमो भगवति शीतले देवि मम स्फोटकं नाशय
नाशय तन्त्रं छेदय छेदय दाहं शमय शमय स्वास्थ्यं कुरु कुरु शीतले
स्वाहा ॥

Colophon :

शीतलास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7398. शीतलास्तोत्रमन्त्रः.

SITALASTOTRAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 65a of the MS. described under No. 5661.

Complete, as found in the Skandapurāṇa.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशीतलादेवीस्तोत्रमन्त्रस्य शिव प्रिप्तिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीशीतला देवी देवता; एं बीजं, हीं शक्तिः, स्वाहेति कीलकं, श्री-
शीतलादेवीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओ ही शीतले स्फोटकान् विनाशय विनाशय निदाष्टं शमय
शमय तन्त्रून् छेदय छेदय ओ शीतले हीं स्वाहा ॥

Colophon :

इति स्कन्दपुराणे ईश्वरप्रोक्तं शीतलास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7399. शुकश्यामलामन्त्रः.
SUКАŚYĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 12b of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Āmnāyamantramālikā given therein in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Śukaśyāmālā who is the same as the goddess Śyāmā or Mātangi; and its repetition is considered to have the power to enable one to bring under one's control and influence all people including even kings.

Beginning:

अस्य श्रीशुकश्यामलामहामन्त्रस्य शुकमगवा(ना)नन्दभैरव ऋषिः,
पद्मिगर्वयत्री छन्दः, श्रीशुकश्यामला देवता, ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः,
नमो भगवतीति कीलकं, मम सकलजनवश्यार्थे श्रीशुकश्यामलाप्रसाद-
सिद्धर्थे जपे विनियोगः।

End:

ओं नमो भगवते महाशुकाय त्रैलोक्यमोहनाय त्रिभुवनालङ्का-
राय राजमद्मर्दनाय शीघ्रं राजानं मे वशमानय स्वाहा। श्रीशुकश्या-
मलाश्री ॥

No. 7400. शुकश्यामलामन्त्रः.
SUКАŚYĀMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 229a of the MS. described under No. 124, wherein it is found in the Śadāmnāyamantra 228b given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीशुकश्यामलामन्त्रस्य शुक ऋषिः, पद्मिश्छन्दः, शुको
देवता, शुकश्यामलाप्रसाद—गः। आमिति करहृदयादिन्यासः।

End:

शीघ्रं राजानं मे वशमानय स्वाहा । शुकश्यामलाम्बादिव्य श्रीपादु-
कां पूजयामि ॥

No. 7401. शुकश्यामलामन्त्रः.

ŚUKAŚYĀMALĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 2^{5a} of the MS. described under No. 2848, wherein it is found in the Āmnayamantramalikā 1^a given therein in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशुकमन्त्रस्य शुक ऋषिः, पञ्चिदण्डन्दः, शुकश्यामलाम्बा-
देवता, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, सौः कीलकं, विनियोगः; श्रामित्यादि-
न्यासः ।

End:

शीघ्रं राजानं मे वशमानय स्वाहा । शुकदेव्यम्भाश्री ॥

No. 7402. शुकश्यामलामन्त्रः.

ŚUKAŚYĀMALĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 3^b of the MS. described under No. 673, wherein it is found in the Śadjāmnaya 1^a in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशुकश्यामलामहामन्त्रस्य शुक ऋषिः, पञ्चिदण्डन्दः, शुक-
श्यामला देवता; ह्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम शुकश्या-
मलाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ओ नमो भगवते महाशुक्राय तिसुवनालङ्कृताय राजमदमदेनाम्
अरेहं राजानं मे वशमानय स्वाहा । शुक्रश्यामलाश्री—नमः ॥

No. 7403. शुक्रकवचम्.

SUKRAKAVACAM.

Page. 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 51a of the MS. described under No. 2885,
wherein it is found in the Navagrahakavaca 51a.

Complete as found in the Skandapurana.

This Kavacamantra is addressed to Śukra, who, according to
the Purāṇas, was the priest and preceptor of the Asuras; and its
repetition is considered to have the power to secure protection to
one from all troubles and dangers.

Beginning:

मूणालकुन्दन्तुपयोहिमपम श्वेताम्बरं क्षिग्मसिताक्षमालिनम् ।
समस्तशास्त्रुतितत्त्वदर्शिनं ध्यायेत्कविं वाञ्छितवस्तुलब्धये ॥
शिरो मे र्मागवः पातु फालं पातु गृहाखिपः ।
नेत्रे दैत्यगुरुः पातु कण्ठं श्रीकण्ठभक्तिमान् ॥

End:

य इदं कवचं दिव्यं पठति श्रद्धयान्वितः ।
न तस्य जायते पीडा भार्गवस्य प्रसादतः ॥

Cloophon:

इति स्कान्दे शुराणे शङ्करसंहितायां शुक्रकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7404. शुक्रमन्त्रः.

SUKRAMANTRAH.

Page. 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 311a of the MS. described under No. 5477,
wherein it is found in the Mantramālikā 273a in the list of other
works.

Complete.

This Mantra is intended to propitiate Śukra the priest and
preceptor of the Asuras.

Beginning :

अस्य श्रीशुक्रमन्त्रस्य बाईस्पत्य ऋषिः, शुक्रो देवता, श्रिष्टुप् छन्दः;
मम शुक्रप्रसादासिद्धचर्ये जपे विनियोगः । आग्मित्यादिकरण्डक्लन्यासः ।

End :

ॐ श्री शुक्राय नमः, लक्ष्मी जपः, दशांशहोमः । इति ॥

No. 7405. शुक्रशापविमोचनमन्त्रः.

SUKRASĀPAVIMOCANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 62b of the MS. described under No. 5661,
wherein it has apparently been omitted to be included in the list
of other works.

Complete.

According to the Puranas, Śukra is said to have cursed liquor to
the effect that the Brahmin who happens to drink it commits sin;
and the repetition of this Mantra is intended to remove the power
of the curse thus pronounced on liquor.

Beginning :

शुक्रशापविमोचनमहामन्त्रस्य शुक्र ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः,
शुक्रशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः ।

End :

ऐं शुक्रशापविमोचनाय क्षी अमोघाभाय सौः मोचय मोचय
स्वाहा ।

ऐं शुक्रकाय विघ्रहे क्षी रुपणाय धीमहि । ततश्शुक्रः मतोद-
यात् । अष्टवारं जपित्वा ॥

No. 7406. शुद्धमातृकान्यासः.

SUDDHAMĀTRKĀNYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 192b of the MS. described under No. 124,
wherein it is found in the Dasavidhamātrkānyāsa 192a, given
therein in the list of other works.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body, while repeating at the same time the series of Mantra-formulas obtained by introducing the successive letters of the alphabet between the words ओं and नमः. Ten Matrkanyásas are mentioned herein and most of these have been explained already in the descriptive notices relating to them.

Beginning:

शिवादिसर्वमन्त्राणामादौ न्यासविधौ विधिः ।
 दशधा मातृकान्यासस्मिंदिदशभुरबीत् ॥
 शुद्धं चिन्दुयुतं विसर्गसहितं हङ्गेखया श्रीयुतं
 बालासंपुटितं तथैव परया श्रीविद्यालङ्घतम् ।
 आरोहादवरोहतश्च सहितं न्यासं पुनर्हसयोः
 मलिन्या दशधा विभज्य कुरुते साक्षात् एकशिवः ॥
 तत्रादौ शुद्धमातृकाविधिर्लिख्यते—

अस्य श्रीशुद्धमातृकान्यासमन्तर्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,
 श्रीशुद्धमातृका सरस्वती देवता, व्यज्ञनानि वीजानि, स्वराः शक्तयः, अ-
 क्यः कीलकं, श्रीशुद्धमातृकान्यासे विनियोगः ।

End:

ओं अं (अ) नमः शिरसि । इति मातृकास्थानेषु न्यसेत् ॥

No. 7407. शुद्धमातृकासरस्वतीमहामन्त्रः.

SUDDHAMĀTRKĀSARASVATIMAHĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 138b of the MS. described under No. 537.
 Complete.

Herein the Mantra-formulas obtained by introducing the successive letters of the alphabet between the Mantra-formula ए ही श्री and the word नमः are repeated during the ceremonial touching of certain parts of the body. This Nyāsa is intended to be a preliminary to the repetition of the Śrivid्यामन्त्रा.

Beginning :

अस्य श्रीशुद्धमातृकासरस्वतीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, शुद्धमातृका सरस्वती देवता, हलः वीजानि, स्वराशशक्तयः, विन्दवः कीलकं, ममोपास्यमानश्रीविद्याङ्गत्वेन शुद्धमातृकान्यासे विनियोगः ।

End :

ए ही श्री अ नमः इति क्ष नमः पर्यन्तम् ॥

No. 7408. शुद्धविद्यामन्त्रः.

SUDDHAVIDYĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 274a of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā 273a in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate Siddhalakṣmi and to enable one to bring people under one's control.

Beginning :

अस्य श्रीशुद्धविद्यामन्त्रस्य इन्द्र ऋषिः, विराट् छन्दः, सिद्धलक्ष्मीर्देवता, ई वीजं, ककारः शक्तिः, श्रीसिद्धरहस्यप्रीत्यर्थं विनियोगः ।

End :

कुरु कुरु आं क्रुं सुरासुरकन्यकां हुं फट् स्वाहा । कीं नमः, हीं नमः, श्री नमः, पुनश्चरणं दशलक्षं कुर्यात् । दशांशतपणहोमः ॥

Colophon :

इति शुद्धविद्या ॥

No. 7409. शुद्धविद्यामन्त्रः.

SUDDHAVIDYĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 9b of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Amnayamantigamālikā 1a in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate the goddess Sudhavidyāmā, a manifestation of Dēvi, and thus to enable one to free one's soul from the bondage of Samsāra.

Beginning :

अस्य श्रीशुद्धविद्यामहामन्त्रस्य कर्मविपाकसदाशिव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीशुद्धविद्या मनोन्मनी देवता; ऐं वीजं, ई शक्तिः, ओं की-लकं, मम पशुपाशविमोचनशुद्धविद्याम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

End :

मनुः—

ऐं ई ओं श्रीशुद्धविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥

No. 7410. शुद्धविद्यामन्त्रः.

SUDDHAVIDYĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 2a of the MS. described under No. 673, wherein it is found in the Saḍāmnāya 1a in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशुद्धविद्यामन्त्रस्य कर्मविपाकसदाशिव ऋषिः, गायत्री छन्दः, शुद्धविद्या मनोन्मनी देवता; ऐं वीजं, ई शक्तिः, ओं कीलकं, पशुपाशविमोचनार्थे जपे विनियोगः।

End :

ओं ई ओः शुद्धविद्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

No. 7411. शुद्धविद्यामन्त्रः.
SUDDHAVIDYĀMANTRAH.

Page, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 286 of the MS. described under No. 2848, wherein it is found in the Āmnāyamantramālikā 16a in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशुद्धविद्यामहामन्त्रस्य कर्मविपाकसदाशिव ऋषिः, देवी
गायत्री अन्दः; शुद्धविद्या देवता; ऐं बीजं, ईं शक्तिः, औं कीलकं,
इष्टार्थे विनियोगः।

End :

महादेवि महामान्ये मनोन्मनि शुद्धविद्ये सकृदपि परिपाहि मुन्द
री त्वा नमामि ।
ऐं ईं औं ॥

No. 7412. शुद्धविद्यामन्त्रः.
SUDDHAVIDYĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 2286 of the MS. described under No. 124, wherein it is found in the Śadjāmnāyamantra 2286 in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशुद्धविद्यामहामन्त्रस्य कर्मविपाकसदाशिव ऋषिः, गायत्री
अन्दः, मुद्धविद्या मनोन्मनी देवता, ऐं बीजं, ईं शक्तिः, औं कीलकं, श्री-
शुद्धविद्यामनोन्मनीप्रसाद—योगः।

End :

ऐं ईं औं शुद्धविद्याम्बादिव्यश्रीपातुकां पूजयामि नमः ॥

No. 7413. शुद्धशक्तिजयमालामन्त्रः.
SUDDHASAKTIJAYAMALĀMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 141a of the MS. described under No. 2961, wherein this and the Mantras described under Nos. 7414, 7415 and 7417 are all found in Śuddhasaktimāla 131a in the list of other works.

Complete.

This Mantra is in praise of Śuddhasakti, i.e., Śakti conceived as not being subject to any limiting conditions; and its repetition is considered to be efficacious in making one learned.

Beginning :

अस्य श्रीशुद्धशक्तिजयमालामन्त्रस्य वागिन्द्रियाधिष्ठायी अंशादित्य
ऋषिः; पञ्चश्छन्दः; मोक्षदीप्तिरभट्टारकपीठस्थितहृदयनामकमेश्वराङ्क-
निलयहलेखा नाम लिलिता महाभट्टारेका देवता, वाक्सिद्धी विनियोगः ।

End :

महामहाशये जय जय, महामहाश्रीचक्रनगरसाप्राप्ति जय जय
नमस्ते नमस्ते स्वाहा नमः । ओं श्री ह्री ऐ ॥

Colophon :

शुद्धशक्तिमालामन्त्रः ॥

No. 7414. शुद्धशक्तिर्पणमालामन्त्रः.
SUDDHASAKTITARPANAMALĀMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 138b of the MS. described under No. 2961.

Complete.

The repetition of the several significant names of Śuddhasakti followed by the pouring of libations of water is considered to have the power to enable one to enter into the subterranean regions and there accomplish one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीशुद्धशक्तिर्पणमालामन्त्रस्य पाणीन्द्रियाधिष्ठायी अर्यमा-
दित्य ऋषिः, वृहती छन्दः, मोगदलकारभट्टारकपीठस्थितलक्ष्मसारनाम-

कामेश्वराङ्गुनिलया ललिता नाम ललिता भट्टारिका देवता, विलसिद्धौ
विनियोगः ।

End :

महामहाशयां तर्पयामि, महामहाश्रीचकनगरसाम्राजीं तर्पयामि नमस्ते
नमस्ते स्वाहा नमः । ओं श्री ह्री ऐ ॥

No. 7415. शुद्धशक्तिनमोमालामन्त्रः.

SUDDHAŚAKTINAMÖMĀLĀMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 134a of the MS. described under No. 2961.

Complete.

This Mantra is also addressed to Suddhaśakti; and its repetition is held to have the power to bestow on one's sandals such mysterious powers as will enable them to convey one to any place in all the three worlds in the shortest possible time.

Beginning :

अस्य श्रीशुद्धशक्तिनमोमालामन्त्रस्य पा(च्चिन्द्र)याविष्टायी मित्रा-
दित्य ऋषिः, उष्णिक छन्दः, राजसएकारभट्टारकपीठास्ति एकवीरनाम-
कामेश्वरादिनिलया एकला नाम ललिता महाभट्टारिका देवता, पादुका-
सिद्धौ विनियोगः ।

End :

महामहानन्दायै नमः, महामहास्पन्दायै नमः, महामहाशयायै नमः,
महामहाश्रीचकनगरसाम्राज्यै नमस्ते नमस्ते स्वाहा नमः । ओं श्री ह्री
ऐ ॥

No. 7416. शुद्धशक्तिमालामन्त्रः.

SUDDHAŚAKTIMÄLÄMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 56a of the MS. described under No. 5686.

Complete.

This Mantra is in praise of Śuddhasakti; and its repetition is considered to have the power to enable one to wield one's sword so successfully as to win sovereignty over the eighteen Dvīpas.

Beginning :

अस्य श्रीशुद्धशक्तिमालामन्त्रस्य उपस्थेन्द्रियाधिष्ठानवरुणादित्य
ऋषिः, गायत्री छन्दः, सात्त्विकाहङ्कारभट्टारकपीठस्थितकामेश्वराङ्गनिलय-
कामेश्वरी ललिता महाभट्टारिका देवता, स्वादिसिद्धौ विनियोगः।

End :

महामहास्कन्दे महामहाशये महाश्रीचक्रनगरसामाजि नमस्ते नमस्ते
स्वाहा । सौँ छी ऐं श्री ही हैं ऐं ।

एषा विद्या महासिद्धिदायिनी स्मृतिमात्रः ।

अग्निबातमहाक्षोभे राज्ञो राज्यस्य विष्वे ॥

* * * * *

कामराजनियुक्तायै भवत्ये त्रिकोण्यै नमः ।

मूर्पस्थानप्रमाणोत्तं चक्ररूपं प्रकीर्तिताः ॥

Colophon :

इति शुद्धशक्तिमालास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7417. शुद्धशक्तिस्वाहामालामन्त्रः.

SUDDHAŚAKTISVĀHĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 136a of the MS. described under No. 2981.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is also addressed to Śuddhasakti, is considered to have the power to enable one to find out the places containing hidden treasures.

Beginning :

अस्य श्रीशुद्धशक्तिस्वाहामालामन्त्रस्य पादेन्द्रियाधिष्ठायी धावादित्य
ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, तामसईकारभट्टारकपीठस्थित ईश्वरनामकामेश्व-
राङ्गनिलया ईश्वरी नाम ललिता महाभट्टारिका देवता, अज्ञनसिद्धौ
विनियोगः।

End :

महामहास्पन्दायै स्वाहा, महामहाजयायै स्वाहा, महामहाश्रीचक्र-
नगरसामार्थ्यै नमस्ते नमस्ते स्वाहा नमः। ओं श्रीं हीं ऐं॥

No. 7418. शूलिनीकवचः.

SULINIKAVACAH.

Pages, 5. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 147a of the MS. described under No. 5673
wherein it is given as beginning on fol. 146a.

Complete as found in the Akāshabhairavakalpa.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to
enable one to realise the goddess Sulini and become one with her
even in this life.

Beginning :

अथ वक्ष्यामि शूलिन्याः कवचं सर्वसिद्धिदम् ।

समाहितेन मनसा शृणु गुब्बं सनातनम् ॥

* * * *

कवचस्य ऋषिदेव्या मृत्युजय उदाहृतः ।

उन्निकृ छन्दस्तथा देवी देवता स्तवशूलिनी ॥

ओङ्कारवीजमित्युक्तं माया शक्तिस्ततः परम् ।

शूलिन्यात्मेक्यसिद्धयेण विनियोगो वरानने ॥

* * * *

जयेश्वर्यग्रतः पातु पृष्ठे मे विजयेश्वरी ।

अजिता वामतः पार्श्वे दक्षिणे त्वपराजिता ॥

End :

राघ्मव्याहता पातु पूजां सर्ववशङ्करी ।

श्रीदेवी पातु धान्यं मे सर्वदा सर्वसम्पदा ॥

शूलिन्याः कवचेनैव संवृतः पूज्यते इति लौः ।
अनेनैव शरीरेण जीवन्मुक्तो भवेच्छिवे ॥

Colophon:

इति आकाशमैरवकल्पे उमामहेश्वरसंवादे शूलिनीकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7419. शूलिनीदिग्बन्धनमालामन्त्रः.

SÜLINIDIGBANDHANAMALAMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 152b of the MS. described under No. 5873.

Complete as found in the Ākashabhairavakalpa.

The repetition of this Mantra is considered to have the power of protecting one from all possible dangers that may come from the various quarters and of driving off all evil spirits.

Beginning :

अस्य श्रीशूलिनीदुर्गादिग्बन्धनमालामन्त्रस्य वक्षा ऋषिः, गायत्री
छन्दः, श्रीशूलिनी महादुर्गा देवता; दु वीजं, स्वाहा शक्तिः, फट्
कीलकं, मम शूलिनीमहादुर्गाभसादेन अष्टदिग्बन्धने मृतनिग्रहार्थं जपे
विनियोगः । ओऽमो भगवते आसिताङ्गमैरवाय ब्राह्मीमहेश्वरीसहिताय
इन्द्रदिशं बन्ध बन्ध मां रक्ष रक्ष ।

End :

शाकिनीहाकिनीडाकिनीसर्वदुष्टभ्रहोच्चाटय(नि) ओ हां ही हुं फट्
स्वाहा ॥

* * * *
सर्वारिष्टप्रण(षाणि न) इवन्ति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

Colophon :

इति दिग्बन्धनमन्त्रः ।

इति श्रीआकाशमैरवकल्पे शूलिनीदिग्बन्धनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7420. शूलिनीदुर्गापरमेश्वरीमन्त्रः.

SŪLINIDURGĀPARAMEŚVARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 56a of the MS. described under No. 29, wherein it is given as Śulinimantra in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to secure the grace of the goddess Śulinī and to enable one to drive off evil spirits.

Beginning :

अस्य श्रीशूलिनीदुर्गापरमेश्वरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीशूलिनी दुर्गा परमेश्वरी देवता ; दुं चीजं, स्वाहा शक्तिः, श्री-शूलिनीदुर्गाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End :

पवपूजा । मनुः—ज्वल ज्वल शूलिनि दृष्टग्रहं हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7421. शूलिनीदुर्गापरमेश्वरीमन्त्रः.

SŪLINIDURGĀPARAMEŚVARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 103a of the MS. described under No. 5452, wherein it is given as Śulinidurgāmantra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशूलिनीदुर्गापरमेश्वरीमन्त्रस्य दीर्घतम ऋषिः, ककुत छन्दः, श्रीशूलिनी दुर्गा परमेश्वरी देवता ; दुं चीजं, ह्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, शूलिनीप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओं ह्रीं ज्वल ज्वल शूलिनि दृष्टग्रहं हुं फट् स्वाहा ॥

त्रिपत्रकोष्ठेषु विलिस्य शूलिनी ससाध्यनामाङ्गितमध्यवीजकम् ।

रेखाशिरःकलिप्तशूलयुक्तं यन्त्रं महाभूतपिशाचहानिम् ॥

No. 7422. शूलिनीदुर्गापरमेश्वरीमन्त्रः.
SULINIDURGĀPARAMEŚVARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 75a of the MS. described under No. 537, wherein it is given as Śulinimāntra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशूलिनीदुर्गापरमेश्वरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री चन्दः, श्रीशूलिनी दुर्गा परमेश्वरी देवता; दु वीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीशूलिनीदुर्गा । ग. ।

End :

पवृजा । मनुः—

ओ ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रहं हु फट स्वाहा ॥

No. 7423. शूलिनीदुर्गापरमेश्वरीमन्त्रः.
SULINIDURGĀPARAMEŚVARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 2854, wherein it is given as Śulinidurgāmāntra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीशूलिनीदुर्गापरमेश्वरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री चन्दः, श्रीशूलिनी दुर्गा परमेश्वरी देवता; दु वीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीशूलिनीदुर्गापरमेश्वरीप्रसादासिद्धये जपे विनियोगः ।

End :

ओ श्री ही दु ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रहं हु फट स्वाहा ॥
पवृजां कृत्वा ॥

No. 7424. शूलिनीदुर्गामहामन्त्रः.

SŪLINIDURGĀMAHĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 162a of the MS. described under No. 5873, wherein it is given as Śulinisatprayoga mantra.

Complete.

This Mantra is in praise of Śulinidurgā, i.e., Durgā conceived as having a Śala in her hand; and its repetition is considered to be efficacious in bringing about the attainment of the four Puruṣārthaś or principal aims of life.

Beginning :

अस्य श्रीशूलिनीमहामन्त्रस्य वृहत्तम् ऋषिः, उपिष्ठक छन्दः,
श्रीशूलिनी दुर्गा देवता, दुं बीजं, स्वाहा शक्तिः, फट् कीलकं, श्री-
शूलिनीदुर्गाप्रसादेन चतुर्विधपुरुषार्थे जपे विनियोगः ।

End :

वं असृतात्मने असृतनैवेदं परिकल्पयामि । सं सर्वात्मने सर्वो-
पचारान् समर्पयामि ॥

Celophon :

शूलिनी(मन्त्रः) समाप्तः ॥

No. 7425. शूलिनीमन्त्रः.

SŪLINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 4b of the MS. described under No. 5832.

Complete.

Similar to the above.

Considered to be efficacious in causing the accomplishment of one's desires.

Beginning :

आं आं ह्रीं सौः ये क्षीं श्वों ग्लौं श्रीं कों शूलिनिदुर्गाचै
चण्डपराक्रमायै ।

End:

आवेशय आवेशय अमलबरयूं फट् स्वाहा ॥
 इत्येतच्छूलिनीमन्त्रं (न्त) सहस्रं सिद्धिमामुयात् ।
 यं यं वापि स्मरेजपत्वा तत्त्वामोति निश्चितम् ॥

No. 7426. शूलिनीमालामन्त्रः.

SŪLINIMĀLĀMANTRAH.

Pages, 12. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 775, wherein it is given as Sūlinimantra in the list of other works.

Complete.

This Mantra is also in praise of the goddess Sūlini, and its due repetition is considered to have the power to counteract the evils caused by hostile spirits, and to confer on one health, wisdom and prosperity.

Beginning :

फट् ज्वलं स्वाहा, शूलिनि ज्वलं हुं दुष्टग्रहप्रतिक्रियायै स्वाहा,
 ज्वलं ज्वलं दुष्टग्रहशूलिनि फट् हुं ह्रीं ओ नमो मगवति सहस्रकोटि-
 कालानलसमप्रभे पञ्चमुखवाहिनि ज्वालाकेशिनि ।

End:

वास्तुदादिसर्वेन्द्रियप्रेरकं जीवय जीवय चैतन्यं वर्धय वर्धय मोदय
 मोदय सर्वश्वर्यसमृद्धिं कुरु कुरु हीं श्री क्ष्यूं स्वाहा ॥

No. 7427. शूलिनीमालामन्त्रः.

SŪLINIMĀLĀMANTRAH.

Pages, 1. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 152a of the MS. described under No. 5673.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं नमो भगवति सहस्रकोटिकालानलसमप्रभे पञ्चमुखवाहिनि
ज्वालाकेशिनि करालदंष्ट्रवदने कालोरगविभूषितावयवे कालकालरूपिणि ।

End :

सर्वेन्द्रियप्रेरकं जीवय जीवय तस्य चैतन्यं वर्धय वर्धय मोदय मोदय
तस्य देह[म]रोग्यं कुरु कुरु हीं श्री को स्वाहा हुं फट् ॥

No. 7428. शूलिनीमालामन्त्रः.

SULINIMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 149b of the MS. described under No. 5673,
wherein it has been apparently omitted to be included in the list
of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning and End :

आ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारि
जातवेदी ज्वलन्ती ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हीं हीं हं ठ ठ ठ
ठ ठ ठ ठ ज्वालामालिनि हुं फट् स्वाहा । आं क्षौं चित्रायै नमः ॥

No. 7429. शूलिनीहृदयम्.

SULINIHRDAYAM.

Pages, 6. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 149b of the MS. described under No. 5673,
wherein it is wrongly stated in the list of other works as beginning
on fol. 149a.

Complete.

According to the colophon at the end of the work, it forms the
16th Adhyāya of the Śarabhasalvapaksirajakalpa which is a
portion of the Ākashabhairavakalpa of the Mahaśivatantra. This
work is ascribed to Śankara.

The proper repetition of this Mantra which is said to be the
most important of the Mantras relating to Śalini is considered

to have the power to enable a person to know everything, to accomplish all his desires and to become Siva himself.

Beginning :

श्रीपार्वत्युवाच—

सर्वज्ञ भगवन् शम्भो सर्वसूक्ष्मैकबोधक ॥

त्रि(श्री)शूलिन्या महादेव्या हृदयं कथयस्व मे ॥

श्रीशिवः—

साहु कल्याणि वक्ष्यामि सर्वसूक्ष्मैकसूक्ष्मकम् ।

यस्य स्मरणमात्रेण मन्त्रवित्सर्वविद्वते ॥

हृदयं तोदकं ज्ञयं विश्वस्यायतनं मनोः ।

तस्मात्सहृदयो मन्त्रः साक्षाद्वानुभूतिदः ॥

End :

तस्य वीर्यशरीरस्य विश्वातीतस्य मन्त्रिणः ।

विश्वप्रकाशरूपस्य किमसाध्यं सुखात्मनः ॥

इति देशिक(ज्ञ)या परमशूलिनीमनुबीजयोर्हृदयं क्रमात् प्रसरीक्ष्य तत्पारभावयेत् स शिवो भवति स शिवो भवति ॥

Colophon :

इति श्रीमहाशैवतन्त्रे अतिरहस्ये आकाशमैरबकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसंवादे शूलिनी विरचिते शरभसाल्वपक्षिराजकल्पे दुर्गाविश्वापालनविधाने शूलिनीहृदयं नाम षोडशोऽव्यायः ॥

No. 7430. शोषषडक्षरमन्त्रः.

ŚEṢĀṢADAKṢARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 26b of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The repetition of this Mantra, which consists of six syllables, is intended to propitiate the divine serpent, Śeṣa.

Beginning :

ओं शं शेषाय नमः इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीशेषपदक्षरमन्त्रस्य सनत्कुमार ऋषिः, गायत्री छन्दः,
श्रीशेषो देवता, शेषप्रेरणाया शेषप्रीत्यर्थे शेषपदक्षरमन्त्रजपे विनियोगः ।

End :

ओं शं शेषाय नमः ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7431. श्यामलाकवचः.

SYAMALĀKAVACAH.

Pages, 5 Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 175a of the MS. described under No. 5673, wherein it has been omitted to be given in the list of other works; Śyāmalāmātrikānyāsa is therein wrongly stated as beginning on fol. 175a. It begins on fol. 170b and is described under the next number under the name Śyāmalapūrvānganyāsa.

Complete as found in the Mābarāgvāgama.

This Kavacamantra is addressed to the goddess Śyāmala or Mātangi; and its repetition accompanied by due reverence, homage and service to one's Guru is considered to have the power to enable one to become a king and to obtain salvation.

Beginning :

श्रुणु देवि प्रवक्ष्यामि मातञ्जीकवचं परम् ।

गोपनीयं प्रयत्नेन मौनेन जपमाचरेत् ॥

* * * *
ब्रह्मरन्त्रे सदा पायात् श्यामला मन्त्रनायिका ।

ललाटं रक्षतां नित्यं कदम्बेशी सदा मम ॥

End :

तथा तु कवचं देव्यास्सफलं गुरुसेवया ।

इह लोके नृपो भूत्वा पठन्मुक्तो भविष्यति ॥

* * * * *

द्वाद्रुः सुशिष्याय गुरुभक्तिपराय च ।
शिवे रुषे गुरुखाता गुरो रुषे न कथन ॥

Colophon :

इति महार्णवे श्यामलाकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7432. श्यामलापूर्वाङ्गन्यासः.
SYĀMALĀPŪRVĀNGANYĀSAH.

Pages, 10. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 170b of the MS. described under No. 5672, wherein it is given as Śyāmalāmātrkanyāsa and is wrongly stated in the list of other works as beginning on fol. 175a.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while repeating certain Mantras relating to Śyāmalā, as a preliminary to the worship of that goddess.

Beginning :

अकारादिक्षकारान्तन्यासकरणे स्थानानि । आनन्दवृत्तअक्षिश्रुतिना-
सागण्डोष्टदन्तमूर्धन्याशे(र्धास्य)दोःपत्सन्ध्याङ्गुल्यग्रेषु पार्श्वद्वयपृष्ठनाभि-
जठरेषु हहोर्मूलापरगलकक्षहदादिपाणिपादयुगे जठराननयोर्व्यापकमित्यक्ष-
रान् कमश इत्थं युक्तस्थानेषु सविन्दुकान्मातृकावर्णान्विन्यसेदिति बहि-
र्मातृका ।

End :

शोणाङ्गुशोङ्गवलां नौमि वीणावादविनोदिनीम् ।
एवं ध्यात्वा महादेवीं मानसैरुपचारकैः ॥
पूजयित्वा विघ्नेन जप्त्वा मूलं स्वशक्तिः ।
देवै जपं निवेद्याथ गुर्वादीन् प्रणमेदिति ॥

Colophon :

इति पूर्वाङ्गपद्धतिः समाप्ता ॥

No. 7433. श्यामलामन्त्रः.
SYĀMALĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 135b of the MS. described under No. 537.

Complete.

Herein the goddess Syāmala is conceived as a Guru, and the Mantra is addressed to the holy sandals worn by the goddess. It is considered to have the power to enable one to make people become spell-bound and deprived of all physical and mental powers and thus bring them under one's magic control and influence.

Beginning :

अस्य श्रीश्यामलागुरुपादुकामन्त्रस्य मतद्वभगवानृषिः, गायत्री
छन्दः, श्यामलागुरुपादुका देवता; ऐं क्षी सौः इति बीजं, हसक्ष-
मिति शक्तिः, स ह कीलकं, श्यामलागुरुपादुकाप्रीत्यर्थे जपे विनि-
योगः।

End :

सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुमुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु शीघ्रं वशं कुरु
कुरु ऐं ग्लौं ठः ठः ठः हुं फट् ॥

No. 7434. श्रीकण्ठादिमातृकान्यासः.
SRĪKANTHĀDIMĀTRKĀNYĀSAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 115a of the MS. described under No. 673.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while repeating at the same time the Mantra-formulas formed by the combination of the successive letters of the alphabet with certain names denoting Śiva and Sakti.

Beginning :

अस्य श्रीकण्ठादिमातृकान्यासमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः प्राप्तिः,
गायत्री छन्दः, श्रीकण्ठादिमातृका सरस्वती देवता; हलो बीजानि,

स्वराशक्तयः, विन्दवः कीलकं, श्रीकण्ठादिमातृकाप्रसादसिद्धये जपं
विनियोगः ।

End:

हं कुलिशमहालक्ष्मीभ्यां नमः, लं शिवेशब्यापिनीभ्यां नमः, कं
संवर्तकेशमायाभ्यां नमः—इति मातृकाब्यापकं न्यसेत् ॥

Colophon:

इति श्रीकण्ठा(दि)मातृकान्यासः ॥

No. 7435. श्रीकमलासंपुटितमातृकान्यासः.

SRĪKAMALĀSAMPUTITAMĀTRĀKĀNYĀSAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 193a of the MS. described under No. 121,
wherein it is found in Dasavidhamātrākānyāsa 192a given in the list
of other works.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while
repeating at the same time the series of Mantra-formulas obtained
by introducing the syllable श्री before and after each of the success-
ive letters of the alphabet coupled with the word नमः.

Beginning:

अथ लक्ष्मीमातृकान्यासः—

अस्य श्रीकमलासंपुटितमातृकामन्त्रम् भूगुः ऋषिः, गायत्री छन्दः,
श्रीकमलाम्बा देवता, शं बीजं, हं शक्तिः, रेफः कीलकं, श्रीकमला-
मातृकान्यासे विनियोगः ।

End:

श्री अं नमः श्री इत्यादि क्षान्तं न्यसेत् ॥

Colophon:

इति कमलासंपुटितमातृकान्यासः ॥

No. 7436. श्रीकराष्ट्राक्षरमन्त्रः.

SRĪKARĀSTĀKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 9a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The repetition of this eight-syllabled Mantra is considered to have the power to enable one to secure the favour of Lakṣminirāyana.

Beginning :

उत्तिष्ठ श्रीकर स्वाहा ओं इति प्राणायामः १२.

* * *

अस्य श्रीश्रीकराष्ट्राक्षरमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता, श्रीलक्ष्मीनारायणप्रेरणया श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थं श्रीकराष्ट्राक्षरमहामन्त्रजपे विनियोग ।

End :

ओं उत्तिष्ठ श्रीकर स्वाहा ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7437. श्रीचक्रन्यासकवचः.

SRĪCAKRANYĀSAKAVACAH.

Pages, 5. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 104b of the MS. described under No. 673, wherein it is given as Cakranyāsakavaca in the list of other works.

Complete as found in the 33rd Patala of the Kāmeśvaratantra.

The dual repetition of this Mantra, after having conceived one's body to be devoid of all fleshly forms and to be as brilliant as the blazing fire at the time of the universal dissolution, is considered to be efficacious in bringing about joy and the salvation of soul-emancipation.

Beginning :

कैलासशिखरासीनं शिवं पप्रच्छ पार्वती ।

श्रीचक्रन्यासकवचं ब्रह्मे देव शङ्कर ॥

ईश्वर उवाच —

साधु पृष्ठं त्वया देवि लोकानां हितकाम्यया ।
 श्रीचक्रन्यासकवचं प्रस्फुटं कथयामि ते ॥
 शरीरं चिन्तयेदादौ निजश्रीचक्रलूपकम् ।
 त्वगाद्याकारनिर्मुक्तं ज्वलत्कालाभिसज्जिभम् ॥
 द्वादशान्तं महापद्मे शिवशक्तचात्मकं गुरुम् ।
 परं तेजोमयं ध्यायेद्वोगमोक्षवरासये ॥
 गणेशः पातु मे जानुं वामासं क्षेत्रपालकः ।
 दुर्गा तु दक्षिणं जानुं स्कन्धं बटुकभैरवः ॥

* * *

End :

चक्रेश्वरी महादेवी सिद्धमुद्रासमान्विता ।
 आपादमस्तकं पातु श्रीमत्तिपुरभैरवी ॥
 इति श्रीचक्रराजस्य न्यासस्त्रैलोक्यमोहनं(नः) ।
 कथितस्त्वयि वात्सल्याद्रहस्योऽपि वराननेऽ॥

Colophon :

इति कामेश्वरतन्त्रे वहुमहाष्टकप्रस्तारे नित्यायोडशार्णवे श्रीचक्रन्यास-
 कवचं नाम त्रयस्त्रिशः पटलः ॥

No. 7438. श्रीचिदन्वरपञ्चाक्षरीरुद्राम्बिकामहामन्त्रः.
 SRIUIDAMBARAPĀṄCĀKSARIRUDRĀMBIKĀMĀHĀ-
 MANTRAH.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 2854,
 wherein it has been omitted to be included in the list of other
 works.

Complete.

This five-syllabled Mantra is addressed to Śiva and Ambika ;
 and its repetition is believed to have the power to dispel all fears
 of rebirth.

Beginning :

अस्य (श्री) श्रीचिदम्बरपवाक्षरीरुद्राम्बिकामहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्ठृप् छन्दः, चिदम्बरपवाक्षरी रुद्राम्बिका देवता, हीं बीजं, वां शक्तिः, विनियोगः ।

End :

ओं श्री हीं न म वा शि य सर्वेन्द्रियाणि मोहय सर्वसंमोहिनि जन्ममृत्युभयनाशिनि आवेशि(विश) आतिष्ठ आकोश अशब्दकथिताय त्वाहा ॥

No. 7439. श्रीमन्त्रः.

SRIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 323 of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramalika 273a in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Lakshmi; and its repetition followed by certain ceremonial acts is considered to be efficacious in conferring wealth and prosperity on one. It has also the power to bring other people under one's control and influence.

Beginning :

अस्य श्रीश्रीमन्त्रस्य अचगायत्री छन्दः, लक्ष्मीर्देवता ; शं बीजं, हे शक्तिः, रं कीलकं, श्रीमित्यादिष्ठज्ञन्यासः ।

End :

श्री द्वादशलक्ष्मं जपः । दशांशं त्रिमधुरयुक्तं सरोजैर्वा तिलै(लै)-वा विल्वैर्वा सत्समिद्विर्वा कान्ति(भि)र्वा होमं कुर्यात् ।

* * * * *

सच्चैतरुपेतं तण्डुलं सकलवश्यतमम् ॥

No. 7440. श्रीविद्यान्यासः.

ŚRIVIDYĀNYĀSAH.

Pages, 7. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 177b of the MS. described under No. 124.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while repeating the syllables ऐं, सौं, क्लौं as a preliminary to the proper use of the Śrividya-mantra.

Beginning :

तत्रादौ विद्यान्यासः—

अस्य(।) श्रीविद्यायाम्(।) आनन्दभैरव प्राप्तिः, दैवी गायत्री छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, मूलाधारे ऐं बीजाय नमः, पादौ(दे) सौं: शक्तये नमः, हांदे क्लौं कीलकाय नमः, करसम्पुटे श्रीविद्याङ्गत्वेन करशुद्धिन्यासे विनियोगः।

End :

महासौभाग्यजननि महामोक्षप्रदशक्तिसचिदानन्दपरब्रह्मस्वरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यम्बाश्रीपा—इति मूर्धादिपादान्तं त्रिर्बोपकं विन्यस्य ततः क्लीमित्युच्चार्य शक्तयुथापनमुद्रां प्रददर्श्य श्रीमित्यनेन मुचेत् ॥

No. 7441. श्रीविद्यान्यासः.

ŚRIVIDYĀNYĀSAH.

Pages, 16. Lines, 24 on a page.

Begins on fol. 131a of the MS. described under No. 5643.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

कारणात्मस्तं न्यासं दीपादीपमिवोदितम् ।

एवं विन्यस्य देवेशि स्वाभेदेन विचिन्तयेत् ॥

ततश्च करशुद्धयादिन्यासं कुर्यात्समाहितः ।

तत्रादौ विद्यान्यासः—

अस्या: श्रीविद्याया: आनन्दमैरव ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, मूलाधारे एं वीजाय नमः, पादौ(दे) सौः शक्तये नमः, हृषि कीलकाय नमः, करसम्पुटे श्रीविद्याङ्गत्वेन करशुद्धि-न्यासे विनियोगः ।

End :

जगदाकर्षणकरी जगत्कारणरूपिणीम् ।

सर्वमन्त्रमधी नित्या परमानन्दननिदित्ताम् ॥

चालाकमण्डताभासं(न्तां) चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।

पाशाङ्कुशधनुर्बाणान् धारयन्ती शिवां भजे ॥

No. 7442. श्रीविद्यामन्त्रः.

SRIVIDYĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 159a of the MS. described under No. 537.

Incomplete.

On details connected with the repetition of the fifteen-syllabled Śrividyaṁantra addressed to the goddess Tripurasundari, the presiding deity of this Mantra.

Beginning :

हां इति नेत्रमन्त्रेण निरीक्षणं, हः इत्यस्त्रमन्त्रेण सम्प्रोक्षणं, हः इत्यस्त्रमन्त्रेण दर्भेस्ताडनं, मूलमन्त्रेण सम्प्रोक्षणं, तत्रासनं परिस्तीर्य, तत्र पदं विलङ्घ्य, तत्रोपविश्य उत्तिष्ठन्तु—रमे ।

End :

ममोपाचदुरितक्षयद्वागा श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीमुहिश्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवताप्रीत्यर्थं श्रीविद्यापवदशाक्षरीमन्त्रजपं करिष्ये तेजोमयं ध्यात्वा ततो मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा.

No. 7443. श्रीविद्यामालामन्त्रः.

ŚRIVIDYĀMĀLĀMANTRAH.

Pages, 10. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 21 α of the MS. described under No. 6274.

Complete.

This Mantra is in praise of the goddess Lalita who is the presiding deity of this Mantra; and its repetition is believed to have the power to enable one to tide over great calamities.

Beginning :

श्रीविद्यामालामन्त्रस्य वरुणादित्य ऋषिः, गायत्री उन्दः, ललिता देवता, ऐं ह्री श्री ऐं क्षी सौं नमः त्रिपुरसुन्दरि हृदयदेवि शिरोदेवि शिखोदेवि कवचदेवि मन्त्रदेवि अखोदेवि कामेश्वरि भगमालिनि ।

End :

महाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा । सौं क्षी ऐं (श्री) ह्री ऐं ॥

एषा विद्या महासिद्धिदायिनी स्मृतिमात्रतः ।
अग्निवाधामहाक्षोभे राजराज्यस्य विष्णुवे ॥

* * * *

एकवारजपन्त्रेन(पादेव) नित्यपूजाफलं लभेत् ॥

No. 7444. पटस्थलब्रह्मपठक्षरमन्त्रः.

SATSTHALABRAHMASAḌAKṢARAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 48 α of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Āmnāyamantramalīka in the list of other works.

Complete.

The six-syllabled Mantra-formula herein referred to is ओं बाय शि नमः which is held to denote Śiva conceived as the Supreme Brahman. Six parts of Śiva's body are represented by this formula: His face by the letter ओं, His two hands by the letters

वा and य, His body by the letter शि, and His legs by the letters न and मः.

Beginning :

अस्य श्रीषट्स्थलब्रह्मपठक्षरीमहामन्त्रस्य परब्रह्म ऋषिः, शैवगायत्री छन्दः, शिवो देवता, माहेश्वरी शक्तिः, ह्रीं बीजं, ह्रीं कीलकं, मम षट्स्थलब्रह्मपठक्षरीप्रसादसिद्धयर्थं विनियोगः ।

End :

ततः पंशु शाश्वतं स्वं (शान्ते) व्योमातीतं निरदानम् ।
नादविन्दुक्लातीतं ॥ १ ॥ १ ॥ ॥ ॥
अवाच्यात्मस्वरूपाय शिवभावप्रदायिने ।
नमस्सद्गुरुनाथाय षट्स्थलब्रह्ममूर्तये ॥

No. 7445. षट्स्थलब्रह्मपठक्षरमन्त्रः.

SATSTHALABRAHMASADAKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 34a of the MS. described under No. 217, wherein it is given as *Sadaksaranyasa* in the list of other works Complete.

Similar to the above.

Held to be efficacious in bringing about the joy of final beatitude.

Beginning :

अस्य श्रीषट्स्थलब्रह्मपठक्षरीमहामन्त्रस्य देवी गायत्री छन्दः, परमशिवो देवता, ओं बीजं, नमश्शक्तिः, आयेति कीलकं, षट्स्थलब्रह्मनिर्वाणसुखसंपदवाप्त्यर्थं पठक्षरीमन्त्रजपे विनियोगः ।

End :

षट्स्थलब्रह्मरूपिणि पठक्षरीमन्त्रदेवते जननि षट्स्थलमक्षिप्रसादपरमसुखैकप्रदेशे नमस्तुम्यम् ।

चैतन्यं परिपूर्णमेकममलं ज्योतिर्षयं व्यापकं
 तत्पवाक्षरमन्त्रमाद्यममलं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम् ।
 लिङ्गं ब्रह्म सनातनं सुमनसा ध्यातव्यरूपं सदा
 वाह्नाभ्यन्तरसंस्थितं परशिवं प्राणेश्वरं भावयेत् ॥
 अवाच्यात्मस्वरूपाय शिवभावप्रदायिने ।
 नमस्सद्गुरुनाशाय पद्मस्थलब्रह्ममर्तये ॥

No. 7446. षडाम्नायमन्त्रः.

SADĀMNĀYAMANTRAH.

Page, 27. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the M. described under No. 5572.

Incomplete.

A collection of Mantras which are said to be worthy of begin repeated and contemplated upon. The six Āmnāyas are (1) Pūrvāmnāya, (2) Dakṣināmnāya, (3) Pascimāmnāya, (4) Utta-rāmnāya, (5) Urdhvāmnāya, (6) Anuttarāmnāya

Beginning :

नित्यानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति
 विश्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
 एकं नित्यं विमलमचञ्च सर्वधीसाक्षिभूतं
 भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

अथ षडाम्नायः । तत्र पूर्वाम्नायः—

अस्य श्रीशुद्धविद्यामन्त्रस्य कर्मविपाकसदाशिव ऋषिः, देवी
 गायत्री छन्दः, शुद्धविद्या मनोन्मनी देवता; ऐं बीजं, ई शक्तिः, औः
 कीलकं, शुद्धविद्या योगः ।

End :

अं क्षः सौः शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामात्राकलाविद्यारागका-
 लनियतिपुरुषप्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनस्त्वकृच्छ्रोत्रजिह्वाप्राणवाक्याणिपादपा-
 यूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्वाकाशवायुवहिसलिलपृथिव्यात्मकश्रीस्त्वमकाशः

स्फुरति यत्तव रूपमनुत्तरं स्फुरति यत्तव जगन्मयमधिके ।
 उभयमेतदनुभ्वरतां सतामभयदं ॥
 यत्र तेजांसि तेजांसि तमांसि च तमस्फुटम् ।
 तेजांसि च तमांस्येतत् द्वन्द्वज्योतिरनुतरम् ॥

No. 7447. पठान्नायमन्त्रः.

SADAMNĀYAMANTRAH.

Pages, 22 Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 10⁵o of the M.S. described under No. 5593

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ऐ ही श्री हं सशिवस्सो हं स्वरूपनिरूपणहेतवे आनन्दशुकानन्दनाथ-
 स्वगुरुसंविदेव्यम्बाश्री, ऐ ही श्री सो हं हं सदिशवस्स्वच्छन्दप्रकाशानन्दग-
 गनानन्दनाथपरमगुरुसंविदेव्यम्बाश्री, ऐ ही हं हं सदिशवस्सो हं हं
 सस्वात्मारामपञ्चलीनैजसकृष्णानन्दनाथपरमोष्टिगुरुश्री, जो ही हं सस्सो
 हं स्वाहा अमुकानन्दनाथसंविदेव्यम्बाश्री ॥

आदौ शिवो गुरुः प्रोक्तः पश्चाचैव सदाशिवः ।

नमास्यहं गुरुन् भक्त्या पश्चादीशः प्रकीर्तिः ॥

End :

अनुत्तरान्नायस्समाप्तः ॥

नारायणं त(थ)र्मसुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च ।

व्यासं शुक्रं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगनिद्रमधास्य शिष्यम् ॥

श्रीशङ्कराचार्यमधास्य पद्मपादं च हस्तामलके च शिष्यम् ।

तं त्रोटकं वार्त्तिककारमन्यानस्मद्गुरुन् सन्ततमानतोऽस्मि ॥

Colophon :

इति पठान्नायस्समाप्तः ॥

No. 7448. पटाज्ञायमन्त्रः.
SADĀMNĀYAMANTRAH.

Pages, 27. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5560.

Complete.

Same as the above.

No. 7449. पटाज्ञायमन्त्रानुक्रमणिका.
SADĀMNĀYAMANTRĀNUKRAMANIKĀ.

Pages, 8. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 2848.

Complete.

Gives a list of the subordinate Mantras contained in the Sadāmnāyamantra.

Beginning :

गुरुत्रयम्—गुरु-परमगुरु-परमेष्ठिगुरवः । गणपतिः—महागणप-
तिरेकः । पीठत्रयम्—कामगिरिपीठं, पूर्णगिरिपीठं, जालन्धरपीठम् । इति
पूर्वाज्ञायगुरवो मूलाधारस्याः ।

End :

रघुनाथाश्रमानन्दनाथ, सत्यानन्दनाथ—इत्युत्तराज्ञायगुरुन्,
आज्ञायां मनश्चके च पूजयेत् ॥

No. 7450. पोदान्यासः.
SÖDHÄNYÄSAH.

Pages, 7. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 244b of the MS. described under No. 124,
wherein it is given as Ganiśādiśödhänyäsa in the list of other
works.

Complete.

On six different kinds of ceremonial touching of certain
parts of the body while repeating at the same time the appropriate
Mantras relating to Ganesa, the Navagrahas, the 27 Nakshatras, the

Yōginis, the twelve Rāsīs and the three Piṭhas respectively. These six Nyāsas are generally called (1) Gaṇōśa-nyāsa, (2) Grāba-nyāsa, (3) Nakṣatras-nyāsa, (4) Yōgini-nyāsa, (5) Raśi-nyāsa, (6) Piṭha-nyāsa. The observance of these Nyāsas is considered to be a necessary preliminary ceremonial to the repetition of the Śrividya-maṇtra.

Beginning :

अस्य श्रीगणशाक्षिदोषोदान्यासस्य, दक्षिणामूर्तिः भूषि:, पञ्चश्छन्दः,
श्रीमातृका त्रिपुरसुन्दरी देवता, मम उपास्यश्रीविद्याङ्गत्वेन सर्वासेद्वि-
साधने विनियोगः ।

End :

विन्दुरहृष्टरात्मा रविरेतन्मथुनसमरसाकारः ।
कामः कमनीयतया कशः(प्रका)शदहसे(ने)न्दुविग्रहः (?) . ॥
इति कामकलाविद्या देवीचक्रात्मिका सेयम् ।
विदितो येन . . . , भवति महात्रिपुरसुन्दरीरूपः ॥

No. 7451. षोडशाक्षरन्यासः.

SODASĀKSARANYĀSAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 61b of the MS. described under No. 2886.

Complete.

On the ceremonial touching of certain specified parts of the body while repeating at the same time the letters of the sixteen-syllabled Śrividya-maṇtra क ए ई ल ह्री ह स क ह ल ह्री स क
ल ह्री श्री.

Beginning :

ऐ ह्री श्री अं मध्यमा ३ औं अनामिका ३ सीः कनिष्ठि ३
अं अङ्गुष्ठा ३ अं तर्जनी ३ सौः करतल इति करशुद्धिन्यासः ।

End:

शिरोललाटमूर्खहृदयस्तनद्वयकुक्ति [द्वय] नाभि [द्वय] मूलाधारजानुद्वयजं
हृद्वयपादद्वयमूलाधारस्वाविष्टानमणिपूरानाहतविशुद्धाज्ञाविन्द्रधर्विन्दुना-
दवस्थारन्त्रेषु पञ्चप्रणवपूर्वके नमोऽन्तेन न्यसेत् ॥

Colophon:

इति पोडशाक्षरमन्त्रः ॥

No. 7452. पोडशाक्षरमन्त्रः.

SODASAKSHARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 24a of the MS. described under No. 775, wherein it is given as *Śrividyaśodasākṣarīmantra* in the list of other works

Complete.

The repetition of this Mantra-formula consisting of 16 syllables, as coupled with the Balamantra-formula, etc., is considered to have the power to propitiate Tripurasundari,

Beginning:

अस्य श्रीविद्यापोडशाक्षरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्त्यीनन्दभैरवादय ऋ-
षयः, गायत्र्यादीनि छन्दासि, महाराजराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी परा
शक्तिर्देवता; श्री बीजं, ह्री शक्तिः, ह्री कीलकं, नाभिगुद्धोदरेषु क्रमेण
विन्यसेत् । तत्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End:

ओं श्री ह्री ह्री एं सौः ओं ह्री श्री क ए ई ल ह्री ह स
क ह ल ह्री स क ल ह्री श्री ह्री ओं सौः एं ह्री ह्री
(श्री)ओं ॥

No. 7453. षोडशाक्षरमन्त्रः.
SÖDAŚĀKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 172a of the MS. described under No. 124, wherein it is given as Lalitaśōdāksaramaṇtra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीमहाशक्तिराजराजेश्वरीषोडशाक्षरीमहामन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, पक्षिः छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी महाशक्तिर्देवता; एं क ए ई ल हीं बीजः, सौः स क ल हीं शक्तिः, क्ली ह स क ह ल हीं कीलकं, मम श्रीमहात्रिपुर योगः ।

End :

मनुः—

श्री हीं क्ली एं सौः ओं श्री हीं क ए ई ल हीं ह स क ह ल हीं स क ल हीं सौः एं क्ली हीं श्री सौः श्री ॥

No. 7454. षोडशाक्षरमन्त्रः.

SÖDAŚĀKSARAMANTRAH.

Page, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 547.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीषोडशाक्षरीमहात्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्रस्य नित्यानन्दभैरव ऋषिः, तुरीयगायत्री छन्दः, श्रीषोडशाक्षरी श्रीविद्या देवता, ओं बीजः, श्री शक्तिः, श्वं कीलकं, श्रीविद्याश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्धचर्ये जेप विनियोगः ।

End :

क ए ई ल हीं ह स क ह ल हीं स क ल हीं सौः एं क्ली हीं श्री पुनर्न्यासः ॥

No. 7455. पौडशाहर्यादिमूलमन्त्रः.
SODASAKSHARYADIMULAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 194^b of the MS. described under No. 124.

Complete.

Contains the bare formulas representing the Sodasakshari, Pañcadasakshari, Annapurna, Vāgīśvari, Lakṣmyekāksari, Kāmadhenu, Kalyanagauri, Rājasyāmala, Rājamātangi and Śukasyāmala Mantras.

Beginning :

पौडशासरी—

श्री ही की ऐ सौः जो ही श्री क ए ई ल ही ह स क ह ल ही
 स क ल ही सौः ऐ की ही श्री सौः श्री ।

End:

शुकश्यामला—

ऐ नम उच्छिष्टचण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा ॥

No. 7456. संक्षेभिणीमन्त्रः.

SAMKSHOBHINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 45^a of the MS. described under No. 2886, wherein it is found in the Ākāśabhairavakalpa 38^a in the list of other works.

Complete as found in the 50th Adhyāya of the Ākāśabhairava-kalpa.

The repetition of this Mantra which is addressed to the goddess Samkṣobhīṇī who is held to be a manifestation of Sakti is considered to have the power to enable one to cause bewilderment and confusion to one's enemies.

Beginning :

संक्षेभिण्या: अगस्त्यः, पक्षिश्चन्दः, सर्वसंक्षेभिणी, षं वी, माया
 श, सर्वसंक्षेभणार्थे ।

End :

तस्करश्चत्रुपीडा च जन्तुभूतादिपूजि(पीडि)तम् ।

स्वग्रहकालेवि(उपि) नैव स्यात् वरेण्यो नात्र संशयः ॥

Colophon :

इति आकाशभैरवकल्पे पञ्चाशोऽध्यायः ॥

No. 7457. संभोगमहादुर्गामन्त्रः

SAṂBHŪGAMAHĀDURGĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 47b of the MS. described under No. 5445

Complete.

The repetition of this Mantra which is addressed to Mahadurga is considered to have the power to bring happiness to the worshipper.

Beginning :

अस्य श्रीसंभोगमहादुर्गामन्तर्स्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, सम्भोगमहादुर्गा देवता, मम तत्प्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

मन्त्रस्तु—

ओं आं कूँ कां कौं ॐ कूँ कों कूँ आं ओं, लक्ष्मजपपुनश्चरणम् ।
ओं ह्रीं कूँ भगमालिनि भगं मे देहि कूँ ह्रीं ओं ।

जपं च लक्ष्म निशि चैव कार्यं समन्त्रसिद्धिस्वरसेन संभवेत् । ओं
ह्रीं आं सौं कौं ह्रीं स्वाहा ॥

रात्रौ मन्त्रसहस्रन्तु जपेदीशानादिच्छुर्यः ॥

No. 7458. संमोहनगोपालमन्त्रः.
SAMMOHANAGOPALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page

Begins on fol. 55b of the MS. described under No. 5885
Complete.

This Mantra is addressed to Kṛṣṇa conceived as a charming cowherd.

Beginning :

अस्य श्रीसंमोहनगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीसंमोहनगोपालो देवता, आं बीजं, कौं शक्तिः, ब्लूं कीलकं, श्री-
संमोहनगोपालप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

आं कौं ब्लूं कृष्णाय रुक्मिणीवल्लभाय स्वाहा ॥

No. 7459. संमोहनसुन्दरीमन्त्रः.
SAMMOHANASUNDARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 278b of the MS. described under No. 5477,
wherein it is found in the Mantramālikā 273a in the list of other
works.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to Sammō-
hanasundari, is considered to have the power to enable one to
bring all people under one's influence and control.

Beginning :

अस्य श्रीसंमोहनसुन्दरीमन्त्रस्य व्रक्षा ऋषिः, गायत्री छन्दः, सं-
मोहनसुन्दरी देवता; ह्रीं बीजं, नमः शक्तिः, मम सर्वजनवद्यार्थं
विनियोगः ।

End :

मन्त्रः—

ओं ह्रीं श्रीं सर्वजनमोहिनि ह्रीं नमस्वाहा ॥

Colophon :

इति संमोहनी ॥

No. 7460. संमोहनसुन्दरीमन्त्रः.
SAMMOHANASUNDARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 26 on a page.

Begins on fol. 236^a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Maṇtramālikā in the list of other works given therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसंमोहनसुन्दरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री उन्दृः,
संमोहनसुन्दरी देवता, हीं बीजं, नमशशक्तिः, मम सर्वजनवश्यार्थे
विनियोगः ।

End:

मन्त्रः—

हीं मुखकमलवासिनि एं की ही श्री सर्वजनसंमोहिनि हीं नमः ॥

No. 7461. संवित्त्रिशूलिनीमन्त्रः.
SAMVITTRISULINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 90^b of the MS. described under No. 553d

Complete.

Same as the above.

No. 7462. संवित्त्रिशूलिनीमन्त्रः.
SAMVITTRISULINIMANTRAH.

Page, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 223^a of the MS. described under No. 587.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to Amṛtasidhīśvarī, who is considered to be a manifestation of Śakti and is probably the presiding deity of the intoxicating Indian hemp, is supposed to have the power to enable one to obtain happiness in this world and salvation after death.

Beginning :

अस्य श्रीसंवित्तिर्नीशूलिनीमन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, अमृत-
विराट् छन्दः, अमृतसिद्धेश्वरी देवता, ऐं बीजं, ह्री शक्तिः, श्री की-
लकं, भोगमोक्षार्थे जपे विनियोगः ।

End :

ऐ क ए ई ल ह्री क्ली ह स क ह ल ह्री सौः स क ल ह्री ।
विश्वतेजसप्राज्ञपुरुषाय मनोवागाजितं कर्म आत्मने ब्रह्मणे जुहोमीति । . .

अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां
जुहोमि स्वाहा । श्रीनाथादिगुरुनयं गुरोर्मण्डलम् ॥

* * * * *

अठिपिशिनपुरन्त्रीमोगपूजारतोऽहं
बहुविष्वकुलमार्गद्रव्यसंभावितोऽहम् ।
पशुजनविमुखोऽहं भैरवीमाश्रितोऽहं
गुरुचरणरतोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥

No. 7463. संवित्परमेश्वरीमन्त्रः.

SAMVITPARAMESHVARIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 70b of the MS. described under No. 5873.

Complete.

Similar to the above.

Held to be efficacious in also defeating the aims of one's
enemies.

Beginning :

अस्य श्रीसंवित्परमेश्वरीमन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, अमृतविराट्
छन्दः, श्रीसंवित्परमेश्वरी देवता; ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्ली कीलकं,
मम संवित्परमेश्वरीप्रसादसिद्धार्थे जपे विनियोगः ।

End :

ऐ क्ली सौः सर्वतत्त्वं महाकारणदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा ।
महिंभाङ्गि महाभाङ्गि भवभर्जिविमोचनि ।
मम शत्रुमनोभद्रं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा ॥

* * *

मात्राभिर्दशपोडशस्वररुतं ज्योतिर्विशुद्धात्मकं
हंक्षेत्यक्षरयुग्मपत्रकमलं मुक्ताभमाज्ञापुरम् ।
तस्मादूर्ध्वमुखं सदाशिवमयं पद्मं सहस्रचतुर्दं
नित्यानन्दमयं सदा शिवमयं हं सं सदा भावये ॥

No. 7464. संवित्सेवनामन्त्रः

SAMVITSEVANAMANTRAH.

Pages. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 673, wherein it is found in the Sañjamāyamantra 1a in the list of other works. Complete.

The use of the intoxicating Indian hemp followed by the repetition of this Mantra is considered to have the power to enable one to become inspired with the spiritual enlightenment needed for realizing the identity of one's self with the supreme Brahman.

Beginning :

अस्य श्रीसंवित्सेवनामन्त्रस्य आनन्दैरव ऋषिः, अमृतविराट्
छन्दः, कुरुकुलाशिनी महामैरवी देवता; ऐ वीजं, सौः शक्तिः, क्ली
कीलकं, मम संवित्सेवने विनिवोगः ।

End :

ऐं सिद्धमौलि सम्यग्मूर्ति कुरु कुरु सम्य(संवि)दूषधारिण मां बोधय
बोधय स्वाहा ।
अहमास्मि ब्रह्माहमास्मि; अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा—इति
मन्त्रेण संवित्सेवनं कुर्यात् ॥

No. 7465. संवित्सेवनामन्त्रः.

SAMVITSEVANAMANTRAH

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 144 α of the MS. described under No. 673, wherein it is given as Samviddēvimantra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसंवित्सेवनामन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, अमृतविराट् छन्दः, कुरुकुलाशिनी महाभैरवी देवता; ऐं वीजं, कीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम संवित्सेवने जपे विनियोगः ।

End :

ऐं सिद्धमौलिश्रिया देवि ज्ञानबोधप्रदोधनि । राजत्रजवशीकरिणि कालकण्ठि त्रिशूलिनि । ऐं सिद्धमौलि सम्यग्भूतिं कुरु कुरु सम्यग्बू(संविद्)-पवारिणि मां बोधय बोधय स्वाहा—इति त्रिवारं गुरुन् सन्तर्ज्य शेषं स्वीकृत्य (कुर्यात्) ॥

No. 7466. संविन्मन्त्रः.

SAMVINMANTRAH

Pages, 3. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 257 α of the MS. described under No. 424, wherein it is given as Samvicoetulini mantra in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to the hemp plant which is itself held to represent the goddess Sūlini.

Beginning :

अस्य श्रीसमिधृ(मंवि)न्महामन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, समि(संवि)-च(त्स्व)रूपिणी शूलिनी देवता; ऐं वीजं, कीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम समिदे(संविद्दे)विप्र - गः ।

End:

शत्रुक्षयं चक्षुद्रां ज्ञानसुद्रात्मचेधिनीम् ।
सन्धानयोनिसुद्राश्च ऐश्वर्य वेनुसुद्रयोः ॥
त्रेतायां शोणितप्रभोश्यावर्णकलयुगेमां(?) जुहोमि स्वाहा ॥ ऋषस्य
चरमासृतम् ॥

No. 7467. संहारभैरवमन्त्रः.

SAMĀHĀRABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 2373.

Complete.

This Mantra is addressed to Bhairava as engaged in the act of destruction.

Beginning:

अस्य श्रीसंहारभैरवमहामन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, गायत्री छन्दः,
आदिनाथभैरवो देवता; क्षो चीजं, सी शक्तिः, क्षू कीलकं, संहार-
भैरवप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End:

ओ ह्री क्षं क्षेत्रपालाय नमः । लक्षजपेन सिद्धिर्भवति ॥

No. 7468. संहारभैरवमन्त्रः.

SAMĀHĀRABHAIRAVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 365.

Complete.

Same as the above

No. 7469. सङ्गीतमातङ्गीमन्त्रः.

SAṄGITAMĀTĀNGIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 5673,
wherein it is found in Āmnāyamantramālikā 1a in the list of
other works.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to Mataṅgi, is considered to have the power to enable one to become well-versed in the art of music.

Beginning :

अस्य श्रीसङ्गीतमातङ्गीमहामन्त्रस्य नारदभगवान् ऋषिः, लिष्टुप छन्दः, श्रीसङ्गीतमातङ्गी देवता; ओं वीजं, स्वाहा शक्तिः, ओं कीलकं, मम सकलसङ्गीतविद्यारद(त्व)र्थे श्रीसङ्गीतमातङ्गीप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओं नमो भगवति विं वीणायै मम सङ्गीतविद्यां प्रबोधय प्रबोधय स्वाहा । श्रीसङ्गीतमातङ्गीश्च ॥

No. 7470. सङ्गीतविद्यामन्त्रः.

SANGITAVIDYAMANTRAH.

Page, 1. Line, 4 on a page.

Begins on fol. 29a of the MS. described under No. 2848, wherein it is found in the Āmnayamantramalikā 16a. For Pārvamīyamantramalikā 16a in the list of other works therein given, read Āmnayamantramalikā 16a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning and End :

कामनानुगुणगानकल्पनाकल्पशिल्पतरुणीपुरस्सरा(म्) ।
वैष्णुकीस्तनटीविद्यारिणी वल्की मनसि भावयाम्यहम् ॥
एं वीणायै मम सङ्गीतविद्यां प्रयच्छ स्वाहा ॥

No. 7471. सन्तानगोपालमन्त्रः.

SANTĀNAGOPĀLAMANTRAH.

Page, 1. Line, 5 on a page.

Begins on fol. 145a of the MS. described under No. 673.

Complete.

The Mantra described under No. 5970 is the same as that given here.

The preliminary details alone slightly differ.

Beginning :

अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य दूर्वास ऋषिः, अनुष्टुप् छ-
न्दः, मम पुत्रप्रदश्रीगोपालरूप्णो देवता, मम सुपुत्रावाप्त्यर्थे विनि-
योगः ।

End :

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।

देहि मे तनयं देव त्वामहं शरणं गतः ॥

नित्यमष्टशतं जप्त्वा पुत्रमासिर्भविष्यति ।

No. 7472. सन्तानगोपालमन्त्रः.

SANTĀNAGOPĀLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 21b of the MS. described under No. 2886.

Complete.

The Mantra here given is the same as in the above; the preliminary details alone are somewhat different.

Beginning :

अस्य श्रीसन्तानगोपालमहामन्त्रस्य नारदो भगवानृषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, देवकीसुतेति बीजं, गोविन्देति शक्तिः, वासुदेवेति कीलकं,
सन्तानगोपालप्रसादासिद्धर्थे जपे विनियोगः ।

End :

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

No. 7473. सन्तानगोपालमन्त्रः.
SANTĀNAGOPĀLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 39a of the MS. described under No. 3056.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसन्तानगोपालमहामन्त्रस्य नारदभगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीसन्तानगोपालश्रीकृष्णो देवता ; क्षीं वीजं, स्वाहा शक्तिः, ओं
कीलकं, सन्तानगोपालश्रीत्वर्थे जपे विनियोगः ।

End :

मन्त्रः—

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

No. 7474. सन्तानगोपालमन्त्रः.
SANTĀNAGOPĀLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 52b of the MS. described under No. 5885,
wherein it is given as Santanapradagopalamantra.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसन्तानप्रदगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
सन्तानप्रदगोपालो देवता, देवकीसुत गोविन्देति वीजं, वासुदेव जगत्पते
इति शक्तिः, देहि मे तनयं कृष्ण इति कीलकं, सन्तानप्रदगोपाल-
श्रीत्वर्थे जपे विनियोगः ।

End :

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

No. 7475. सन्तानगोपालमन्त्रः.

SANTĀNAGOPĀLAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 35a of the MS. described under No. 5818.

Complete.

Similar to the above.

How the various letters of this Mantra are to be inscribed on the consecrated metallic plate is mentioned at the end.

Beginning :

एवङ्गुणविशेषणविशिष्टा(यो)शुभतिश्चौ अस्माकं सहकुदुम्बानां क्षेम-
स्थैर्यविजयाव्युरारोग्यस्थैर्यमिवृद्धच्यै.
सत्सन्तानसौमाग्यसिद्ध्यर्थं सन्तानगोपालमहामन्त्रजपे करिष्ये —

अस्य श्रीसन्तानगोपालमहामन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् उन्द्रः,
श्रीसन्तानगोपालकृष्णपरमात्मा देवता; क्षीं वीजं, स्वाहा शक्तिः, श्री
कीलकं, मम सन्तानगोपालप्रसादासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

End :

ओं क्षीं ह्रीं श्री देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

वसुदले मूलमन्त्रं चतुर्सङ्ख्यया लिखेत्। शिष्टमेकदले। भूष-
रेषु अकरादिक्षकारान्तं लिखेत्। दिक्पालकवीजं भूषुरस्याष्टकोणे
लिखेत् ॥

Colophon :

इति सन्तानगोपालयन्त्रः ॥

No. 7476. सन्तानगोपालमन्त्रः.

SANTĀNAGOPĀLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 2854,
wherein it has been apparently omitted to be included in the list
of other works given therein.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीसन्तानगोपालकृष्णो देवता, ह्रीं बीजं, श्री शक्तिः, देवकीसुत इति
कीलकं, सन्तानगोपालप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओं ह्रीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

No. 7477. सन्तानगोपालमन्त्रः

SANTĀNAGOPĀLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 43a of the MS. described under No. 5858.

Complete,

Similar to the above.

Herein the Mantra in praise of Nrsimha, which is in the Anuṣṭup metre, is enjoined to be repeated after the repetition of the Santānagopālamantra.

Beginning :

अस्य श्रीसन्तानगोपालमहामन्त्रस्य नारदभगवानृषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, परमात्मा श्रीसन्तानगोपालो देवता ; ह्रीं बीजं गोविन्देति शक्तिः,
वासुदेवेति कीलकं, मम पुत्रसन्तानार्थे जपे विनियोगः ।

End :

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणङ्गतः ॥ मनुः--

ओं ह्रीं स्वाहा ॥

अनुष्टुप्मन्त्रराजस्य(जान्ते) नारासिंहं स्मरेत्ततः ।

उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलतरं सर्वतोमुखम् ॥

तुर्सिंहं भीषणं भद्रं मृत्युं मृत्योन्मात्यहम् ॥
त्रिकालं जपतां सन्तानसिद्धिः ॥

Colophon :

इति सन्तानगोपालमन्त्रः ॥

No. 7478. सन्ध्यामन्त्रः.

SANDHYĀMANTRAH.

Pages, 32. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5660.

Complete.

This is the daily prayer to be offered by the followers of the Yajurveda three times a day, viz., in the morning, at noon and in the evening.

Beginning :

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यस्त्वरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाशाभ्यन्तरशशुचिः ॥
केशवाय त्वाहा, नारायणाय त्वाहा, माधवाय त्वाहा । गोविन्दाय
नमः, विष्णवे नमः, मधुसूदनाय नमः, त्रिविक्रमाय नमः ।
पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः, कूर्मो देवता, सुतलं छन्दः, आसने
विनियोगः । प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, परमात्मा देवता, देवी गायत्री
छन्दः, प्राणायामे विनियोगः ।

End :

सर्वो ता विष्ण्य शिथिरेव देवा अथा ते स्याम बरुण मियासः ।
ओं नमः प्रतीच्यै दिशे याश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्येताभ्यश्च नमो
नमः ॥

Colophon :

इति त्रिकालसन्ध्या समाप्ता ॥

No. 7479. सन्ध्यामन्त्रः.

SANDHYĀMANTRAH.

Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 64^a of the MS. described under No. 5660.

Incomplete.

Similar to the above. This form of the prayer is intended for Śaivas.

Beginning:

पृथिव्या मेरोः पृष्ठ ऋषिः, कूर्मे देवता, सुतलं छन्दः, आसने
विनियोगः ।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यस्त्स्मरेत् गिरिजाधीशं स बालाभ्यन्तरशुचिः ॥

केशव, नारायण, माधव, गोविन्द, विष्णु, मधुसूदन, विविकम,
वामन, श्रीधर, हृषीकेश, पद्मनाभ, दामोदर, सङ्खर्ण, वासुदेव,
प्रद्युम्न, अनिरुद्ध ।

End:

पूतं पवित्रेणैवाज्यम् । आपशुभ्यन्तु मैनसः । ओं भूर्सुवसुवः ।
तत्सवितुर्वरेण्यं भग्नो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्.

No. 7480. सन्ध्यामन्त्रः.

SANDHYĀMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 83^a of the MS. described under No. 217,
wherein it is given as Sandhyākramah in the list of other works.

Incomplete.

Same as the above.

No. 7481. सन्ध्यावन्दनमन्त्रः.

SANDHYĀVANDANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 27^b of the MS. described under No. 2886.

Complete.

This prayer is generally offered by the Śaktas. Instead of Vedic passages they use Dēvimantras in their prayers; hence it is called Tantra-sandhyāvandana.

Beginning :

अस्य श्रीसन्ध्यावन्दनमन्त्रस्य सान्दीपिनिभगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सन्ध्या देवता; शोभनवक्त्रं मिति बीजं, नीलश्रीवायेति शक्तिः, वरदाभयहस्तान्तामिति कीलकं, समस्तपापक्षयार्थं वन्दने विनियोगः ।

End :

प्रातसन्ध्ये परानन्दे परब्रह्मात्मिके शिवे ।

वन्दे त्वां च महाबाले गायत्री पाहि मां सदा ॥

Colophon :

इति वन्दनविधिः ॥

No. 7482. सन्ध्यावन्दनमन्त्रः.

SANDHYĀVANDANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 2886.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसन्ध्यावन्दनमन्त्रस्य सान्दीपिनिभगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता; शोभनवर्णं कीलकं, नीलश्रीवायेति शक्तिः, मोक्षार्थं जपे विनियोगः ।

End :

पाहि पाहि महादेवि पातकादुपपातकात् ।

अपिकर्ता पिपासाच पाहि पाहीति मां सदा ॥

Colophon :

इति विश्वामित्रकल्पे ॥

No. 7483. सरस्वतीदेवीमन्त्रः.
SARASVATIDEVIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 36 of the MS. described under No. 6548, wherein it is given as Sarasvatimantra in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Sarasvati; and its repetition is considered to have the power to enable one to become a learned person and a poet.

Beginning :

अस्य श्रीसरस्वतीदेवीमहामध्यस्य ब्रह्मा कृषिः, गायत्री छन्दः,
श्रीसरस्वती देवी देवता; सं वीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीसरस्वतीदेवीप्रसाद-
सिद्धयर्थे सारस्वतार्थं सर्वबोधनार्थं च विनियोगः ।

End :

नवनलिननिरुद्धा वल्लभा पद्मजस्य द्युतिविहसितचन्द्रोदामकान्तिः प्रसन्ना ।
विहरतु मम चित्ते सर्वबोधप्रदात्री वितरतु च कवित्वं सर्वलोकप्रसिद्धम् ॥

मन्त्रः—

ओं सं सरस्वति स्वाहा ॥

No. 7484. सरस्वतीमन्त्रः.

SARASVATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 102b of the MS. described under No. 5568.

Complete.

This Mantra is also addressed to Sarasvati; and its repetition is considered to have the power to enable one to bring people under one's control and influence.

Beginning and End:

पुस्तकजपटहस्ते वरदामयचिह्नचारवाहुलते ।
 कर्पूरामलदेहे वागीश्वरि शोधयतु(याशु) मम चेतः ॥
 ओं नमो भगवति वागीश्वारं सकलराजवशीकरणि सत्त्व(र्व)स्त्रीपुरुष-
 वशीकरणि छी ही श्री स्वाहा ॥

No. 7485. सर्वकामदेवमनोहरामन्त्रः.

SARVAKĀMADĒVAMANŌHARĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page. •

Begins on fol. 252a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā 229a in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to a certain goddess named Sarvakāmadēvamanōhara, (one who bestows all desires and is charmingly beautiful even to the gods) is considered to have the power to enable one to obtain wealth, which must however be spent away if one wants to retain the favour of the goddess.

Beginning and End:

मन्त्रः—

ओं श्री सर्वकाम(दे)देवमनोहरे स्वाहा ।
 नदीतरे शुभे देशे चन्दनेन सुमण्डलम् ॥
 विधाय पूजयेदेवी ततो मद्रायुतं जपेत् ।
 त्रिसप्ताहं जपेदेवं प्रसन्ना वितरेत्सदा ॥
 दीनाराणां सहस्रैकं व्ययं कुर्याद्दिने दिने ।
 विना व्ययेन सा कुद्धा न ददाति कदाचन ॥

No. 7486. सर्वकामदेवमनोहरामन्त्रः.

SARVAKĀMADÉVAMANOHARĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 99^a of the MS. described under No. 5586, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7487. सर्वकामदेवमनोहरामन्त्रः.

SARVAKĀMADÉVAMANOHARĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 298^b of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramalika 273 in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओ ह्रीं सर्वकाम(दे)देवमनोहरे स्वाहा ।

End :

वीणारामां (दीनारणां) सहस्रैकं व्ययं कुर्यादिने दिने ।
विना व्ययेन सा कुद्धा न ददाति कदाचन ॥

No. 7488. सर्वजनवशीकरणमन्त्रः.

SARVAJANA VAŚIKARAÑAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 14^a of the MS. described under No. 6045, wherein it has been apparently omitted to be included in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Lakṣmi, probably conceived as a manifestation of Śakti; and its repetition is considered to be efficacious in bringing people under one's control and influence.

Beginning :

ओं एं श्री हीङ्गारि महालक्ष्मि मौकिकालक्ष्मारिणि परमानन्दमा-
नसे सर्वमोहनवशीकरणि ।

End :

मम श्री प्रवेशय प्रवेशय मम प्रभुवदयं कुरु कुरु स्वाहा ॥

No. 7489. सांदीपिपुत्रप्रदगोपालमन्त्रः.

SĀNDĪPIPU TRAPRADAGOPĀLAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 49b of the MS. described under No. 5885.

Complete.

This Mantra is intended to propitiate Kṛṣṇa as he restored back
to the sage Sāndīpi his son who had got drowned in the ocean.

Beginning :

अस्य श्रीसांदीपिपुत्रप्रदगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, श्रीसांदीपिपुत्रप्रदायकगोपालो देवता, ओं बीजं, श्री शक्तिः, कों
कीलकं, सांदीपिपुत्रप्रदायकगोपालप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं श्री कों रुण्णाय देवकीगर्भसंभूताय ह्रीं वं स्वाहा ॥

No. 7490. साम्बदक्षिणामूर्तिमन्त्रः.

SĀMBADAKṢIṄĀMŪRTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 135b of the MS. described under No. 537.

Complete.

This Mantra is intended to propitiate Dakṣiṇāmūrti as
associated with Ambā.

Beginning :

अस्य श्रीसाम्बदक्षिणामूर्तिमहामन्त्रस्य आनन्दवामदेव ऋषिः,
अमूर्तविराट् छन्दः, श्रीसाम्बदक्षिणामूर्तिर्देवता; ओं एं बीजं, नमः क्षीं

शक्तिः, शिवाय सौः कीलकं, श्रीसाम्बद्धिणामूर्तिप्रसादसिद्धर्थे जपे
विनियोगः ।

End :

पबोपचारैस्संपूज्य, ओं एं नमः क्ली शिवाय सौः ॥

No. 7491. साम्बद्धिणामूर्तिमन्त्रः.

SAMBADAKSINAMURTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 309a of the MS. described under No. 5477,
wherein it is found in the Mantramalika 273 in the list of other
works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसाम्बद्धिणामूर्तिमन्त्रस्य आनन्दवामदेव ऋषिः, मोग-
पद्धिशङ्कन्दः, शिवाय सौः कीलकं, साम्बद्धिणामूर्तिप्रतीत्वर्थे जपे विनि-
योगः ।

End :

ओं एं नमः क्ली शिवाय सौः । पुनश्चरणं लक्ष्म् । दशांशं
होमः । इति ॥

No. 7492. साम्बद्धिणामूर्तिमन्त्रः.

SAMBADAKSINAMURTIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 252b of the MS. described under No. 424.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसाम्बद्धिणामूर्तिमहामन्त्रस्य आनन्दवामदेव ऋषिः,
पद्धिशङ्कन्दः, श्रीसाम्बद्धिणामूर्तिर्देवता; ओं एं बीजं, नमः शक्तिः,

शिवाय सौः कीलकं, श्रीसाम्बद्धिणामूर्तिप्रसादासिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

प्रयानम्—

वामोरोरुपरि स्थितां गिरिसुतामन्योऽन्यमालिङ्गितां
इयामामुत्पलधारणी शशिनिभं चालोकयन्ती शिवम् ।
आलिङ्गेन करेण पुस्तकमथो कुम्भं सुष्वापूरितं
मुद्रां ज्ञानमयी दधानमपरां मुक्ताक्षमालां भजे ॥

मनुः ॥

No. 7493. साम्बद्धिणामूर्तिमन्त्रः.

SĀMBADAKṢINĀMŪRTIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 5928.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसाम्बद्धिणामूर्तिमहामङ्गस्य शुक्र ऋषिः, विराट छन्दः,
साम्बद्धिणामूर्तिः परमात्मा देवता; बीबं बीबं, क्ली नमश्शक्तिः;
शिवाय सौः कीलकं, श्रीदक्षिणामूर्तिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओ ए क्ली सौः नमश्शिवाय पञ्चपूजां कुर्यात् । श्रीसाम्बद्धिणामूर्तेः
पादुकां पूजयामि ॥

No. 7494. सारस्वतप्रदगोपालमन्त्रः.

SĀRASVATAPRADAGOPĀLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 53a of the MS. described under No. 5885.
Complete.

This Mantra is considered to have the power to please Kṛṣṇa conceived as the bestower of learning and knowledge.

Beginning :

अस्य श्रीसारस्वतप्रदगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सारस्वतप्रदगोपालो देवता, ऐं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ओं कीलकं, सारस्वतप्रदगोपालश्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥

No. 7495. सालग्राममन्त्रः.

SĀLAGRĀMAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 33a of the MS. described under No. 292.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to secure the favour of Rāma conceived as residing in Sālagramas and thereby to enable one to accomplish one's desires and to remove all difficulties and troubles.

Beginning :

अस्य श्रीसालग्राममन्त्रस्य श्रीवेदव्यासभगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सालग्रामवासिश्रीरामो देवता; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, सालग्रामवासिश्रीरामश्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं नमो भगवते विष्णवे सालग्रामनिवासिने सर्वाभीष्टफलप्रदाय सकलदुरितनिवारिणे सालग्रामाय स्वाहा ॥

No. 7496. सावित्राष्टाक्षरमन्त्रः.

SĀVITRĀṢṬĀKṢARAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 64b of the MS. described under No. 5885, wherein it is given as Sāvitrāṣṭākṣari.

Complete.

This Mantra consisting of 8 syllables is addressed to the Sun-god ; and its repetition is considered to be efficacious in the curing of various kinds of diseases, in the accomplishment of one's desires and in the attainment of salvation.

Beginning :

पूर्वोक्तएवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ मम सकलपापक्षयार्थे-
मैकाहिकद्याहिकन्याहिकचातुराहिकादिसकलरोगशान्त्यर्थे समस्तमङ्गला-
वाप्त्यर्थे सावित्राष्टाक्षरीमन्त्रजपं करिष्ये—अस्य श्रीसावित्राष्टाक्षरीमन्त्रस्य
भार्गव ऋषिः, गायत्री छन्दः, आदित्यो देवता ; कं बीजं, यं शक्तिः,
दं कीलकं, मम इष्टार्थसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं श्री ह्री क्षी वृणिस्सूर्य आदित्यो ।

शुद्धात्मा रविजहश्रीमान् तस्माद्गोगाद्विमुक्तवान् ।

अष्टाविंशतिकुष्ठानि महारोगाणि यानि च ॥

अशीतिवातरोगाश्च प्रणश्यन्ति न संशयः ।

कुर्वन्नेवंप्रकारेण भुक्ति भुक्ति च विन्दति ॥

No. 7497. सावित्रीपञ्चरम्.

SĀVITRIPANJARAM.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 2886.

Complete as found in the 45th Adhyaya of the Vāsiṣṭha-samhitā.

The repetition of this Mantra which is addressed to the goddess Savitri is considered to have the power to secure protection to one and to enable one to accomplish whatsoever one may desire.

Beginning :

सावित्रीपञ्चरं नाम रहस्यं निगमत्रये ।
 ऋष्यादिकथं दिग्बर्णसाङ्गावरणसंकमात् ॥
 वाहनायुधमन्त्राख्यमूर्तिध्यानपुरस्सरम् ।
 स्तोत्रवच ते प्रवक्ष्यामि त्वयि खेहाच्च नारद ॥
 ब्रह्मनिष्ठाय देयं स्याज्ज देयं यस्य कस्यचित् ।
 आचम्य नियतः पश्चादात्मध्यानपुरस्सरम् ॥
 * * * *
 त्रिपदा ऋग्मयी पूर्वमुखी ब्रह्माखसंज्ञिता ।
 चतुर्विंशतितत्त्वाद्या पातु प्राची दिशं मम ॥

End :

किमत्र बहुनोक्तेन शृणु नारद तत्त्वतः ।
 यं यं काममभिध्यायन् ते तमामोत्यसंशयः ॥

Colophon :

इति श्रीवासिष्ठसंहितायां वसिष्ठपराशरसंवादे सावित्रीपञ्चरं नाम
 पञ्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥

No. 7498. साहित्यमातङ्गीमन्त्रः.

SĀHITYAMĀTĀNGIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 136 of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Āmnāyamantramālikā 1a in the list of other works.

Complete.

Similar to the work described under No. 7289.

Beginning :

अस्य श्रीसाहित्यमातङ्गीमहामन्त्रस्य कृष्ण ऋषिः, गायत्री छन्दः,
 श्रीसाहित्यमातङ्गी देवता; औं बीजं, स्वाहा शक्तिः, व्यं कीलकं, मम
 साहित्यविद्याप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End:

मनुः—

ऐ ह्री श्री ओं नमो भगवते व्यं वेणवे मम साहित्यविद्यां प्रयच्छ
खाहा । श्रीसाहित्यमातृह्रीश्री ।

* * * * *

इति पूर्वान्नायदेवताश्च मूलाधारे महीचके च पूजयेत् ॥

No. 7499. साहित्यविद्यामन्त्रः.

SĀHITYAVIDYĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 29a of the MS. described under No. 2848, wherein it is found in the Āmnāyamantramalikā in the list of other works. For Pūrvāmnāyamantramalikā 16a read Āmnāya-mantramalikā 16a in the list of other works.

Wants a portion in the beginning.

Similar to the above.

Beginning and End:

वक्सौरभवशीकृतरन्त्रो वस्तुना पदुतरावयवेन ।

गानदोहनकलाकलनादो मानदो भवतु मे मणिवेणुः ॥

ओं नमो भगवते वे वेणवे मम साहित्यविद्यां प्रयच्छ खाहा ।

साहित्यविद्यादेव्यम्बाश्री ॥

No. 7500. सिद्धगणपतिमन्त्रः.

SIDDHAGAÑAPATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 5639.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to propitiate Siddhagānapati, being a special manifestation of Vinayaka.

Beginning :

अस्य श्रीसिद्धगणपतिमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, निचूद्रायत्री
छन्दः, महागणपतिर्देवता; म्लं वीजं, ह्री शक्तिः, म्लं कीलकं, मम
सिद्धगणपतिप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

ओं नमो गजाननाय ओं नमः खाहा ॥

No. 7501. सिद्धगणपतिमालामन्त्रः.

SIDDHAGAÑAPATIMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 5639,
wherein it has been omitted to be given in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

The transcription of this manuscript is said to have been completed on the 2nd day of the dark fortnight of the month of Pasya in the year Viśvāvasu by Allamudi Bapirāju, and the transcript handed over to Kurnella Veṅkaṭarāmaśāstrin.

Beginning and End :

मालामन्त्रः—

ओं ह्री श्री ह्री म्लं गं गणपतये नमः वरद् वरद् सर्वजनं मे वश-
मानय खाहा ॥

No. 7502. सिद्धांघानन्दमन्त्रः.

SIDDHAUGHĀNANDAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 36 of the MS. described under No. 5673,
wherein it is found in the Āmnāyamantramālikā 1a given therein
in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to propitiate the assemblage of nine Śaktigurus known as Siddhas.

Beginning :

अस्य श्रीसिद्धौषानन्दमन्त्रस्य सिद्धौषानन्दभैरव ऋषिः, अव्यक्तं
छन्दः, श्रीसिद्धौषो देवता; आं बीजं, ओं शक्तिः, हं कीलकं, मम
सिद्धौषानन्दप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End :

करालिकाम्बासिद्धश्री ४, भीबिण्डाम्बासिद्धश्री ४, भीमाम्बासिद्ध-
श्री ४, खराल्यम्बासिद्धश्री ४, खराननाम्बासिद्धश्री ४ विधिशालिन्य-
म्बासिद्धश्रीपादुकाम् ॥

No. 7503. सिद्धौषानन्दमन्त्रः.

SIDDHAUGHĀNANDAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 19b of the MS. described under No. 2848, wherein it is found in the Āmnāyamantramālikā 16a in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसिद्धौषानन्दमन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, अव्यक्तगायत्री
छन्दः, श्रीसिद्धौषो देवता; आं बीजं, ओं शक्तिः, हं कीलकं, मम
श्रीनवसिद्धप्रसादसिद्धचर्थे विनियोगः ।

End :

मनुः—

हीं श्री सौः आं महादुर्मरणसिद्धश्रीपादकां
. विधिशालिन्यम्बासिद्धश्री॥

No. 7504. सिद्धमूलिनीमन्त्रः.
SIDDHAMULINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 228a of the MS. described under No. 124, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

This Mantra is enjoined to be repeated at the time of taking gañja (hemp) as an aid to the practice of Yōga.

Beginning :

अस्य श्रीसिद्धमूलिनीमहामन्त्रस्य सिद्धानन्दभैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सिद्धमूलिनी देवता; ऐं वीजं, क्ली शक्तिः, सौः कीलकं, मम सिद्धमूलिनीप्रिसादद्वारा संवित्सेवने विनियोगः ।

End :

श्रीपरमेष्ठिगुरवे चिदाभासानन्दनाथश्री ह स क्ष म ल व र य कं स ह क्ष म ल व र य इ आनन्दभैरवाय वौषट् । ललाटान्त-मुद्रृत्य अर्थं ज्वलतीति जुहुयात् । श्री अपसर्पेन्तु—शिवाज्ञया ॥

No. 7505. सिद्धलक्ष्मीयक्षिणीमन्त्रः.
SIDDHALAKSHMIYAKSHINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 251a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā 229a in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to the Siddhalakṣmīyakṣīṇī, and its repetition is considered to have the power to enable one to accomplish one's desires.

Beginning and End :

ऐं कमले कमलधारिणि हं स खाहा । स्वगृहे रक्तकर्वीरपुण्ड्र-पूजान्तरे लक्षजपं कुर्यात् । गुण्गुलुलतुकेन दशांशहोमं कुर्यात् ।

ददाति सङ्गमं तस्य तेन चिन्तितरूपिणी ।
चिन्तितार्थं तदा तस्य नाव कार्या विचारणा ॥

No. 7506 सिद्धलक्ष्मीयद्विणीमन्त्रः.
SIDDHALAKSHMIIYADVIVIDHINIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 99 α of the MS. described under No. 5566, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7507. सिद्धविद्यामन्त्रः.
SIDDHAVIDYAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 230 α of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramalika in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to make even celestial damsels fall in love with the person repeating it duly.

Beginning :

अस्य श्रीसिद्धविद्यामन्त्रस्य इन्द्र ऋषिः, महाविराट् छन्दः, सिद्ध-
लक्ष्मीदेवता; श्री बीजं, शकारशक्तिः, श्रीसिद्धलक्ष्मीप्रीत्यर्थं विनि-
योगः ।

End :

प्रणतजनवत्सले देवि महाकालि कालनाशनि हूं हूं हूं प्रसीद
मदनातुरां आं कौं कुरु कुरु सुरासुरकन्यकां हीं श्री (हुं फट् साहा) ॥
हीं नमः श्री नमः । चत्वारशतुरश्चरणं कुर्यात् । दशांशतर्पण-
होमः ॥

No. 7508. सिद्धविद्यामन्त्रः.

SIDDHAVIDYAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 86b of the MS. described under No. 5566.

Complete.

Same as the above.

No. 7509. सीताराममन्त्रः.

SITĀRĀMAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 46b of the MS. described under No. 567¹, wherein it is found in the Āmnāyamantramālikā *ls* in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to secure for one the favour of Rāma as associated with Sita.

Beginning :

अस्य श्रीसीताराममन्त्रस्य व्रज्ञा ऋषिः, गायत्री चन्दः, श्री-
सीतारामो देवता; रां चीजं, ओं शक्तिः, रामायेति कीलकं, मम
श्रीसीतारामप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

ओं श्री रां रामाय नमः ॥

No. 7510. सुदर्शनकवचः.

SUDARŚANAKAVACAH.

Pages, 10. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 227a of the MS. described under No. 7247.

Complete as found in the Vihagēndrasamhitā.

This Kavacamantra is addressed to Viṣṇu's 'discens' conceived as a deity; and its repetition is considered to be efficacious in securing protection to one and in causing the accomplishment of one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनकवचसौत्त्वं (स्तोत्र) महामन्त्रस्य अहिर्बुद्ध्यभगवानृषिः,
अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमान् महासुदर्शनो देवता; सं सहस्रार इति बीजं,
हुं महासुदर्शनेति शक्तिः, फट् चक्रराडिति कीलकं, सुदर्शनकवचमहा-
मन्त्रमूर्तेः मम सर्वाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

* * * * *

मस्तकं मे सहस्रारः फालं पातु सुदर्शनः ।
श्रुतौ मे चक्रराट् पातु नेत्रे ज्ञे(मे)केन्दुलोचनः ॥

End :

वहुनात्र किमुकेन यथद्वाङ्ग्निति मानवः ।
सकलं प्राप्यात्तस्य कवचस्य प्रसादतः ॥

Colophon :

इति विहगेन्द्रसंहितायां तार्क्यनारायणसंवादे अगस्त्यप्रोक्तं सुदर्शन-
कवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7511. सुदर्शनकवचः.

SUDARŚANAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 2373, wherein it is given as Sudarśanakavacastotrā in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनकवचसौत्त्वमन्त्रस्य अन्तर्यामिनारायण ऋषिः,
अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसुदर्शनपरमात्मा देवता; सहस्रार इति बीजं, सुद-
र्शन इति शक्तिः, चक्रराडिति कीलकं, श्रीमहासुदर्शनप्रसादसिद्धयर्थे
जपे विनियोगः ।

* * * * *

मस्तकं मे सहस्रारः पातु फालं सुदर्शनः ।
भ्रूवौ मे चक्रराट् पातु नेत्रेऽन्यकेन्दुलोचनः ॥

End:

इति सौदर्शनं दिव्यं कवचं सर्वकामदम् ।
क्षिप्रं सुदर्शनं चक्रं ज्वालामालाविभूषितम् ॥

ऊरुत्तमं हनुस्तम्भं निमिषं ज्वलं गर्दभाक् ।
तीरणधारं महावेगं छिन्धि छिन्धि न वेदनात्(?) ॥

No. 7512. सुदर्शनकवचः.
SUDARŚANAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 6090.

Complete.

Same as the above.

No. 7513. सुदर्शनकवचः.
SUDARŚANAKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 12b of the MS. described under No. 365,
wherein it is given as Sudarśanamantra in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7514. सुदर्शनकवचः.
SUDARŚANAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1b of the MS. described under No. 5338,
wherein it has been omitted to be given in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शन(कवच)स्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,
श्रीसुदर्शनरूपी महाविष्णुदेवता, सुदर्शनप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

शिरो मे भगवान्देवो रक्षतु श्रीसुदर्शनः ।
फालदेशं चक्रदेवः कालनेमिहरो मुवौ ॥

End :

षट्कोणान्तरमध्यपद्मनिलयं तत्सन्धिदिष्टाननं
चक्राद्यायुष्वचारुभूषणमुजं सज्जालकेशोदयम् ।
वस्त्रालेपनमाल्यविग्रहतनुं तं फालनेत्रं गुणैः
प्रत्यालीढपदाम्बुजं त्रिनयनं चक्राधिराजं भजे ॥

No. 7515. सुदर्शनकवचः.

SUDARŚANAKAVACAH.

Page, I. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 2886,
wherein it has been omitted to be given in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

(अस्य श्रीसुदर्शनकवचस्तोत्र)मन्त्रस्य अहिर्बुध्यभगवानृषिः, अनु-
हृष्ट छन्दः, श्रीसुदर्शनरूपी महाविष्णुदेवता ; रां बीजं, स्वाहा शक्तिः,
फट् कीलकं, श्रीसुदर्शनप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

शिरो मे भगवान् देवो रक्षतु श्रीसुदर्शनः ।

फालदेशं च चक्रेशः कालनेमिहरो मुवौ ॥

End :

नानालोकेषु त्रैलोक्ये नानाशैलवनेषु च ।

नानानदीतटाकेषु जपतां भक्तवत्सलः ॥

* * *

सुदर्शनचक्राय ज्वालाचक्राय महाचक्राय स्वाहा ॥

Colophon :

सुदर्शन(कवच)मन्त्रःसमाप्तः ॥

No. 7516. सुदर्शनकवचः
SUDARŚANAKAVACAH.

Pages, 6. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 6393.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to destroy all evil-doing agencies and to secure protection to one. Beginning:

अस्य श्रीसुदर्शनकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य वक्ता ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सुदर्शनमहाचक्रो देवता, मम सर्वरक्षक(ण)र्थे जपे विनियोगः ।

सुदर्शनजपं करिष्ये—अथ न्यासः ।

सुदर्शनमहाचक्रो गोविन्दस्य करायुधः ।

तीदण्डात(रो)महावेगः सूर्यकोटिसमप्रभः ॥

त्रैलोक्यरक्षाकर्तुत्वं(लात्) दुष्टरात्समज्जन[म्] । ओं सहस्रार हुं फट् स्वाहा ।

End:

राक्षसासुरवेतालपिशाचोरगपाक्षिणः । छिन्धि छिन्धि सर्वभयं चैव ।

* * * * *

ज्वालासेलविनेत्रं ज्वलदनलनिभं हारकेयूरभूमं
ध्याये षट्कोणसंस्थं सकलरिपुजनभाणसंहारचक्रम् ॥

No. 7517. सुदर्शनकवचः

SUDARŚANAKAVACAH.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{2} \times 13\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3. Lines, 6 on a page. Character, Grantha. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 18a. The other works herein are Sudarśana-sataka 1a, Lakṣmīstotra 15a, Sudarśanaprapatti 17a, Sudarśana-yantrapuja 20a, Sudarśanamālāmantra 20a, Sōdāsāyudhastotra 21a, Sudarśanāṣṭaka 23a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

सिंहासने समासीनं देवेन्द्रं त्रिदशोश्वरम् ।
 श्रोतुं चक्रस्य कवचं सुधर्मोमगमन् सुराः ॥
 देवदेव सहस्राक्षं दैत्यान्तकं शब्दीपते ।
 त्वत्तस्सौदर्शनी विद्वां श्रोतुका(माशा)स्महे वयम् ॥

इन्द्र उवाच—

पुरा भगवतश्श्रीमदहिर्बुद्ध्यान्मया श्रुतम् ।
 दिव्यं सत् कवचं वक्ष्ये शृणुष्वं सुरसत्तमाः ॥
 शिरो मे भगवान् देवो रक्षतु श्रीसुदर्शनः ।
 फालेदशं तु चकेशः कालेनमिहरो भ्रुवौ ॥

End :

इतीदं कवचं दिव्यं सर्वकामफलप्रदम् ।
 सर्वपापप्रशमनं महाभयनिवारणम् ॥

Colophon :

इति श्रीसुदर्शनकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7518. सुदर्शनकवचः.

SUDARŚANAKAVACAH

Substance, palm-leaf. Size, 16 x 14 inches. Pages, 2 Lines, 8 on a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 15a. The other works herein are Sudarśana-sataka 1a, Sudarśanadigbandhanamantra 12a, Sudarśanasadaksari-mantra 14a, Sudarśanamalāmantra 14b, Sudarśanaprapatti 16a, Vihagendrassmhitā 17a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

सिंहासने समासीनं देवेन्द्रं त्रिदशोश्वरम् ।
 श्रोतुं चक्रस्य कवचं सुधर्मोमगमन् सुराः ॥

दिव्यमाल्यान्वरधरं भूषणैरुपशोभितम् ।
 ध्यात्वैवं चक्रकवचं जपेत्सर्वार्थसिद्धये ॥
 शिरो मे भगवान् देवो रक्षतु श्रीसुदर्शनः ।
 फालदेशं च चक्रेशः कालनेमिनिवर्हणः ।

End :

इतीदं कवचं दिव्यं सर्वकामफलप्रदम् ।
 सर्वपापप्रशमनं महाभयनिवारणम् ॥

Colophon :

इति सुदर्शनकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7519. सुदर्शनकवचः.
 SUDARŚANAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 13^a of the MS. described under No. 5938.

Complete.

Similar to the above

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनकवचस्तोत्रमन्तस्य अहिरुच्छ्यो भगवानृषिः, अनु-
 पुप् छन्दः, श्रीसुदर्शनरूपी श्रीमहाविष्णुदेवता ।
 शिरो मे भगवान् देवो रक्षतु श्रीसुदर्शनः ।
 फालदेशं च चक्रेशः कालनेमिहरो भ्रुवौ ॥

End :

पट्कोणान्तरतारमध्यनिलयं संस्कीर्तदंग्राननं
 चक्राद्यायुधचारुषोऽशसुजं सज्वालकेशोऽज्वलम् ।
 वस्त्रालेपनमाल्यविग्रहगुणैस्तं बालमित्रारुणैः
 प्रत्यालीढपदान्तुजं त्रिनयनं चक्राधिराजं भजे ॥

No. 7520. सुदर्शनकवचः.
SUDARŚANAKAVACAH.

Pages, 13. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 30a of the MS. described under No. 5864.

Complete as found in the Vihagēndrasamhitā.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य अहिर्बुध्न्यभगवान् ऋषिः,
गायत्री छन्दः, श्रीमान् महासुदर्शनो देवता; सं सहलार इति वीजे
हुं महासुदर्शनेति शक्तिः, फट् चक्रराङ्गिति कीलकं, सुदर्शनकवचमहा-
मन्त्रमूर्तेः मम सर्वाभीष्टप्रसादसिद्धयेऽप्य जपे विनियोगः ।

End :

यन्त्रे च मन्त्रकवचं पठित्वा सर्वकामधृत् ॥
बहुनात्र किमुक्तेन यद्यद्वाञ्छति मानवः ।
सकलं प्राप्नुयात्स्य कवचस्य प्रसादतः ॥

Colophon :

इति श्रीविहगेन्द्रसंहितायां तार्क्ष्यनारायणसंवादे अगस्त्यप्रोक्तं सुद-
र्शनकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7521. सुदर्शनगायत्री.
SUDARŚANAGAYATRI.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 36 of the MS. described under No. 2886, wherein the general name Sudarśanamantra is given in the list of other works.

This Mantra which is addressed to Viṣṇu's 'discus' is in the form of the Gāyatrīmantra, and hence it is called Sudarśanagāyatri.

Beginning and End :

सुदर्शनाय विच्छहे(हे)तिराजाय धीमहि । तत्त्वशक्तः प्रचोद-
यात् ॥

Colophon :

इति गायत्री ॥

No. 7522. सुदर्शनदिग्बन्धनमन्त्रः.

SUDARŚANADIGBANDHANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 3b of the M.S. described under No. 2886, wherein the general name Sudarśanamantra is given in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra which is addressed to Visnu's 'discus' is considered to have the power to protect one from the dangers that may possibly come from the various quarters.

Beginning :

ऐन्द्री दिशं चक्रेण वधामि, आग्नेयी दिशं चक्रेण वधामि, याम्या दिशं चक्रेण वधामि ।

End :

ऊत्तरी दिशं चक्रेण वधामि, अधरां दिशं चक्रेण वधामि, उच्चाचक्राय नमः ॥

Colophon :

इति दिग्बन्धः ॥

No. 7523. सुदर्शनदिग्बन्धनमन्त्रः.

SUDARŚANADIGBANDHANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 14a of the M.S. described under No. 6180.

Incomplete.

Similar to the above.

Beginning and End :

ऐन्द्र्यां दिशि चक्रेण वधामि ओं नमश्चकराजाय हुं फट् सुदर्शनायामर्षणाय लाहा । याम्य - वारुण - कुवेर - ईशान्य - अग्नि - नैरूत्य - वायव्य - ऊर्ध्व - अधर.

No. 7524. सुदर्शनदिम्बन्धनमन्त्रः।
SUDARŚANADIGBANDHANAMANTRAH.

Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 5822, wherein it is found in the Sudarśanamūlamantra 1a in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अथ दिम्बन्धनमन्त्रः—

ओं नमो भगवते महोद्गदिम्बन्धनसुदर्शनाय अष्टादशबाहुभचण्डदश-
दिम्बन्धनाय ।

End :

ऐं ज्वालाचक्राय अधपातालाय दिम्बन्धनाय स्वाहा । ओं दीप-
चक्राय कृष्णप्रदेशदिम्बन्धनाय स्वाहा । भूसुवसुवरो—इति दिम्बन्धः ॥
च्यानम्—

शङ्कु चक्रं च चापं सकलारिपुजनप्राणसद्वार-
चक्रम् ॥

No. 7525. सुदर्शनदिम्बन्धनमन्त्रः।
SUDARŚANADIGBANDHANAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 7515.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अथ वत्यामि सौवीरं दिम्बन्धविष्मुक्तमम् ।

इन्द्रादिदशदिष्ठु च . . यो मे पुरस्तत् पूर्वमार्गं गतः पाप्या
वा पापकेनेह कर्मणा इन्द्रस्स देवो राजा जम्मयत्यादि . स्वाहा ।

जम्भयतु स्तम्भयतु नृम्भयतु मोहयतु मारयतु नाशयतु क्लेशयतु शो-
षयतु कलि तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शुर्म, मम शिवं, मम शान्तिः,
मम स्वस्त्रयनं, मम हुं फट् सुदर्शनाय स्वाहा ।

End:

उत्तरस्यां दिशायां महानीमको नाम श्रीभूतः तस्याष्टकोटि श्री-
भूतगणेन दिशं बन्धयामि ॥

Colophon:

इति सुदर्शनादिग्वन्धनविधिस्तमासः ॥

श्रीसुदर्शनपुरुषः सुभीतो वरदो भूत्वा त्रैलोक्यं रक्ष मां रक्ष ।
ओं नमो भगवते सुदर्शनाय ज्वालाचक्राय सहस्रार हुं फट् । श्री-
सुदर्शनपुरुषाय शत्रुमर्षणाय वीरमायाय नमः ऐन्द्री दिशं चक्रेण बन्ध-
यामि एवमेव सर्वा दिशाश्च बन्धयामि ॥

No. 7526. सुदर्शनपूर्वोत्तरमालामन्त्रः.

SUDARŚANAPŪRVOTTARAMĀLAMANTRAH

Pages, 4. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 6090, wherein it is given as Sudarśanamantra 1a in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to propitiate Visnu's 'discus' and to destroy everything which can possibly injure the suppliant, besides securing protection to him.

Beginning:

शङ्खं चक्रं च चापं प्राणसंहारचक्रम् ॥

* * *

ओं नमो भगवते महासुदर्शनाय महाचक्राय महाज्वालाय महा-
दीपसूर्याय सर्वतो रक्ष रक्ष महाबलाय स्वाहा हुं फट् स्वाहा ।

अस्य श्रीसुदर्शनमहामन्त्रस्य अहिर्बुध्यमगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीसुदर्शनरूपी श्रीमहाविष्णुदेवता; रे वीजं, हं शक्तिः, स्वाहा की-
लकं, मम श्रीसुदर्शनप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End:

परमन्त्रान् ग्रासय ग्रासय भक्षय भक्षय लासय त्रासय परयन्तं
निवारय निवारय वृत्तिकमल्लकस्फोटकादीन् नाशय नाशय सर्वं दह दह
भस्म भस्म कुरु कुरु चक्रनारायणमहाविष्णवे नमो रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7527. सुदर्शनमन्त्रः.

SUDARŚANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 23b of the MS. described under No. 124.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to enable one to accomplish everything which one may desire.

Beginning:

अस्य श्रीसुदर्शनमन्त्रस्य अहिर्बुध्यमगवानृषिः, सुदर्शनो देवता,
सं वीजं, हं शक्तिः, मम सर्वाभीष्टसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End:

शहुं चक्रं सचापं परशुमसिक(व)रे शूलपाशाङ्कशाङ्कं
विभ्राणं वज्रपीठं(खेटं) हलमुसलगदाकुन्तमस्तुग्रदष्ट्रम् ।
ज्वालाकेशं विनेत्रं उवलदनलमुखं हारकेयूरभूषणं
घ्याये पट्कोणचक्रं सकलरिपुहरं(जन) प्राणसंहारचक्रम् ॥
ओं सहस्रार हुं फट् ॥

No. 7528. सुदर्शनमन्त्रः.

SUDARŚANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 37b of the MS. described under No. 3056.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनपदक्षरमहामन्त्रस्य अहिर्बुद्ध्यो भगवानृषि:, अनु
दृप् छन्दः, श्रीसुदर्शनो देवता; रं बीजं, हुं शक्तिः, फट् कीलकं,
श्रीसुदर्शनप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

See under the previous number for the end.

No. 7529. सुदर्शनमन्त्रः.**SUDARŚANAMANTRAH.**

Page, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 12^b of the MS. described under No. 6090.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

एवंगुणविशेषणविशिष्टायामस्यां शुभतिथौ असाकं सकुदम्बानां
फलसिद्धचर्ये श्रीसुदर्शनदेवतामुद्दिश्य श्रीसुदर्शनदेवताप्रीत्यर्थं सुदर्शन-
स्तोत्रमन्त्रपठनं करिष्ये—

अस्य श्रीसुदर्शनस्तोत्रमहामन्त्रस्य अहिर्बुद्ध्यो भगवानृषि:, श्री-
सुदर्शनः परमात्मा देवता; रं बीजं, हुं शक्तिः, फट् कीलकं, मम श्री-
सुदर्शनप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End:

लमिति पञ्चपूजां कुर्यात् । मुद्रां प्रदर्श्य, मनुः—
ओं सहस्रां हुं फट् । पुनः न्यासं कुर्यात् ।

भगवन् सर्वविजयी सहस्रारापरजित ।
शरणं त्वां प्रपञ्चोऽस्मि श्रीकरश्रीसुदर्शन ॥

No. 7530. सुदर्शनमन्त्रः.**SUDARŚANAMANTRAH.**

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 32^b of the MS. described under No. 5477
wherein it is found in the Mantramālikā 273a in the list of other
works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनमन्त्रस्य कल्पप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सुदर्शनमहाविष्णुदेवता; हुं बीजं, स्वाहा शक्तिः, मम इष्टकान्यार्थसिद्धचर्ये विनियोगः ।

End :

ओं ह्रीं सहस्रार हुं फट् । इति ॥

No. 7531. सुदर्शनमन्त्रः.

SUDARŚANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 5885 wherein it is given under the name of Sudarśanaśaṭakṣacimanttra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनपठक्षरीमहामन्त्रस्य अहिर्वृद्ध्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसुदर्शनरूपी विष्णुदेवता, सं बीजं, हुं शक्तिः, श्रीसुदर्शनप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

ओं सहस्रार हुं फट् ॥

No. 7532. सुदर्शनमन्त्रः.

SUDARŚANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 5864

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनमन्त्रस्य अहिर्बुद्ध्यभगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् उन्दः, श्रीसुदर्शनो देवता ; रं वीजं, हुं शक्तिः, फट् कीलकं, श्रीसुदर्शन-प्रसादसिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

ओं सहकार हुं फट् ॥

No. 7533. सुदर्शनमन्त्रः.**SUDARŚANAMANTRAH.**

Page, 1. Lines, 31 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 2373, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Considered also to be efficacious in the destruction of one's enemies.

Beginning :

ओं ही ही ही ही हूं हूं फट्कारेण ठः ठः द्वयेन हन हन द्विषः

हा हा हा हा हुवित्येव फट्कारेण हन द्विषः ।

सुदर्शनस्य मन्त्रेण भ्रहा यान्ति दिशो दश ॥

End :हा: हा: हा: हा: हा: हा: हा हा हा हा हा हा हन हन द्विषः ।
स्वाहा ॥**No. 7534. सुदर्शनमन्त्रः.****SUDARŚANAMANTRAH.**

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 13b of the MS. described under No. 365, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7535 सुदर्शनमन्त्रः.
SUDARŚANAMANTRAH

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 15b of the MS. described under No. 6090, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete

Same as the above.

No. 7536. सुदर्शनमन्त्रः.
SUDARŚANAMANTRAH

Substance, palm-leaf. Size, $10\frac{1}{2} \times 14$ inches. Pages, 3. Lines, 9 on a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appearance, new.

Begins on fol. 11a. The other works herein are Bhajayastirājastōtra 1a, Bhajagōvindastōtra 4a, Śukastōtra 7a, Bhiamastati 8a, Saptalōkaramayana 9a, Karmāṇta 12a, Dvādaśanāmāstōtra 13b.

Incomplete

Similar to the above.

Beginning :

देवी गायत्री छन्दः, प्राणायामे विनियोगः ।

त्रिः प्राणानायम्य, सङ्कल्प्य; एवंगुणविशेषणविशिष्टायामस्यां शुभा-
तिथौ श्रीभगवदाज्ञया श्रीभगवत्तीत्यर्थं श्रीसुदर्शनमन्त्रजपं करिष्ये ।

अस्य श्रीसुदर्शनमहामन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमत्तारायणे
देवता, सुदर्शनजपे विनियोगः ।

End :

शङ्खं चक्रं च चापं परशुमसिभिषु शूलपाशाङ्कशालं

विभ्राणं वज्रखेठं हलमुसलगदाकुन्तपत्तुग्रदंष्ट्रम् ।

ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिमं हारकेयूरभूषं

ध्याये पट्टकोणसंस्थं (सकलारपुजनप्राणसंहारचक्रम्) ॥

No. 7537. सुदर्शनमन्त्रः.
SUDARŚANAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 2838.

Complete.

Similar to the above.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to safeguard and make effective the repetition of all Mantras

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनमन्त्रस्य अहिर्वृद्ध्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
सुदर्शनो देवता; रं वीजं, हुं शक्तिः, मम सकलमन्त्रानुष्टानसंरक्षणार्थं
सुदर्शनचक्रेण दश दिशो बन्धा(न्धया)मि। प्राणायामत्रयं कृत्वा।

End :

हं कं हं कं हं कं हं कं जां कौं आं का जां कौं आं
ओं कालचक्राय स्वाहा, जं नमः फट् हं नमः फट् फट् फट् काल-
चक्राय स्वाहा ॥

No. 7538. सुदर्शनमन्त्रः.
SUDARŚANAMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 7a of the MS. described under No. 5819.

Complete.

Considered to have the power to drive off evil spirits.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनमन्त्रस्य अहिर्वृद्ध्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
सुदर्शनरूपी श्रीमहाविष्णुदेवता; जां वीजं, हुं शक्तिः, सुदर्शनप्रीत्यर्थे
विनियोगः।

End :

भूतान् निवारय निवारय त्रासय त्रासय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7539. सुदर्शनमन्त्रः.

SUDARŚANAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 303 α of the M.S. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā 73 α in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

The Sudarśanamantras consisting of eight syllables and sixteen syllables are given here.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनमन्त्रस्य अहिर्बुद्ध्यं ऋषिः, अनुष्टुप् उन्दः, ओं वीजं, हुं फट् शक्तिः, सुदर्शनरूपी अहिर्देवता, सुदर्शनप्रीत्यर्थे विनियोगः।

End :

ओं सहशार हुं फट् । द्वादशलक्षपुनश्चरणम् ।

आजयेन दशांशहोमः । तर्पणं द्वादशसहस्रम् ।

मन्त्रः—

ओं नमस्सुदर्शनाय—इत्यष्टाकरी । ओं नमो भगवते महासुदर्शनाय हुं फट्—इति पोडशाकरी ॥ ओं नमो भगवते नरसिंहाय वज्रकवचाय हिरण्याक्षवक्षोविदारणाय स्वाहा ॥

No. 7540. सुदर्शनमन्त्रः.

SUDARŚANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 243 α of the M.S. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā 22 α in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

The Sudarśanamantras containing eight and sixteen syllables and the Sudarśanagāyatrīmantra are found herein.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनमन्त्रस्य अहिर्बुद्ध्यं ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ओं वीजं, हुं फट् शक्तिः, श्रीसुदर्शनचक्रलूपी हरिर्देवता, सुदर्शनप्रीत्यर्थे विनियोगः ।

End :

ओं सहस्रार हुं फट् । पुरश्चरणम् १२ लक्षम् । द्वादशसहस्रं होमः सर्षपतिलैः वृतपायसमिश्रविल्वफलैः । द्वादशसहस्रं तर्पणम् ।

ओं नमस्सुदर्शनाय—इत्यष्टाक्षरी । ओं नमो भगवते महासुदर्शनाय हुं फट्—इति पोडशाक्षरी । सुदर्शनाय विद्वहे महाज्वालाय धीमहि । तत्रश्चकः प्रचोदयात्—इति गायत्री ॥

No. 7541. सुदर्शनमन्त्रः.**SUDARŚANAMANTRAH.**

Pages, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 94a of the MS. described under No. 5568, wherein it has been wrongly stated to begin on fol. 98.

Complete.

Same as the above.

No. 7542. सुदर्शनमन्त्रः.**SUDARŚANAMANTRAH.**

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 5680.

Complete.

This contains the Sudarśanagāyatrīmantra, the ordinary Sudarśanamantra, the Sudarśanamantra containing sixteen syllables and the Śudarśanamālāmantra.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनमहामन्त्रस्य अहिर्बुद्ध्यभगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसुदर्शनमहाविष्णुर्देवता ; रं वीजं, हुं शक्तिः, फट् कीलकं, इष्टार्थे विनियोगः ।

End:

सुदर्शनाय विद्धहे महाज्वालाय धीमहि । तजश्चकः प्रचोदयात्—
इति गायत्री । ओं सहस्रार हु फट्—इति मन्त्रः । ओं नमो भगवते
महासुदर्शनाय हु फट्—इति पोदशाक्षरमन्त्रः । ओं नमो नमो भगवते
वासुदेवाय सर्वतो रक्ष रक्ष मां महाबलाय स्वाहा—
इति मालामन्त्रः ॥

No. 7543. सुदर्शनमन्त्रः—गायत्रीमालामन्त्रसहितः.

SUDARŚANAMANTRAH WITH GAYATHRI AND
MĀLAMANTRA.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5338.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनमन्त्रस्य अहिरुच्चय ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीसुदर्शनो देवता; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, रं कीलकं, श्रीसुदर्श-
नप्रत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

ओं ह्री श्री सहस्रार हुं (फट्) । सुदर्शनगायत्री—
सुदर्शनाय विद्धहे महाज्वालाय धीमहि । तजश्चकः प्रचोदयात् ।

मालामनुः—

ओं नमो भगवते महासुदर्शनाय महाज्वालाय महाचक्राय दीप्त-
रूपाय सर्वतो मां रक्ष रक्ष महाबलाय स्वाहा ॥

No. 7544. सुदर्शनमालामन्त्रः.
SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 323 α of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramalika 273 α in the list of other works.

Complete.

This Mantra is in praise of Sudarśana, or Viṣṇu's 'discus' under different significant names; and its repetition is considered to have the power to enable one to destroy one's enemies.

Beginning :

ॐ नमो भगवते नन्दनाय सहस्रशीर्षाय क्षीरोदार्णवन्तय(शाश्वि)-
ने शेषभोगपर्यङ्काय गरुडवाहनाय नमः ।

End:

ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय महाचक्राय जय जय रक्ष रक्ष मम
शत्रून् नाशय नाशय ।

* * * * *

विष्णुकवचस्थानां मन्त्राणां साहस्रज्वाला(य)
हुं मृत्युमृत्युं नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7545. सुदर्शनमालामन्त्रः.
SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 14b of the MS. described under No. 5864, wherein it has been omitted to be shown as a separate work in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

मालामन्त्रः—

ओं नमो भगवते महासुदर्शन महाचक्रराज मां रक्ष रक्ष मम
शत्रून् नाशय नाशय धर धर धारय धारय उवल उवल प्रज्वल प्रज्वल
ज्वालय ज्वालय ।

End :

आवेशावेशय आकर्षयाकर्षय स्पण्ड स्पण्ड विषक(ह)रकवचह(म).
नुस्मरन् ओं सहस्रार हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7546. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 1α of the MS. described under No. 5915,
wherein it has been given as Sudarśanamantra in the list of other
works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णी चतुर्मुजम् ।

प्रसञ्जवदनं ध्यायेत् सर्वविज्ञोपशान्तये ॥

विशुद्धविज्ञानवनस्वरूपं विज्ञानविश्राणनवददीक्षम् ।

दयानिधिं देहभूतां शरणं देवं हयग्रीवमहं प्रपद्ये ॥

सकारस्य वेद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, मरुदेवता । हकारस्य वेद
ऋषिः, विराट् छन्दः, हुताशनो देवता । साकारस्य वेद ऋषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, इन्द्राग्नी देवता ।

* * * * *

ओं नमो भगवते महासुदर्शनाय महाचक्राय महाज्वालाय दीप-
रूपाय ।

End :

भूर्भुवस्सुवरो—इति दिव्यन्वः । ध्यानम्—
 शङ्खं चक्रं च चापं परशुमसिमिषु शूलपाशाङ्कशाब्दं
 विभ्राणं वज्रस्तें हलमुसलगदाकुन्तमस्तुग्रदण्डम् ।
 ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलिनिमं हारकेयूरभूषं
 ध्यायेत् पट्टोणसंस्थं सकलरिपुजनप्राणसंहारचकम् ॥

No. 7547. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Page, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 212a of the MS. described under No. 7247.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate Visnu and to secure protection to one from all dangers.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शन(माला)महामन्त्रस्य अहिर्वृद्ध्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
 सुदर्शनमहाविष्णुर्देवता, अं बीजं, ही शक्तिः, क्ली कीलकं, सुदर्शन-
 महाविष्णुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

सहस्राक्षाय सहस्रपादानुलोचनाय साहस्राक्षं लां चर हुं चर फट्
 ज्वर मां रक्ष रक्ष सौम्य संपूर्णचक्राय हुं फट् फट् त्वाहा ॥

Colophon :

सुदर्शन(माला)चक्रं संपूर्णम् ॥

No. 7548. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 2373, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to kill the evil spirit which is tormenting one and to remove one's chronic diseases.

Beginning :

ओं रं क्षां सहस्रार ज्वालामालापरिवर्तिने मम देहस्थितमसुकं भ्रहं
हन हन आवर्तनरोगान् नाशय नाशय ।

End :

ओं नमो भगवते महासुदर्शनाय महाबडबानलाय विद्वेषिसंहारणाय
हुं फट् स्वाहा । ओं नमो भगवते महासुदर्शनाय हुं फट् ॥

Colophon :

इति मूल(माला)मन्त्रः ॥

No. 7549. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 365, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7550. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 15b of the MS. described under No. 6090, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7551. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 29^b of the MS. described under No. 5864, wherein it has been given as Sudarśanamantrōcchāna in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to Viṣṇu's 'discus', is considered to have the power to enable one to drive away and destroy enemies and evil spirits, to remove one's sins, to make one healthy, etc.

Beginning :

ओं नमो भगवते मो भोः सुदर्शन् दुष्टान् दारय दारय दुरितं
हन हन पापं मथय मथय असुक्यजमाननियोगेन रोगान् दह दह
असुक्यजमानत्य आरोग्ये कुरु कुरु फे फं छां हीं हीं हूं हूं
ठः ठः सर्वदुष्टप्रहान् छिन्नि छिन्नि हा हा हा हा हा हा हुं हुं
फट् फट् ।

End :

परमन्त्रपरव्यपरतत्त्वौषधकृतिमादि दह दह भस्मीकुरु कुरु मम
शब्दन् उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय हुं फट् हुं फट् ॥

Colophon :

उच्चाटने समाप्तम् ॥

No. 7552. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 31^b of the MS. described under No. 5737.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं नमो भगवते महासुदर्शनाय महाचक्रराजाय रक्ष रक्ष मा,
मम शत्रून् नाशय नाशय धर धर धारय धारय भिन्धि भिन्धि उचल
उचल उचालय उचालय ।

End :

मोटय मोटय भज्ज भज्ज आवेशय आवेशय स्तङ्ग स्तङ्ग विष्णु-
मनस्तरां शङ्कुं चकं चापं हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7553. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 9a of the MS. described under No. 5819,
wherein it has been omitted to be shown as a separate work in the
list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं नमो भगवते सुदर्शनमहाचक्रराजाय दीपरूपाय सर्वतो मा-
रक्ष रक्ष महाउचालय स्वाहा ।

End :

ओं नमो भगवते भो भोसुदर्शनचक दुष्टं ताडय ताडय दुरितं
हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु द्विषो हन हन आज्ञापय
जनार्दन ओं हा हा ह ह हुं हुं फट् फट् ठ ठः हन हन द्विष
द्विष स्वाहा ॥

No. 7554. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 5689,
wherein it has been omitted to be shown as a separate work in the
list of other works and is included in Sudarśanamantra 5a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीमुदर्शन(माला)मन्त्रस्य सङ्कृष्टिभगवान् शिः, अनुष्टुपु चन्द्रः, मुदर्शनविष्णुदेवता; सां वीजं, फट्ठक्तिः, सू कीलकं, मुदर्शनविष्णु-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

मम शत्रून् नाशय नाशय मारय मारय छिन्धि छिन्धि शतसहस्र-कोटि प्रज्वल शिखायै वौषट् । पां प्रेषय धारण दुष्टभ्रहद्वान्तक हन हन पच पच कम्पय कम्पय खजं शतशिखायै वौषट् ॥

No. 7555. मुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 237a of the MS. described under No. 7247.

Complete.

Similar to the above. Also considered to have the power to enable one to counteract the evil effects of hostile Mantras and Tantras.

Beginning :

मुदर्शनचक्रराजमन्त्रराजाय ओं छिन्धि छिन्धि विदारय विदारय ओं शुस्ते खन्वे (?) परमन्त्रपरबन्त्रपरतन्त्रच्छेदन परभूतप्रेतनाशं ओं फट् फट् स्वाहा । ओं मुदर्शनचक्रराजाय वि(पद्मा)न्तदुष्टभयङ्कर छिन्धि छिन्धि विदारय परमन्त्रपरबन्त्रपरतन्त्रान् ग्रासय ग्रासय भक्ष भक्ष.

End :

ओं नमो भगवते सकलपरिधिप्रहरणाय सकलपातकतुषारकिरणाय काशीक्षेत्रनिर्बहृणाय बाणामुरवाहुवनदवामये अतिपरिमितादिव्याक्षतेजः उत्पाटनाय कल्पान्तदहनाय महाविष्णवे शङ्खचक्रगदाधराय लक्ष्मीसमेताय अष्वनाशनकर्त्रे सर्वलोकशरण्याय क्षां क्षां हन हन हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7556. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 36b of the MS. described under No. 5864.

Complete.

Similar to the above

Beginning :

ओं श्रीं ह्रीं क्रीं एं सुदर्शनमहावज्राज देवदेव ब्रह्म जयानन्ता-
नन्ताप्रतिहताय (अ)नपाय(१)नपाय विकट विकट वीर उग्र उग्र
उग्र भीषण भीषण भैरव ।

End :

कल्पान्तामिनप्रकाशं त्रिभुवनमस्तिलं तेजसा पूर्वन्तं
रक्तासं पिङ्गलेशं वरमकुटघरं भीमदंष्ट्राघ्रासम् ।

शङ्खं चक्रं गदांजे हलमुसलयुतं चापवाणाङ्गुशासं
विभ्राणं दोभिरीडचं भनसि मुररिपुं भावयेचकसंस्थम् ॥

No. 7557. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 6180.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power
to secure protection to one from all dangers.

Beginning and End :

ओं नमो भगवते महासुदर्शनाय महाचक्राय महाज्वालाय महा-
दीप्तरूपाय सर्वतो रक्ष रक्ष मा महाज्वालाय स्वाहा । आसाम (अवसाने)
मन्त्राणामात्मनः प्रादक्षिण्यक्रमेण त्रिवारं रक्षां कुर्यात् ॥

No. 7558. सुदर्शनमालामन्त्रः.
SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 30a of the MS. described under No. 5832, wherein it is given as Sudarśanamantra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning and End:

ओं नमो भगवते महासुदर्शनाय महाचक्ररूपाय सर्वत्र मा रक्ष
रक्ष हुं फट् ठ ठ स्वाहा ॥

No. 7559. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Page, I. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 234a of the MS. described under No. 7247.

Complete.

Similar to the above. Held to have the power to enable one to drive away and destroy enemies and evil spirits.

Beginning:

ओं नमो ब्रह्मसुदर्शन चक्रराज सर्वदुष्भयङ्कर भूतप्रेतपिशाचब्रह्म-
राक्षसशाकिनीडाकिनीयक्षगन्धर्ववेतालादिग्रहान् छिन्थि छिन्थि ।

End:

सर्वशत्रून् उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7560. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 14b of the MS. described under No. 7518.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं श्री ह्री क्ली ऐं श्रीसुदर्शन महाचक्रराज देवदेव जय जय
विजय विजय अपराजित अपराजित अप्रतिहत वीर वीर ज्वल ज्वल
दह हह पच पच सर्वदुष्टभयहर सर्वज्वरनिवारण सर्वज्वरविनाशन
छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि भज्ज भज।

End :

त्रिसुवनदावामनये कल्पान्तदहनाय श्रीमहाविष्णवे ओं क्लौं हन
हन हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon :

इति सुदर्शनमालामन्त्रः ॥

No. 7561. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 86 of the MS. described under No. 5822,
wherein it has been omitted to be shown as a separate work in the
list of other works.

Complete.

Similar to the above. There are two leaves in the end written
on in Tamil containing details regarding the conduct of the worship
relating to this Mantra.

Beginning :

ओं नमो भगवते श्रीसुदर्शनाय महाचक्राय महाज्वालाय दीपरूपाय ।

End :

ओं श्री ह्री क्ली ऐं सहस्रार हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7562. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 17b of the MS. described under No. 5822.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

सुदर्शनमालामन्त्रः—

श्री ह्री ह्री ऐ ओं सहस्रार हुं फट् । ओं नमो भगवते श्री-
सुदर्शनमालामन्त्रमहाचक्रराजाय देवदेव जय जय विजय विजय अप-
राजितापराजित अप्रतिहताप्रतिहत ।

End :

मां रक्ष रक्ष मम शत्रून्नाशय नाशय हन हन दह दह हुं फट्
स्वाहा ॥

Colophon :

सुदर्शनमालामन्त्रः समाप्तः ॥

No. 7563. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 3b of the MS. described under No. 2886,
wherein it is included in the Sudarśanamantra in the list of other
works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं [अस्य] श्रीसुदर्शन चक्रराज देवदेव जय जय विजय विजय
अनन्तानन्त अप्रतिहताप्रतिहत अनपायानपाय विकट विकट वीर वीर ।

End :

महाग्रहनिवारणाय श्रीमहाविष्णवे श्रूं शौं हन हन हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7564. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 7517.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओ ह्री की ऐं सुदर्शन महाचक्रराज देवदेव जय जय अपरा-
जितापराजित अप्रतिहताप्रतिहत

End :

अपरिमितदिव्याख्यवीर्यतेजो(जउ)त्पादनाय कल्पान्तदहनाय महा-
विष्णवे क्षमौ हन दह हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon :

श्रीमत्सुदर्शनमालामन्त्रः ॥

No. 7565. सुदर्शनमालामन्त्रः.

SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 187a of the MS. described under No. 424,
wherein it is given as Mahasudrasansprakaraṇam in the list of
other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power
of preventing the harm likely to be caused by evil spirits, serpents,
cruel animals, etc.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनमालामन्त्रस्य अहिवृद्धच ऋषिः, देवी गायत्री
छन्दः, श्रीसुदर्शनस्वरूपश्रीमन्नारायणो देवता; रं वीजं, हुं शक्तिः;
फट् कीलकं, रक्तवर्णप्रलयकालाभिज्वालासुदर्शनप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनि-
योगः ।

End :

ब्रह्मराक्षसभूतप्रेतपिशाचामुरब्रह्मराक्षसादीन् पृथिव्यसेजोवाय्वाकाशा-
दीन् सर्वदुष्टमुखज्वरचोरव्याप्रसर्पदीन् बन्ध बन्ध अचलम(हा)चलमहा-
वज्रकवचाख्य सुदर्शनाय सहस्रार हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7566. सुदर्शनमालामन्त्रः.
SUDARŚANAMĀLĀMANTRAH.

Page, 10. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 10^b of the MS. described under No. 5822, wherein it is given as Sudarśanōccāṣṭanamantra in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to be efficacious in driving off one's enemies and in securing protection to one from all dangers.

Beginning :

ओं ठं रं क्षीं ठं अं कों सहस्रार हुं फट् स्वाहा ।
ओं नमो भगवते सुदर्शन महाचक्रराज सर्वदुष्टभयङ्कर मां रक्ष
रक्षेनां रक्ष रक्ष मम शत्रूनुचाटयोचाटय ऐं की फट् स्वाहा ।

End :

ज्वालादीप्तरूपाय सर्वतो रक्ष मां महाज्वालामालाय स्वाहा हुं
फट् स्वाहा । सं आचक्रायाकुष्ठाभ्यां नमः
ज्वालाचक्राय वीर्यायास्त्राय फट् ॥

No. 7567. सुदर्शनषडकरीमन्त्रः.

SUDARŚANAṢADAKṢARTIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 14^a of the MS. described under No. 7518.

Complete.

The repetition of this Mantra consisting of six syllables is intended to propitiate Sudarśana. The Mantra proper is not, however, given in the manuscript.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनषडकरीमहामन्त्रस्य अहिर्बुद्ध्यो भगवानुषिः, अनु-
ष्टुप् छन्दः, सुदर्शनो महाविष्णुः देवता; ई वीजं, हं शक्तिः, फट्-
कीलंक, श्रीसुदर्शनप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

ध्यानम्—

शङ्खं चक्रं च चापं परशुमसिमिषु शूलपाशाङ्कुशामनीन्
विभ्राणं वज्रसेतं हलमुसलगदाकुन्तमत्युभ्रदद्यम् ।
ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिमं हारकेयूरभूषं
ध्यायेत् पट्टोणसंस्थं सकलरिपुजनप्राणसंहारचक्रम् ॥

मूलमन्त्रः ॥

No. 7568. सुदर्शनपदक्षरीमन्त्रः.

SUDARŚANASADĀKṢARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 14b of the MS. described under No. 6180.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसुदर्शनपदक्षरमहामन्त्राजस्य अहिरुद्धन्यो भगवानृषिः,
देवी गायत्री छन्दः, श्रीसुदर्शनस्वरूपश्रीमत्तारामणो देवता; सै बीजं,
हुं शक्तिः, फट् कीलकं, श्रीसुदर्शनप्राप्तिवर्ते जपे विनियोगः ।

End:

ओं बैलोक्यं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा । ओं नमो भगवते महा-
सुदर्शनाय हुं फट् ।

सुदर्शनाय विदहे महाज्वालाय धीमहि ।
तत्त्वशक्तः प्रचोदयात् ॥

No. 7569. सुदर्शनपदक्षरीमन्त्रः.

SUDAKṢANASADĀKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 36 of the MS. described under No. 2886,
wherein this is found in the Sudarśanamantra in the list of other
works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीमुदर्शनपडकारीमहामन्त्रस्य अहिर्बुद्ध्यमगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमुदर्शनरूपी महाविष्णुर्देवता, श्रीमुदर्शनमहाविष्णुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः, हां बीजं, हुं शक्तिः, फट् कीलकं, मुदर्शनप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

शहुं चकं च चापं परशुमसिमिषुं शूलपाशाङ्कशावजं
विभ्राणं वज्रस्तं हलमुसलगदाकुन्तमत्युग्रदण्डम् ।
ज्वालाकेशं लिनेत्रं ज्वलदनलनिमं हारकेयूरभूषं
ध्याये षट्काणसंस्थं सकलरपिजनप्राणसंहारचक्रम् ॥

* * * * *

भूतान् त्रासय त्रासय मा रक्ष रक्ष हुं फट् मुदर्शनाय स्वाहा ॥

No. 7570. **मुदर्शनाकर्षणमन्त्रः.**

SUDARŚANĀKARSĀNAMANTRAH.

Pages, 9. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 5822, wherein it has been omitted to be given as a separate work in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to enable one to forcibly bring one's enemies under subjection.

Beginning :

प्राणानायन्य, एवज्ञाणविशेषणविशिष्टायामस्यां शुभतिशौ श्रीभगव-
दाज्ञाया भगवत्कैङ्गर्यरूपं भूतशुद्धि करिष्ये ।

* * * * *

अस्य श्रीमुदर्शनमहामन्त्रस्य अहिर्बुद्ध्यो भगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमुदर्शनमहाविष्णुर्देवता ; हां बीजं, ह्री शक्तिः, फट् कीलकं, मुदर्शनमहाविष्णुप्रसादसिद्धर्थे जपे विनियोगः ।

End :

आगच्छागच्छ मम शत्रुनार्कपूर्याकर्पूर्य ही को आं वौषट् स्वाहा॥

No. 7571. **सुलोचनासिद्धिमन्त्रः.**

SULOCANASIDDHIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 251a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā 229a in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to a certain Yakṣinī named Sulōcanā; and its repetition accompanied with certain ceremonial acts is believed to have the power to propitiate her and make her confer on the worshipper a pair of sandals having certain mysterious supernatural powers.

Beginning :

षड्ङ्गन्यासं कुर्यात् । हेमप्राकारमित्यादिष्यानं पूर्ववत् ।

मन्त्रः—

ॐ सुलोचने सिद्धि देहि देहि स्वाहा ।

End :

शतपत्रोद्भवे(न)पुष्टे(ण) वृतयुक्तेन त्रिविंशतिसहस्रं होमं कुर्यात् ।

ततस्सुलोचना सिद्धा दधात्यादुक्योर्युगम् ॥

No. 7572. **सुलोचनासिद्धिमन्त्रः.**

SULOCANASIDDHIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 99a of the MS. described under No. 5566, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7573. सुवर्णभैरवमन्त्रः.

SUVARNABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 247b of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramalika 229a in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Suvarnabhairava; and its repetition is held to be efficacious in removing one's poverty.

Beginning :

अस्य श्रीसुवर्णभैरवमन्त्रस्य दूर्वास ऋषिः, गायत्री छन्दः, सुवर्णभैरवो देवता; वं बीजं, हि शक्तिः, मम दारिद्र्यहरणार्थं विनियोगः।

End :

ओं वं ह्रीं सुवर्णकृष्णाय मम दारिद्र्यापहाराय ह्रीं स्वाहा ॥

No. 7574. सुवर्णभैरवमन्त्रः.

SUVARNABHAIRAVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 97a of the MS. described under No. 5566, wherein it has been given as beginning on fol. 101.

Complete.

Same as the above.

No. 7575. सुवर्णभैरवमन्त्रः.

SUVARNABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 11b of the MS. described under No. 5828.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसुवर्णभैरवमहामन्त्रस्य [गायत्री छन्दः] भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सुवर्णकृष्णश्रीमहाभैरवो देवता; हों बीजं, ह्रीं शक्तिः, मम दारिद्र्यविनाशनसिद्धार्थं जपे विनियोगः।

End :

ओं वं रं द्रौं वं ही महाभैरवाय आपदुद्धारणाय अजामिलवन्ध-
नाय लोकेश्वराय सुवर्णाकर्पणाय दारिद्र्यापहरणाय हीं हीं हं लं स्वाहा ॥

No. 7576. सूर्यकवचः.

SŪRYAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 129.

Complete as found in the Skāndapurāṇa.

The repetition of this Mantra which is addressed to the sun-god is considered to be efficacious in removing diseases, in conferring on a person good health and in enabling him to accomplish his desires.

Beginning :

अस्य श्रीसूर्यकवचस्तोत्रमन्तस्य श्रीसूर्यनारायण ऋषिः, श्रीसूर्य-
नारायणो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, ह्रौं बीजं, ही शक्तिः, हं कीलकं,
मम समस्ताभीष्टसिद्ध्यर्थे शरीररोगसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

वृणिः पातु शिरो नित्यं ललाटं पातु भास्करः ।

अदिल्यो मे दृशौ पातु श्रोत्रे पातु दिवाकरः ॥

End :

समस्ताभीष्टसंप्राप्तिः सूर्यलोकं स गच्छति ।

सततं प्रातरुत्थाय सर्वरोगाद्विमुच्यते ॥

Colophon :

इति श्रीस्कान्दे पुराणे रोगनाशनरत्नाकरे सूर्यकवचस्तोत्रं संपू-
र्णम् ॥

No. 7577. सूर्यकवचः.

SŪRYAKAVACAH.

Pages, 9. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 6393.

Complete. This is also taken from the Skāndapurāṇa.

Similar to the above. Held also to have the power to propitiate the sun-god, to destroy one's enemies, to bring people under one's control and influence and to accomplish one's desires.

Beginning :

देवासुरैस्सदा वन्दे ग्रहैश्च परिवेष्टितम् ।

ध्यायन् पठेत्सुवर्णम् श्रीसूर्यकवचं सदा ॥

अस्य श्रीसूर्यकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य गिरेजा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसूर्यनारायणो देवता, मम सकलशत्रुक्षयार्थे इष्टकाभ्यार्थसिद्धचर्थे लोकवशीकरणार्थे श्रीसूर्यनारायणप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

End :

सूर्यभक्तिप्रसन्नात्मा यः करे धारयेत् मुखीः ।

मुक्त्वा तु सकलान् भोगान् सूर्यलोके प्रशस्यते ॥

उदयं ब्रह्मस्वरूपं मध्याह्नं च महेश्वरम् ।

अस्तमनं स्वयं विष्णुं त्रयीमूर्तिर्दिवाकरः(?) ॥

Colophon :

इति स्तोत्रकाकरे श्रीसूर्येकाण्डे रोगनाशाय स्कान्दपुराणे गौर्या प्रोक्तं श्रीसूर्यकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7578. सूर्यकवचः.

SŪRYAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 19^a of the MS. described under No. 5781.

Complete. Similar to the above.

This is also taken from the Skandapurāṇa.

Beginning :

अस्य श्रीसूर्यकवचस्तोत्रमन्त्रस्य गौतम ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसूर्यनारायणो देवता ।

देवासुरसदा बन्धं ग्रहैश्च परिवेष्टितम् ।
ध्यायन् पठन् मुवर्णाभं श्रीसूर्यकवचं सदा ॥

End:

सर्वान् कामानवामोति विष्णुलोके महीयते ।
सततं प्रातरुत्थाय पठेद्रोगाद्विमुक्तवान् ॥

Colophon:

इति स्तोत्ररत्नाकरे रोगनाशकस्कान्दपुराणे श्रीसूर्यकवचस्तोत्रं सं-
पूर्णम् ॥

No. 7579. सूर्यकवचः.
SURYAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 107a of the MS. described under No. 5661,
wherein it is given as Adityakavaca in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसूर्यकवचस्तोत्रमन्तस्य न्रक्षा ऋषिः, अनुष्ठप्त छन्दः,
श्रीसूर्यनारायणो देवता, मम सकलाभीष्टसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

देवासुरसदा सेव्यं ग्रहैश्च परिवेष्टितम् ।
ध्यायेत्यठेत्युवर्णाभं श्रीसूर्यकवचं मुदा ॥

* * * * *
पृष्ठिः पातु शिरोदेशं सूर्यः फालं दिवाकरः ।
ब्राणं पातु सदा भानुः अर्कः पातु मुखं तथा ॥

End :

संवत्सरमुपासित्वा मनस्सिङ्गं ब्रजेत्पुमान् ।
इदन्तु कवचं बद्धा विचरेद्विगतज्वरः ॥

Colophon:

श्रीसूर्यकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7580. सूर्यकवचः.

SURYAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 156 of the MS. described under No. 6045.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसूर्यकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य गिरिराज ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
आदित्यो देवता; ओं वीजं, श्री शक्तिः, नमः कीलकं, मम समस्त-
पापक्षयार्थं जपे विनियोगः ।

End :

सततं प्रातरुथाय यस्सूर्यकवचं पठेत् ।

सर्वशूलनिनाशाय सूर्यलोकसुपैति (स:) ॥

No. 7581. सूर्यकवचः.

SURYAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 246 of the MS. described under No. 5789,
wherein this work has been omitted to be mentioned in this list of
other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अधुना संप्रवद्यामि कवचं सर्वकामदम् ।
इदं तु कवचं बद्धा विचरेद्विगतज्वरः ॥
सौरस्य कवचस्यपिर्जगन्माता महेश्वरी ।
छन्दोऽनुष्टुप् देवतार्कं इष्टार्थं विनियुज्यते ॥

End :

सावित्रं कवचं प्रातर्मध्याहे वापि भास्करम् ।
पश्यन् पठेत् प्रतिदिनं पापजालैर्न लिप्यते ॥
इदं पठन्मस्कुर्यात् प्रातर्मध्याह्यो रविम् ।
सर्वान् कामानवाभोति तेजसार्कसमो भवेत् ॥

Colophon:

इति सूर्यकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7582. सूर्यकवचः
SUBYAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 5938

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

देवासुरैस्सदा बन्धं ग्रहैश्च परिवेष्टितम् ।
ध्यायन् पठेत्सुवर्णामं श्रीसूर्यकवचं सुधीः ॥

अस्य श्रीसूर्यकवचस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
सूर्यनारायणो देवता, सर्वज्ञाधिविनाशनरोगहरणे भम समस्तपापक्षयार्थं
श्रीसूर्यनारायणप्रीत्यर्थे विनियोगः ।
वृणिः पातु शिरो नित्यं ललाटं पातु भास्करः ।

End:

पूर्वमेतत्कृतं गौर्या विचिन्त्याखिलकामदम् ।
कवचं प्रातरुत्थाय पठन् रोगैर्विमुच्यते ॥

No. 7583. सूर्यकवचः
SUBYAKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 831.

Complete as found in the Skandapurāṇa.

Similar to the above.

Beginning:

देवासुरैस्सदा बन्धं ग्रहैश्च परिवेष्टितम् ।
ध्यात्वा पठेत् सुवर्णामं श्रीसूर्यकवचं सदा ॥

End:

सर्वसिद्धिमवाप्नोति विष्णुलोकं महीयते ।
सततं प्रातरुत्थाय पठन् रोगात् ममुच्यते ॥

Colophon :

इति स्कान्दपुराणे सूर्यकवचम् ॥

No. 7584. सूर्यकवचः.
SŪRYAKĀVACAH.

Pages, 4. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 47b of the MS. described under No. 6101, wherein it has been wrongly stated to begin on fol. 46a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसूर्यकवचस्तोत्रमन्त्रस्य अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसूर्यनारायणो
देवता, मम समस्तपापक्षयाथै श्रीसूर्यनारायणप्रीत्यर्थे विनियोगः ।

End :

इदं मे प्र(पूर्वमेतत)कृतं गौर्या विचिन्त्यास्तिलकामदम् ।
सततं प्रातस्त्वाय सर्व(पठन)रोगाद्विमुच्यते ॥

For the colophon, see under the previous number.

No. 7585. सूर्यग्रहमन्त्रः.
SŪRYAGRAHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 12b of the MS. described under No. 5864, wherein this is given under the name of Ādityagrahamantra in the list of other works.

Complete.

This is the same as the Sauramantra. This Mantra is also addressed to Sūrya. It differs somewhat from that which is found in the 15th Anuvāka in the 6th Prapāṭhaka of the Taittiriya Āraṇyaka.

Beginning :

अस्य श्रीआदित्यमन्त्रस्य वज्ञा ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यादि-
त्यो देवता; ह्रां बीजं, ह्री शक्तिः, ह्रू कीलकः; श्रीशरभसाल्वप्र—गः ।

End :

वृणिसूर्य आदिलो न प्रभावात्यश्शरम् मधु शरन्ति तदसं सत्यं
नैतद्रसमापो ज्योती रसोऽसृतं ब्रह्म भूर्मुखस्मुवरो ॥

No. 7586. सूर्यनमस्कारमन्त्रः.

SŪRYANAMASKĀRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 121a of the MS. described under No. 5681.

Complete.

This Mantra is repeated during the performance of the reverential prostration before the sun-god, which form of worship is considered to be efficacious in removing all diseases from one's body and in wiping off one's sins.

Beginning :

शुर्क भागवते व्यासं वेदे वत्ते च तद्गुरुम् ।

तरिपतामहमाचारे वन्दे आकृष्णदोषिकम् ॥

एवङ्गुणतिथौ मम समस्तपापक्षयार्थै मम शरीरे वर्तमानवर्तिष्य-
माणसूचितआगामिसमस्ताविन्याध्यादिरोगानिवृत्यर्थै श्रीआयासमेतश्रीसूर्य-
नारायणप्रीत्यर्थै सूर्यनमस्कारान् करिष्ये—

ओ हाँ ही हूँ हैं हौं हः उद्घन्ध मित्रमहः ।

End :

घातार्यमा च मित्रश्च वरुणोऽशर्म(शो भ)गस्तथा ॥

विवस्वदिन्द्रौ पूषा च पर्जन्यश्च तथैव च ;

त्वष्टा च विष्णुरित्येवं नामानि हादशात्मनः ॥

No. 7587. सूर्यनारायणकवचः.

SŪRYANĀRĀYĀNAKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 2373.

Complete. This Mantra is taken from the Skāndapurāṇa.

Similar to No. 7576.

Beginning:

अस्य श्रीसूर्यनारायणकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्ठप्तं
छन्दः, श्रीसूर्यनारायणो देवता; हाँ बीजं, ही शक्तिः, हूँ कीलकं,
श्रीसूर्यनारायणप्रसादसिद्धयर्थे प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

* * * * *

आदित्यो मे शिरः पातु ललाटं पातु भास्करः।

प्राणं पातु सदा सूर्यः श्रुतीं पातु दिवाकरः॥

End:

इदं सूर्यं प्रगे नत्वा यः करे धारयिष्य(ति)।

. . . . श्रीसूर्यलोकं स गच्छति॥

Colophon:

इति स्कन्दपुराणे आदिकाण्डे उभामहेश्वरसंवादे श्रीसूर्यनारायण-
कवचं समाप्तम्॥

No. 7588. सूर्यनारायणकवचः.

SŪRYANĀRĀYANAKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 365.

Complete.

Same as the above.

No. 7589. सूर्यनारायणकवचः.

SŪRYANĀRĀYANAKAVACAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 36b of the MS. described under No. 5937.

Complete as found in the Skandapurāṇa.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसूर्यनारायणकवचस्तोत्रमन्त्रस्य गौतम ऋषि, अनुष्टुप्
छन्दः, श्रीसूर्यनारायणो देवता; ह्रीं बीजं, ह्रां शक्तिः, श्रीसूर्यनारायणेणि
कीलकं, श्रीसूर्यनारायणप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

* पातु शिरो * नित्ये ललाटं पातु भास्करः ।
आदित्यो मे दृशी पातु ओत्रे पातु दिवाकरः ॥

End :

पृष्ठासं सर्वकार्यार्थं संवत्सरमुपासितम् ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ॥

Colophon :

इति स्कन्दपुराणे सूर्यनारायणकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7590. सूर्यनारायणमन्त्रः.

SURYANĀRĀYANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 85b of the MS. described under No. 235,
wherein it has been wrongly stated to begin on fol. 86a.

Complete.

The repetition of this Mantra, followed by the pouring of
oblations of water, is believed to have the power to propitiate the
sun-god who is conceived as Nārāyaṇa.

Beginning :

एवं गु . . शुभातिथौ मम दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं श्रीसूर्य-
नारायणमुद्दिश्य श्रीसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं पुरश्रणाङ्गतपूर्णं करिष्ये ।

End :

आदित्याय स्वाहा—सूर्योदें न मम । श्रीसूर्यनारायणश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

No. 7591. सूर्यमन्त्रः.

SŪRYAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 310a of the MS. described under No. 5477, wherein this is included in the Mantramālikā (Ākashabhairavakalpa) 273a mentioned in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra, followed by a fire-offering, is considered to have the power to propitiate the sun-god.

Beginning :

अस्य श्री-आदित्यमन्त्रस्य हिरण्य ऋषिः, विष्णुपु छन्दः, सविता
देवता, मम सूर्यप्रसादसिद्धचर्ये विनियोगः ।

End :

ओं ह्रां आदित्याय नमः । लक्ष्मी जपः । दशांशहोमः ॥

No. 7592. सूर्याष्टाक्षरमन्त्रः.
SŪRYĀSTĀKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 29a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

This Mantra consists of eight syllables, and is taken from the 15th Anuvāka in the 6th Prapāthaka of the Taittiriya Āranyaks. The syllable Om, occurring both in the beginning and in the end, is not to be taken as forming part of the Mantra proper.

Beginning :

ओं वृणिस्त्रूर्य आदित्य ओं इति प्राणायामः १२ ।

* * * * *

अस्य श्रीसूर्याष्टाक्षरमन्त्रस्य कौशिक ऋषिः, देवभाग ऋषिवा,
गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता, सूर्यप्रेरणया सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

सूर्यप्रेरणया सूर्यप्रीत्यर्थे सूर्यमहामन्त्रजपङ्करिष्ये । ओं वृणिस्त्रूर्य
आदित्यः ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No 7593. सौभाग्यकवचम्.

SAUBHĀGYAKAVACAM.

Substance, paper. Size, $9\frac{1}{4} \times 7\frac{1}{4}$ inches. Pages, 10. Lines, 20 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 121a. The other works herein are Daksināmūrti-samhitā 1a, Bhuvanēśvarikacchapaṭa 65a, Mahalakṣmiratnakōśa 105a, Gāyatrieakra 126a, Navacandipūja 132a, Divyamangala-dhyāna 137a.

Complete as found in the Nityaśōḍaśikarnava forming part of the Vāmakeśvara-tantra.

This Kavaca-mantra is addressed to Tripurasundari; and its repetition is considered to have the power of conferring prosperity on the worshipper and of bringing under his control all the three worlds.

Beginning :

कैलासशिखरे रम्ये मुखासीनं सुरार्चितम् ।

गिरीशं गिरिजा स्तुत्वा स्तोत्रैवेदान्तपारगैः ॥

* * *
एतसौभाग्यकवचं रहस्यातिरहस्यकम् ।

सौभाग्यदायकम् ॥

वाक्यम्—

अस्य श्रीसौभाग्यकवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, अ-
नुष्टुप् छन्दः, सौभाग्यमुन्दरी देवता; एं क्षी सौः बीजं, ही क्षी शक्तिः,
आं हीं कों कीलकं, मम सौभाग्यसिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

* * *
शिखाग्रे सततं पातु नमस्ति(मम त्रिपुरमुन्दरी) ।

शिरः कामेश्वरी नित्या तत्पूर्वं भगमालिनी ॥

End :

वश्यं भवतु(ति) शीत्रिण त्रैलोक्यं सच्चराचरम् ।

आचालमहिला मूपाः किमु मायाविमोहिताः ॥

Colophon :

इति वामकेश्वरतन्त्रे नित्यापोदशिकार्णवे सौभाग्यकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7594. सौभाग्यकवचम्.

SAUBHĀGYAKAVACAM.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 55a of the MS. described under No. 2886.

Complete as found in the Nityāśōdasikārnava.

Similar to the above.

Beginning :

कैलासशिखेरे रम्ये मुखासीनं मुराच्चितम् ।
गिरीशं गिरिजा नत्वा स्तोत्रैवेदार्थगमितैः ॥
प्रणम्य परया भक्त्या ततोऽपृच्छत्कृताञ्जलिः ।

* * * * *

ईश्वर उवाच—

एतसौभाग्यकवचं रहस्यानिरहस्यकम् ।
सौभाग्यकवचं देवि शृणु सौभाग्यदं परम् ॥
शिखायां (सां मे)सततं पातु महात्रिपुरसुन्दरी ।
शिरः कामेश्वरी नित्या तत्पूर्वं भगमालिनी ॥

End :

वश्यं भवति शीघ्रेण त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
मूपालमहिला मूपा म(म)ायाविमेहिताः ॥

Colophon :

इति नित्यापोदशिकार्णवे सौभाग्यकवचं समाप्तम् ॥

No. 7595. सौभाग्यकवचम्.

SAUBHĀGYAKAVACAM.

Pages, 3. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 241a of the MS. described under No. 124, wherein it is given under the name of Lalitakavaca in the list of other works.

Complete as found in the 33rd Patala of the Nityasōdasi-kārnava forming part of the Vāmakēśvaratantra.

Similar to the above.

Beginning :

इषुकोदण्डपुष्पेषुपाशाङ्कुशचर्तुभुजाम् ।
उधत्सूर्यनिमां वन्दे महात्रिपुरसुन्दरीम् ॥
कैलासशिखरे रम्ये सुखासीनं मुरार्चितम् ।
गिरीशं गिरिजा नित्यं स्तोत्रैवेदार्थगर्भितैः ॥
प्रणन्त परवा भक्त्या तमपृच्छत् कृताश्रया ।

* * * * *
सौभाग्यकवचं देवि शृणु सौभाग्यदायकम् ।
शिखाप्रे(खां मे) सततं पातु महात्रिपुरसुन्दरी ॥
शिरः कामेश्वरी नित्यं पूर्वं तु भगमालिनी ।
नित्यकिंजा तु तद्वक्तं भेरुण्डी पश्चिमं शिरः ॥

End :

वश्यं भवति श्रीब्रिण त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
भूपालमस्ति(हि)ला भूपाः किमुपाया विमोहिताः ॥
महापदाश्च पदाश्च शङ्को मकरकच्छपौ ।
मुकुन्दकुन्दनीलाश्च वराश्च निधयो नव ॥

Colophon :

इति श्रीवामकेश्वरतन्त्रे नित्यापोडशिकाण्डे सौभाग्यकवचं नाम
त्रयखिलः पटलः ॥
श्रीसौभाग्यकवचं संपूर्णम् ॥

No. 7596. सौभाग्यकवचम्.

SAUBHĀGYAKAVACAM.

Pages, 10. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 37a of the MS. described under No. 424.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

Same as that of the above with the first stanza omitted.

End :

तत्पादकमलासक्तरजोलेशानि(भि)मर्शनात् ॥
प(व)श्यान्ति वनिता(:) शीर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
भूपालमहिला भूपा: किमु मायाविमोहिता: ॥

Colophon :

इति श्रीवामकेश्वरतन्त्रशाखे षोडशार्णवे सौभाग्यकवचं नाम त्रय-
खिशः पटलः समाप्तः ॥

No. 7597. सौभाग्यविद्यामन्त्रः.

SAUBHĀGYAVIDYĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 4b of the MS. described under No. 673, wherein this Mantra is included in the Sadamnaya 1a given in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra is believed to have the power to propitiate Tripurasundari and to bestow prosperity on the worshipper.

Beginning :

अस्य श्रीसौभाग्यविद्यामहामन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः, अमृत-
विराट् छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता; क ए ई ल ही बीजं, ह
स क ह ल ही शक्तिः, स क ल ही कीलकं, मम श्रीमहात्रिपुर-
सुन्दरीप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

क ए ई ल ही ह स क ह ल ही स क ल ही सौभाग्य-
वाश्रीपा—नमः ॥

No. 7598. सौभाग्यविद्यामन्त्रः.
SAUBHĀGYAVIDYĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 22a of the MS. described under No. 5852.

Complete.

Similar to the above.

Held also to have the power to enable one to accomplish the four Puruṣarthas or principal aims of life, viz., Dharma, Artha, Kama and Mokṣa.

Beginning :

अस्य श्रीसौभाग्यविद्येश्वरीब्रह्मविद्यामहामन्त्रस्य परमानन्दभैरव ऋषिः
गायत्री छन्दः, श्रीसौभाग्यविद्येश्वरी ब्रह्मविद्या देवता; एं क ए ई ल
ही बीजं, क्षी ह स क ह ल ही शक्तिः, सौः स क ल ही कीलकं,
श्रीसौभाग्यविद्येश्वरीब्रह्मविद्याप्रसादसिद्ध्यर्थं मम चतुर्विंशकलपुरुषार्थं जपे
विनियोगः।

End :

क ए ई ल ही ह स क (ह)ल ही स क ल ही ॥

No. 7599. सौभाग्यविद्यामन्त्रः.
SAUBHĀGYAVIDYĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 170a of the MS. described under No. 5873, wherein it is given as Saubhāgyavidyāmālāmantra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसौभाग्यविद्यामहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पद्मिश्वरन्दः,
वोद्दास्वरूपा श्रीपराम्बा देवता; एं क ए ई ल ही बीजाय नमः,
क्षी ह स क ह ल ही शक्तये नमः, सौः स क ल ही कीलकाय
(नमः), श्रीमहात्रिपुरमुन्दरीप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

End :

सकुङ्कमविलेपनामलिकचुम्बिकरतूरिका
 समन्दहसितेक्षणां सशरचापपाशाङ्कशाम् ।
 अशेषजनमोहिनीमरुणमालयभूषाम्बरां
 जपाकुमुमभासुरां जपविधौ स्मरेदम्बिकाम् ॥
 पञ्चपूजां कुर्यात् ॥

No. 7600. सौभाग्यविद्यामन्त्रराजमन्त्रः.

SAUBHĀGYAVIDYĀMANTRARĀJAMANTRAḥ.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 230a of the MS. described under No. 124, wherein this is included in the Śadāmnaya 2286 contained in the list of other works. .

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अथ दक्षिणान्नायः ।

सौभाग्यविद्या वगला वाराही बदुकस्तथा ।

श्रीतिरस्करिणी प्रोक्ता दक्षिणान्नायदेवताः ॥

* * * * *

अस्य श्रीसौभाग्यविद्यामन्त्रराजमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः,
 पाञ्चश्छन्दः, सौभाग्यविद्येश्वरी ब्रह्मविद्याम्बा देवता ; एं क ए ई ल
 ही बीजं, सौः स क ल ही शक्तिः, की ह स क ह ल ही कौलकं,
 मम सौभाग्यविद्येश्वरीब्रह्मविद्याम्बाप्रसा—गः ।

End :

ओं क ए ई ल ही ह स क ह ल ही स क ल ही सौ-
 भाग्यविद्येश्वरीब्रह्मविद्याम्बादिव्यश्री—मः ॥

No. 7601. सौभाग्यविदेश्वरीमन्त्रः.

SAUBHĀGYAVIDYĒŚVARIMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 5673, wherein this is included in the Āmnāyamantramālikā 1a given therein in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Saubhāgyavidyēśvari or Tripurasundari and consists of 15 syllables. Its repetition is intended to propitiate that goddess.

Beginning :

अस्य श्रीसौभाग्यविदेश्वरीराजराजेश्वरीति पुरसुन्दरीब्रह्मविद्यापददशाश्च-
रीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पक्षिश्छन्दः, श्रीसौभाग्यविदेश्वरी ब्रह्म-
विद्या त्रिपुरसुन्दरी देवता; क ४ बीजं; स ३ शक्तिः, ह १ कीलकं,
मम श्रीसौभाग्यविदेश्वरीराजराजेश्वरीति पुरसुन्दरीब्रह्मविद्यापददशाश्चरीप्रसा-
दसिद्धार्थं जपे विनियोगः।

End :

मनुः—

क ४, ह ५, स ३, श्रीसौभाग्यविद्याम्बा श्री।

No. 7602. सौभाग्यविदेश्वरीमन्त्रः.

SAUBHĀGYAVIDYĒŚVARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 42a of the MS. described under No. 5673, wherein this is included in the Āmnāyamantramālikā 1a given in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसौभाग्यविदेश्वरीराजराजेश्वरीति पुरसुन्दरीब्रह्मविद्यापददशा-
श्चरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पक्षिश्छन्दः, श्रीसौभाग्यविदेश्वरी

ब्रह्मविद्या पञ्चदशाक्षरी देवता; ऐं क ४ बीजं, सौः स ३ शक्तिः,
क्ली ह ५ कीलकं, मम श्रीसौभाग्यविद्येश्वरीराजराजेश्वरीप्रसादसिद्धचर्ये
जपे विनियोगः।

End :

पञ्चपूजा। ऐं क ४, क्ली ह ५, सौः स ३, श्रीसौभाग्यविद्या-
श्री।

ऐं क ४, क्ली ह ५, सौः स ३, ईशानाय नमः—मृगि...
सद्योजाताय नमः—पादयोः॥

No. 7603. सौभाग्यविद्येश्वरीमन्त्रः.

SAUBHĀGYAVIDYĒŚVARIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 6b of the MS. described under No. 5686.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसौभाग्यविद्येश्वरीपरब्रह्मविद्यामहामन्त्रस्य आनन्ददासि-
णामृतिभैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसौभाग्यविद्येश्वरी देवता; ऐं
बीजं, क्ली शक्तिः, सौः कीलकं, मम सौभाग्यविद्येश्वरीप्रसादसिद्धचर्ये
जपे विनियोगः।

End :

मूलम्—

ओं श्री क ए ई ल ह्री ह स क ह ल ह्री स क ल ह्री सौः

* * * *

अनन्तकोटिमन्त्ररूपिणि अनन्तमृति परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा
संविन्मन्त्रमयमेव किञ्चिदधिकं भवति ॥

No. 7604. सौभाग्यविद्येश्वरीमन्त्रः.

SAUBHĀGYAVIDYĒŚVARIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 56a of the MS. described under No. 5661.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसौभाग्यविद्येश्वरीब्रह्मविद्यात्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्रस्य परब्रह्म
ज्ञातिः, गायत्री छन्दः, श्रीसौभाग्यविद्येश्वरी ब्रह्मविद्या त्रिपुरसुन्दरी देवता ;
क ए ई ल ही बीजं, ह स क ह ल ही शक्तिः, स क ल ही
कीलकं, मम सौभाग्यविद्येश्वरीब्रह्मविद्यात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्धये जपे
विनियोगः ।

End :

वं अमृतात्मकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै सौभाग्यविद्येश्वरि अमृतनैवेद्यं
कल्पयामि ।

मनुः—

क ए ई ल ही ह स क ह ल ही स क ल ही ॥

No. 7605. सौरचतुरक्षरीमन्त्रः.

SAURACATI RAKṢARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 291b of the MS. described under No. 5477,
wherein it is contained in the Mantramalika (Ākāśabhairavakalpa) 278a given in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra consisting of four syllables is
considered to have the power to propitiate the sun-god.

Beginning :

अस्य श्रीसौरचतुरक्षरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ज्ञातिः, गायत्री छन्दः,
सूर्यात्मिका भुवनेश्वरी देवता, ओं बीजं, ही शक्तिः, श्रीसौरप्रीत्यर्थे
विनियोगः ।

End :

ओं ह्रीं हं सः । जपहोमः पूर्ववत् ॥

No. 7606. सौरचतुरक्षरीमन्त्रः.

SAURACATURAKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 247a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā 229a given in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7607. सौरचतुरक्षरीमन्त्रः.

SAURACATURAKṢARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 96b of the MS. described under No. 5566, wherein it has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7608. सौराष्ट्राक्षरीमन्त्रः.

SAURĀSTĀKṢARIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 12b of the MS. described under No. 5686.

Complete

This is the eight-syllabled Mantra addressed to the sun-god, and is taken from the 15th Anuvāka in the 6th Prapāthaka of the Taittiriya Āranyaka. Its repetition is intended to secure the favour of the sun-god conceived as Nārāyaṇa.

Beginning :

अस्य श्रीसौराष्ट्र(षाक्षरी)महामन्त्रस्य सवितृभगवानृषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, श्रीसूर्यनारायणो देवता, श्रीसूर्यनारायणप्रसादसिद्धचर्थे जपे
विनियोगः ।

End :

गोजा ऋतजा अदिजा ऋतं वृहत् । ओं श्री ह्री वृणिस्सर्य
आदित्यो ॥

No. 7609. सौराष्ट्राक्षरीमन्त्रः.

SAURĀSTĀKṢARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 36b of the MS. described under No. 5673, wherein it is included in the Āmnāya-mantramālikā given in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसौराष्ट्राक्षरीमन्त्रस्य भगवानुषिः, गायत्री छन्दः, श्री-
सूर्यनारायणो देवता, वृणिरिति बीजं, सूर्येति शक्तिः, आदित्येति
कीलकं, मम श्रीसूर्यनारायणप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—

वृणिस्सर्य आदित्य ओं । सौरमयविद्याश्री इति हृदये च पूजयेत् ॥

No. 7610. सौराष्ट्राक्षरीमन्त्रः.

SAURĀSTĀKṢARIMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 39a of the MS. described under No. 5937.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसौराष्ट्राक्षरीमहामन्त्रस्य काशयप ऋषिः, विष्णुप छन्दः,
श्रीसूर्यनारायणो देवता; वृणिरिति बीजं, सूर्येति शक्तिः, आदित्योभिति
कीलकं, श्रीसूर्यनारायणप्रीत्यर्थे विनियोगः ।

End :

रं वह्यात्मने भानवे नमः—दीपं, वं अमृतात्मने हिरण्यगर्भाय
नमः—नैवेद्यम् ॥

No. 7611. सौराष्ट्राक्षरीमन्त्रः.
SAURĀSTĀKSARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 291 α of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā (Ākashabhairavakalpa) 273 α , mentioned in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीसौराष्ट्राक्षरीमन्त्रस्य देवभाग ऋषिः, गायत्री छन्दः,
सूर्यो देवता; ओं बीजं, व्यं शक्तिः, सौराष्ट्राक्षरीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

End

चृणिस्तर्य आदित्योः । चतुर्लक्ष्मजपपुनश्चरणम् । अयुतहोमः ॥

Colophon :

इति सौराष्ट्राक्षरी ॥

No. 7612. सौराष्ट्राक्षरीमन्त्रः.
SAURĀSTĀKSARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 247 α of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā 229 α .

Complete.

Same as the above; but there is no colophon.

No. 7613. सौराष्ट्राक्षरीमन्त्रः.
SAURĀSTĀKSARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 96 b of the MS. described under No. 5566, wherein it is wrongly stated in the list of other works to begin on fol. 100.

Complete.

Same as the above.

No. 7614. सौराष्ट्राक्षरीमन्त्रः.
SAURĀSTĀKSARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 371.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीसौराष्ट्राक्षरीमहामन्त्रस्य देवो भगवान्मृषिः, अनुष्टुप् छन्दः
श्रीसूर्यनारायणो देवता; वृणिरिति बीजं, सूर्य इति शक्तिः, आदित्य
इति कीलकं, श्रीसूर्यनारायणप्रसादासिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

End:

श्री ह्री क्षी वृणिस्सूर्य आदित्यों क्षी ह्री श्री पचोपचारैसंपूज्य ॥

No. 7615. सौराष्ट्राक्षरीमन्त्रः.
SAURĀSTĀKSARIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 2886.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीसौराष्ट्राक्षरीमहामन्त्रस्य देवभाग ऋषिः, गायत्री छन्दः,
सूर्यनारायणो देवता; वृणिरिति बीजं, सूर्य इति शक्तिः, आदित्यो-
मिति कीलिकं, सूर्यनारायणप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

End:

मूलम्—

ऐं ह्री श्री वृणिस्सूर्य आदित्यों श्री ह्री ऐ॥

No. 7616. स्कन्दमन्त्रः.
SKANDAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 29a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to Skanda or Subrahmanya, is considered to have the power to enable one to secure the favour of that god.

Beginning:

गुरुनमस्कारः । ओं रं (सं) स्कन्दाय नमः इति प्राणायामः १२ ।

* * * *

अस्य श्रीस्कन्दमन्त्रस्य कौशिक ऋषिः, गायत्री छन्दः, स्कन्दो
देवता, स्कन्दप्रेरणया स्कन्दप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

End:

स्कन्दप्रेरणया स्कन्दप्रीत्यर्थे स्कन्दमहामन्त्रजपे करिष्ये ।

ओं (सं) स्कन्दाय नमः ओं इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7617. स्कन्दमन्त्रः.

SKANDAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 45a of the MS. described under No. 2886,
wherein this is found in the Akashabhairavakalpa 3^a mentioned
in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

The repetition of this Mantra is believed to have the power to
enable one to win success in life.

Beginning:

स्कन्दस्य काश्यप ऋषिः, त्रिष्टुप, सुव्रश्णयः, सां बीजं, लं श,
विजयाय ।

End:

सूक्ष्मारं पूर्वमुच्चार्भं सुव्रश्णयाय तत्परम् ।

वहिजायासमोपेतं मन्तुमष्टाकारं परम् ॥

Colophon:

इति षष्ठितमोऽध्यायः ॥

No. 7618. सुब्रह्मण्यकवचम्.
SUBRAHMANYAKAVACAM.

Pages, 4. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 306b of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā (Ākashabhairavakalpa) 273a.

Complete.

This Kavaca-mantra is addressed to Subrahmanya with a view to secure his protection. Its repetition is considered to have the power of destroying one's sins, removing all kinds of diseases and troubles and of conferring prosperity on one.

Beginning :

अरित गुणं महापूष्यं सर्वप्राणिविधारकम् ।
जपमात्रेण पापभ्रं सर्वकामफलभ्रदम् ॥
मुनीन्द्राणामिदं दैवं सर्वपीडानिवारकम् ।
स्कन्दस्य कवचं सेव्यं पठनाद्वयाधिनाशनम् ॥
* * * * *
शिखां रक्षेत् कुमारश्च कार्तिकेयदिशरस्तथा ।
ललाटं पार्वतीसूनुर्विशाखो श्रूयुगं तथा ॥

End :

स्कन्दस्य कवचं नित्यं शृणुयादपि सर्वदा ।
सर्वभास्यानि संप्राप्य शिवसायुज्यमामृयात् ॥

Colophon :

इति सुब्रह्मण्यकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 7619. सुब्रह्मण्यपञ्चदशाक्षरीमन्त्रः.

SUBRAHMANYAPĀNCADAŚĀKSARIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 207a of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā (Ākashabhairavakalpa) 273a.

Complete.

This Mantra consists of 15 syllables and is addressed to Subrahmanyā. The chief aim of this Mantra is to secure the protection of Brahmins.

Beginning:

अस्य श्रीसुब्रह्मण्यपवदशाक्षरीमन्त्रस्य अमृताकर्षणदक्षिणामूर्तिः
ऋषिः, गायत्री छन्दः, प्रसन्नस्कन्दो देवता, स्वां वीजं, ही शक्तिः,
प्रसन्नस्कन्दप्रसादसिद्धयर्थे विनियोगः ।

End:

मन्त्रः—

ओ श्री क्षी ही ऐ ई णं स्वां शरवणभव(य) इति पवदशा-
क्षरोऽयं मन्त्रः विप्रक्षाप्रधानः ॥

Colophon:

इति सुब्रह्मण्यपवदशाक्षरी ॥

No. 7620. सुब्रह्मण्यमालामन्त्रः.

SUBRAHMANYAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 2424, wherein it is given under the name of Subrahmanyā-mantra.

Complete.

This Mantra is in praise of Subrahmanyā under different significant names.

Beginning:

ओन्मो भगवते अधोरसुब्रह्मण्याय महाचलपराकमाय कौञ्जिरि.
मर्दनाय त्रयस्त्रिशत्कोटिदेवताबन्धनाय ।

End:

शक्तिधराय शिखिवाहनाय कुमाराय कुडुमवर्णाय कुकुटध्वजाय
ओ फट् स्वाहा ॥

No. 7621. स्तेनवाग्बन्धनमन्त्रः.

STENAVĀGBANDHANAMANTRAH.

Pages, 1. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 14α of the MS. described under No. 6045, wherein it is called *Stenavāgbandhanarājavarākaraṇamāntra*.

Complete.

The repetition of this Mantra is considered to have the power to enable one to seal the mouth of thieves.

Beginning :

ॐ शुभ्रं रुद्राम् शुभ्रं रुद्राम् शुभ्रं रुद्राम् शुभ्रं रुद्राम् ॥

End :

ओं नमो भगवति शिष्ठानुशिष्ठे वा चामुण्ड स्वाहा ॥

No. 7622. स्फोटकीमन्त्रः.

SPHŪTAKIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 14α of the MS. described under No. 5828.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate the presiding deity of small-pox and other such diseases.

Beginning :

अस्य श्रीमहास्फोटकीमन्त्रस्य कालमृत्युः ऋषिः, ज्वालामुखी जगती छन्दः, श्रीमहास्फोटकी देवता; हं बीजं, हुं शक्तिः, क्षी कीलकं, मम महास्फोटकीप्रसादसिद्धचर्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं ह्री शितबे शितबे स्वाहा । ओं रुद्र अष्टदुष्टमुष्टि भट् भट् रि ब्रह्म स्वाहा ॥

No. 7623. स्मरादिमातृकामन्त्रः.

SMARĀDIMĀTRKĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 65b of the MS. described under No. 424.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while repeating the Mantra-formulas obtained by introducing the successive letters of the alphabet after ऐ, ही, ओ, की. The presiding deity of this Mantra is conceived to be the Mother of the Universe.

Beginning :

अस्य श्रीसारादिमातृकामन्त्रस्य संमोहन ऋषिः, गायत्री छन्दः,
जगन्नामाता देवता, पद्मदीर्घस्वरयुक्तेन सरेणाङ्गानि ।

End :

ऐ ही श्री की क्षं काममदनश्चोन्मत्ताभ्यां नमः ।
एतैर्मातृकास्थोनेषु र(व)र्णेषु इक्षुचापपुण्यबाणवराः पद्मतामूलभा-
रिणीभिशक्तिभिराक्षिष्ठा ध्येयाः—इति कामरतिन्यासः ।

No. 7624. स्वप्नवाराहीमन्त्रः.
SVAPNAVĀRĀHIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 35a of the MS. described under No. 5858.

Complete.

This Mantra is addressed to Svapnavārāhī who, as implied in her name, reveals, in dreams, past as well as future events.

Beginning :

अस्य श्रीस्वप्नवाराहीमहामन्त्रस्य सज्जय ऋषिः, गायत्री छन्दः,
वार्ताली देवता; ओं वीजं, ऐं शक्तिः, ग्लौं कीलकं, ममातीतानागतं
चैव वदति स्वप्नरूपिणी । ओं ऐं ग्लौं वद वद वाराही विश्वमयी हुं
फट् स्वाहा ।

End :

नमो ज्योतिर्मयी देवी ज्ञानविज्ञानरूपिणी ।
अतीतानागतं चैव वरदे(द मे) स्वप्नरूपिणी ॥
शुद्धोदकेन तर्पणं त्रिमधुयुक्तेन हवनम् ॥

No. 7625. स्वप्नवाराहीमन्त्रः.
SVAPNAVĀRĀHIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1b of the MS. described under No. 5686.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीस्वप्नवाराहीमहामन्त्रस्य अग्निः ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री-
स्वप्नवाराही देवता ; ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, औं कीलकं, मम श्री-
स्वप्नवाराहीप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

स्वप्ने शुभाशुभं भावि शंसन्ती भक्तकर्णयोः ।
दुःस्वप्नहारिणी वन्दे वाराहीं स्वप्ननायिकाम् ॥

मूलम्—

ओ ह्रीं नमो वाराहि धोरे स्वप्नं ठ ठ स्वाहा ॥

No. 7626. स्वप्नवाराहीमन्त्रः.
SVAPNAVĀRĀHIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 27 on a page.

Begins on fol. 233b of the MS. described under No. 581,
wherein it is found in the Mantramālikā 229a mentioned in the
list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Also held to be efficacious in causing the accomplishment of
one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीस्वप्नवाराहीमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, विराट् छन्दः, स्वप्न-
वाराही देवता ; ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, प्रणवं कीलकं, ममेष्टका-
म्यार्थं विनियोगः ।

End:

ओं ह्री नमो वाराहिके धोरे स्वमं वद स्वाहा ।

ततो जपं प्रकुर्वीत सहस्राष्टोत्तरं शुभम् ।

पूर्वे तु कुम्भकं कृत्वा ततस्सिद्ध्यति साधकः ॥

स्वमे माणवकान् पश्यच्छुभाशुभानिदर्शनम् ।

जपेत्संवत्सरं चैव सर्वज्ञत्वं च सिद्धयेत् ॥

No. 7627. स्वमवाराहीमन्त्रः.

SVAPNAVĀRĀHĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 88 b of the MS. described under No. 5566, wherein it is wrongly stated as beginning on fol. 88 a . in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7628. स्वमवाराहीमन्त्रः.

SVAPNAVĀRĀHĪMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 171 b of the MS. described under No. 124.

Complete.

Similar to the above. Held also to have the power to enable one to defeat the aims of one's enemies.

Beginning:

ओं ह्री नमो वाराहि अधोरे स्वमं वद ठ ठ स्वाहा । अग्निः
अधिः, गायत्री छन्दः, स्वमवाराही देवता, ह्री बीजं, स्वाहा शक्तिः,
ऐं कीलकं, श्री—गः ।

End:

ऐं ह्री नमो वाराहि अधोरे स्वमं ठ ठ ठ स्वाहा ।

ऐ ही श्री भज्ञि भाज्ञि महाभज्ञि मम वैरिमनः भग्नं कुरु कुरु
अप्रीतिसचं कुरु हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7629. स्वप्नहनुमन्मन्त्रः.
SVAPNAHANUMANMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 5864.

Complete.

This Mantra is addressed to Hanumat; and its repetition is considered to have the power to enable one to see things afar off, to hear sounds which are otherwise inaudible on account of distance, and to obtain knowledge of otherwise unknowable past, present and future events.

Beginning :

अस्य श्रीस्वप्नहनुमन्महामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री उन्दः,
श्रीहनुमान् देवता; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, दूरदृष्टिरिति कीलकं,
मम स्वप्नहनुमतसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

End :

ओं दूरदृष्टिदूरश्रवणसमागतानागतवर्तमानसर्वलोकवृत्तान्तविज्ञानं हनु-
मन्महीयं(बं) देहि देहि स्वाहा ॥

No. 7630. स्वर्णभैरवमन्त्रः.
SVARNABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 292a of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the *Mantramālikā* (*Ākashabhairavakalpa*) 273a, in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Svarnabbhairava, i.e., to Bhairava who bestows gold; and its repetition is considered to have the power of removing one's poverty.

Beginning :

अस्य श्रीस्वर्णभैरवमन्त्रस्य दूर्वास ऋषिः, गायत्री छन्दः, स्वर्ण-
भैरवो देवता, वं बीजं, हीं शक्तिः, मम दारिद्र्यहरणार्थे विनियोगः ।

End :

मन्त्रः—

ओं हीं स्वर्णाकर्षणाय मम दारिद्र्यापहरणाय स्वाहा ॥

Colophon :

इति स्वर्णाकर्षणभैरवम् ॥

No. 7631. स्वर्णाकर्षणगणपतिमन्त्रः.

SVARNAKARSAÑAGANAPATIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 308a of the MS. described under No. 5477,
wherein it is found in the *Mantramālikā* (*Ākashabhairavakalpa*)
273a

Complete.

This Mantra is addressed to *Ganapati*; and its repetition is
considered to have the power to confer on one all available gold.

Beginning :

अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणगणपतिमन्त्रस्य गणक ऋषिः, नृचिद्रायत्री
छन्दः, स्वर्णाकर्षणगणपतिर्देवता ; श्रां गं बीजं, श्री गी शक्तिः, श्रं
गं कीलकं, मम स्वर्णाकर्षणगणपतिप्रसादसिद्धचर्थे विनियोगः ।

End :

ओं हीं श्री गं हीं सं विरि विरि गणपत्यै वर वरद सर्वस्वर्णे मे
बज्ज्ञानय स्वाहा । लक्ष्म जपः । दशांशहोमः । इति ॥

No. 7632. स्वर्णकर्पणदत्तात्रेयमन्त्रः.

SVARNĀKARŚANADATTĀTREYAMANTRAH.

Pages, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 308^b of the MS. described under No. 5177, wherein it is found in the Mantramālikā (Ākashabhairavakalpa) 273^a.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate Dattatrāya and to enable one to become very wealthy.

Beginning :

अस्य श्रीस्वर्णकर्पणदत्तात्रेयमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुस्सामाधर्वाणि छन्दांसि, स्वर्णकर्पणदत्तो गो देवता ; आं द्रां वीजं, श्रीं द्रीं शक्तिः, श्रूं दूं कीलकं, स्वर्णकर्पणदत्तात्रेयप्रसादसिद्धये विनियोगः ।

End :

ओं आं द्रां स्वर्णकर्पणदत्तात्रेयाय नमः । लक्ष्मजपम् । इति ॥

No. 7633. स्वर्णकर्पणभैरवमन्त्रः.

SVARNĀKARŚANABHAIRAVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 217^a of the MS. described under No. 5661.

Complete.

Similar to what has been described under No. 7630.

Beginning :

अस्य श्रीस्वर्णकर्पणभैरवमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्वर्णकर्पणभैरवो देवता ; हां वीजं, क्लीं शक्तिः, सः कीलकं, मम स्वर्णकर्पणभैरवप्रसादसिद्धये जपे विनियोगः ।

End :

अथ मनुः—

ओं एं क्लां क्लीं कं हां हीं हूं सः कुरु कुरु आपदुङ्घारणाय अजामिलबद्धाय स्वर्णकर्पणभैरवाय मम दारिद्यनिर्भूलकर्मठाय लोकेश्वराय

सानन्दाय श्रीमहाभैरवाय नमः । पुनर्न्यासध्यानं कुर्यात् । लमिति
पञ्चपूजां कृत्वा ॥

No. 7634. स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रः.

SVARNĀKARŚANABHAIBAVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 309a of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā (Ākashabhairavakalpa) 273a, in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रस्य दूर्वासमगवानृषिः, देवी गायत्री
छन्दः, स्वर्णाकर्षणभैरवो देवता ; हां बीजं, स्वाहा शक्तिः, मम स्व-
र्णाकर्षणभैरवप्रसादसिद्धये विनियोगः ।

End :

स्वर्णाकर्षणाय मम दारिद्र्यपहाराय हां ह्रीं हूं ओं औं ओं स्वाहा
दशसहस्रं जपः । दशांशहोमः । इति ॥

No. 7635. स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रः.

SVARNĀKARŚANABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 33b of the MS. described under No. 5832, wherein it has been wrongly stated to begin on 34a, in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

एवहृणवि—शुभतिथौ मम दुष्टारिष्टपरिहारार्थं . . .
सर्वश्वर्यप्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः ।

अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवमहामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, त्रिष्टुपु छन्दः, स्वर्णाकर्षणभैरवो देवता; ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम स्वर्णाकर्षणप्रसादसिद्धयर्थं जपे विनियोगः।

End:

अजामिलबन्धनाय मम दारिद्यनिर्भूलनकर्मठाय स्वर्णभैरवाय स्वाहा।
लमिति पञ्चपूजां समर्पयामि ॥

No. 7636. स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रः.

SVARNĀKARSAÑABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 46a of the MS. described under No. 5683.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रस्य महेश्वर ऋषिः, पञ्चश्छन्दः, श्री-
महाभैरवो देवता; ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, हूं कीलकं, यथोक्तफलसि-
द्धयर्थं जपे विनियोगः।

End:

ओं एं ह्रीं श्रीं एं ह्रीं श्री आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं हूं अजा-
मिलबन्धनाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय मम दारिद्यविद्वेषणाय महा-
भैरवाय नमः श्री ह्रीं एं ॥

एवं ध्यात्वा मंहेशानि अयुतं प्रजपेत्मनुम् ।

दशांशं तर्पयेत्पश्चाद्गोमयेहादशांशतः ॥

No. 7637. स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रः.

SVARNĀKARSAÑABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 81b of the MS. described under No. 1872,
wherein read 81b for 81a against Svarnakarsanabhairavamantra
in the list of other works.

Similar to the above.

Complete.

Beginning :

अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्वर्णाकर्षणभैरवो देवता; हां बीजं, कू शक्तिः, ह्री कीलकं, स्वर्णाकर्षणभैरवप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End :

सर्वश्रीब्राकर्षणाय सर्वदद्वांशसाराय विष्वहराय सर्वक्षमाडम्बरविवर्जिताय ओं हां ह्रीं कीलकं ओं क्रीं कां हुं फट् स्वाहा॥

No. 7638. स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रः.

SVARNĀKARŚANABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 29^a of the MS. described under No. 2373, wherein this Mantra has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवमहामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, पङ्किश्छन्दः, स्वर्णाकर्षणभैरवो देवता; हां बीजं, ह्रीं शक्तिः, हूं कीलकं, स्वर्णाकर्षण(भैरव)प्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

End :

अजामिलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय मम दारिद्र्याविद्वेष्याय महाभैरवाय नमः। इति दशसहस्रजपः। सिद्धिर्भवति॥

No. 7639. स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रः.

SVARNĀKARŚANABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 104^b of the MS. described under No. 5568, wherein this Mantra has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Similar to the above ; also held to have the power to enable one to accomplish one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवमहामन्त्रस्य दूर्वासमगवानृषिः, दैवी
गायत्री छन्दः, स्वर्णाकर्षणभैरवो देवता, हां वज्रं, ही शक्तिः, हूं स्वाहा
कीलकं, मम सङ्कल्पसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

स्वर्णाकर्षणाय मम दारिद्र्यापहराय हां ही हूं आं वं वी शीघ्रं
स्वर्णाकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा ॥

No. 7640. स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रः.

SVARNĀKARŚANABHAIRAVAMANTRĀH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 204b of the MS. described under No. 124, wherein it is given as Svarnākarsapabhairavastotra in the list of other works.

Complete.

Similar to the above ; held also to be efficacious in driving off evil spirits.

Beginning :

स्वर्णाकर्षणभैरवस्य सुमनोर्बद्धापिरास्यान्वितः

त्रिष्टुप् छन्द इतीरितं कनकहृच्छ्रीभैरवो देवता ।

ऐमित्यत्र च वीजमेव कथितं ही शक्तिरुक्तानधा

श्री कीलं च जपे नियोग इ (हङ्गेर)वस्येष्टदे ॥

अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा कृषि:, त्रिष्टुप् छन्दः,
श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवो देवता; एं वीजं, ही शक्तिः, श्री कीलकं, मम
श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवप्रसादसिद्धचर्ये तकल-
भूतपिशाचब्रह्मराक्षसपातालाकाशश्रहोचाटनार्थं जपे विनियोगः ।

End:

मम दारिद्र्यविद्रावणाय ओं श्री महाभैरवाय नमः । होमविषये
स्वाहा ॥

Colophon:

इति मन्त्रः ॥

No. 7641. स्वर्णाकर्पणभैरवमन्त्रः.

SVARNAKARSAÑABHAIRAVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 221a of the MS. described under No. 537.

Complete.

Similar to the above; also held to be efficacious in bringing about the accomplishment of the four Puruṣārthas or principal aims of life.

Beginning:

अस्य श्रीस्वर्णाकर्पणभैरवमन्त्रस्य सुपर्णं ऋषिः, इ(अ)तिजगती
छन्दः, स्वर्णाकर्पणभैरवो देवता; हीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, हूँ कीलकं,
मम चतुर्दिव्यपुरुषार्थसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End:

सर्वजनवशीकरणाय सर्व(र्प)दप्राप्न्य(न्त)काराय सर्वेक्षामडा(माड)-
म्बरविवर्जिताय ओं हीं श्री क्षीं फट् स्वाहा ॥

No. 7642. स्वर्णाकर्पणभैरवमन्त्रः.

SVARNAKARSAÑABHAIRAVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 204b of the MS. described under No. 124.

Complete.

Supposed to have the power to bring about a rain of gold.

Beginning:

स्वर्णाकर्पणभैरवमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीस्वर्णा-
कर्पणभैरवो देवता; ऐं बीजं, हीं शक्तिः, श्री कीलकं, मम स्वर्णा-
कर्पणभैरवप्रसादसिद्धयर्थे स्वर्णाग्निसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओ नमः ओं श्रीस्वर्णकर्षणभैरव पद्मेहि मम स्वर्णत्रुटिं वर्षय
काखनाकर्षणभैरव परम रक्ष स्वाहा ॥

No. 7643. स्वस्थानप्रदगोपालमन्त्रः.

SVASTHĀNAPRADAGOPĀLAMANTRAH

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 536 of the MS. described under No. 5885.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate Kṛṣṇa conceived as the bestower of heavenly bliss.

Beginning :

अस्य श्रीस्वस्थानप्रदगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
स्वस्थानप्रदगोपालो देवता, (श्री) बीजं, अः शक्तिः, स्वाहा कीर्तक,
स्वस्थानप्रदगोपालप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

मनुः श्री कृष्णाय वासुदेवाय देवकीगर्भसंनूताय स्वाहा ॥

No. 7644. हंसदक्षिणामूर्तिमन्त्रः.

HAMSADAKSINĀMURTIMANTRAH

Pages, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 282a of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā (Ākāshabhisiravakalpa) 273a in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Dakṣināmūrti or Śiva conceived as the Supreme Brahman; and its repetition is considered to be efficacious in bestowing wisdom and salvation.

Beginning :

अस्य श्रीहंसदक्षिणामूर्तिमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,
दक्षिणामूर्तिरुद्रो देवता; हं बीजं, सह(:) शक्तिः, मम ज्ञानमोक्षार्थं
विनियोगः ।

End:

मन्त्रः—ओ हं सः स्वाहा ॥

Colophon:

इति हंसदक्षिणामूर्तिः ॥

No. 7645. हंसदक्षिणामूर्तिमन्त्रः.

HAṂSADAKSINĀMŪRTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 239 b of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā 229 a in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

See under the previous number for the beginning.

End:

मन्त्रः—ओ हं सः ॥

No. 7646. हंसदक्षिणामूर्तिमन्त्रः.

HAṂSADAKSINĀMŪRTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 25 b of the MS. described under No. 5928.

Incomplete.

Same as the above.

No. 7647. हंसदक्षिणामूर्तिमन्त्रः.

HAṂSADAKSINĀMŪRTIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 92 a of MS. described under No. 5566, wherein it is apparently wrongly stated to begin on fol. 94 in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7648. हंसमन्त्रः.

HĀMSAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 106 of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The repetition of this Mantra is intended to propitiate the Supreme Brahman.

Beginning:

ओ हं सस्तो हं इति प्राणायामः १२.

* * * * *

अस्य श्रीपदशतैकविंशत्स(तिस)हस्तश्वासरूपहंसमन्त्रम् व्रक्षा ऋषिः,
गायत्री ऋन्दः, हंसो देवता, हंसप्रेरणया हंसप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End:

ओ हं सः सो हं—इति जपः । उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7649. हंसमातृकान्यासः.

HĀMSAMĀTRKĀNYĀSAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 194a of the MS. described under No. 124, wherein it has been apparently omitted to be given in the list of other works.

Complete.

The Mantra-formulas here enjoined to be repeated during the ceremonial touching of certain parts of the body are first obtained by introducing the successive letters of the alphabet with the word नमः between हंसः and सोहं. Again the letters of the alphabet are taken from the end, and these together with the word नमः are placed between सोहं and हंसः. The nature of this arrangement of words forming the Mantra-formulas is indicated in the end extract.

Beginning :

अथ हंसमातृकान्यासः—

अस्य श्रीहंसयोरारोहद्वरोह(त)कममानुकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः,
गायत्री उन्दः, हंसस्वरूपिपरमात्मा देवता; हं बीजं, स शक्तिः, सो
हं कीलकं, ममेष्टदेवताप्रीतये हंसमातृकान्यासः ।

End :

हंसः अ नमः सोहं—इति क्षान्तं न्यस्त्वा(स्य) सोहं कं नमः
हंसः—इति आनंतं न्यसेत् ॥

Colophon:

इति हंसमातृकान्यासः ॥

No. 7650. हंससप्ताक्षरमन्त्रः.

HAMSASAPTAKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 10b of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The repetition of this Mantra consisting of seven syllables is intended to propitiate Narayan in the form of a Hamsa. The syllable Om both in the beginning and the end is not to be taken as a part of the Mantra.

Beginning :

ओं ओं हं सः सो हं इति प्राणायामः १२.

* * * *

अस्य श्रीसप्ताक्षरहंसमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, उष्णिक उन्दः, हंस-
रूपी नारायणो देवता, नारायणप्रेरणया नारायणप्रीत्यर्थे सप्ताक्षरहंसमन्त्र-
जपे विनियोगः ।

End :

ओं ओं हं सः सो हं स्वाहा ओ—इति जपः । उपसंहारः
पूर्ववत् ॥

No. 7651. हंसाष्टाक्षरमन्त्रः.
HAM-ĀSTAKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

Similar to the above.

The Mautra-formula given here will be found to consist of eight syllables, if, as in the case of the Mantra described under the last number, the syllable Om both in the beginning and the end is left out of account.

Beginning :

ओं ओं ही हं सः सो हं स्वाहा ओं इति प्राणायामः १२.

अस्य श्रीअष्टाक्षरहंसमन्त्रस्य ब्रह्मा नाथः, गायत्री उन्दः, हंस-
रूपी श्रीनारायणो देवता, श्रीनारायणप्रेरणया श्रीनारायणप्रीत्यर्थे जपे
विनियोगः ।

End :

अष्टाक्षरहंसमन्त्रजपत्रिप्य—

ओं ओं ही हं सः सो हं स्वाहा ओं—इति जपः । उपसंहारः
पूर्ववत् ॥

No. 7652. हनुमत्कवचः..

HANUMATKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 50b of the MS. described under No. 5786.

Complete.

Addressed to Hanu mat for securing his favour and protection. The due repetition of this Mantra is considered to have the power to confer on the worshipper intelligence, strength, courage, fame, ability in speaking, health, worldly happiness and final salvation as well.

Beginning :

ध्यायेद्वालदिवाकरप्रतिनिमं(धिं) देवारिदर्पणहं
 देवन्द्रप्रसुखप्रशस्तयशसं देवीप्यमानं रुचा ।
 सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वभियं
 संरक्षारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालङ्घृतम् ॥
 हनूमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः ।
 पातु प्रतीच्याभक्षणः पातु सागरतारकः ॥

End :

हनूमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान् विचक्षणः ।
 स एव पुरुषो लोके भुक्तिमुक्ती च विन्दति ॥

* * * * *

बुद्धिर्विलं यशो धैर्यं निर्भयत्वमरोगता ।
 अजाह्यं वाक्पटुत्वं हनूमत्स्मरणाद्वेत् ॥

No. 7653. हनूमत्कवचः.

HANUMATKAVACAH.

Pages, 2. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 18a of the MS. described under No. 2373.

Complete.

Similar to the above.

Held to be specially efficacious in wiping off sin and in counter-acting the evils caused by various kinds of evil spirits as well as the evil effects of hostile Mantras and Tantras.

Beginning :

अस्य श्रीहनूमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्रभगवानुषेः, अनुष्टुप्
 छन्दः, श्रीहनूमान् देवता; मारुतात्मज इति बीजं, अजननासूनुरिति
 शक्तिः, वायुपुत्रेति कीलकं, श्रीहनूमत्सादसिद्ध्यर्थं समस्तपापक्षयर्थं
 रोगकृत्या(त्रिमभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसपरमन्त्रयन्त्रनिवारणर्थं जपे वि
 नियोगः ।

End :

हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान् विचक्षणः ।
स एव पुरुषश्रेष्ठो मुक्ति मुक्ति च विन्दति ॥

No. 7654. हनुमत्कवचः.

HANUMATKAVACAH.

Pages, 11. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 5953.

Complete as found in the Brahmanādapurāṇa.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमत्कवचस्तोत्रमन्तस्थ रामचन्द्रभगवानृषिः, अनुष्टुप्
छन्दः, श्रीरामचन्द्रो देवता; अजनासूनुरिति बीजं, मारुतात्मज इति
शक्तिः, मम शान्तिद्वाराणीति कीलकं, मम सकलदुरितनिवारणसमस्त-
पापक्षयार्थं हनुमवसादसिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

End :

वन्दे विद्वज्जलधिमरुतं [स]ब्रह्मसूत्रं गरिष्ठं
कर्णद्वन्द्वे कनकरुचिरे कुण्डले धारयन्तम् ।
सत्कौपीनं कपिपवरवरं कामरूपं कर्पीन्द्रं
पुत्रं वायोरुणेन्द्रं स्मितशुक (दधितरणे) वज्रदेहं वरिष्ठम् ॥

Colophon :

इति ब्राह्मण्डपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे श्रीरामप्रोक्ते हनुमत्कवचं सं-
पूर्णम् ॥

No. 7655. हनुमत्कवचः.

HANUMATKAVACAH.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 2424.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमत्कवचस्तोत्रमहामन्त्रस्य लङ्कुर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीहनुमान् देवता; पवनात्मज इति बीजं, अजनासूनुरिति शक्तिः, वायुपुत्र इति कीलकं, श्रीहनुमत्त्रसादासंद्वयं मम शरीरसरक्षणार्थं जपे विनियोगः।

End :

स पुमान् त्रियमाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ।
यः पठेद्वारयक्षित्यं सर्वान् कामानवामुयात् ॥

No. 7656. हनुमत्कवचः.

HANUMATKAVACAH.

Pages, 3. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 67a of the MS. described under No. 21.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीहनुमान् देवता; मारुतात्मज इति बीजं, अजनासूनुरिति शक्तिः, वायुपुत्रेति कीलकं, मम हनुमत्र—योगः। . . .

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणं पवनात्मजः ।

पातु मतीची रक्षोऽप्नः पातु सागरतारकः ॥

End :

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तिं तत्र तत्र रुत्तमस्तकाङ्गिम् ।

बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥

No. 7657. हनुमत्कवचः.

HANUMATKAVACAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 5864.

This Mantra like the one described under No. 7654 is taken from the Brahmanḍapurāṇa.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, गायत्री
छन्दः, श्रीहनुमान् रुद्रो देवता; मारुतात्मज द्वामित्यादिकरहृदयादि
न्यासौ कृत्वा

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः ।

पातु प्रतीचीमक्षमः पातु सागरतारकः ॥

End :

यो वारां निधिमल्लपल्लमिवालहृच मतापान्वितः

वैदेहीविनशोकतापहरणो वैकुण्ठभक्तप्रियः ।

अक्षाच्याच्चितराक्षसेश्वरमहादपीपहारी रणे

सोऽयं वानरपुङ्गवोऽवतु सदा चास्मान् समीरात्मजः ॥

Colophon :

इति श्रीब्रह्माप्तपुराणे श्रीहनुमत्कवचस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

No. 7658. हनुमत्कवचः.

HANUMATKAVACAH.

Pages, 10. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 19a of the MS. described under No. 6393.

Complete.

Same Mantra as the above.

No. 7659. हनुमत्कवचः.

HANUMATKAVACAH.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 92a of the MS. described under No. 2549.

Complete.

Same as the above.

Colophon :

श्रीहनुमत्कवचं संपूर्णम् ॥

No. 7660. हनूमत्कवचः.

HANUMATKAVACAH

Pages, 5. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 20b of the MS. described under No. 5788.

Complete.

Same Mantra as the above.

Colophon :

इति श्रीहनूमत्कवचं संपूर्णम् ॥

No. 7661. हनूमत्कवचः.

HANUMATKAVACAH

Pages, 7. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 5b of the MS. described under No. 6151, wherein it is wrongly given as beginning on 5a,

Complete.

Similar to the above.

See under the previous number for the beginning.

End :

सोऽयं वानरपुङ्गवोऽवतु सदा चास्मान् समीरात्मजः ॥

हनूमानङ्गनासूनुर्वायुपुत्रो महाबलः ।

रामेष्टः फलगुनससः पिङ्गाक्षोऽभितविग्रहः ॥

* * * *

जले रक्षतु वाराहस्थले रक्षतु वामनः ।

अव्याच नारासहस्तु सर्वतः पातु केशवः ॥

Colophon :

श्रीहनूमत्कवचं संपूर्णम् ॥

No. 7662. हनूमत्कवचः.

HANUMATKAVACAH

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 53a of the MS. described under No. 6152.

Complete as found in the Brahmanḍapurāṇa.

Similar to the above.

This Mantra is believed to have the power to enable one to secure the favour of Rāma.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरामचन्द्रो
 [देवता] भगवानृषिः, हनुमान् देवता; मारुतात्मज इति बीजं, अञ्ज.
 नासूनुरिति शक्तिः, वायुपुत्र इति कीलकं, श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्धचर्चे
 जपे विनियोगः ।

* * * * *

हनुमान् पूर्वतः पातु केसरप्रियनन्दनः ।

अधस्ताद्विष्णुभक्तस्तु पातु मध्यं च पावनः ॥

End :

चन्द्रामं चरणारविन्दयुगलं (ली) कौपीनमौज्जीघरं
 बालं शोणदुकूल (दिव्य) वसनं यज्ञोपवीताजिनम् ।
 हस्ताम्ब्यामवलभिताङ्गलिपुटं हारावलीमण्डितं
 पश्चालभित्तिखं प्रसन्नवदनं श्रीवायुपुत्रं भजे ॥

Cloophon :

इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे हनुमत्कवचस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 7663. हनुमत्पदशाक्षरमन्त्रः.

HANUMATPAÑCADASÄKSARAMANTRAH.

Page*, 3. Line*, 6 on a page.

Begins on fol. 19a of the MS. described under No. 5864, wherein it is wrongly given as Hanumatpañcäksarimantra in the list o' other works.

Complete.

This Mantra consists of 15 syllables and is addressed to Hanumat. Its repetition is held to be efficacious in causing the destruction of one's enemies.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमत्पदवशाक्षरीमहामन्त्रस्य अमृतविराट् छन्दः, ईश्वर
जपिः, श्रीपञ्चवक्त्रहनुमान् देवता; हं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ग्लौ कट
कीरक, शत्रुसंहरणार्थं जपे विनियोगः ।

End :

ओं हं अरिमर्दनमर्कटाय ग्लौ कट स्वाहा ॥

मैत्रयनीलकपिलध्वजदत्तगाल-

मैन्दाङ्गदाध्वविजयं (यान्) भरतं सुपेणम् ।

हरिशात्मकस्य (र्वकेसूनु) वसुपुष्करसोमदत्तान्

पृथ्यान् सरामि हनुमत्पदपद्मभक्तान् ॥

No. 7664. हनुमदापदुद्धारणस्तोत्रमन्त्रः.

HANUMADAPADUDDHARANASTOTRAMANTRAH.

Page, 2. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 2386.

Complete.

This Mantra which is in praise of Hanumat is considered to be efficacious in saving one from dangers.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमदापदुद्धार[णादुद्धार]णस्तोत्रमहामन्त्रस्य विभीषण
जपिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीहनुमान् देवता, श्रीहनुमबीत्यर्थं जपे
विनियोगः ।

End :

नमो राघवदूताय सीताशोकविनाशिने ।

आज्ञेन्याय हरये लङ्गालङ्गारहारिणे ॥

No. 7665. हनूमद्वारुदमन्त्रः.

HANUMADGARUDAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 245a of the MS. described under No. 581,
wherein it is found in the Mantranālīka 22^½ in the list of other
works.

Incomplete.

In this Mantra, Hanumat is conceived as possessing the powers of Garuda in removing the effects of poisons.

Beginning :

ओ भूर्भुवस्सुवरोम्
ओ नमो भगवते हनुमते ग्रहमण्डलभूतमण्डलपिशाचमण्डल ।

End :

महानागकुलविषनिर्विष जटिति खे खे पवनपुत्र वैशानर
* * * * *
अजास्पुरके स्पुरके स्वाहा ॥

Colophon :

इति इनुमद्वारुद्धमन्त्रः ॥

No. 7666. हनूमद्विग्बन्धनमन्त्रः.

HANŪMADDIGBANDHANAMANTRAH.

Pages, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 48a of the MS. described under No. 235, wherein it has been apparently omitted to be included in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra addressed to Hanumat is supposed to have the power to cast a magic spell over all the quarters to enable the repeater to safeguard himself from all possible dangers that may come therefrom.

Beginning :

ओ ही श्रीरामदूत प्रतापहनुमन् ओं के इन्द्रदिशं बन्ध
बन्ध, ओ ही श्रीरामदूत वीरहनुमन् ओं रे अग्निदिशं बन्ध
बन्ध ।

End:

ये रे लं वे शं ये सं हं लं क्षं दश दिशः बन्ध बन्ध पैकाय
भूर्भुवस्तुवरो ॥

Colophon:

इति दिग्बन्धः ॥

No. 7667. हनुमद्वादशाक्षरमन्त्रः.

HANŪMADDVĀDAŚĀKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 238b of the MS. described under No. 5177.

Complete.

The repetition of this Mantra consisting of 12 syllables is intended to propitiate Hanumat. The word Om is not to be taken into account in counting the syllables.

Beginning:

अस्य श्रीहनुमद्वादशाक्षरीमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्रभगवानृषिः, गायत्री
छन्दः, श्रीहनुमान् देवता; ये बीजं, स्वाहा शक्तिः, हनुमवसादसि
दूर्घर्षे विनियोगः।

End:

मन्त्रः—

ओं यं वायुपुत्राय पिङ्ग[ल]क्षाय स्वाहा ॥

Colophon:

इति द्वादशाक्षरी हनुमद्वादशाक्षरी ॥

No. 7668. हनुमद्वादशाक्षरमन्त्रः.

HANŪMADDVĀDAŚĀKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 244b of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the *Mantramalikā* 229a in the list of other works

Complete.

Same as the above.

No. 7669. हनुमद्वादशाक्षरमन्त्रः.

HANŪMADDVADASĀKṢARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 95a of the MS. described under No. 5566, wherein it has been wrongly noted as beginning on fol. 99 in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7670. हनुमद्वादशानलमन्त्रः.

HANŪMADBĀDABĀNALAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 215a of the MS. described under No. 7247.

Complete.

This Mantra is addressed to Hanumat conceived to be as terrible as the submarine fire known as Bađabānala; and its repetition is considered to have the power to enable one to secure the favour of Rāma.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमद्वादशानलमहामन्त्रस्य अनुष्टुप् छन्दः, श्रीहनुमान्
देवता, श्रीमुखभाणान्तर्यामिश्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः।

* * * *

ओं नमो भगवते श्रीहनुमते प्रकटपराक्रमाकान्ताय सकलदिव्य-
न्वनसेविताशाखबलीकृतहार वज्रदेह ।

End :

ओं नमो भगवते श्रीवीररौद्रहनुमते ज्वलितपिङ्गलनेत्राय शक्तिनीढा-
किनीभूतप्रेतपिशाचयवराश्वपरमन्तपरवरतन्त्रविच्छेदन मम हाँ ही
रि हूँ रु फट् स्वाहा ॥

Colophon :

हनुमत्कवचं(द्वादशानलः)संपूर्णः ॥

No. 7671. हनूमन्मन्त्रः.

HANUMANMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 219a of the MS. described under No. 7447.

Complete.

The repetition of this Mantra is believed to have the power to propitiate Hanumat.

Beginning :

अस्य श्रीपञ्चवक्त्रहनुमन्महामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
 श्रीहनुमान् देवता; मारुतात्मज इति बीजं, अङ्गनासूनुरिति शक्तिः;
 वायुपुत्र इति कीलकं, श्रीहनुमवसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः।

End :

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं वुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
 वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥

No. 7672. हनूमन्मन्त्रः.

HANUMANMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 206a of the MS. described under No. 424, wherein it has been apparently omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहनूमन्महामन्त्रस्य शौनक ऋषिः, जगती छन्दः, श्री-
 हनुमन्त्र(न्म)हामन्त्रो देवता; रं बीजं, फट् शक्तिः, हं कीलकं, आङ्ग-
 नेयप्रात्यर्थे जपे विनियोगः।

End :

ध्यायेद्वालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पीपहं
 देवेन्द्रप्रभुख्यप्रशस्तयशसं देदीप्यमानं मृतां(थे) ।

सुग्रीवादिसमस्तवानरथुतं सूर्योक्ततत्त्वप्रियं
संस्कायतलोचनं पवनजं पीताम्बरालङ्कृतम् ॥

No. 7673. हनुमन्त्रः.
HANUMANMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 288a of the MS. described under No. 5477.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमन्मन्त्रस्य श्रीरामचन्द्रभगवानुपि:, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीहनुमान् देवता; हं वीजं, स्वाहा शक्तिः, हनुमतप्रसादसिद्ध्यर्थे वि-
नियोगः ।

End :

मन्त्रः—

ओ रामदूताय स्वाहा ॥

Colophon :

इति हनु(मन्)मन्त्रः ॥

No. 7674. हनुमन्त्रः.
HANUMANMANTRAH.

Page, 1. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 244b of the MS. described under No. 581,
wherein it is found in the Mantramalikā 229a in the list of other
works.

Complete.

The Mantra here is the same as in the work described under
the previous number; but there is a very slight difference in the
preliminary details mentioned in relation to the repetition of this
Mantra.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमन्[त]मन्त्रस्य श्रीरामचन्द्रभगवानृषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीहनुमान् देवता; ओं बीजं, स्वाहा शक्तिः, हनुमलवसादसिद्धार्थे
विनियोगः ।

End :

मन्त्रः—

ओं रामदूताय स्वाहा ॥

No. 7675. हनूमन्मन्त्रः.**HANUMANMANTRAH.**

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 95a of the MS. described under No. 5566, wherein it is wrongly stated as beginning on fol. 95 in the list of other works.

Complete.

Same as the above.

No. 7676. हनूमन्मन्त्रः.**HANUMANMANTRAH.**

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 215b of the MS. described under No. 7247, wherein it is given as Pañcavaktrahaniśmatstotramantra in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Hanumat conceived as having five faces; and its repetition is considered to be efficacious in destroying evil spirits and in counteracting the evil effects of hostile Mantras and Tantras.

Beginning :

अस्य श्रीपञ्चकहनुमत्सोत्रमन्त्रस्य ईश्वर कृष्णिः, देवी गायत्री
छन्दः, पञ्चमुखि(ख)रौद्रिं(द्र) ओं श्रीपरमात्मा देवता; ओं हूं बीजं, ओं ह्रीं
शक्तिः, ओं हैं कीलकं, मम पञ्चमुखहनुमत्सादसिद्धार्थे जपे विनियोगः ।

End:

सर्वभूतप्रेतपिशाचयक्षराक्षसकूदमाण्डविनायकभैरवादिमहाभूतमहापर -
मन्त्रयन्त्रतन्त्ररोगदुष्टसृगमुज्ज्वलश्चिकादि विनाशय ओं ओं कुरु करु फट्
स्वाहा ॥

No. 7677. हनुमन्मन्त्रः.

HANUMANMANTRAH.

Pages, 6. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 5819.

Complete.

Similar to the above.

Held also to be efficacious in causing disturbance in the enemy's army and in enabling one to accomplish one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीहनुमन्मन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः,
हनुमान् देवता; हकारो बीजं, स्वाहा शक्तिः, हनुमलीत्यर्थे विनियोगः ।

End:

हर हर परबले क्षोभय मम क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधय
साधय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7678. हनुमन्मालामन्त्रः.

HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 6393, wherein it is given as Hanūmaumantra in the list of other works.

Complete.

This Mantra also is in praise of Hanumat under different significant names; and its repetition is considered to be efficacious in sealing the mouths of bad people, in removing fears arising from kings and thieves, in freeing one from enchained bondage, in counteracting the evil effects of hostile Mantras and Tantras, and in accomplishing desired objects.

Beginning :

ओं नमो भगवते प्रकटपराक्रमाय आकान्तसकलदिव्यहीमण्डलाय
यशोवितानधवलीकृतजगत्त्रितयाय वज्रदेहरुद्रावतार लङ्गापुरीदहन उद-
भिबन्धन दशग्रविकृतान्त ।

End :

सर्वदुष्टजनमुखवन्धनं कुरु राजचोरभयं प्रशमय शृङ्खलावन्धनं
मोचय परमन्त्रयन्त्रतन्त्राणि नाशय स्वमन्त्रयन्त्रतन्त्राणि सुरक्षय सर्वा-
भीष्टं कुरु कुरु असाध्यं साधय हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon :

श्रीबालामन्त्रमाला(माला)मन्त्रः संपूर्णः ॥

No. 7679. हनुमन्मालामन्त्रः

HANUMANMĀLAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 240b of the MS. described under No. 7247.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं नमो भगवते श्रीहनुमते प्रकटपराक्रमाकान्तसकलदिव्यण्ड-
लाय ।

End :

स्वमन्त्रयन्त्रविद्याप्रकटनाय सर्वारिष्टशमनाय सर्वशतुविनाशनाय
असाध्यसाधनाय ओं ह्मं ह्मी ह्मं हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7680. हनुमन्मालामन्त्रः

HANUMANMĀLAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 29a of the MS. described under No. 5737.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

ओं नमो भगवते पवचकहनुमते प्रकटितबलपराकमाकान्तसकल-
दिव्यण्डलाय निजकीर्तिस्फूर्तिधावनापनीयमानजगत्रितयाय अतुलबलैर्थर्य-
रुद्रावताराय महारावणमदवारणगर्वनिर्वापणोत्कण्ठकण्ठीरवाय ब्रह्माखगर्व-
सर्वद्वृपवज्रशरीराय ।

End :

ओं नमो भगवते पवचकहनुमते ओं व्रौं क्षीं क्षीं हुं हौं म्लं
म्लं श्रीं क्षीं क्षीं हां ह्रीं हूं हैं हौं हा: हुं फट् से से हुं फट् स्वा-
हे(हों) विं क्षीं स्वाहा ॥

Cloophon :

इति पवचकहनुमन्मालामन्त्रः समाप्तः ॥

No. 7681, हनुमन्मालामन्त्रः.

HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 12a of the M.S. described under No. 5828,
wherein it is given as Hanumadvisaya in the list of other works.

Complete.

Similar to the above. Held to be efficacious in removing
various kinds of dire diseases.

Beginning :

ओं नमो भगवते रुद्राय ज्वलितपिङ्गलोचनाय ऐकाहिकश्चाहि-
कश्चाहिकचातुर्थिकज्वरनाशनाय भूतनाशनाय हुं फट् स्वाहा । ओं
नमो भगवते रुद्राय उयोतिःपिङ्गलोचनाय अज्ञनानन्दनाय ।

End :

भूतज्वरविषयमज्वरविष्णुज्वरमहेश्वरज्वरस्फोटकशिरोवेधकुषिशूलाङ्गशू-
लगूलमशूलकूरनागसर्वविषयशूलैर्विष छिन्धि
छिन्धि उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7682. हनूमन्मालामन्त्रः.
HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 243a of the MS. described under No. 7247.

Incomplete.

Similar to the above.

अस्य श्रीहनूमन्मालामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, वायु-
पुत्रहनुमान् देवता; हं वीजं, सः शक्तिः, हां कीलकं, हंसमूर्तये
शिरसे स्वाहा, वायुसुताय शिखाऽै वौषट्, ओं श्रीरामदूताय कवचाय हुं,
अग्निगर्भाव नेत्रवत्तायै(य)वौषट्, ओं ब्रह्माख्लनिवारणाय ह(ब)ख्यम्(क)द्।

ओं नमो भगवते श्रि(त)जगत्रितयाय वज्रदेहरुद्रावताराय[1]

End:

भूतज्वर - प्रेतज्वर - महाज्वरज्वर — शि(शी)तज्वर - ऐकाहिक-
ज्वर — द्याहिकज्वर - व्याहिकज्वर - चातुर्थिकज्वर - विषमज्वर - म.
हेश्वरज्वर - वैष्णवज्वर - सर्वज्वराङ्गु छिन्दि छिन्दि यक्षब्रह्मराक्षस-
वेताल.

No. 7683. हनूमन्मालामन्त्रः.
HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1^a of the MS. described under No. 6546,
wherein it is wrongly given as Hanumanmantrakalpa 1^a, in the
list of other works.

Complete; forms the second Adhyaya of the Sudarśanasam-
hitā.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीहनूमन्मालाष्टाक्षरमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
कालाग्निरुद्रश्रीहनुमान् देवता; ओं वीजं, ही शक्तिः, अरिसंहारेति
कीलकं, श्रीहनुमवसादसिद्ध्यर्थं जपे होमे पारायणे विनियोगः।

End :

लङ्कापुरीदहनाय सीतासमाधास(नाय) महेश्वरज्वरप्रे काहिकद्वयादि-
कज्याहिकवातुर्थिकज्वरसर्वमूत्रक्षमहानागकुल फट् फट् फट् स्वाहा ॥

व्यानम—

निर्मीलच नयने सम्यक् करौ चोभशिरस्तः ।

कुण्डलद्वयसंशोभिमुखाभ्योजं हरि भजे ॥

Colophon :

इति श्रीसुदर्शनसंहितायामाज्ञनेयाष्टाकारीमालामन्त्रविधानं नाम दि-
तीयोऽध्यायः ॥

No. 7684. हनुमन्मालामन्त्रः.

HANUMANMALAMANTRAH.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 3862, wherein it is wrongly given as Hanumatkavaca in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the above.

Held to be efficacious in driving off evil spirits, in the curing of various kinds of diseases, and in effecting the accomplishment of one's desires.

Beginning :

ओ एवद्वृणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ मूत्रप्रेतपिशाचोचाटनार्थे
वातपैस्त्वलेघ्नादिसर्वरोगानिवारणार्थे

अस्य श्रीहनुमन्महा[न]मालामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः
श्रीअवोरविश्वरूपश्रीहनुमान् देवता; ह्री बीजं; स्वाहा शक्तिः, हुं
कीलकं, असावेदिति कवचं; ममेष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

स्वपन्त्र स्वतन्त्र स्वयन्त्र सर्वप्रघटकाय सर्वारिष्टविनाशनाय असाध्य-
साधनाय शृङ्खलाबन्धविमोचनाय मम.

No. 7685. हनुमन्मालामन्त्रः.
HANUMANMĀLAMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 26 on a page.

Begins on fol. 62b of the MS. described under No. 446.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमन्मालामन्त्रस्य शौनक ऋषिः, अतिजगती छन्दः, श्रीहनुमान् रुद्रो देवता, रं बीजं, फट् शक्तिः, मम श्री-हनुमन्पालामन्त्रसादसिद्धार्थे विषवररोगभूतसंभाषणसर्वदेवतावेशशाकि-नीढाकिनीचेतालसमूहब्रह्मराक्षसर्वप्रहोच्चाटनार्थे जपे विनियोगः ।

End :

श्रीरामचन्द्रमनोऽभिलिपिताय लङ्घापुरीदिहनकारणाय ओं ये रं सैं ओं नमो भगवते श्रीरामदूताय हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7686. हनुमन्मालामन्त्रः.
HANUMANMĀLAMANTRAH.

Pages, 8. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 5788.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमन्मालामहामन्त्रस्य शौनक ऋषिः, अतिजगती छन्दः, श्रीहनुमान् रुद्रः परमात्मा देवता ; हं बीजं, फट् शक्तिः, हुं कीलकं, मम विषप्रहरोगभूतसंभाषणसर्वदेवताशाकिनीढाकिनीसर्वप्रहोच्चाटनार्थे जपे विनियोगः ।

End :

ओं ते ये हैं शों नमो भगवते श्रीरामदूतहनुमते हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon :

इति शौनकसंहितायां रोगकृतिमभूतोचा(चा)टनहनुमन्मालामहामन्त्रः संपूर्णः ॥

No. 7687. हनूमन्मालामन्त्रः
HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 6005.

Complete.

Similar to the above.

It is stated in the end that, if this Mantra is repeated seven times every day, it will confer prosperity on one; and, if repeated on Sundays, it will enable one to accomplish one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीपञ्चमुखवीरहनुमत्कवचस्तोत्रं (न्माला) मन्त्रस्य रामचन्द्र ऋषि, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसीतिरामो देवता; सकललोकोपकारसिद्धये हनुमत्कवचमन्त्रजपे विनियोगः । पितृलनयनाय अमितविकमाय सूर्यविन्वालम्बोष्टानिलालङ्कृताय अगम्यमहः कपिलाय ।

End :

• सप्तवरं पठेत्वित्यं स[कल] (वे)सौभाग्यदायकम् ।
मानुवारे पठेत्वित्यमिष्टकाम्यार्थसिद्धये ॥

No. 7688. हनूमन्मालामन्त्रः
HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 27a of the MS. described under No. 6005.

Complete.

Similar to the above.

See under the previous number for the beginning.

End :

ओ हरिमर्कट मर्कट मर्कट वं वं वं वं वं फट् फट् स्वाहा ॥

No. 7689. हनूमन्मालामन्त्रः.
HANUMANMALAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 24a of the MS described under No. 2886.

Complete.

Similar to the above. The concluding stanzas describe well the value and efficacy of this Mantra.

Beginning :

प्रकटपराक्रान्तवलोपेतसर्वदिहमण्डल यशोविनानववलीकुतजग
स्त्रितय वज्रदेह रुद्रावतार लङ्कापुरीदहन उदधिलङ्घन ।

End :

परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रान् छेदय स्वविद्यां प्रकटय मां रक्ष श्री-
रामदूताय हुं फट् स्वाहा ॥

मालामन्त्रे समालिख्य भूतानि त्रासय हि च ।
से गृहन् गृहन् स्वाहा पश्चात्वेत्राक्षरं लिखेत् ॥
दिक्षपालश्च बहिर्लेघ्यं (स्व्यो) हनुमचन्त्रमुच्चम् ।
सर्वमृत्युप्रशमनं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥
सर्वसिद्धिप्रदं लोके दुष्टब्रह्मनिवारणम् ।
नेत्राक्षरं य र ल व श प स ह ॥

No. 7690. हनूमन्मालामन्त्रः.
HANUMANMALAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 239b of the MS. described under No. 7247.

Complete.

Held to have the power to propitiate Hanumat.

Beginning :

श्रीहनूमन्मालामन्त्रः—

अस्य श्रीविरया(वीरहनुमन्)महामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री
छन्दः, हनुमान् महादेवता; हां बीजं, हीं शक्तिः, हूं कीलकं, नम
हनुमत्रसादसिद्धचर्थं जपे विनियोगः ।

End :

शरणागतवज्रपञ्चराय हं लं गं हं रं मं से हं फट् स्वाहा ॥

No. 7691. हनुमन्मालामन्त्रः.

HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 115a of the MS. described under No. 6685, wherein it has been omitted to be included in the list of other works. The Hanumatkalpa given therein in the list of other works begins on fol. 117a and not on fol. 115a.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमन्मालामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, हनुमान्
देवता; एं बीजं, अज्ञनेति शक्तिः, मम हनुमत्रसादसिद्धचर्ये जपे
विनियोगः ।

End :

मारय मारय शोषय शोषय उचलय उचलय प्रहारय प्रहारय महा-
बल उपस्थूशय हनुमते स्वाहा ॥

No. 7692. हनुमन्मालामन्त्रः.

HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 8. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 2a of the MS. described under No. 6157.

Complete.

It is taken from the Brahmoottarakhandja.

Similar to the above.

Beginning :

अपलकनकवणी प्रज्वलत्पावकाक्षं सरसिजनिमवकं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पद्मतरघनगावं कुण्डलालङ्कृताङ्गं रणजयकरवालं रामदूतं नमामि ॥

* * *

ओ नमो भगवते श्रीरामदूताय हनुमते हुं फट् स्वाहा ।
आग्नेयमण्डले भेषालूढहनूमते तोमरहस्तशक्तियुक्ताय ।

End :

पद्मरागमणिकुण्डलप्रभापाटलीकृतकपोलभूषितम् ।
दिव्यहेमकदलीवनान्तरे भावयामि पवमाननन्दनम् ॥

Colophon :

इति ब्रह्मोत्तरखण्डे ब्रह्मनारदसंवादे हनुमत्कवचं (र्मालामन्त्रः)
संपूर्णः ॥

No. 7693. हनूमन्मालामन्त्रः.

HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 81b of the MS. described under No. 5673.

Similar to the above.

Held to be efficacious in causing the accomplishment of one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीहनुमन्मालामन्त्रस्य पुरन्दर ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्री-
वीरप्रतापहनुमान् देवता; यं बीजं, रं शक्तिः, लं कीलकं, मम इष्टका-
स्थार्थसिद्ध्यर्थं श्रीवीरप्रतापहनुमलीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

End :

अमलकनकवर्णं भज्वलत्तावकाकं सरसिजनिभवकं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पद्मतरधनगावं कुण्डलालङ्कातङ्गं रणजयकरवालं रामदूतं नमामि ॥

No. 7694. हनूमन्मालामन्त्रः.

HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 132a of the MS. described under No. 29.

Complete.

Similar to the above,

Beginning :

अस्य श्रीहनुमन्मालामन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ह्रीं वीजं, ह्रीं कीलकं, मम इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

सर्वारिष्टयमनाय सर्वेशत्रुविनाशनाय सर्वविश्वविनाशनाय अहपीडा-निवारणाय शृङ्गीशब्दविमोचनाय असाध्यसाधनाय ओं ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा ॥

No. 7695. हनूमन्मालामन्त्रः.

HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 35a of the MS. described under No. 2424, wherein it has been apparently omitted to be given as a separate work in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Held to be efficacious in removing various kinds of dreadful troubles and difficulties.

Beginning :

ओं नमो भगवते हनुमते प्रकटपराक्रमाय सर्वदिव्यपण्डलशोभित[1]य शोधवलीकृतनेत्रा(जगत्त्रया)य वज्रदेहाय रीढ्रावताराय ।

End :

सर्वावपर्वतोद्धार भनोदुःखनिवारण ।

घोरो(रानु)पद्रवान् सर्वान् नाशयाक्षासु(श)रान्तक ॥

Colophon :

हनूमत्कवचं(न्मालामन्त्रः)सम्पूर्णः ॥

No. 7696. हनूमन्मालामन्त्रः.

HANUMANMĀLĀMANTRAH.

Pages, 4. Lines, 8 on page.

Begins on fol. 29a of the MS. described under No. 6005.

Complete.

Considered to have the power to enable one to drive off evil spirits.

Beginning :

ओं क्रां अविल अविल अनेकजन्मावतार अनन्तबडवानलकोटि-
सूर्यकोटिमकाश बायुकुमार अज्ञनादेविसन्दर्शन पार्वतीदेविवरपुत्र देव
सदाशिवमूर्ते परनारीसहोदर बालब्रह्मचारिन् गम्भीरशब्द ।

End :

सर्वक्रमहोचाटनाय उग्रराक्षसभ्रहोचाटनाय वीररामावतारवीरहनु-
मदवतार श्रीवीरप्रताप जा जा ह ह ह हनुमते स्वाहा ॥

No. 7697. हनुमन्मालामन्त्रः.

HANUMANMĀLAMANTRAH.

Pages, 2; Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 18b of the MS. described under No. 2373, wherein it has apparently been omitted to be shown as a separate work in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is also addressed to Hanumat, is considered to have the power to take away the poison from poisonous creatures, to calm down evil spirits and to enable one to accomplish one's desires.

Beginning :

स्वस्ति समस्तलोकविस्तारक श्रीपार्वतीभियपुत्र अज्ञनादेवीवरगर्भ-
सम्भूत रामलक्ष्मणानन्दकर ।

End :

जलचरविलचरस्वलचररात्रिनरदिवाचरसर्वकूरनिर्विषं कुरु कुरु सर्वे-
दुष्टशमनाय असाध्यसाधनाय ओं फट् फट् स्वाहा ॥

No. 7698. हयश्रीवक्वचः.
HAYAGRIVAKAVACAH

Substance, palm-leaf. Size, $6\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 6. Lines, 7 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 30b. The other works herein are Hayagrivaikaksaramantra 1a and 2a, Hayagrivamantra 1b, Hayagrivaikadasaksaramantra 1b, Hayagrivānuśubhamantra 2b, 5a and 27a, Hayagrivapūjā 2b and 3a, Hayagrivamantraprāyoga 4a, Hayagrivakalpa 6a, Hayagrivapañjara 27b, Hayagrivapañjara-kalpa 33a, Hayagrivastotrasāsa 39b, Hayagrivamālamantra 42a.

Complete.

This Kavaca-mantra is addressed to Hayagriva; and its repetition is held to be efficacious in securing safety and protection and in bringing about the accomplishment of one's desires.

Beginning:

नारद उचाच—

अपिरस्य हयश्रीवो देवता च स एव हि ।
प्रोक्तमानुष्टुभं छन्दस्सर्वार्थं विनियुज्यते ॥
कलशाम्भोधिसङ्काशं कमलायतलोचनम् ।
कलानिधिरुतावासं कर्णिकापीठसंस्थितम् ॥

* * * * *

हयश्रीवशिशः पातु ललाटं चन्द्रमध्यगः ।
शास्त्रात्मको दृशौ पातु पातु शब्दात्मकशश्रुती ॥

End:

इतीदं कीर्तयेदस्तु कवचं देवपूजितम् ।
सर्वान् कामानवामोति हयश्रीवक्वचसादतः ॥

Colophon:

इति नारदसंहितायां हयश्रीवक्वचस्समाप्तः ॥

No. 7699. हयग्रीवपञ्चरम्.

HAYAGRIVAPANJARAM.

Pages, 7. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 27b of the MS. described under No. 7698
Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीहयग्रीवपञ्चरमहामन्त्रस्य सङ्कीर्णेण जपिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीहयग्रीवो देवता; कं बीजं, नमश्शक्तिः, कौं कीलकं, मम सर्वा-
भीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

End:

मन्दारकुन्दरफटिकमहनीयोरुच्चर्चसे ।
मनीषामददेवाय महाश्शिरसे नमः ॥
इति द्वादशमन्त्रेण नमस्कुर्याज्जनार्दनम् ।
प्राह प्रसन्नवदनः पाराशर्यमनिन्दितम् ॥

No. 7700. हयग्रीवमन्त्रः.

HAYAGRIVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 1b of the MS. described under No. 7697.
Complete.

In this Mantra the suppliant prays to Hayagriva for plenty
of good food.

Beginning:

अथ दधिभक्तहयग्रीवमन्त्रः—

ब्रह्मा जपिः, अतिष्ठन्दः, हयग्रीवो विष्णुर्देवता । अङ्गन्यासा-
दिकं पूर्ववत् ।

End:

ओं नमो भगवते हयशिरसे अज्ञाविष्टये अन्नदाय अकूरायाकूर-
कर्मणे भगवन् भक्ष्यभोज्यान्नदानमावहावह स्वाहा । हयश्रीवमन्त्रानन्तरं
ओं हूँ है सः

विश्वोत्तीर्णस्वरूपाय चिन्मयानन्दरूपिणे ।
तुम्यं नमो हयश्रीव विद्याराजाय विष्णवे ॥
स्वाहा सो हूँ हूँ ओं । पूजादिकमनुत्रुव्वत् ॥

No. 7701. हयश्रीवमन्त्रः.

HAYAGRIVAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 286b of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā (Ākāśabhairavakalpa) 273a, in the list of other works.

Complete.

The repetition of this Mantra addressed to Hayagriva is considered to be efficacious in effecting the accomplishment of one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीहयश्रीवमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीहय-
श्रीवरूपी विष्णुदेवता; हं बीजं, सौः शक्तिः, मम इष्टकास्यार्थसिद्ध्यर्थे
लभे विनियोगः ।

End:

मन्त्रः—

है हयशिरसे नमः ॥
हविद्यां निजपेन्मन्त्रमयुतं तप्रसिद्धये ।
नित्यमष्टोचरशतमष्टाविद्विमेव वा ॥

Colophon:

इति हयश्रीवमन्त्रः ॥

No. 7702. हयग्रीवमन्त्रः.
HAYAGRIVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 243a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā 229a in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहयग्रीवमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीहयग्रीवरूपी विष्णुदेवता; हं बीजं, सौ शक्तिः, ममेष्टकाम्यार्थसिद्धचर्चे विनियोगः ।

End :

शङ्खचक्रधरं देवं वनमालाविमूषितम् ।

श्रीवत्सकोन्तुभधरं दिव्याभरणमूषितम् ॥

म्.

No. 7703. हयग्रीवमङ्गः.

HAYAGRIVAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 94a of the MS. described under No. 5566, and not on fol. 48 as shown therein.

Incomplete.

Same as the above.

No. 7704. हयग्रीवमालामन्त्रः.

HAYAGRIVAMĀLĀMANTRAH.

Pages, 10. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 42a of the MS. described under No. 7698.

Complete.

The repetition of this Mantra addressed to Hayagrīva is considered to have the power to enable one to secure protection, to drive off and destroy and do several other kinds of harm to one's enemies, and to counteract the evil effects of hostile Mantras and Tantras, etc.

Beginning :

अस्य श्रीहयग्रीवमहामालामन्त्रराजस्य शरम ऋषिः, अतिजगती
छन्दः, परमात्मा श्रीहयग्रीवो देवता; ओं क्षां वीजं, क्षौ शक्तिः, सुं
कीलकं, आत्मरक्षणोच्चाटनमारणमोहनस्तम्भनसर्वार्थसिद्धयर्थे जपे विनि-
योगः ।

End :

परमन्त्रान् छेदय छेदय भी भी मं भं कुकुटगृध्रमण्डूकल्याप्रभल-
कवरादादिप्रयोगनानाविधतन्त्रादीन् हैं हने हन हुं फट् स्वाह ॥

No. 7705. हयग्रीवानुष्टुभमन्त्रः.

HAYAGRIVĀNUṢṬUBHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 25 of the MS. described under No. 7698.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is in the form of an Anustup stanza, is believed to have the power to bestow on one wisdom and learning.

Beginning :

अथ हयग्रीवप्रसङ्गाद्यग्रीवानुष्टुभमन्त्रो लिख्यते । ब्रह्मा वा सद्ग-
र्णो वा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, हयग्रीवो देवता, ऋं वीजं, नम-
शक्तिः, ज्ञानार्थे ।

End :

ऋग्यजुस्सामरूपाय वेदाहरणकर्मणे ।
मण्डोद्रीथवचसे महाश्वशिरसे नमः ॥
इति मन्त्रः । अयुतं जपेत् । विद्याप्रधानोऽयं मन्त्रः ॥

No. 7706. हयग्रीवानुष्टुभमन्त्रः.

HAYAGRIVĀNUSTUBHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 35a of the MS. described under No. 3056.
Complete.

The Anuṣṭup stanza given here differs only very slightly from that given under the previous number.

Beginning :

अस्य श्रीहयग्रीवानुष्टुभमन्त्रस्य संकर्षण ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, श्रीहयग्रीवो देवता; ह्रीं बीजं, उं शक्तिः, हयग्रीवप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

End :

मन्त्रः—

ओं ऋग्यजुस्सामरूपाय वेदाहरणकर्मणे।
प्रणवोद्धीथयशसे महाधशिरसे नमः ॥

No. 7707. हयग्रीवानुष्टुभमन्त्रः.

HAYAGRIVĀNUSTUBHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 7898.
Complete.

Similar to the above; the Anuṣṭup stanza here given is different from the one found in the previous number.

Beginning :

हयग्रीवानुष्टुभमन्त्रान्तरं लिख्यते ।

ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, हयग्रीवो देवता । तारपूर्वमन्त्रस्य पादैस्समस्तैव्यस्तैश्च पञ्चाङ्गानि ।

End :

उद्दिरत्मणवोद्धीथ सर्ववागीश्वरेश्वर ।
सर्वदेवमयाचिन्त्य सर्वं बोधय बोधय ॥

इति मन्त्रः । द्वात्रिंशलक्ष्मजपः ।
मधुसिकैः कुन्दपुष्टैर्दशांशं पुरश्चरणहोमः ।

* * * *

वचामनेन संजप्तां मक्षयेवातरन्वहम् ।
सर्ववेदागमादीनां व्याख्याता जायते चिरात् ॥

No. 7708. हयग्रीवानुष्टुभमन्तः.

HAYA-RIVĀNUSTUBHAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 27a of the MS. described under No. 7698.

Complete.

Similar to the above; the Anosṭup Mantra is not given herein.

Beginning :

अस्य श्रीहयग्रीवानुष्टुप्महापन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, ^३ अनुष्टुप् छन्दः
श्रीहयग्रीवः परमात्मा देवता; ह्रां चीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रों कीलकं, मम
श्रीहयग्रीवप्रसादसिद्धर्थं जपे विनियोगः ।

End :

शङ्खाभः शङ्खचके करसरसिजयोः पुस्तकं चान्यहस्ते
विभ्राणो ज्ञानमुदां लसति परकरे मण्डलस्थः सुधांशोः ।
आसीनः पुण्डरीके तुरगवरदिराः पूरुषो मे पुराणः
श्रीमानज्ञानहारी मनसि निवसतामृग्यजुस्सामरूपः ॥

No. 7709. हयग्रीवाष्टाक्षरमन्तः.

HAYAGRIVĀSTĀKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The repetition of this Mantra consisting of eight syllables is believed to have the power to secure for one the favour of Hayagriva. The syllable Om, both in the beginning and in the end, is not to be taken as forming part of the Mantra proper.

Beginning :

गुरुनमस्कारः । ओं हां हयग्रीवाय नमः ओं इति प्राणायामः १२.
पूर्णज्ञानेत्यादिन्यासः ।

अस्य श्रीहयग्रीवाईकाक्षरमहामन्त्ररथ ब्रह्मा ऋषिः, देवी गायत्री
छन्दः, श्रीहयग्रीवो देवता, हयग्रीवप्रेरणया हयग्रीवभीत्यर्थे जपे विनि-
योगः ।

End :

ओं हां हयग्रीवाय नमः ओं इति जपः ।
उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7710. हयग्रीवैकाक्षरमन्त्रः.

HAYAGRIVAIKAKSHARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 2a of the MS. described under No. 7698.
Complete.

Similar to the above ; the Mantra consists only of one syllable.

Beginning :

शास्त्रान्तरोक्तपक्षविशेषेण हयग्रीवैकाक्षरं लिख्यते—
ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, हयग्रीवो देवता; हं बीजं, सः
शक्तिः, हां हीं इत्यादिनाङ्गानि ।

End :

हं—इति मन्त्रः पक्षचतुष्करुपः ।
धेतपैर्वदशांशपुरश्रणहोमः । विद्याकामेन
सौः इत्यनेन सम्पूर्णीकृत्य जपत्वः ॥

No. 7711. हयग्रीवैकाक्षरमन्त्रः.

HAYAGRIVAIKAKSARAMANTRAH.

Page, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 7693.

Complete.

The Mantra here is the same as under the previous number, but the preliminary details are different. An eight-syllabled Hayagrivamantra is also given in the end.

Beginning:

हयग्रीवैकाक्षरमन्त्रो लिख्यते—

ब्रह्मा ऋषिः, विष्णुपूर्ण छन्दः, हयग्रीवो देवता; हकारो बीजं,
ऊकारशक्तिः, वागैश्चर्यसिद्धचर्थं जपे विनियोगः।

End:

हकारस(ल)कारचतुर्दशषष्ठस्वरान्यतरयुक्तविभात्मकहौ—इति मन्त्रः।
अथवा हं—इति ॥

अथ मन्त्रान्तरम्—

ऋष्यादिकं पूर्ववत् हं हयशिरसे
नमः—इति मन्त्रः। पूजादिकं वृण्यमाणवत् ॥

No. 7712. हयग्रीवैकाक्षरमन्त्रः.

HAYAGRIVAIKAKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 35b of the MS. described under No. 3056.

Complete.

Similar to the above; the Mantra and the preliminary details are however different.

Beginning:

हयग्रीवैकाक्षरमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुपूर्ण छन्दः, श्रीहय-
ग्रीवो देवता; हं बीजं, सौं शक्तिः, ओं कीलकं, श्रीहयग्रीवप्रसाद-
सिद्धचर्थं जपे विनियोगः।

End :

घवलनलिननिष्ठं हीरगौर करात्रे चपवलयसरोजमुद्रितं पुस्तकं वा ।
 दधदमवल(तममल)मखं(स्त्रा) कल्पजालाभिरामं तुरगवदनविष्णुं नौमि
 विद्याग्रासि(हि)ष्णुम् ॥

मन्त्रः—

ओ हसो ॥

No. 7713. हयग्रीवैकाशरमन्त्रः.

HAYAGRIVAIKĀKSARAMANTRAH.

Page, I. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 24a of the MS. described under No. 6090.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

एवंगुणविशेषणविक्षिष्टायां शुभतिथौ हयग्रीवैकाशरमन्त्रजपं करि-
 ष्ये । अस्य श्रीहयग्रीवैकाशरमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,
 श्रीहयग्रीवमहाविष्णुः परमात्मा देवता; हाँ बीजं, हीं शक्तिः, हं
 कीलकं, मम हयग्रीवप्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

मनुः—ओ

ऋग्यजुस्सामरूपाय वेदाहरणरूपिणे ।
 प्रणवोद्भीथवचसे महाश्वशिरसे नमः ॥ ओ हौं
 उद्भीथप्रणवोद्भीथ सर्ववागीश्वरेश्वर ।
 सर्ववेदमयाचिन्त्य सर्वं बोधय बोधय ॥ स्वाहा ।

No. 7714. हयग्रीवैकाशरमन्त्रः.

HAYAGRIVAIKĀKSARAMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 33a of the MS. described under No. 5858.

Complete.

Slightly different from the above.

Beginning :

एवंगुणविशेषण = तिथो हयश्रीवैकाक्षरमन्त्रजपं करिष्ये ।

* * * * *

गायत्रीप्राणावामत्रयं कृत्वा, वागीधराय विद्वहे हय(श्रीवाय)धी-
महि । तत्रो हं स(:) प्रचोदयात् ।

The remaining portion is the same as in the previous number.

No. 7715. हयश्रीवैकाक्षरमन्त्रः.

HAYAGRIVAIKĀDAŚĀKSARAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 1b of the MS. described under No. 7695.

Complete.

The repetition of this Mantra consisting of 11 syllables is believed to have the power to endow one with learning.

Beginning and End :

अथैकाक्षरमन्त्रः—

ब्रह्मा ब्रह्मः, अनुष्टुप् छन्दः, हयश्रीवो देवता; वीजेनाङ्गानि,
पूर्ववद्धचानादि । ही हयशिरः ही को हुं फट् नमः—इति मन्त्रः ।
विद्याफलप्रयोज(धा)नोऽयं मन्त्रः ॥

No. 7716. हरिद्रागणपतिमन्त्रः.

HARIDRĀGANAPATIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 290b of the MS. described under No. 5477, wherein it is found in the Mantramālikā (Ākashabhairavakalpa) 273a in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to Haridrāgaṇapati, a manifestation of Vināyaka; and its repetition is considered to be efficacious in bringing about the accomplishment of one's desires.

Beginning:

अस्य श्रीहरिद्रागणपतिमन्त्रस्य मदन कषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीहरिद्रागणपतिर्देवता; ग्लौं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ममेष्टकान्यार्थं विनियोगः ।

End:

मन्त्रः—

ओ हुं हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपति(ते) वरवरद सर्वजनहृदयं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा—इति ॥

No. 7717. हरिद्रागणपतिमन्त्रः.**HARIDRĀGANAPATIMANTRAH.**

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 246a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramālikā 229a in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning:

अस्य श्रीहरिद्रागणपतिमन्त्रस्य मदन कषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीहरिद्रागणपतिर्देवता; ग्लौं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ममेष्टकान्यार्थं सिद्धर्थं विनियोगः ।

End:

ओ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वरवरद सर्वजनहृदयं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा ॥

No. 7718. हरिद्रागणपतिमन्त्रः.**HARIDRĀGANAPATIMANTRAH.**

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 96a of the MS. described under No. 5586 and not on fol. 100 as shewn therein.

Complete.

Same as the above.

No. 7719. हवनमन्त्रः.
HAVANAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 80^b of the MS. described under No. 5673.

Complete.

The repetition of this Mantra, which is addressed to the goddess Pratyangirā, is to be followed by a ceremonial fire-offering and is considered to have the power to enable one to destroy evil spirits.

Beginning :

ओं यां कल्पयन्ति नोऽरयः कूरां कृत्यां वधूमिव । तां ब्रह्मणाप-
निर्णद्यः प्रत्यकर्तारमृच्छतो स्वाहा ।

End :

ओं मिलि मिलि ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म य शुभ्मिनि से चर चर
गुरु गुरु राज राज हंस हंस स्वाहा ॥

No. 7720. हसन्तीमन्त्रः.
HASANTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 27^a of the MS. described under No. 2848,
wherein it is found in the Āmnāyamantramālikā 16^a.

Complete.

This Mantra is addressed to Śyāmala or the goddess Mātangi conceived as possessing a smiling countenance; and its repetition is considered to have the power to remove fears, dangers and obstacles.

Beginning :

अस्य श्रीहसन्तीमन्त्रस्य मतङ्ग जपिः, पक्षिश्छन्दः, हसन्त्यम्बा
देवता, ऐ बीजं, ही शक्तिः, श्री कीलकं, हीमित्यादिन्यासः ।

End :

ओं ही हसन्ती(नित) हसन्ता(सिता)लापमातङ्गि परिचारिके भयविज्ञा-
पदां नाशं कुरु कुरु ठ ठ ठ हुं फट् स्वाहा ॥

No. 7721. हसन्तीमातङ्गीमन्त्रः.
HASANTIMĀTĀNGIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 5673, wherein it is found in the Āmnāyamantramālīta 1a, in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहसन्तीमातङ्गीमहामन्त्रस्य मतङ्गेश्वर प्रभिः, गायत्री छन्दः, श्रीहसन्ती मातङ्गीश्वरी देवता; ही बीजं, स्वाहा शक्तिः, मातङ्गीति कीलकं, [म]मत्सकलापञ्चिवारणार्थं जपे विनियोगः।

End :

मनुः—

ओ ही हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके मम भयविनापदां नाशं कुरु कुरु ठ ठ हुं फट् स्वाहा श्रीहसन्तीश्री ॥

No. 7722. हसन्तीश्यामलामन्त्रः.
HASANTISYĀMALĀMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 228b of the MS. described under No. 124, wherein it is found in the Śadāmnāyamantra 228b in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहसन्तीश्यामलामन्त्रस्य मतङ्गभगवान्प्रभिः, अनुष्टुप् छन्दः, हसन्तीश्यामला देवता; हसन्तीश्यामलाप्रसा—गः।

End :

ओ ही—

हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके भयविनापदां नाशं कुरु कुरु ठ ठ ठ हुं हुं फट् स्वाहा। हसन्तीश्यामलाप्रियादुकां पूजय मि ॥

No. 7723. हसन्तीश्यामलामन्त्रः.
HASANTISYĀMALĀMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 673, wherein it is found in the Sadāmītya 1a in the list of other works.

Complete.

Similar to the above.

Beginning :

अस्य श्रीहसन्तीश्यामलामन्त्रस्य मतक्ष ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
हसन्त्यम्बा देवता ; हीं बीजं, हीं शक्तिः, सौः कीलकं, मम हसन्त्यम्बा-
प्रसादसिद्धचर्ये जपे विनियोगः ।

End :

ऐं हीं श्री हसन्ति हसितालोपे मातक्षि परिचारिके भविष्यापदां नाशं
कुरु कुरु र्वाहा ।

हसन्त्यम्बाश्रीपा . . . नमः ॥

No. 7724. हिरण्यगर्भसूक्तमन्त्रः.
HIRANYAGARBHASŪKTAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 5786.

Complete.

This Mantra is addressed to Hiranyagarbha. It consists of ten Rks in the 121st and five Rks in the 122nd Sūkta of the tenth Mandala of the Rgveda.

Beginning :

गुरुनमस्कारः। ओं हिरण्यगर्भाय नमः—इति प्राणायामः १२.

* * *

अस्य श्रीहिरण्यगर्भसूक्तमहामन्त्रस्य भृणुः क्रापि:, त्रिष्टुप् छन्दः, हिरण्यगर्भो देवता, हिरण्यगर्भप्रेरणया हिरण्यगर्भप्रीत्यर्थे पञ्चदशर्चहि-
रण्यगर्भसूक्तमहामन्त्रजपे विनियोगः।

End :

त्वं दतः प्रथमो वरेण्यस्स हृव्यमानो अमृताय मत्स्व ।
त्वां मर्जयन्मरुतो दाशुषो गृहे त्वां स्तोमेभिर्भृगवो विरुचुः—
इत्यन्तं जपः। उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7725. हिरण्यगर्भाष्टाकाक्षरमन्त्रः.

HIRANYAGARBHĀSTĀKSAKSHRAMANTRAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 226 of the MS. described under No. 5786.

Complete.

The repetition of this eight-syllabled Mantra is intended to propitiate Hiranyagarbha.

Beginning :

गुरुनमस्कारः ।

ओं हिरण्यगर्भाय नमः ओं इतिप्राणायामः १२.

* * * * *

अस्य श्रीहिरण्यगर्भाष्टाकाक्षरमहामन्त्रस्य हिरण्यगर्भं क्रापि:, गा-
यत्री छन्दः, हिरण्यगर्भो देवता, हिरण्यगर्भप्रेरणया हिरण्यगर्भप्रीत्यर्थे
हिरण्यगर्भाष्टाकाक्षरमहामन्त्रजपे विनियोगः।

End :

ओं हिरण्यगर्भाय नमः ओं इति जपः। उपसंहारः पूर्ववत् ॥

No. 7726. हिरण्यदेवीसूक्तमन्त्रः.

HIRANYADEVIISŪKTAMANTRAH.

Pages, 3. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 21.

Complete.

The repetition of this Mantra consisting of Vedic Rks is intended to propitiate the goddess Mahālakṣmī.

The Vedic Rks here given go by the name of Śrisakta, for which see under Nos. 17 to 22 *ante*.

Beginning :

अस्य श्रीहिरण्यदेवीसूक्तमहामन्त्रस्य श्री आनन्दकर्दम ऋषिः, श्रीचिङ्गीत ऋषिः, श्रीमाता ऋषिः, आधास्तिसोऽनुष्टुप् छन्दः, चतुर्थी वृहती छन्दः, पञ्चमषष्ठी त्रिष्टुप् छन्दः, सप्तम्यष्टम्यावनुष्टुप् छन्दः, शेषाः प्रस्तारया पञ्चिंशछन्दः, हिरण्या देवता, मम श्रीहिरण्यमहालक्ष्मी प्रसादसिद्धचर्ये विनियोगः।

End :

श्री क्षी श्री तां म आ वह श्रीं जातवेदो लक्ष्मीमिनपरगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।

यश्चुचिः प्रथतो भूत्वा उंह(जुहुया)दाज्यमन्व(हम्)।

श्रियः पञ्चदशर्चच्च श्रीकामः सततजपेत् ॥

* * * * *

सकुमिव तितउना पुनन्तो मनसो वाच्यमकतः ।

यत्रा सखायस्सख्यानुजानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवानि ॥

No. 7727. हुतभूपणीमन्त्रः.

HUTABHŪṢANIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 28 on a page.

Begins on fol. 253a of the MS. described under No. 581, wherein it is found in the Mantramalika 229a in the list of other works.

Complete.

This Mantra is addressed to the goddess Hutasbhūṣanī, a manifestation of Śakti; and its repetition is considered to have the power to enable one to render the eye sight and minds of disliked people useless so that they may not know or understand what is going on.

Beginning :

ओं नमो भगवति हुतभूषणि मम विरयुगलनसमस्याज्ञान्वाप्रसा-
दित स्वाहा ।

End :

सर्वजनमुखचक्रुर्मनस्तरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा ॥

No. 7728. हुतभूषणीमन्त्रः.
HUTABHUSANIMANTRAH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 100^b of the MS. described under No. 5566,
wherein it has been omitted to be given in the list of other works
Complete.

Same as the above.

No. 7729. हृलेखामातृकासरस्वतीमन्त्रः.
HRILLEKHĀMĀTRKĀSARASVATIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 39^a of the MS. described under No. 7274.

Complete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body while
repeating at the same time the Mantra-formulas obtained by
putting the successive letters of the alphabet and the word
नमः after ऐ ही श्री हौं. This Nyāsa is considered to be a prelimi-
nary ceremonial to the repetition of the Śrividyāmantra

Beginning :

अस्य श्रीहृलेखामातृकासरस्वतीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,
हृलेखामातृका सरस्वती देवता; हं बीजं, रं शक्तिः, ई कीलकं, ममो-
पास्यमानश्रीविद्याङ्गत्वेन हृलेखामातृकान्यासे विनियोगः ।

End :

ऐ ही श्री हौं अं नमः इति क्षं नपःपर्वतर् ॥

INDEX.

[Note.—The names printed in italics are those of the works inscribed.]

| PAGE | PAGE |
|------------------------------|---------------------------------|
| Āditya-grahamāntra ... | 5470 |
| Ādityakavaca ... | 5477 |
| Ādityapūjāyantra ... | 5227 |
| Agnayasumhitā ... | 5107 |
| Aghorāśṭra-maṭra ... | 5280 |
| Aghorāśṭradāma ... | 5290 |
| Agneyasparīṭa ... | 5270, 5271 |
| Ajaṇḍagāyatrī ... | 5280 |
| Ajaṇḍātykāṣṭreṣvati ... | 5280 |
| Ākāshabhairavakalpa ... | 5204, 5220, |
| | 5253, 5308, 5318, 5320, 5326, |
| | 5328, 5329, 5344, 5349, 5373, |
| | 5374, 5379, 5398, 5474, 5488, |
| | 5480, 5495 to 5498, 5503, 5532, |
| | 5543 |
| Āmuñayamantramālikā ... | 5291, 5293, |
| | 5349, 5253, 5282, 5300, 5344, |
| | 5347, 5362, 5363, 5368, 5369, |
| | 5390, 5405, 5406, 5428 to |
| | 5425, 5428, 5481, 5486, 5546, |
| | 5546 |
| Āndhra-padyamulu ... | 5280 |
| Āntarātykāṣṭreṣvati ... | 5280 |
| Āpududhīrṣṇoavaṭukā- | |
| bhairavamāntra ... | 5279 |
| Āpāmṛjanakavaca ... | 5194 |
| Āpāmṛjananayāsa ... | 5194 |
| Āpāmṛjanastotra ... | 5194 |
| Āmrīmantra ... | 5279 |
| Ākvaṭhaṇḍīrṣṇoastotra ... | 5227 |
| Ākvaṭhaastotra ... | 5270 |
| Atharvāparihasya ... | 5198, 5199 |
| Āyadhanṭagītā ... | 5199 |
| Baḍabāṇalasudarśana ... | 5280 |
| Bagañīmukhtimālāmāntra ... | 5280 |
| Bagañīmukhtipajñāvidhāna ... | 5279 |
| Bagañīmukhtstotra ... | 5279 |
| Bahirmāṭrkāṣṭrenavatī ... | 5280 |
| Bālāhrdaya ... | 5280 |
| Bālākavaca ... | 5280 |
| Bālāmālāmāntra ... | 5280 |
| Bālāparameṣvarīmāntra ... | 5207 |
| Bālāsūhāṣṭramān ... | 5279 |
| Bālāsamputītāmāṭkāṣ- | |
| rasvati ... | 5280 |
| Bālāṣṭri-varīṭa ... | 5280 |
| Bālāṣṭri-parasundarīmā- | |
| tra ... | 5279 |
| Bāpiṇḍra (Ālamudi) ... | 5424 |
| Bhagavatīrādhana ... | 5103 |
| Bhīgavatāśīka ... | 5194 |
| Bhairavamālāmāntra ... | 5280 |
| Bhajagorīṇastotra ... | 5443 |
| Bhajeyatīrṇastotra ... | 5443 |
| Bhaswanyāsa ... | 5280 |
| Bhavāntakālura (Cen- | |
| bhāṭa) ... | 5217 |
| Bhavīṣṭitara Purāṇa ... | 5268, 5259 |
| Bhīmatūti ... | 5443 |
| Bhūtaśuddhi ... | 5207 |
| Bhuvanēśvarīkaccha- | |
| puta ... | 5473 |
| Bouvanēśvarīmāntra ... | 5280 |
| Bhuvanēśvarīstotra ... | 5279 |
| Bilvīṣṭa ... | 5281 |
| Bindumāṭkāṣṭrenavatī ... | 5279 |

| | PAGE | | PAGE |
|------------------------------------|--|------------------------------------|-----------------------------|
| Brahmājapūraṇa | 5280, 5281,
5273, 5274,
5509 to 5513 | Garoḍapāñcakṣurimantra | 5307 |
| Brahmasundarīanamantra | 5280 | Garudapāñcāyat | 5380 |
| Brahmayūmala | 5170 | Gāyatriōkta | 5475 |
| Brahmottarakhaṇḍa | 5352 to 5354,
5529, 5530 | Gāyatrīrāmāyaṇa | 5280 |
| Cakravīśasakavaca | 5285 | Gurumantra | 5307 |
| Caṇḍikāmantra | 5228 | Gurupāñcānantra | 5279 |
| Carasavayīḥa | 5280 | | |
| Cornūloki | 5153 | | |
| Cintāmanisarvastī | 5280 | | |
| Dakṣināmurtikavaca | 5280 | Hanūmadakṣināmurti-
mantra | 5503, 5504 |
| Dakṣināmurtikamhitā | 5475 | Hanūmantra | 5505 |
| Dakṣināmṛtivīkhyā | 5280 | Hanūmāntrīdhyāye | 5505, 5506 |
| Dakṣināmṛtiyanira | 5280 | Hanūmāntrapravamantra | 5506 |
| Dakṣipāmṛtyuṭaka | 5280 | Hanūmāntrīdīparumantra | 5507 |
| Dakṣipāmṛtyuṣṭottara-
śatamīnam | 5280 | Hanūmāndāṇḍadīdhāra-
stotrāntra | 5514 |
| Dakṣināmṛtyupaniṣad | 5280 | Hanūmāndāṇḍanālaman-
tra | 5290, 5517 |
| Dakṣināmṛtīkṣṇāya | 5263, 5278,
5305, 5384 | Hanūmāndīgbandhanā-
mantra | 5515 |
| Dārtikavaca | 5281 | Hanūmāddandāñjikāra-
mantra | 5516, 5517 |
| Dātmālākhyā | 5279 | Hanūmādṛḍruḍīmantra | 5514, 5515 |
| Dātmālāmantra | 5280 | Hanūmādvīṣaya | 5523 |
| Dāyopajāvīdhāna | 5279 | Hanūmānḍīdīmantra | 5290, 5285,
5521 to 5532 |
| Dāviṣṭava | 5280 | Hanūmānmantra | 5280 |
| Davāntakāmūltimantre | 5279 | | 5518 to 5521 |
| Dāyopanīṣad | 5307 | Hanūmānmantrakalpa | 5524 |
| Dipinīmantra | 5280 | Hanūmātpūcādāñjikāra-
mantra | 5513 |
| Divyamaṅgalādhyāma | 5475 | Hanūmātpañcakṣurimant-
tra | 5518 |
| Dvādaśanāmūltotra | 5443 | Hanūmathalpa | 5529 |
| Dvayamantra | 5319 | Hanūmathasacū | 5507 to 5512,
5525 |
| | | Hariśrīpasapatiṇamatra | 5543, 5544 |
| Ekāmrēśvarīṭaka | 5281 | Hanūmīmantra | 5545 |
| Gāyapatikavaca | 5259, 5260 | Hanūmīndāṇḍāñjīmantra | 5546 |
| Gaudāñjīdīkhyāya | 5304 | Hanūmīñḍyāñḍīmantra | 5546 |
| Gopālakavaca | 5258 | Hanūmīñḍyāñḍīmālīmantra | 5546, 5547 |
| | | Hanūmānmantra | 5546 |
| | | Hanugrīvañḍāñjikāra-
mantra | 5533, 5543 |

INDEX.

144

| | PAGE | | PAGE |
|---------------------------------|--------------|--------------------------------|---------------|
| <i>Hayagrīteśikāyoravamtra.</i> | 5533, 5540 | <i>Kātyākyantantra</i> | 5279 |
| | to 5542 | <i>Kṛṣṇ Dēśika</i> | 5471 |
| <i>Hayagrīvakaṭpa</i> | 5533 | <i>Kumārśodasa</i> | 5153 |
| <i>Hayagrīvakaṭṭeṇa</i> | 5533 | <i>Kuṇḍakumārītykūṣṇa-</i> | |
| <i>Hayagrīvamālīmantra</i> | 5533, 5536 | <i>vati</i> | 5280 |
| <i>Hayagrīvamantra</i> | 5533 to 5536 | <i>Laghūmuditaṅgimantra</i> | 5213 to 5218 |
| <i>Hayagrīvamantraprayoga</i> | 5533 | <i>Laghūsyāmalīdīkṣitāṅ-</i> | |
| <i>Hayagrīvīnuṭubhāvamtra.</i> | 5533, 5537 | <i>gaṇītāṅtra</i> | 5217 |
| | to 5539 | <i>Laghūsyāmalīdīkṣitāṅ-</i> | |
| <i>Hayagrīvīpoñjara</i> | 5533, 5524 | <i>tra</i> | 5217 |
| <i>Hayagrīvīpoñjuraṭkalpa</i> | 5523 | <i>Laghūsyāmalīdīkṣitāṅ-</i> | |
| <i>Hayagrīvīphūṭi</i> | 5533 | <i>tra</i> | 5214 |
| <i>Hayagrīvītākṣaramantra.</i> | 5533 | <i>Lakṣmīṇarāyaṇapāṭī-</i> | 5196, 5196 |
| <i>Hayagrīvītottarāśala</i> | 5533 | <i>mantra</i> | 5196 |
| <i>Hiranyaśūlaśiktamantra</i> | 5548 | <i>Lakṣmīṇarāyaṇasātiṣṭra</i> | 5196 |
| <i>Hiranyakashipuḥsamādhī</i> | 5151, 5152 | <i>Lakṣmīnīdayadhyāya</i> | 5199 |
| <i>Hiranyakurbhīdīkṣitā-</i> | | <i>Lakṣmīnīdayasātītāṇḍil-</i> | |
| <i>mantra</i> | 5548 | <i>mantra</i> | 5210, 5211 |
| <i>Hiranyakushtasākṣinīma-</i> | | <i>Lakṣmīnīdayasātītāṇḍil-</i> | |
| <i>tra</i> | 5547 | <i>tra</i> | 5200, 5207 to |
| <i>Hṛīkkhādīkṣitāsaravat-</i> | | | 5210 |
| <i>mantra</i> | 5550 | <i>Lakṣmīnīdayasātītāṇḍil-</i> | |
| <i>Hṛīkkhāsaravatī</i> | 5279 | <i>tra</i> | 5203, 5205 |
| <i>Hūṭabhbī ḥāṭīmantra</i> | 5549, 5550 | <i>Lakṣmīnīdayasātītāṇḍil-</i> | |
| | | <i>tra</i> | 5198, 5199 |
| <i>Indrīkṣṇatotra</i> | 5288 | <i>Lakṣmīnīdayasātītāṇḍil-</i> | |
| <i>Indrīkṣṇatōtramantra</i> | 5280 | <i>tra</i> | 5198, 5199 |
| <i>Indrīkṣṇīyatra</i> | 5280 | <i>Lakṣmīnīdayasātītāṇḍil-</i> | |
| <i>Jitāntastotra</i> | 5193 | <i>tra</i> | 5200, 5201 |
| | | <i>Lakṣmīnīyātāṇḍil-</i> | |
| <i>Kālikākhaṭjaḍa</i> | 5263 | <i>tra</i> | 5202 |
| <i>Kālikāmantra</i> | 5279 | <i>Lakṣmīnīyātāṇḍil-</i> | |
| <i>Kāmakalīnyām</i> | 5307 | <i>tra</i> | 5203 |
| <i>Kāmāvaraṇīmantra</i> | 5355 | <i>Lakṣmīnīyātāṇḍil-</i> | |
| <i>Karmaprabhākī</i> | 5270 | <i>tra</i> | 5194, 5432 |
| <i>Kṛṣṇīyātāṇḍil-</i> | | <i>Lakṣmīnīyātāṇḍil-</i> | |
| <i>mantra</i> | 5243 | <i>tra</i> | 5199, 5207 |
| | | <i>Lakṣmīnīyātāṇḍil-</i> | |
| | | <i>tra</i> | 5200 |
| | | <i>Lalitāsahasrāṇīmālinī-</i> | |
| | | <i>mantra</i> | 5286 |
| | | <i>Lalitāsādīkṣitāṇḍil-</i> | |
| | | <i>mantra</i> | 5397 |
| | | <i>Lalitātāṭītāṇḍil-</i> | |
| | | <i>mantra</i> | 5379 |
| | | <i>Lalitātriṣṭi</i> | 5279 |
| | | <i>Lalunagūḍīkṣitāṇḍil-</i> | |
| | | <i>mantra</i> | 5219 |
| | | <i>Liddopajāṭharapīḍī-</i> | |
| | | <i>mantra</i> | 5219, 5220 |

| | PAGE | | PAGE |
|-------------------------------------|-----------------------|------------------------|------------------------|
| Lihgupurāṇa | 5321 | Navagrahikavaca | 5183, 5410, |
| Līkoperīmantra | 5220 | | 5384 |
| Lopāśuddhaṇītra | 5221 | Navarājanamālikā | 5280 |
| Mādhaviya | 5357 | Nilakaṇṭhabhadraḥīmala | 5280 |
| Mahādēvīcōtra | 5281 | Nityāśoḍasikārgava | 5286 |
| Mahāgaṇapatiṇītra | 5280 | Nityāśoḍasikārgava | 5475 to 5477 |
| Mahālakṣmīnītra | 5280 | Nṛsiṁhamantrōddhāra | 5201 |
| Mahālakṣmīpījā | 5279 | Nṛsiṁhasahasrīkṣṇi | 5280 |
| Mahālakṣmīrīśīnakōṭi | 5475 | Pādmapuriṇī | 5154, 5155, |
| Mahālakṣmīsaptatīkṣṇī | 5207, 5209 | | 5316, 5317 |
| Mahāpādūkīnītra | 5279 | Pādakāmaṇītra | 5307 |
| Mahārāvāgama | 5281 | Paksinīyīlucanīrṇaya | 5194 |
| Mahārāyaṇītra | 5279 | Pāśasādīlakṣmīnītra | 5307 |
| Mahāsudarśāusprakarana | 5450 | Pāśākṣarīmālānītra | 5307 |
| Mahātriṇīraṇīdari- | | Pāśasanyāgavīdhī | 5280 |
| manīraṇī | 5279 | Pāśasimhīśāvarī | |
| Mahāvidyā | 5230, 5233, | (with Sūkti) | 5279 |
| | 5236 to 5239, | Pāśavātra-hamunna- | |
| | 5333 | mālānītra | 5528 |
| Mahāvidyāvāsudurga | 5227, 5240 | Pāśavaktrahanumata- | |
| Mahāvirātarabhamantra | 5295 | manītra | 5280, 5520 |
| Mallikārjunīstava | 5280 | Parabrahmavidyānītra | 5307 |
| Mantramālikā | 5163 to 5165, | Parāpriśīdānītra | 5280 |
| 5168, 5173, 5180, 5181, 5200, 5212, | Pārīkṣāpoḍitamāṭrīka- | | |
| 5214, 5223, 5229, 5248, 5249, 5253, | rasavatī | 5280 | |
| 5257, 5258, 5264, 5265, 5269, 5270, | Pārvatīnītra | 5279 | |
| 5291, 5293, 5295, 5303, 5308, 5313, | Pārvatīparumāṭvaraī- | | |
| 5314, 5318, 5334, 5335, 5347, 5361, | śaka | 5281 | |
| 5367, 5387, 5400, 5401, 5415, 5418, | Pāśimārṅgamāṭgallī- | | |
| 5418, 5426, 5427, 5440, 5445, 5448, | śubhānsa | 5198 | |
| 5463, 5484, 5474, 5483, 5488, 5489, | Pāśupāṭīstramanītra | 5280 | |
| 5493, 5495 to 5498, 5503, 5604, | Pindapūḍīlī | 5280 | |
| 5616, 5619, 5635, 5643, 5644, 5649 | Prāṇapratīṣṭhī | 5280 | |
| Mārkagdeyapurāṇa | 5284 | Prārthani-pāśacaka | 5153 |
| Medhādakṣiṇāmūrtīkavaca | 5207 | Prāśādāpatīpāriśīdā- | |
| Medhādakṣiṇāmūrtīnītra | 5280, 5207 | nītra | 5279 |
| Nālavēṣṭanaśīni | 5194 | Pratyāgirīnītra | 5311 |
| Nārasīmhamālānītra | 5298, 5280 | Pratikriyāstotra | 5279 |
| Navamadīpījā | 5475 | Pūrvāmīyāmanītra- | |
| | | śīkā | 5210, 5283, |
| | | | 5300, 5347, 5406, 5423 |

INDEX.

v

| | PAGE | | PAGE |
|-----------------------|--------------|-------------------------------------|---------------|
| Rāhuksa | 5183 | Rudradhāryamantra | 5191 |
| Rūhamantra | 5184 | Rudrahōma | 5190, 5191 |
| Rājarājēśvarikavaca | 5307 | Rudrahydaya | 5189 to 5190 |
| Rājarājēśvarimahātī- | | Rudrakavaca | 5184 to 5187 |
| phasundurmantra | 5279 | Rudramādīmantra | 5187 |
| Rājyāldhāpradagopla- | | Rudrayamala | 5197, 5311 |
| mantra | 5149 | | 5312 |
| Rājyalaksmitōtra | 5279 | Sābaramanīta | 5280 |
| Rākṣasendigbandhana | 5238 | Sabddikṣiṇīmantra | 531* |
| Rāmalrahmasvidyā- | | Sadjukṣaranyām | 5391 |
| sudakṣiṇīmantra | 5182 | Saddīndījanmantra | 5213, 5215, |
| Rāmacandradīkṣāra- | | 5221, 5224, 5226, 5260, 5281, 5282, | |
| mantra | 5160, 5161 | 5299, 5302, 5348, 5352, 5383, 5398, | |
| Rāmodādikṣārīmantra | 5163 to 5165 | 5360, 5392 to 5394, 5403, 5478, | |
| | 5174 | 5480, 5516, 5547 | |
| Rāmadurpa | 5166, 5167 | Sādīmudiyamantra | |
| Rāmadurpuskāsesa | 5165, 5166 | mantra | 5394 |
| Rāmaivārdhaśārīmantra | 5167, 5168 | Sādhakasandhyavandana | 5307 |
| Rāmagṛuṇī | 5159, 5160 | Sāhityaṇḍīgīmantra | 5422 |
| Rāmataraca | 5149 to 5156 | Sāhityaṇḍīpīmantra | 5423 |
| Rāmatarcatajāpanījaya | 5157 | Sākṛteśvaraśāhṛakapopīla- | |
| Rāmatṛḍgasūtramantra | 5158, 5159 | mantra | 5301 |
| Rāmañīlaka | 5157, 5158 | Sāktīguṇapatiṁantra | 5307 to 5309 |
| Rāmaṇḍīmantra | 5171 to 5174 | Sāktīmantra | 5312 |
| Rāmaṇīmantra | 5169, 5170 | Sāktīnīdīkṣā | 5313 |
| Rāmaṇītrākara | 5170, 5171 | Sāktīnīpa | 5309 |
| Rāmaṇīṣaṅkārīmantra | 5170 to 5179 | Sāktīpādakāśramādīmantra | 5310 |
| Rāmaṇīṣaṅkārītākāra- | | Sāktīpratyāśāgīmūḍī- | |
| mantra | 5178 | mantra | 5279, 5311 |
| Rāmaṇīṣaṅkīpīṭī- | | Sālagrāmīmantra | 5420 |
| mantra | 5180, 5181 | Sāmbodhākṣīṇīdīptīmantra | 5279, 5417 to |
| Rāmaṇīṣaṅkīrakara- | | | 5419 |
| mantra | 5182 | Sāmīkṣārādī- | 5346 |
| Rāmaṇīṣaṅkīmantra | 5161, 5162 | Sāmīkṣāmāhāduryādīmantra | 5399 |
| Rāmaṇīṣaṅkīpīṭī- | | Sāmīkṣābhāresīmantra | 5403 |
| mantra | 5162, 5163, | Sāntaśāḥīmantra | 5398 |
| Rāmaṇīṣaṅkīpīṭī- | | Sāmīkṣānāgopīdīmantra | 5400 |
| mantra | 5177 | Sāmīkṣānāsūndarīmantra | 5400, 5401 |
| Rāmaṇīṣaṅkīpīṭī- | | Sāmīkṣānālinīmantra | 5280, 5404 |
| mantra | 5163 | Sāmīkṣāvīmantra | 5404 |
| Rāmaṇīṣaṅkīpīṭī- | | Sāmīkṣāvīmantra | 5404 |
| mantra | 5175 | | |
| Rāmaṇīṣaṅkīpīṭī- | | | |
| mantra | 5189, 5193 | | |
| Rāṇīṇyāya | 5191 | | |
| Rāṇīḍīparāmītī- | | | |
| mantra | 5191 | | |
| Rigveda | 5277, 5278 | | |

| | PAGE | | PAGE |
|---------------------------|--------------|--------------------------|--------------|
| Sāmitiparamitāntra | 5402 | Sarabhaśūlāntra | 5226, 5331 |
| Sāmitrāvandāntra | 5403, 5404 | | 5331 to 5337 |
| Sāvittirīśālinīntra | 5404 | | 5342, 5343 |
| Sāmīcarakṣmaṇa | 5318, 5317 | Sarabhaśūlāntrārājā- | |
| Sāmīcarantra | 5317, 5318 | mahāntra | 5290, 5336 |
| Sāmīcarantrāpārāyanavidhi | 5317 | | 5337 |
| Sāmīcarasītāra | 5227 | Sarabhaśūlapakṣīrāja- | |
| Sāndhyākramas | 5417 | dīgbandhanāntra | 5330 |
| Sāndhyāntra | 5411, 5412 | Sarabhaśūlapakṣīrāja- | |
| Sāndhyāvandāntra | 5412, 5413 | kāvya | 5326, 5329 |
| Sāndipīḍapradagōḍa- | | Sarabhaśūlapakṣīrāja- | |
| nāntra | 5417 | mādīntra | 5280, 5331 |
| Sāṅgitāmṛtaṅgīntra | 5405 | | to 5338 |
| Sāṅgitārājyāntra | 5406 | Sarabhaśūlākavaca | 5333 |
| Sānidīḍalālāmīḍā | 5317 | Sarabhaśūlāvandāntra | 5343 |
| Sānikāvaca | 5318 | Sarabhaśūlāntra | 5288, 5339 |
| Sāñkata | 5370, 5380 | | to 5342 |
| Sāñkarasāmīhitā | 5364 | Sarabhaśūlāntrārājā- | |
| Sāñkheṣuṇerāyākṛi- | | mādīntra | 5342 |
| ntra | 5318, 5314 | Sarabhaśūlāvapakṣīrāja- | |
| Sāñcīnagōḍāntra | 5406 to 5411 | kalpa | 5379 |
| Sāñcīnapradagōḍa- | | Sarabhaśūlāvaramantra | 5344 |
| nāntra | 5408 | Sarabhaśūttaraśātan- | |
| Sāpālokaṁmāyana | 5448 | yāsa | 5338 |
| Sarabhaśūlākālākāra- | | Sarabhaśūlāvaramantra | 5344 |
| mīḍāntra | 5280, 5334, | Sarāṇḍigatiṇantra | 5319, 5320 |
| | 5325 | Sārasatāpradagōḍa- | |
| Sarabhaśūlākālāntra | 5325 | nāntra | 5419 |
| Sarabhaśūlākālān- | | Sarāvavīśālāntra | 5414 |
| ntra | 5326 | Sarāvavīśāntra | 5414 |
| Sarabhaśūlākārā- | | Sārikāntra | 5347, 5348 |
| mīḍī | 5324 | Sārikāyāmālāntra | 5348 |
| arāhākālāntra | 5323, 5324 | Sāriacūḍāhāntra | 5345, 5346 |
| Sarabhaśūlāntra | 5320 to 5323 | Sarājanasāvīkāra- | |
| Sarabhaśūlāntra | 5280, 5326 | nāntra | 5410 |
| | 5327, 5343 | Sārakāḍ-māḍānāmīḍā- | |
| Sarabhaśūlāvandādī- | | nāntra | 5418, 5419 |
| adākārāntra | 5327, 5328 | Sādatāntra | 5349 |
| Sarabhaśūlāvādākārī- | | Sātrāśālākāgōḍa- | |
| dākārāntra | 5328 | nāntra | 5315 |
| Sarabhaśūlāvāgāyatri- | | Sātruvīḍhāvīśīḍīśī- | |
| nāntra | 5333 | nāntra | 5315 |
| Sarabhaśūlāvandāntra | 5280, 5338 | Sāṭṭhalābrahma-yādākāra- | |
| | | nāntra | 5390, 5391 |

INDEX.

vii

| | PAGE | | PAGE |
|--|-----------------|---|-------------|
| Saubhāgyaśākunīs | 5475 to
5478 | Śivavādapādastotrā | 5280 |
| Saubhāgyaśāvidyāmūlī-
mantra ... | 5479 | Śkandamāstotrā ... | 5187, 5495 |
| Saubhāgyaśāvidyāmūlī-
mantra ... | 5478, 5479 | Śkandatatrās | 5188, 5316 |
| Saubhāgyaśāvidyāmūlī-
mantra ... | 5480 | 5351 to 5353, | |
| Saubhāgyaśāvidyāmūlī-
mantra ... | 5481 to
5483 | 5351, 5364, | |
| Saunyajāmātṛtrayayuttas-
carya ... | 5153 | 5415 to 5417, | |
| Saunyajāmātṛtrayadina-
carya ... | 5153 | 5449 to 5473 | |
| Saunyajāmātṛtryogidina-
carya (Parvī and
Uttarā) ... | 5153 | Śikṣadvaya ... | 5153 |
| Śaunakasamhitā ... | 5526 | Śikṣatraya ... | 5153 |
| Śaurocharchurīmantra ... | 5483, 5484 | Śmaradīndītrīmantra ... | 5401 |
| Śaurīśī kurīmantra ... | 5484 to
5487 | Ślovidkaramantra ... | 5396, 5397 |
| Śāntīśīkaramantra ... | 5421 | Śoḍasītarmūrtas | 5395 |
| Śāvitrīśīkṣātari ... | 5420 | Śodāśīkārtmāhātri-
purusundarīmantra ... | 5307 |
| Śāvitrīśīkṣātara ... | 5421 | Śodāśīkāryādī-
mantra ... | 5298 |
| Śāvratākṣatramantra ... | 5380 | Śodāśīnāmādhvīyās | 5290 |
| Śiddhāgamaṇīśī-
mantra ... | 5424 | Śoḍasīnīyudhastotrā | 5432 |
| Śiddhāgamaṇīśī-
mantra ... | 5423 | Śohādāyasi ... | 5394 |
| Śiddhākṣenopatīmantra ... | 5423 | Bomavārīśīvāthapuṇi-
vidhi ... | 5276 |
| Śiddhākṣenopatīmantra ... | 5426, 5427 | Śphoṭakīmantra ... | 5491 |
| Śiddhāmūlīlīmantra ... | 5426 | Śrīakrāñkīśāravīnyāsa | 5307 |
| Śiddhāughāṇḍīmāntra ... | 5424, 5425 | Śrīakarṇapūrṇālakṣo | 5383, 5386 |
| Śiddhāvīśīdīmantra ... | 5427, 5428 | Śrīcīdambarāpañcīkṣāri-
rudradīndīmāhāmantra ... | 5286 |
| Śītākundramantra ... | 5460 | Śrīgopurāntakōm ... | 5153 |
| Śītālambīdīmantra ... | 5300 | Śrīlakṣmīmūpujītāmītrā-
nyāsa ... | 5384 |
| Śītālātītramantra ... | 5360, 5381 | Śrīkāntīdīndīkṣānyās | 5383 |
| Śīrāmīmantra ... | 5428 | Śrīkārdīśīkaramantra ... | 5385 |
| Śīvakousī ... | 5380 to 5387 | Śrīmantra ... | 5380 |
| Śīvahāuccabrahmaśā-
vidyā-
mantra ... | 5387 | Śrīrāmasatotrā ... | 5280 |
| Śīvakrāntasatotrā ... | 5350 | Śrīsiava ... | 5153 |
| Śīvapāñcīkaramantra ... | 5358, 5359 | Śrīsakti ... | 5349 |
| Śīvastotrārathnākara ... | 5357 | Śrīvidyādītrīmantra ... | 5390 |
| | | Śrīvidyāmīmantra ... | 5290, 5281, |
| | | Śrīvidyānyādīm ... | 5389 |
| | | Śrīvidyāyātrāsātīrī | 5279 |
| | | Śrīvidyāśodasīkārtmāntra | 5396 |
| | | Śrīvidyāvīśīkhyāna | 5307 |
| | | Śrūtsārasāṅgraha ... | 5151, 5152 |

| | PAGE | | PAGE |
|---------------------------------------|---------------|------------------------------------|--------------|
| <i>Sūdāraśghandhānamantra</i> | 5491 | <i>Sūddhaśaktijayāndī-</i> | |
| <i>Sūtaśāgbandhānamorājavast-</i> | | <i>-mantra</i> | 5370 |
| <i>kārnamantra</i> ... | 5491 | <i>Sūddhaśaktinālā</i> ... | 5370 |
| <i>Sūtraratnākara</i> ... | 5466, 5467 | <i>Sūddhaśaktinālīśmaṇṭra</i> ... | 5371 |
| <i>Subrahmaṇeśikarṇa</i> ... | 5489 | <i>Sūddhaśaktinālīśottīrṇa</i> ... | 5372 |
| <i>Subrahmaṇyaśamālīmaṇṭra</i> ... | 5490 | <i>Sūddhaśaktināmūḍī-</i> | |
| <i>Sūlālīśayāmantes</i> ... | 5490 | <i>-mantra</i> | 5371 |
| <i>Sudarśanaśāpaśādaśākṣari-</i> | | <i>Sūddhaśaktisāhāndī-</i> | |
| <i>mantra</i> | 5489 | <i>-mantra</i> | 5372 |
| <i>Sudarśanadīghandhānamantra</i> ... | 5433, | <i>Sūddhaśaktitāryāpamīḍī-</i> | |
| | 5436, 5457 | <i>-mantra</i> | 5370 |
| <i>Sudarśanagṛhyātri</i> ... | 5435, 5445, | <i>Sūddhaśāḍyāmaṇṭra</i> ... | 5367 to 5369 |
| | 5446 | <i>Sūkṣmatrī</i> ... | 5443 |
| <i>Sudarśanapūrṇapāmaṇṭra</i> ... | 5462 | <i>Sūkṣmatrīmālīmaṇṭra</i> ... | 5361, 5363 |
| <i>Sudarśanakāraucca</i> ... | 5480, 5489 | <i>Sūkṛtākṣarī</i> ... | 5264 |
| | to 5485 | <i>Sūkramatru</i> ... | 5364 |
| <i>Sudarśanakāvachāstohī</i> ... | 5429 | <i>Sūkraśāḍyaparimīcāna-</i> | |
| <i>Sudarśanamālīmaṇṭra</i> ... | 5290, 5432, | <i>-mantra</i> | 5365 |
| | 5433, 5446, | <i>Sūlināśigandhānaucī</i> | |
| | 5448 to 5460 | <i>-mantra</i> | 5374 |
| <i>Sudarśanamāṇṭra</i> ... | 5430, 5435 | <i>Sūnidurgāmā-</i> | |
| | 5430, 5430 to | <i>-mantra</i> | 5377 |
| | 5446, 5449, | <i>Sūnidurgāmaṇṭra</i> ... | 5376, 5378 |
| | 5453, 5456, | <i>Sūliniduryūḍiparamāṭīvari-</i> | |
| | 5458, 5460 | <i>-mantra</i> | 5375, 5376 |
| <i>Sudarśanamāṇṭra</i> (with | | <i>Sūlinihṛdaya</i> ... | 5379, 5380 |
| <i>Gāyatri</i> and <i>Mālī-</i> | | <i>Sūlinīkāraucca</i> ... | 5378, 5374 |
| <i>mantra</i>) | 5417 | <i>Sūlinīmālīmaṇṭra</i> ... | 5378, 5379 |
| <i>Sudarśanamālīmaṇṭra</i> ... | 5437 | <i>Sūlinīmaṇṭra</i> ... | 5279, 5375 |
| <i>Sudarśanocittāṇamaṇṭra</i> ... | 5452, 5460 | | to 5378 |
| <i>Sudarśnaprapatti</i> ... | 5432, 5433 | | |
| <i>Sudarśnopūrṇottarāṇḍī-</i> | | <i>Sūlinīśatprayoga-</i> | |
| <i>mantra</i> | 5428 | <i>-mantra</i> | 5377 |
| <i>Sudarśanasākṣarīmaṇṭra</i> ... | 5433, 5441, | <i>Sūlicandrasiddhi-</i> | |
| | 5460, 5461 | <i>-mantra</i> | 5463 |
| <i>Sudarśanasāmhitī</i> ... | 5524 | <i>Sūryagerahāmaṇṭra</i> ... | 5470 |
| <i>Sudarśanāśītaka</i> ... | 5432, 5433 | <i>Sūryakāraucca</i> ... | 5465 to 5470 |
| <i>Sudarśanāśītaka</i> ... | 5432 | <i>Sūryamaṇṭra</i> ... | 5474 |
| <i>Sudarśanyāntropūjā</i> ... | 5422 | <i>Sūryanāmazīrī</i> ... | 5227 |
| <i>Sudarśanyāntroddhāra</i> ... | 5294 | <i>Sūryanāmashīrī-</i> | |
| <i>Sūddhaśāḍyāmaṇṭra</i> ... | 5365 | <i>-mantra</i> | 5471 |
| <i>Sūddhamūḍīkāraśārī</i> ... | 5279 | <i>Sūryāṇḍīgaya-</i> | |
| <i>Sūddhamūḍīkāraśārī-</i> | | <i>kāraucca</i> | 5471 to 5473 |
| <i>mālīmaṇṭra</i> ... | 5366 | <i>Sūryāṇḍīgaya-</i> | |

| | PAGE | | PAGE |
|--|---------------------|------------------------------------|-----------------------------|
| Suryajihvaramantra | 5474 | Vaidūrīmantra | 5248 to 5249 |
| Suryōkṣasandividhi | 5227 | Edyoddinimālīmantra | 5251 |
| Svarnabhairavamantra | 5464 | Vaidūrīmantra | 5250, 5251 |
| Scapalauromantra | 5405 | Vāmakasvastantra | 5475, 5477 |
| Stapnārdhīmantra | 5402, 5494 | Vidmanamantra | 5252, 5253 |
| Starpakhaivaramantra | 5495 | Vanadurgydigbodhas-
mantra | 5227, 5228 |
| Starpakhaivaramantra- | | Vanaurgamahālakṣmi-
mantra | 5236 |
| sumantra | 5280, 5497 | Vanaurgamahāmantra | 5231 |
| | to 5502 | Tanadurgamahārādhy-
mālīmantra | 5227, 5237
to 5242 |
| Svarūkṣasandhīha-
ratnātōtra | 5501 | Vanadurgydīmālāvidy-
mantra | 5228, 5234 to
5236, 5240 |
| Svarṇikarāṇḍatātrāya-
mantra | 5497 | Vanadurgydīmālāvidy-
pādīpāna | 5238 |
| Svarṇikarāṇḍapāpatti-
mantra | 5406 | Vanadurgydīmantra | 5242, 5243 |
| Svasthānapradagopāla-
mantra | 5603 | Vanadurgydīmantra | 5227, 5229
to 5232, 5243 |
| Sūdmālakaroca | 5381 | Vanaurgāpītāyūpa | 5227 |
| Syāmālāmantra | 5585 | Vanaurgāstotra | 5234 |
| Syāmālāśrīkāñcūpa | 5381, 5382 | Vardhacaturdaśikāra-
mantra | 5243 |
| Syāmālāpūrṇīganyūpa | 5381, 5382 | Vardhamālīmantra | 5244 |
| Taittirīya Āraṇyaka | 5470, 5474,
5484 | Vṛashapāraṇa | 5193 |
| Taittirīya Sathītā | 5190 | Vṛdhāsopīkṣaramantra | 5215 |
| Tārakahrishmamahā-
mantra | 5176 | Vṛdhātrayastriśadakṣara-
mantra | 5244 |
| Tārakahrishwamantra | 5280 | Vṛdhikālīṣṇe | 5254 to 5256 |
| Tīrtaśarīgīmantra | 5280 | Vṛähīmantra | 5379 |
| Triprasundarikaavaca | 5307 | Vṛāhītātōtra | 5247 |
| Triprasundarimālā-
mantra | 5307 | Vṛapāmālīk | 5246 |
| Triperasundaritattva-
vidyācāntārahaśāraṇā-
mati | 5270 | Vṛupāmantra | 5256 |
| Triptasundaryastottara-
sāra | 5207 | Vasiṣṭharoopāndhīmantra | 5246 |
| Telūkāverīmāhātmya | 5270, 5271 | Vāsiṣṭhasambhī | 5421 |
| Tvaritāpārvatimantra | 5280 | Edudīpadeśdaśikāra-
mantra | 5257 |
| Uochistagacapatimantra | 5280 | Vāspudārādhīmantra | 5247 |
| | | Vasyavārahītātōtra | 5247 |
| | | Vātāmīlādakṣipāmūrti-
mantra | 5222 |

| | PAGE | | PAGE |
|-------------------------------|-----------------|--------------------------------|-----------------------|
| Fatapratyayamangala- | | Firabhadraabachala- | |
| mantra | 5222 | mantra | 5287, 5288 |
| Fatapakshimanttra | 5223 | Firabhadrasakta | 5289, 5290 |
| Firabhadraairavatidig- | | Firabhadramantra | 5290; 5293 |
| bandhas | 5224, 5225 | Firabhadrasakta | 5290, 5291 |
| Firabhadraairavatmantra | 5226 to
5227 | Firabhadrasaktaishomala- | |
| Vatukutrapamantra | 5228, 5229 | mantra | 5283 |
| Vasumiyamavidi | 5270 | Firabhadrasakta | 5287, 5288 |
| Fidavaydevamantra | 5253 | Firahannanamalidmanttra | 5297 to
5299 |
| Väyupuräks | 5164 | | |
| Välavyäka | 5202, 5203 | Firakarmamantra | 5293 |
| Fidavaydeviyatrimanttra | 5302 | Firavayavilambimantra | 5283, 5284 |
| Fidavaydeviśvaramanttra | 5304 | Firavayavisheshamanta- | |
| Fidavaydhamanttra | 5303 | ra | 5284 |
| Vätavyäkauvähari | 5304 | Virapratipahannuwan- | |
| Fidavaydeviśvaramanttra | 5304 | mällimantra | 5299 |
| Véhakarūmosaletri | | Firapratipahannuwan- | |
| (Kurnell) | 5424 | mantra | 5285 |
| Fidavaydevipitamanttra | 5301 | Firabrahmavidmanttra | 5280, 5290 |
| Fidavaydevimalimantra | 5302 | Firabrahmamanttra | 5293 to 5295 |
| Fidavaydhamanttra | 5266, 5267 | Vimsarabhasälivyanmantra | 5280 |
| Fidavaydeviśvamanttra | 5261 | Vimsarabhaiśvarastotra | 5294 |
| Fidavaydevipitamanttra | 5262 | Firdauśīngamanttra | 5299 to 5301 |
| Fidavaydevipitamanttri- | | Firaharamantra | 5269 |
| ndra | 5263, 5264 | Firaharamkrusishomala- | |
| Vidyākāmpitamātṛgī- | | mantra | 5268 |
| caravati | 5280 | Fisergaudīfātuyasa | 5278 |
| Fidavaydevipitamātṛgī- | | Fisergaudītrisarassati- | |
| caravati | 5264 | mantra | 5279 |
| Fidavaydevividmanttra | 5264, 5265 | Vijñākrona | 5270 to 5272 |
| Fidavaydeviśvaramanttra | 5258 to
5261 | Vijñāmantra | (with
Nyāsa) |
| Vihagendrasamihitā | 5428, 5433, | 5275 | |
| | 5435 | Vijñāpājakaśaka | 5274 |
| Vikarayakṣipitamanttra | 5257, 5258 | Vijñāpāśravamanttra | 5272 to 5274 |
| Vimsuktibandhasamihitā- | | Vijñāpuriks | 5164 |
| mantra | 5267 | Vijñāvalaksyamanttra | 5275 to 5277 |
| Fidavaydevimalimantra | 5281, 5282 | Vijñāvadakṣipitamanttra- | |
| Fidavaydeviśvaramanttra | 5265 | nyāsa | 5277 |
| Firabhadraabachala- | | Fijñāvaktimantra | 5277, 5278 |
| vidmanttra | 5289 | Fidavaydeviśvaramanttra | 5270 |
| | | Vijñāmitra | 5166 |
| | | Vijñāmitrakalpa | 5413 |

INDEX.

21

| | PAGE | | PAGE |
|------------------------|------|---------------------|------|
| Vitvorspadharmagopala- | | Vybhavayairi | 5303 |
| mantra | 5287 | | |
| Vishvaviruvimantra | 5268 | | |
| Tyadhimantra | 5305 | Yatirajavimukt | 5153 |
| Tyaktimantra | 5306 | YokumArikasarsavati | 5280 |

A



29/11/18

Central Archaeological Library,
NEW DELHI.

Call No 091. 4912/1.0. M2.M
23610

Author - Ranga Chary, N.

Title - A Descriptive Catalogue
of the Sanskrit Manuscripts

"A book that is shut is but a block"

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY
GOVT. OF INDIA
Department of Archaeology
NEW DELHI.

Please help us to keep the book
clean and moving.